राजस्थांनी बात - संग्रह



संपादक

नारायणसिंह भाटी

विषय-सूची

भूमिका . ९
ढोला-मारू . २५
जलाल-बूबना . ६३
डाढाळी सूर . १२७
राठौड अमरसिंह गजसिहोत री वात १५१
साई री पलक मे खलक . १६५
पलक दरियाव री वात २०३
सूरे खीवे काधळोत री वात २३५

ꣳ

परिशिष्ट

विवरण सकेत सूची . २५३
टिप्पणियां . २५९
वात सूची . २६३

ꣳ

विवेचन

अगरचन्द नाहटा

राजस्थानी लोक-कथाओ सम्बन्धी साहित्य
के निर्माण और सरक्षण मे जैनो का योग . २७१

डा० कन्हैयालाल सहल

लोक-कथाओ की एक प्ररूढि—जादू की डोरी . २७५

कोमल कोठारी

कथा की वात . २८३

हमारे देश में ऐसे विचारवान् लोग हैं, जो सलाह देते हैं कि पहले सारा-का-सारा आवश्यक साहित्य तैयार हो जाय और तब हम अपनी देशी भाषाओं को अधिकार देने की बात सोचें। मैं अपनी सारी शक्ति से इस बात का प्रतिवाद करता हूँ। यह सोचने का गलत ढंग है और अपने प्रति विश्वास के अभाव का द्योतक है। कविगुरु रविन्द्रनाथ ने कहा है कि रास्ते पर निकल पडो। रास्ता ही तुम्हे रास्ता बतायेगा। हमे देशी भाषाओं का प्राप्य अधिकार उन्हें तुरन्त दे देना चाहिए। काम करते-करते जो साहित्य-निर्माण होगा, वही सही और प्रामाणिक होगा।

—हजारीप्रसाद द्विवेदी

भूमिका

राजस्थानी साहित्य के उद्‌भव तथा विकास पर विचार करते समय विद्वानों ने आधुनिक भारतीय भाषाओं की परम्परा में उसे यथोचित महत्व दिया है। पर यह विचार प्राय. प्राचीन राजस्थानी काव्य की विशेषताओं के आधार पर ही होता रहा है। क्योंकि वीर, शृंगार एवम् भक्ति-रस की सृष्टि करने वाले कुछ प्रसिद्ध काव्य-ग्रन्थों का जो सम्पादन एवम् साहित्यिक तथा ऐतिहासिक मूल्यांकन यथेष्ट श्रम और सूझ-बूझ के साथ किया गया, उससे राजस्थानी काव्य-सौष्ठव में निहित रूप तथा तत्वगत विशेषताओं को ही बारीकी से हृदयगम करने का अवसर मिला।

पर इस विपुल काव्य-निधि के अतिरिक्त राजस्थानी गद्य साहित्य की भी बहुत प्राचीन और समृद्ध परम्परा रही है। उसका प्रकाशन तथा समुचित अध्ययन अभी नही हो सका, जिसके फलस्वरूप यह गलत धारणा बन गई कि इस भाषा का गद्य-साहित्य नगण्य अथवा गौण है।

प्राचीन राजस्थानी के हस्तलिखित ग्रन्थो की खोज और उसके विस्तृत अध्ययन से पता लगता है कि इस भाषा का गद्य साहित्य भी उतना ही प्राचीन और विविधतापूर्ण है जैसा कि अन्य कई आधुनिक भारतीय भाषाओं में उपलब्ध होता है।

राजस्थानी गद्य मे यहाँ के समाज की राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक एवम् नैतिक मान्यताओं को युगो-युगों से कलात्मक अभिव्यक्ति मिलती रही है। बात, ख्यात, पीढी, वंशावली, टीका, वचनिका, हाल, पट्टा, वही, शिलालेख, खत आदि के माध्यम से समाज के संघर्षपूर्ण तत्वों, सौन्दर्य-भावनाओं, सृजनात्मक प्रवृत्तियो तथा अन्य कितने ही कार्य-व्यापारो का सुन्दर चित्रण हुआ है।

इसके अतिरिक्त स्थानीय राज्यों में राजकीय कार्यों के लिए भी बहुत समय तक इसी भाषा का प्रयोग होता रहा है जिनसे हमें भाषा की जीवन्त शक्ति और समाजसापेक्ष अभिव्यक्ति-क्षमता का सहज ही अनुमान हो सकता है।

इस विविधतापूर्ण गद्य साहित्य में बातो का स्थान सबसे महत्वपूर्ण है। कीट-पतंग और पशु-पक्षी तथा पेड़-पौधो से लेकर महान् ऐतिहासिक घटनाओं, इतिहास प्रसिद्ध पात्रो, प्रेम-गाथाओ तथा पौराणिक आख्यानो तक को इन बातो मे स्थान मिला है।

ऐसी हजारों छोटी-बड़ी बातें उपलब्ध हो सकती हैं, जिनमें कई बहुत छोटी और कई इतनी बडी कि उनका लिपिबद्ध रूप सैकड़ों पृष्ठो में जाकर समाप्त हो। बातों के इन विशाल साहित्य को मोटे तौर पर दो भागो में विभाजित किया जा सकता है। एक तो वे बातें जिनका लिपिबद्ध स्वरूप बन गया है और जिनकी भाषा-शैली में स्थायी रूपगत विशिष्टता प्रकट होती है। दूसरी बहुत बड़ी सख्या उन बातो अथवा लोक-कथाओ की है जिनका कोई एक शैलीगत रूप लिपिबद्ध नही हो सका, पर वे अभी तक लोगो की जबान पर ही हैं।

स्थानीय प्रभावो के कारण उनमे अधिक विभेद पाया जाता है और लिपिबद्ध बातों में जहाँ घटनाओं का एक रूढ़ रूप परिपाटी से चला आया है वहाँ इन बातो मे परिवर्तन के लिए सदैव गुंजाइश रहती है। बातो की रचना-प्रणाली पर विचार करने से यह बात और भी स्पष्ट हो जायगी।

लिपिबद्ध बातो का यही स्वरूप प्रारंभिक स्वरूप नही था। प्रारम्भ मे इनका स्वरूप भी मौखिक ही रहा होगा, जैसा कि अन्य कितनी ही बातो का मिलता है। पर कालांतर मे याद करने की सुविधा तथा संरक्षण के लिए प्रसिद्ध बातो को लिपिबद्ध रूप मिलता चला गया। लिपिबद्ध होने के पहले तो उनमे कई परिवर्तन हुए ही, पर लिपिबद्ध होने के पश्चात् भी समय-समय पर उनमे परिवर्तन होते रहे हैं। इन बातो के इस रूप तक पहुँचने में कई कथा कहने वालों की सूझ-बूझ तथा वर्णन-रुचि का सम्मिश्रण है। कभी-कभी ऐसा भी देखने को मिलता है कि किसी एक बात की घटनाओ का किसी अन्य बात के साथ सम्बन्ध जोड दिया गया है। यहाँ तक कि ढोला-मारू की कथा के साथ नल-दमयंती का कथा तत्व भी कई प्रतियो में मिलता है। कथाओ के मूल रूप मे इसी प्रकार की कई घटनाओ और पात्रों का सयोग असंभव नहीं जिनके सम्मिश्रण से अततः बातो का उपलब्ध रूप बन सका और यही रूप अब समाज मे

मान्य हो गया है। ये वातें समाज की छोटी-वडो घटनाओ पर भी आधारित हैं, कपोल-कल्पित भी हैं और कई पौराणिक कथाओ के सहारे भी चली हैं। इन वातो की प्राचीनता के कारण अव यह कहना वहुत कठिन है कि किस वात मे कितना मिश्रण हो जाने से उसका यह रूप वना। प्रसिद्ध ऐतिहासिक पात्रो से सम्वन्ध रखने वाली वातो का गम्भीर अध्ययन करने पर इस रचना-प्रणाली का आभास अवश्य मिल सकता है क्योकि इतिहास को कसौटी पर आने से इनमे निहित सत्य और कल्पना के अश को परखा जा सकता है।

यहाँ हम लिपिवद्ध वातो को ही ध्यान मे रख कर उनकी विशेषताओ पर विचार करेंगे। इन वातो का विषयगत वर्गीकरण मोटे तौर पर निम्नलिखित रूप में किया जा सकता है—

१—पौराणिक
२—ऐतिहासिक
३—वर्णनात्मक
४—सामाजिक
५—वीर भावात्मक
६—शृ गारिक और प्रेम सम्वन्धी
७—नीति सम्वन्धी
८—धर्म व्रत तथा देवी-देवताओ सम्वन्वी

वात साहित्य इतना विस्तृत तथा विविधतापूर्ण है कि उसका पूर्ण वैज्ञानिक वर्गीकरण करना सभव नही। फिर भी अध्ययन की सुविधा के लिए किसी एक वात की प्रमुख विशेषता को ध्यान मे रख कर ही उसे वर्ग-विशेष के अंतर्गत लिया जा सकता है। वैसे शृ गारिक वातो मे भी प्राय वीरता का पुट, वर्णन की खूवी तथा अन्य कई नीतिपरक विवेचन मिल सकते हैं। प्रस्तुत सग्रह की 'ढोला-मारू' वात को पढने से यह तथ्य स्पप्ट हो सकता है।

इन वातो की कुछ सामान्य विशेपताओ पर विचार करते समय सवसे पहली वात ध्यान देने की यह है कि मूल रूप से इन वातो का निर्माण कहे जाने के लिए हुआ है। इसलिए लिपिवद्ध होने के वावजूद भी उनकी वह शैलीगत विशेपता आदि से अत तक देखने को मिलेगी। वर्णनो की अधिकता, भापागत प्रवाह, वार्तालापो में निहित नाटकीयता और पद्यवद्धता आदि तत्वो का निर्वाह इस दृप्टि से ध्यान देने योग्य है।



वात का प्रारम्भ भी विशेष ढंग से किया जाता है। कथा कहने वाला एका-एक कथा प्रारम्भ न करके पहले-पहल उसकी भूमिका कुछ पद्यो के माध्यम से बाँधता है। ये पद्य प्राय उस देश की भौगोलिक तथा सांस्कृतिक विशेषताओ के बारे मे होते हैं जिसके साथ नायक-नायिका का सम्बन्ध होता है, या फिर वात की प्रशसा मे ही कुछ पद्य कहे जाते हैं—

वात भली दिन पाघरा, पैंडे पाकी बोर।
घर भींडळ घोडा जणै, लाडू मारै चोर॥

*

कोई नर सूता, कोई नर जागै।
सूतौंटों री पागडिया, जागता नै भागै॥

*

सार बावा सार, मातामा घोडला।
दूबळा सा टार।

*

वाता हन्दा मामला, दरियां हन्दा फेर।
नदिया वहै उतावळी, फिर घिर घालै घेर॥

*

वात में हुकारो, फौज में नगारो।
जीवै वात रो कहणवाळ, जीवै हुकारा रो देणवाळ॥

फिर कहेगे—रामजी घणा दिन दे, उज्जीण नगरी मे देवसरमा नामै विरामण रहै आदि-आदि।

हस्तलिखित वातों की प्रतियो मे ये प्रारम्भिक अंश लिखे हुए नही मिलते क्योकि इनका प्रयोग प्राय वात कहने वाले की अपनी रुचि पर निर्भर करता था। पर वातो के शिल्प को पूरी तरह समझने के लिए इन अशो को जानना आवश्यक है।

इन वातो मे वर्णनो की खूबी बहुधा पाई जाती है। अधिकाश वातो का प्रारम्भ भी वर्णन से ही होता है चाहे वह पद्य में हो या गद्य मे। बातो के बीच मे तो जहाँ भी अवसर मिला है वही प्रकृति की अनुपम छटा, नगर की विशालता एव सपन्नता, दुर्ग की अभेद्यता, युद्ध की भयकरता, वीरो का रण-कौशल, हाथी-घोडो के लक्षण, नायिका का रागि राशि सौन्दर्य, उसके शृंगारिक उपकरण, विरह की सुकोमल भावनाओ का उद्वेलन और मिलन की सुखद घडियो का वर्णन अलकृत शैली मे जम कर किया गया है। ये वर्णन इतने सजीव

और मार्मिक हैं कि पाठक के कल्पना-पटल पर सजीव चित्र उपस्थित कर देते हैं। इसीसे अपेक्षित वातावरण की सृष्टि होती है जिसमे हमारी भावनाओ का तादात्म्य सहज ही उस काल के साथ हो जाता है। यहाँ संकलित बातो मे इस प्रकार के वर्णनो को पढने से इस तथ्य का प्रभाव सहज ही अनुभव किया जा सकता है। वर्णनो का आधिक्य कथा की प्रगति मे अवश्य शिथिलता ला देता है पर उनकी सजीवता ही पाठक अथवा श्रोता को ऊवने नही देती।

इन वर्णनो मे उपमाओ, दृष्टातो और उत्प्रेक्षाओ एव अतिशयोक्तियो का सुन्दर प्रयोग हुआ है। उपमाओ मे रूढ उपमानों के अलावा कितने ही मौलिक उपमान भी प्रयुक्त हुए हैं जिनमे स्थानीय विशिष्टताओ की खूबी (Local Colour) अद्भुत नवीनता और ताजगी के साथ प्रकट हुई है।

वार्तालापो मे भी गद्य के साथ पद्य का प्रयोग मिलता है। कई कल्पित कथाएँ तो पूरी की पूरी पद्य मे ही मिलती हैं। ये पद्याश वर्णनात्मक भी है और भावनात्मक भी जिसमे दूहा, सोरठा, गाथा, सवैया, चद्रायण, गीत आदि छदो का प्रयोग अधिक हुआ है। इनका काव्य-सौष्ठव, वयणसगाई के निर्वाह, अलकारो की खूबी और भाषा की प्रौढता के साथ-साथ मौलिक सूक्तियो से निखर उठा है। किसी एक बात के कुछ पद्याश थोड़े बहुत हेर-फेर के साथ किसी अन्य बात मे भी दिखाई दे जाते हैं, यह इनको परिवर्तनशील रचना-प्रणाली के ही कारण है। गद्य और पद्य का यह मिश्रण एक दूसरे के पूरक के रूप में दिखाई पड़ता है। कई बातो मे तो यह पद्य वाला भाग भी इतना पूर्ण और प्रभावोत्पादक है कि यदि इनके सूत्र को हटा लिया जाय तो पूरी बात विच्छिन्न गद्य खडो के रूप मे रह जाएगी।

सभी बातो के कथानक तत्कालीन समाज की भित्ति पर चित्रित हुए हैं इसलिए इनमे देशकाल का सुन्दर वर्णन उपलब्ध होता है। विभिन्न प्रकार और समय की वातो के अध्ययन से तत्कालीन समाज की विभिन्न प्रवृत्तियो की जो महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है वह तथाकथित लिखित इतिहासो मे उपलब्ध नही होती। प्रदेश का सामाजिक इतिहास लिखने मे इस सामग्री मिलने वाली सहायता का महत्व असंदिग्ध है। मध्यकालीन राजस्थान के बहुत वडे समाज का चित्रण इन बातो मे हुआ है। यहाँ की शासन-प्रणाली, जागीर-प्रथा, जातीय-व्यवस्था, कलात्मक सृजन, साहित्यिक वातावरण, आमोद-प्रमोद, नैतिक मूल्य, भाग्यवादिता, रूढिनिर्वाह और जीवन-सिद्धातो का वडा वैविध्यपूर्ण और

सर्वांगीण चित्र इन बातो के माध्यम से अंकित हुआ है।

सामाजिक परिस्थितियो की भूमिका मे ही अपेक्षित सत्य की साकेतिकता अपने जीवन्त और पूर्ण रूप मे प्रकट हो सकी है जिससे कथानक के शिल्प मे देशकाल की विशेषताएँ अपने पूर्ण औचित्य के साथ प्रकट होती हुई प्रतीत होती हैं।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, इन बातो की शैली मे लम्वे समय से परिवर्तन और परिवर्द्धन होते आए है, फिर भी उनकी अपनी निश्चित शैलीगत विशेषताएँ अवश्य हैं।

आधुनिक कथा-साहित्य की शैली से इनकी शैली मे वहुत भिन्नता है। आधुनिक कहानी के विकसित रूप में जो लेखक के व्यक्तित्व की निहति, सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, जीवन-यथार्थ का उद्‌घाटन करने वाला शिल्प-नैपुण्य और कथा तत्व की गतिशीलता आदि गुण दिखाई देते हैं—वे चाहे इन बातों मे न हों पर वर्णनो की सजीवता, औत्सुक्य का निर्वाह, लयात्मक भाषा में काव्य का-सा आनन्द और सामाजिक सत्य की सहज अभिव्यक्ति आदि कुछ ऐसे गुण हैं जिनके कारण सैकडो वर्षों से इन कथाओ का समाज मे महत्व रहा है।

इन बातो की कथा के विकास मे स्थान-स्थान पर ऐसी घटनाओ का आगमन हुआ है जिससे नायक अथवा नायिका की उद्देश्य-प्राप्ति मे निरन्तर विघ्न उपस्थिन होते रहते हैं। एक विघ्न के हटने पर जब कुछ आशा वधती है तो दूसरा विघ्न उपस्थित हो जाता है। विघ्न उपस्थित करने वाली इन घटनाओं का आगमन इस तरह करवाया जाता है कि औत्सुक्य का निर्वाह वरावर होता रहता है।

इन घटनाओं व पात्रो की अवतारणा में भूत-प्रेत, शकुन, स्वप्न, देवी-देवता, आकाशवाणी, जादू-टोना आदि कितनी ही अलौकिक बातो का समावेश मिलता है। स्त्री और पुरुष के अतिरिक्त पशु-पक्षी तथा पेड-पौधे भी पात्रो के रूप मे उपस्थित हुए हैं जिनके साथ वार्तालाप हुए है। पक्षियो के साथ तो पूर्ण विश्वास करके नायिकाओ ने अपनी प्रेम-विह्वल वाणी मे प्रिय को सदेश भेजे हैं। कोकिल, कीर, भ्रमर और वादल के अतिरिक्त कुरजां ने भी विरहणी की पीडा को पहचान कर उसका कार्य किया है। अपने पखो पर पाती तक लिख डालने की स्वीकृति दी है। कहने की आवश्यकता नही कि इन बातो मे मानव-हृदय का शेष सहज रूप मे तादात्म्य स्थापित हुआ है। प्रकृति के साथ

मानव-भावनाओ का सीधा आदान-प्रदान एक बहुत बडी विशेषता है जिमसे भावानुभूतियो को अधिक विस्तार मिल सकता है ।

वातो में नाटकीयता लाने के लिए कथोपकथनो का प्रयोग हुआ है। कई कथोपकथन वहुत छोटे हैं तो कई वहुत वड़े । गद्य और पद्य दोनो के माध्यम से इनका प्रयोग हुआ है। पद्य में प्रायः वे कथोपकथन मिलेंगे जिनमे भाव-पूर्ण निवेदन अथवा व्यंग होगा । इनसे पात्रो की चारित्रिक विशेषताओ के उद्‌घाटन मे तथा कथा-सूत्र की प्रगति मे सहयोग मिलता रहा है तथा कथा मे रोचकता, सजीवता और भाव-प्रकाशन की अद्‌भुत क्षमता आ गई है ।

जहाँ तक कथा-तत्व का सम्वन्ध है, इनमे मुख्य कथा के अतिरिक्त छोटी-बड़ी अन्य सहायक कथाओ का भी प्रयोग मिलता है । प्रासगिक कथा मे भी कई वार दूसरी कथा आ जाती है और कई कथाओ का क्रम तो एक दूसरी कथा मे से निकलता हो चला जाता है । राजाभोज से सम्वन्व रखने वाली कई कथाओ मे इस तरह का तारतम्य मिलेगा । ऐतिहासिक पुरुषो से सम्वध रखने वाली कई कथाओ मे छोटी वडी कथाएँ जिनका एक दूसरी से विशेप सम्बंध नही है, मिल कर नायक की चारित्रिक विशेपताओ पर प्रकाश डालती हैं । संकलित वातो मे महाराजा पदमसिंह की वात इसी तरह की है ।

उपरोक्त शैलीगत विवेचन मे यह वात भी ध्यान देने की है कि कथानक के कई स्थलो पर पद्य मे कही हुई वात श्रोताओ अथवा पाठको की सुविधा के लिए फिर से गद्य मे दोहराई जाती है पर वर्णन-शैली की रोचकता के कारण पुनरावृत्ति दोप दिखाई नही पड़ता ।

इन वातो की भापा पुरानी राजस्थानी है पर समय के दौरान मे भापा का रूप निरतर वदलता गया है, इसलिए सम्पादित वातो की भाषा का रूप अधिक प्राचीन नही है । यहाँ प्रयुक्त भाषा का सवसे वड़ा गुण उसकी सहजता और सजीवता है। वर्णनात्मक स्थलो पर इतनी सशक्त भापा का प्रयोग हुआ है कि सहज ही मे चित्र उपस्थित हो जाता है । वार्तालापो मे प्राय पात्रो के अनुरूप ही भाषा का प्रयोग मिलता है । यहाँ तक कि कई वातो मे तो मुसलमान पात्रो के मुँह से उर्दू अथवा फारसीमिश्रित भापा प्रयुक्त हुई है। जैसा कि पहले कहा जा चुका है, इन वातो की मूल प्रकृति कहे जाने की है, अत भाषा मे भी उसके अनुरूप ही लयात्मकता, रवानगी और सहजता है । भाव और वस्तु-वर्णन दोनो ही मे भाषा की यह अभिव्यक्ति-क्षमता अपने औचित्य के साथ दृष्टिगोचर होती



है। जन-मानस के साथ इन वातो का वहुत नजदीक का सम्बंध है इसलिए जन-मानस की भाव-निधि को वहन करने की क्षमता इनकी सहज विशेषता है। डिगल अथवा राजस्थानी के अतिरिक्त शुद्ध संस्कृत तथा अरवी फारसी के शब्दों का भी सम्मिश्रण हुआ है। मध्यकालीन राजस्थान पर मुस्लिम संस्कृति का प्रभाव रहने से विदेशी भाषा का यह प्रभाव स्वाभाविक ही है। अरवी फारसी के कुछ शब्द तो राजस्थानी मे घुलमिल कर एक हो गए हैं और उनका आज भी प्रयोग होता है।

इन वातो की समाज को वहुत वडी देन रही है। प्राचीन काल में जव शिक्षा और ज्ञान अर्जित करने के लिए आज की सी व्यवस्था न थी तो समाज को वहुधा आवश्यक ज्ञान इन्ही वातो के माध्यम से दिया जाता था। जनता तथा शासक वर्ग के सस्कारो का निर्माण करने मे इन वातो का वहुत वडा हाथ रहा है। प्राय. कथा कहने वाले सन्ध्या के समय कामकाज से निवृत्त होकर जव कथा कहने बैठते थे तो धीरे-धीरे श्रोतागण एक कल्पना लोक मे खो जाते और जहाँ वीच-वीच मे रोचक वर्णन अथवा काव्य की पक्ति आती वहाँ वाह-वाह की झडी लग जाती और कथा कहने वाला दूने जोश से कथा कहने लगता। इससे श्रोताओ का मनोरंजन तो होता ही था पर जाने-अनजाने वे कितने ही जीवन मूल्यो को भी ग्रहण करते थे। ऐतिहासिक कथाओ के माध्यम से इतिहास के ज्ञान के साथ-साथ आदर्श पुरुषों की चारित्रिक विशेषताओ का परिचय होता था। नीति सवंधी वातो से व्यवहारिक ज्ञान और प्रेम-संवधी वातो से प्रेम का अलौकिक आदर्श ग्रहण होता था। पौराणिक वातो से आध्यात्मिक उन्नति के तत्व ग्रहण किये जाते थे। इस प्रकार ये वातें युगो-युगो से अपने नाना रूपो में जन-मानस को ज्ञान की गरिमा से विभूषित करती रही हैं।

अलौकिक तत्वो का प्रवेश व अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन देख कर इन्हे कोरी कपोल-कल्पित गप्पें समझ कर टाल देना वहुत वडी भूल होगी। इन वातो का सामाजिक मूल्याकन करते समय इनसे व्यजित होने वाले सत्य को ही ग्रहण करने की आवश्यकता है, क्योकि वही इनकी उपादेयता है और इसीमे इनकी सार्थकता भी निहित है। यहाँ के मानव की परिवर्तनशील सामाजिक एव नैतिक मान्यताओ को जानने का वहुत वडा साधन तो यह साहित्य है ही, इसके अतिरिक्त शाश्वत सत्य का उद्‌घाटन करने वाली कथाओ का सार्वदेशिक तथा सार्वकालिक प्रभाव सदैव वना रहेगा, इसमे भी कोई सदेह नही।

सुन्दर अक्षरो मे लिपिवद्ध की हुई और रगीन कपडो की जिल्दो मे वधी हुई प्रेम-कथाओ को कितने प्रेमियो ने विरह के एकान्त क्षणो मे पढा होगा ? ढोला और मरवण के वार्तालाप कितनी प्रेमजन्य सुकोमल भावनाओ को उद्वेलित कर सके होगे ? विकराल काल के चिर-पाश मे वधे हुए मानव ने इनकी अलौकिक कल्पना मे खोकर कितनी वार उन्मुक्तता की सास ली होगी ? इस पर विचार करें तो वातो की अद्भुत महत्ता का आभास सहज ही हो सकता है।

वडे ही आश्चर्य की वात है कि शताब्दियो से समाज की नानारूपेण प्रवृत्तियो और समस्याओ का इतना वृहत् तथा जीवत चित्र प्रस्तुत करने वाली वातो के साहित्यिक महत्व पर अभी तक गभीरता से विचार नही किया गया। राजस्थानी गद्य की विविधता और उसके विकास को समझने के लिए इनसे वढ कर अन्य साधन शायद ही उपलब्ध हो। वस्तु और शिल्प दोनो ही दृष्टियो से इनका महत्व असदिग्ध है। राजस्थानी काव्य के शोध कार्य मे भी इनसे यथोचित सहायता मिल सकती है। क्योकि कितनी ही काव्य-रूढियो के साथ परोक्ष तथा अपरोक्ष रूप मे इनका संवध जुडा हुआ है। भारतीय कथा-साहित्य के आपसी सवंधो को जोडने वाले सूत्रो एव प्रभावो को भी इनके माध्यम से सहज ही ग्रहण किया जा सकता है, क्योकि कई वातो के विभिन्न स्वरूप अलग-अलग प्रातो मे भी उपलब्ध होते हैं।

आधुनिक राजस्थानी साहित्य के नव-निर्माण मे जहाँ कविता अपनी नवीन अभिव्यक्ति-क्षमता ग्रहण कर चुकी है वहाँ कथा साहित्य के क्षेत्र मे भी प्रयोग होने लगे हैं। पर आधुनिक गद्य-रचना मे मौलिकता और सहज साहित्यिक गांभीर्य लाने के लिए प्राचीन वात साहित्य का सर्वांगीण अध्ययन आवश्यक है। ऐसा किए विना हम अपनी सास्कृतिक पृष्ठभूमि मे पोपित शिल्पगत विशेषताओ और भाषागत सशक्त परम्पराओ से लाभ नही उठा सकेंगे और जिसके विना हमारा साहित्य स्थानीय विशेषताओ को आत्मसात कर, विश्वास के साथ आगे नही वढ पाएगा।

यहाँ अव प्रस्तुत वातो के सपादन के सवंध मे कुछ कहना आवश्यक है।

जसा कि पहले कहा जा चुका है, वातो का प्रारभिक रूप मौखिक था; लिपिकारो ने उसे लिपिवद्ध किया है। लिपिवद्ध करते समय उन्होने प्राय. वह सतर्कता नही वरती जिसकी अपेक्षा लिखित साहित्य में होती है। कई प्रतिलिपियो को देखने से यह भी आभास होता है कि लिपिकार की असावधानी या



अज्ञान से भाषा की अशुद्धियों के अतिरिक्त और कई त्रुटियाँ भी रह गई हैं। ऐसी स्थिति मे वात को ज्यो का त्यों न रख कर कुछ परिवर्तन कर देना आवश्यक हो गया।

व्यक्तिवाचक शब्दो के भिन्न भिन्न रूप एक ही वात मे प्रयुक्त हुए हैं। जैसे मारवणि के लिए मरवण, मारू, मारवणी, मारवी आदि रूप मिलते हैं। हमने पहला रूप ही ग्रहण किया है। कई क्रिया-शब्दो के भी दो रूप मिलते हैं, जैसे वोल्यौ और वोलियौ, मेल्यौ और मेलियौ आदि। ऐसे शब्दो के दोनों ही रूप रखे गए हैं—पर वाक्य के प्रवाह को ध्यान में रख कर। यहाँ यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि पद्य मे या स्थल विशेष पर अर्थ-विशेष में प्रयुक्त होने वाले शब्द-रूप मे उसके औचित्य को ध्यान मे रखते हुए परिवर्तन नहीं किया गया है, इसलिए पद्य में मारवणि शब्द के उपरोक्त सभी रूपों को स्थान मिला है। बचपन की अवस्था मे मारवणि के स्थान पर 'मारू' शब्द प्रयुक्त हुआ है जिसे उचित समझ कर उसी रूप में ग्रहण किया गया है।

राजस्थानी मे 'व' तथा 'भ' के वीच की ध्वनि प्रकट करने वाला अक्षर व़ भी प्रयुक्त होता है। इसके उच्चारण में वडा सूक्ष्म भेद है। 'वात' शब्द स्वयं प्राचीन प्रतियों मे 'व़ात' लिखा हुआ मिलेगा पर उच्चारण की सुविधा और सरलता को ध्यान मे रखते हुए हमने 'व़' के स्थान पर 'व' का ही प्रयोग किया है।

इसके अतिरिक्त वाक्यों मे जहाँ अपूर्णता अथवा अस्पष्टता लगी वहाँ भी आवश्यक परिवर्तन किए गए है।

मूल प्रतियो की लिखावट में पूर्णविराम का अवश्य कही-कही प्रयोग हुआ है पर पैराग्राफ तथा अल्पविराम आदि चिन्ह नही मिलते। प्रकाशन के आधुनिक ढंग और स्पष्टता को ध्यान में रख कर हमने यथा-स्थान इन चिन्हो को अपना लिया है। पद्यांशो मे प्रायः दीर्घ ह्रस्व आदि की त्रुटियो को ठीक कर दिया गया है और मात्राओ की पूर्ति के लिए भी इसी प्रकार के कुछ आवश्यक परिवर्तन किए गए हैं। ढोला-मारू की वात के दोहों में इस प्रकार की त्रुटियाँ अधिक थी जिनको शुद्ध रूप दिया गया। ऐसा करने मे ढोला-मारू रा दूहा (सपादित) से भी पूरी सहायता ली गई है। पर सव मिला कर प्रयत्न यही रहा है कि वाते अधिक से अधिक अपने मौलिक रूप मे पाठको तक पहुँच सकें। राजस्थानी गद्य साहित्य की रचनाओं को प्रकाश में लाने का यह हमारा पहला प्रयत्न है इसलिए पूरी सतर्कता वरतने के वावजूद भी त्रुटियो का रह जाना



असंभव नहीं। आशा है इस दिशा में कार्य करने वाले विद्वान 'वात' साहित्य की इस अमूल्य निधि को प्रकाश में लाने का यत्न करेंगे। यह संग्रह तो केवल प्रारंभ मात्र है। परिशिष्ट में प्रसिद्ध वातों की सूची भी इसी उद्देश्य से दी गई है।

मडावा कँवरसाहिब देवीसिंहजी, अगरचन्दजी नाहटा तथा सीतारामजी लाळस का मैं आभारी हूँ जिनके सौजन्य से मुझे बहुत सी वातों का संकलन, चुनाव तथा अध्ययन के लिए मिला।

अंत में जिन महानुभावों ने जिस किसी रूप में हमें सहायता पहुँचाई है और परामर्श दिया है उनके भी हम आभारी हैं।

—नारायणसिंह भाटी

राजस्थांनी बात-संग्रह

ढोला मारू

ढोला मारू री वात लिख्यते—

सकळ[1] सुरा सुर सामणी, सुण माता सरसत्त[2] ।
विनय करी नैछी[3] निवू[4], द्यो मुझ अविरल मत्त[5] ॥

वचन विलास विनोद रस, हाव भाव रति हास ।
प्रेम प्रीत सभोग मुख, श्रे सिणगार अयास ॥
गाहा गूढा गीत गुण, उकती कथा उल्लोल ।
चतुरा तणा चित्त री, कहिये कवि किल्लोल[6] ॥
नळ राजा नळवर तपै, सुत तिण साल्हकुमार[7] ।
पिगळ-पति पदमण सुता, मरवण[8] प्रीत मचार ॥

*

पाणीपथ तुरग, खग चगो खुरसाणी
वीजा नयर वसत्र, निरमळ गग नियाणी
पट कूल पटणी देस, भोगी घर दक्खण
कुजर कदळी खड, विप्र रू, तिये विचक्षण
तिम चद वदन चपक वरण, दत भत्रूकण दामणी
सारग नयण संसार इण, मनहर मारू कामणी

[1]सकल [2]सरस्वती [3]नीचे [4]नमन करू [5]मति [6]'ढोला मारू रा दूहा' का रचयिता [7]कथा का नायक [8]कथा की नायिका ।

मरुधर देस मझार, सयल वन धन प्रसिधौ
नामे पुगळ नयर[१] पुह, विस गळै प्रसिधौ
राज करै रिमराह, खगट[२] पिंगळ प्रथवीपति
प्रतपै जसु प्रताप, दांन जळहर जिम दीपति
देवडि नाम उमा घरणी, मरवणि तस धू कुंवरि
चौसठि कळा सुन्दर चतुर, सिरै नार गुण सुन्दरि।

मरुधर देस रै विखै[३] सगळा ही सहरा प्रसिद्ध पुगळ नांमै अहवो नगर। तिण रै विखै रमी राजा राज करै छै। तिण रै पिंगराजा पुत्र छै—वडो प्रथीपत दातार। जळहर जिम दीपै छै। तिणरै ऊमादे वडी अस्त्री छै। तिणरी वात कविस्वर विस्तार करनै कहै छै—

देसा माहे दीपतौ[४], परगट मरुधर देस।
तिहा नर नारी ऊपजै, नरां उत्तम नरेस॥
ऊचा मिन्दर चोखणा, ऊचा घणा अवास।
अजव झरोखा जाळिया, सीसै सूधा वास॥
राज करै राजा तिहा, पिंगळ जाण प्रवीण।
वीमळिया[५] भीनौ रहै, निस दिन नेहै लीण॥
अतरा अहिनिस करै, अमल सोहड अतिरग।
कोटडिया कळियळ[६] हुवै, राग छतीस नुरग॥
भल सोहड अर हास भल, भली राज गति रीत।
राजलोक राणी भली, पाळै अहिनिस प्रीत॥

मरुधर देस रै विखै पुगळ नांमै नगर, तठै पिंगळ राजा राज करै छै। आठ हजार घोड़ा छै। दोय सौ हाथी छै। पाच हजार पायक[७] छै। बारै वरस रो पिंगळ राजा टीकै[८] बैठो छै। तीन वरस माहे वैरी दुस्मण मारि नै आपणी आण[९] मनावी छै। पनरै वरस मे राजा हुवौ छै। अति रूपवंत भोग भमर[१०] छै।

अेक समै राजा सिकार चढियौ छै। कटक[११] सरब साथै लीधा छै। पण अस-वार जुदा जुदा विखर गया। राजा अेकलो रण[१२] रै विखै भमतौ भमतौ थाकौ। उन्हाळा[१३] री रात हुती, तिणसू राजा नै त्रिखा[१४] घणी व्यापी। जितरै अेक

---

[१]नगर [२]योद्धा [३]मे [४]देदिप्यमान, [५]आखो मे [६]राग-रग [७]पैदल [८]उत्तराधिकार प्राप्त किया [९]प्रभुत्व स्वीकार कराया [१०]आनंद लूटने वाला [११]फौज [१२]अरण्य, जगल [१३]गर्मी [१४]प्यास।

मोटो व्रिख दीठौ, तिण हेटे जाय ऊभौ रह्यौ । आगे देखै तौ अेक भाट बैठौ छै, तिण कन्है पाणी रो वागळो[1] भरियो छै । राजा भाट नै बतळायौ । तरै भाट आय मुजरो कियौ, सीतळ पाणी पायौ । तद राजा तिरपत हुवौ । भाट राजा सू बहोत राजी हुवौ । राजा भाट नै पूछण लागौ—भाटजी, थे अठै किसै काम पधारिया छौ । कठै रहौ छौ । तद भाट बोल्यौ—महाराज हू नळवर-गढ रहू छू, मागणी करणै निसरियौ छू । और तौ बडा-बडा गढपति सगळा[2] ही जाच्या[3], अबै पिगळ राजा री कीरत सुण जाचवा आयौ छू । तरै राजा भाट नै आपरो नाम बतायौ । तरै भाट राजा नै ओळखियौ[4] । मन माही उछाह आयौ छै । वळै राजा पूछियौ—भाटजी, थे किसा गाव नगर दीठा सो कहौ ।

भाट कह्यौ—म्हे इतरा देस दीठा . मरहठ देस, मेवात,बग देस, गौड,कुकण, कछ, पचाळ, दक्खण, माळवो, मुल्तान, कासमीर, खुरसाण, इतरा देस दीठा । वळै सिंघल दीप दीठौ, जठै पदमणी अस्त्री छै । गुजरात, सोरठ, सवाळख, सिन्ध और ही समुद्र परे बडा बडा सहर दीठा । तरै पिंगळ राजा बोलियौ —थे इतरा सहर दीठा छै त्या माहे कोई अपूरब[5] वस्त दीठी होय सु कहौ । तद भाट बोल्यौ—महाराज, म्हे तो अपूरब वस्त अनेक दीठी छै सो कहता अत न आवै । पण आपरै मन मे जिकण री दरकार[6] होय सु कहौ । राजा बोल्यौ—थे इतरा सहर दीठा छै,त्या माही कोई रूपवत अस्त्री, हंस रो बच्चो, केळ रो गरभ, किरती रो झूमको, चौसठ कळा री जाण, वुध निधान, म्रगनयणी इसी अनोपम अस्त्री होय तो म्हानै परणीजण री खात[7] छै। थे कोई दीठी हुवै तो कहौ ।

भाट बोल्यौ—महाराज हू वरस पच्चीस बारे फिरियौ—परखडा[8] । तठै रूपवत चतुर अनेक अस्तरियां दीठी पण अेक जाळोर नगर छै तठै सावतसी देवडो राज करै—

गिर अढार[9] आबू धणी, गढ जाळोर दुरग ।
तिहा सावतसी देवडो, अमलीमांण[10] अभग ।।

जाळोर नगर रो धणी सावतसी देवडो छै । तिण रै झाली पटराणी छै ।

---

[1]पानी रखने का बरतन-विशेष [2]सब [3]याचना की [4]पहिचाना [5]अपूर्व [6]चाह [7]इच्छा [8]अन्य पृथ्वी-खड [9]घनी वनस्पति वाला पर्वत [10]अधिकार का उपभोग करने वाला ।

तिणरी पुत्री ऊमादे वडी छै, तिका जाणीजे—विधाता आप हाथ घड़ी छै। वळे किसडीक छै—

चदन वदन चपक वरण, अहर अलता[१] रग।
खजन नैण खीण कटी, चदन परिमल अग॥
अति अद्भुत समार इण, नारी रूप रतन्न।
आखै ऊमादे कवरि, कोमळ कंचन वन्न॥
तूझ सरीखो जो जुडै[२], भामण[३] नै भरतार।
जोडी राई कान्ह ज्यूं, कर मेल्है करतार॥

इतरी भाट पिंगळ राजा नै कही, तद राजा खुस्याळी[४] होय कह्यौ—ओ काज प्रमाण चढै,[५] इसी कोई अकल बतावौ? इतरी बात करता राजा रो कटक बिखर गयौ हुतौ सो आण भेळो हुवौ। तद राजा नगर माहे आयौ। भाट नै साथे ल्यायौ। अवै राजा री हजूर भाट बैठौ रहै छै। नवा दूहा गाहा कहि नै राजा नै रिझावै[६] छै। पण राजा ऊमा देवडी नै खिण मात्र विसरै नही।

अेक दिन राजा आपरा परधान बुलाया। जैसळ खवास बुलायौ। सारां ही नै मसलत[७] बूझ नै जाळोर सारू तयारी कीधी। पछै भाट नै केई अमोलक[८] वस्त्र गहिणा देय नै साथै मेलिया। घणी भळावण[९] दीन्ही अर कह्यौ—ओ काम प्रमाण चढै ज्यू कीजै।

हिवै अठासूं घणो साथ लेनै भाऊ भाट नै जैसळ खवास चाल्या तिके जाळोर नगर आय उतरिया। तरै सावतसी देवडे पिंगळ राजा रा परधांन आया सुण नै घणी मनुहार कीधी। पछै परधाना नूं पूछियौ—थानू अठै पिंगळ राजा किसै काम मेलिया छै। परधान बोलिया—थां सूं अेक अरज छै। थांरी कुवरि अपछर जिसी, तिण रो रूप कांना सुणियौ जद राजा रै मन उछव ऊपनौ, तरै आप कन्हे म्हानै मेलिया छै। थांरी कुवरि[१०] मागै छै। तरै सांवत सी देवडो बोलियौ—कुवरि री तो सगाई कीवी। पैली तौ जूनागढ रा धणी मागी हुती। पछै वीद घणा वरमा माहे देखनै उत्तर दीधौ[११]। अवै उदैचद राजा चावडो छै, तिण रै रिणधवळ कवर पुत्र छै। सत्रह सै गुजरात रो धणी छै। तिणनै म्हे ऊमादे कुवरि दीधी। पण झाली रांणी अजे बात मानै न छै। रोगी देस छै।

---

[१]लाल [२]मिले [३]स्त्री [४]खुशहाल [५]पूरा हो [६]रिझाता है
[७]सलाह [८]अमूल्य [९]जिम्मेवारी [१०]कुवरी [११]दिया।

भूडो, निरलज्ज तिको गुजरात छै। निबळ पुरख छै। अस्त्री निलज्ज छै, तठै राजकुवरि क्यूंकर दीजै। सगाई करण नै तौ कीधी हुती पण अबै तौ म्हाने कुवरि द्यो।

इतरी वात राजलोक मांही भाली सांभळी[1] तरै परधानां नै माहे बुलाया अर अेक उपाय राणी कीधौ। जैसळ नै कहण लागी—जोतखिया[2] कह्यौ वरस अेक तांई बाई नै सावो[3] सूझै नही। बरस अेक पछै लगन थापस्यां। महिना अेक पहिली अेक असवार थां कन्है मेलस्या,[4] सो थे जान री सजाई[5] कर नै आबूजी री जात्रा[6] रै मिस आय उतर ज्यो। तद कुवरि पिंगळ राजा नै परणाय देस्यां। उदैचंद रिणधवळ नै, कुवरि परणीज सी जद अेक दिन पहली आदमी मेलस्यां सु अेक दिन में कोई आवणी आवै नही। लगन तो टळै नही, तरै म्हे पण निरदोस रहस्या, इसो मतो थापनै परधांना नै सीख दीवी। घणौ द्रव्य सिरपाव देय विदा किया। परधान पुगळ आय पहु ता[7], पिंगळ राजा सू मिल्या। सारा समाचार कह्या तरै राजा घणौ खुस्याळ हुवौ।

अब छानै परधान अर कागळ[8] आवै जावै छै। सावतसी पण वहोत राजी छै। अबै तौ सावा आडो अेक महीनो आय रह्यौ। सावतसी देवड़े असवार मेल पिंगळ राजा नै समचौ[9] दियौ। तद पिंगळ राजा जान री सजाई कीधी। घणा घोडा, ऊठ, हाथी, सेझवाळ[10] तयारी किया छै। वडा बडा गढपती जांनी हुवा छै। इण तरै सू केसरिया वागा करि घणा आडवर सू जान चढी छै। दिन दस मारग मांहे लागा। लगन रै दिन जाळोर नगर आण उतरिया। सावतसी देवड़ो आया सुण वहोत राजी हुवौ। कटक[11] देख लोक खळभळिया। परजा पूछण लागी—अे राजा कुण छै, सिध पधारसी ? तरै पाछौ उत्तर कहै छै—कोई डरो मती। पूगळगढ रो धणी पिंगळ राजा छै। आबूजी री जात्रा करण नू जाय छै।

इतरै गोधूळक[12] वेळा हुई। तरै सावतसी देवडे अर भाली साम्हेळो[13] करि पिंगळ राजा नै माहे लिया। पछै ऊमा देवडी नै परणाई। पिंगळ राजा री सूरत

[1]सुनी [2]ज्योतिषियो [3]लग्न [4]भेजेंगे [5]तय्यारी [6]यात्रा [7]पहुंचे [8]कागज [9]संकेत [10]परदा लगी हुई गाडिया [11]फौज [12]गोधूलि वेला [13]वर को शादी के पहले घर के अन्दर ले जाने की रस्म।

देखि सावतसी देवड़ो अर झाली राणी दोनूं राजी हुवा। बीजा ही लोक राजी हुवा। सोळह बरस रो वर छै। तेरह बरस री कुवरि छै। इसी जोड़ी हर तूंठा-हीज जुड़ै।

तरुणी तेरा बरस री, सोळह बरस भरतार।
जोडी इसडी तौ जुडै, जे तूंठै[1] करतार॥

सावतसी देवडे भलो विवाह कियौ। जाळोर नगर माहे भला द्रव्य खरचिया। दोनूं सगा माहोमाही राजी हुवा।

हिवै[2] पाटनगर उदैचन्द राजा नै आदमी मेलियौ छै, तिण जाय मुजरो कियौ। पछै लगन दीधौ। लगन वांच उदैचन्द राजा कहण लागौ—लगन आडो अेक दिन छै—इतरो मोडो[3] क्यूं आयौ? नरै आदमी बोल्यौ—रोगी देस छै, सु मारग मे आवतौ ही मादो[4] पड्यौ। म्हारो दोस नही। तद राजा नै रीस चढी। आदमी री वांह पकडी नै बारे काढ दीन्हो। राजा विचारियौ—रखै[5] म्हांरी माग कोई बीजो परणै। तरै जान री सजाई कर, छडी असवारी सूं चढियौ। जाळोर आंण पहुंतो। परणायां[6] पछै दूजे दिन सांवतसी देवडो मन में आलोच[7] करै छै। रखै रिणधवळ कंवर री जांन आवै तौ पिगळ राजा सू लड़ाई हुवै। इसो विचार करै छै। इतरै च्यार च्यार कोस ऊपरै टूकिया[8] राखिया छै, त्यां आय नै कह्यौ—उदैचद आयौ। इसो सुण सांवतसी सोच ऊपनो। राजा महिलां चढि देखै तौ सातसै उपाड़े चढियौ आवै छै। त्यांरी गिरद उडती दीठी। वळे[9] नगारो वाजतौ सुणियौ। इतरै नेडा आय लागा। नीसाण दीसै लागा। इसी फौज वणी देख सांवतसी विचारियौ—अवै वात विगडै छै। पिगळ राजा रै साथ थोडो, उदैचंद कटक घणौ ल्यायौ। लड़ाई होवै तौ म्हांनै कळ क चढै। रांणी अर सावतसी दोनूं आलोच करै छै। तद पिंगळ राजा नूं कह्यौ—थांरै म्हांरै सगपण तौ रहै छै। थारा देस नूं अवार चढौ तौ पाछा सू ऊभरणा[10] री तयारी करस्यां। कुवरि नै सासरे मेलस्यां[11]।

---

[1]खुश हो [2]अब [3]देरसे [4]बीमार [5]ऐसा न हो कि [6]शादी करने पर [7]गभीर विचार [8]किसी ऊँचे स्थान पर बैठ कर, चारों ओर से आने वाले लोगो को निगाह रखने वाले व्यक्ति [9]फिर [10]शादी के बाद दुबारा पीहर से लड़की को ससुराल भेजने की रस्म, [11]भेजेंगे।

पिंगळ राजा उणहीज[1] घडी चढियौ। ऊमा देवड़ी नै पीहर राखी। पिंगळ राजा परणीज नै पुंगळ नगर कुसळ खेमे आय पहुता। इतरै रिणधवळ री जांन आई। तरै सावतसी देवडो साम्हो जाय मिळियौ। 'धणी-अरज' करनै जाय कह्यौ—राज मोडा क्यूं पधारिया ? अबै कांई करां ? म्हांरो तौ दोस कोई नही। दोस आदमी रो छै। म्हे तौ लगन वेळा तांई वाट-जोई[2]। राज पधारिया नही। सोच घणोई ऊपनौ[3]। राज सरीखा सगा कठा सू मिळै ? वळे कुवरि रा करम में इसो घर नै वर लिखियौ नही। अनै जोऊ लगन टळतौ, पांच वरस तांई[4] सावो सूझै नही। इतरै अेक पुगळ गढ़ रो धणी पिंगळ राजा आवूजी री जात्रा जावतौ हुतौ सु अठै आय निसरियौ। तिणनूं कुंवरि परणाय दीधी।

इसो सुण रिणधवळ कुंवर रिसाणौ[5]—म्हांरी माग पिंगळ राजा नै परणाई ? उदैचंद राजा बोल्यौ—म्हासू सावतसी घात खेली। मन मांहे क्रोध आंण आपरै सहर गयौ। पछै यारै माहोमांही खेध[6] लागौ। सोवनगिर[7] सू चारू कानी गाव लूटण लागा। देस वसै नहीं। इसी वात पिंगळ राजा सांभळी। सांवतसी देवडा नै कहायौ—थे कहौ तौ म्हे पण थारी भीड आवां। तरै सावतसी कहायौ—राज तकलीफ मती करावौ। सोवनगिर किणही सू भी लिवै नही। आपै भखमार परा जासी।

पुगळ नगर माहि जैसळ नांम खवास छै। आपरा मन मे वुध[8] केळवै छै। घरे गाया घणी छै, तिण माहे घोळी गाय दोय निपट[9] सखरी[10] छै, त्यांनै सगळी गायां रो दूव भेळो करिनै पावै। वां दोन्यू गाया रै केरडा[11] हुवा, तिके निपट सखरा छै। त्यांनै दूध अणभावता पावै छै। घोडा दायर राखै छै। घोड़ां री पायगा माहे वधीजै छै। घोडा बरावर ग्रास पावै छै। यू जावता करता वैलिया घणा आछा हुवा। पछै अेक हळवी[12] व्‌ल[13] करवाई। दोनूं धवळ[14] जोतरिया। जैसळ आप चढ्यौ। दिन दिन रै विखै अेके कोस वधारै

---

[1]उसी [2]देखी [3]उपजा [4]तक [5]नाराज हुआ [6]झगडा [7]पर्वत विशेष [8]बुद्धि [9]अत्यत [10]अच्छी [11]बछडे [12]हल्की [13]सवारी की बैलगाडी [14]बैल।

छै । यू करता महिना बारा हुवा । वैलिया नै घणा समझाविया । पछै राजाजी नैं दिखाया । राजा देख वहोत खुस्याळ हुवौ छै ।

पिंगळ राजा सांवतसी देवडा नै आदमी मेल कहायौ—अवै थे आणौ[1] करौ । तद सावतसी घणोही विचारियौ पण वात बाध कोई वैसे नही । कुंवरि नै ऊभणो दे मेलीज । तद ऊठ, घोडा, रथ, सेजवाळ, खवास, पासवान साथे हुवा सो उदैचंद खमै[2] नहीं । वाट रोक्या छै । अनरथ होय, माल जाय । तरै सावतसी आदमी नै कह्यौ—जे मारग विखम छै । आप छांनै[3] परधान मेलो तौ आणौ करां । कुंवरि नै घरे पहुचाया पछै सारी वात सोरी[4] छै । इतरो कहि आदमी नै सीख दीधी । आदमी पाछै आय पिंगळ राजा आगे मारग री सगळी वात कही । वात सुणि पिंगळ राजा जैसळ खवास[5] नै वुलायौ, पछै कहण लागा—सांवतसी कहायौ छै—छांनै परधान मेलौ ज्यू आणौ करावा । तिणसू इतरो काम तू वळे करि—

जैसळ नै पिंगळ कहै, करि आणौ परियांण ।
दिन अेकण मे देवड़ी, जद आवै इण गाम ॥
सांचो छोरू[6] तू सही, तू सेवक तू स्याम ।
आगे तैं परणावियौ, कर वळ अेतो काम ॥
सोवनगिर थी वहु दिसे, रूधा[7] मारग घाट ।
पथी को पूगळ तणौ, वही न सकै वाट ॥
कटकी को आपा करा, तौ मन रूसै नाय ।
सांवतसी वैठा थका, वन्धन कैसे काय ॥

इतरी वात पिंगळ राजा जैसळ नै कही, ताहरा जैसळ बोल्यौ—

वचन सुणे राजा तणौ, जैसळ कीध प्रणांम ।
तौ हूं छोरू ताहरो[8], जे सारू अे काम ॥

पिंगळ राजा नै जैसळ कहै छै—देवडीजी नै दोय दिन मांहे आणू तौ चाकर । इतरो कह वैल सझै कीधी । वेही धवळ जोतरिया[9] । वैलिया किसाक छै—घडी माहे दोय जोजन[10] जाय तोही थकै नही । लोही भरै नही । अव जैसळ दीठै मारग चालै छै । वाट घाट सगळा जाणै छै । मारग मे और ही नांम ले, अर

[1] गौना [2] वरदाश्त [3] चुपके से [4] आसान [5] नाई [6] सेवक [7] वन्द हुए [8] तुम्हारा, आपका [9] जोते [10] योजन ।

ही कांम बतावै, और ही गांव बतावै। परभात रो चाल्यौ दिन आथमते[1] जाळोर आण उतरियौ। जद सावतसी राजा माम्हळियौ। ताहरा जैसळ नै मांहे बुलाय मिळिया। पछै भाली नै वात पूछी। अेकण रात मे सारा ही समभ गया। बीजै दिन छांनै चलै रह्यौ। कुवरि रो हलाणौ कियौ—ओ किणही जाण्यौ नही। अेक लाख रो ऊभणो दीधौ छै सु म्हे अठे राख्यौ छै। म्हारा मन मे छै सु मोटो, पाछा सू पोहचावस्या[2]। अबारू[3] तौ कुवरि नै मेल्हां छा। सारी सजाई कर नै मांभ रै समै मुकळावौ कीधौ। ऊमा देवडी नू सीख दीधी। उठा सू हालिया। विसांमो कठेही लै नही। पवन ज्यू चालिया जाय छै। पूगळ नगर रै विखै आय पुहता छै। बहिल[4] छोड नै उतरिया तद पिगळ राजा आपरो कटक[5] परवार लेनै साम्हौ आयौ। पछै ऊमा देवडी अर राजा रै मोड बांध नै घणा आडम्बर सू, घणा गाजा वाजा, चवर ढुळता माहे पैसारौ[6] कियौ। पटरांणी लेनै घरे आयौ—आ वात उदैस्वद रिणधवळ साभळ नै दिलगीर[7] हुवौ।

पटरांणी पिंगळ तणी, अपछर रै उणिहार।
आखै ऊमा देवडी, सुन्दर इण ससार॥
मोड ज बधी मारवी, आय अवतरी पेट।
पूरे मामे पदमणी, जनमी रायज नेट॥
सुन्दर रूप मुहामणो, कै उरवसी[8] अवतार।
सवद यु आखै पदमणी, भमर करै गुजार॥
भूपति भाऊ भाट नै, कीवी कोड पसाव[9]।
चाल्यौ नळवर गढमणी, प्रणमि पिंगळ राव॥

राजा भाऊ भाट नै लाख पसाव करि सीख दीन्ही। राजा रा मन मे घणौ उछाह छै। पटराणी सू प्रेम घणौ छै। सुख भोगता राणी रै आधार रह्यौ। नव महिना पूरा हुवा। पुत्री जनम हुवौ। नांम मारवणि दीधौ। अपछर रै उणिहार छै। भमरा कनै रहै छै सु सगळा ही पदमणी कहै छै।

वरस दोढ बोल्या पछै, कदेन वूठौ मेह।
खड[10] पाखै सविलोक खड, वसवा गया विदेह॥

---

[1]ग्रस्त होते होते [2]पहुँचाएँगे [3]अभी [4]बैल गाडी [5]फौज [6]प्रवेश [7]खिन्न चित्त [8]उर्वशी [9]कवि को दिया जाने वाला करोड रुपये की कीमत का इनाम [10]जानवरो के लिये घास।

मारवाड रा देस मे, अेक न जावै पीड ।
कै तौ होय अवरसणौ, कै फाकौ कै तीड ॥
जळ खड कारण खोजिया, देमै दाठद खान ।
पोहकर[1] खड पाणी प्रवळ, सुणि पिगळ राजान ॥

आ हकीकत जाण घान पांणी री सुणि नै पिंगळ राजा उछाळा[2] री तयारी कीवी । आपरो भाई गोपाळदास छै, तिणनै गढ री घणी भळांमण दीघी । घणौ खजांनो, सांमान गढ मे ही राख्यौ । भाई नै कह्यौ—गढ री तरफ सूं म्हे थां थका नचीता[3] छां । तद गोपाळदास वोल्यौ—महाराज, आप जमा खातर राखौ । किणही वात री चिन्ता मत करौ । अवै राजा पिंगळ सगळी मराजांम[4] राजलोक, हाथी घोड़ा ऊठ, गाय, भैंस, जावक[5] ले'र उछाळौ कियौ छै ।

पिंगळ ऊछाळौ कियौ, आयौ पोकर नीर ।
खड़ पांणी परघळ[6] तिहां, हुवौ ज सुख सरीर ॥

राजा पिंगळ वूढै पोहकर आण उतरियौ । उठै नीला खड[7] छै । निरमळ पाणी भरचा छै, तिण सू गायां भैंस्यां रो दूध सवाद ज्यादा होवण लाग्यौ । राजा अर प्रजा सुखी हुवा, तिण सूं छावण करै उठै हीज नैठा कर दीना ।

आ तौ वात, मारवणि री उतपति री कहि । हिवै साल्हकुवर री उतपति कहै—

हिव किव ढोलो नीपजै, देव तणौ परभाव ।
लेख मिळै अणचितव्यौ, जाण म जाणै भाव ॥

नळवरगढ मे नळ राजा राज करै, तिण रै दमैती पटराणी छै । पण राजा रै पुत्र नही, तिण री चिंता घणी छै—

नळ राजा नळवर रहै, आछी रिद्ध अपार ।
भली अनोपम भामणी, सुख मांणै[8] ससार ॥
इक चिन्ता मन मे घणी, नाही पुत्र रतन्न ।
तिण पाखै लागै इसो, जाणि अलूणौ अन्न ॥
माहा माणस पूछियौ, कहियौ तेण उपाय ।
पुत्र सही थापै भलौ, पोहकर देव मनाय ॥

---

[1]पुष्कर [2]शहर छोड कर विदेश के लिए रवाना होना [3]निश्चित [4]सम्पूर्ण व्यवस्था [5]कुल [6]पर्याप्त [7]घास आदि [8]उपभोग करते हैं ।

नळ राजा पुत्र रै वास्तै अनेक उपाय किया । गोगा गुसांई, खेतपाळ, देवी देवता, झाड़ा कळवाणी, जडी मूळी, ओखद[1] घणा ही उपाय कीधा तौ ही पुत्र नही। इसै समै अेक परदेशी ब्राह्मण आय निसरियौ—वेद-वक्ता, तिण नै राजा पूछियौ। तद ब्राह्मण कह्यौ—थे वाराहजी री जात्रा[2] बोलौ । थांरै पुत्र होवै । तरै राजा राणी पोहकर वाराहजी री जात्रा बोली, तद राणी दमैती रै आभा[3] रह्री । महिना पूरा हुवा । पुत्र रो जनम हुवौ ।

जात्रा बोली राय घण, प्रगटयौ पूत रतन्न ।
उच्छव[4] घण मगळ हुवा, लोक कहै धिन धिन्न ॥

राजा रै घणी खुस्याळी हुई । बधाई वटी । बदीवान[5] छोडिया । उमरावां नै घोडा सिरपाव दिया । खट वन्न पोखिया । राजा प्रजा रै घणी खुस्याळी हुई । पुत्र रो नाम साल्हकुवर दीधौ । माता अतवारो दोस जाणि ढोलो नाम दीधौ । वरस तीन हुवा, राजा राणी वेऊ[6] जणां अेक रात सूता, तरै सपनो लाधौ—जाण् पोहकरजी री जात्रा करां । परभात हुवौ जद नळराजा परधांन नै राज भुळायौ । आप लोक सहित घणौ द्रव लेय जात्रा सारू तयार हुवा । राजा दळवळ सहित रवानै हुवौ । पोहकर आण उतारौ कियौ ।

राजा मनमे चितवै, जाय करीजै जात ।
राज भळायौ आपणौ, परधांना परभात ॥
साथै रिध[7] लीन्ही घणी, आयौ पोहकर तीर ।
जात करी मन हरखियौ, निरमळ सरवर नीर ॥
जात्रा कीधी जतन सू, पूजा करै पवित्र ।
अरज अेह तोमू करू, सालम रखि मो पुत्र ॥

राजा नळ प्रथम तौ वाराहजी पूज्या । पोहकर सनान करि और ही सघळा[8] देव पूज्या । राजा राणी खुस्याळी हुवा । जात्रा प्रमाण चढी—

इण अवसर घण उनमियौ, प्रगटयौ पावस मास ।
पासै पिंगळ राय नै, किया उतारा वास ॥
उनम्यौ उत्तर दिसि, गयण[9] गरजै घोर ।
चहु दिस चमकै दामिनी, नाचै मुगणा मोर ॥

---

[1]औषधि [2]देवता के स्थान पर जाकर प्रसाद चढाना [3]गर्भ [4]उत्सव [5]कैदी [6]दोनो [7]धन-दौलत [8]सभी [9]आकाश ।



चार मास निस्छळ रहग्गा, सरवर तणै प्रसग ।
रामत ख्याल विनोद रस, मनै रहै रस रग ॥

वरसाळी लागी जद पिंगळ राजा रा डेरा पाखती[1] नळ राजा पण डेरा कर दिया । पिंगळ राजा रै वहोत प्यार छै । अेक दिन नळ राजा सिकार निसरियौ हुतौ । इतरै मू डा आगै अेक सुसी[2] आय निसरियाँ[3], तिण लारा नळ राजा घोडो दियौ । सुसी पिंगळ राजा रा डेरा माहो धस गयो ।

अेक दिना नळ राजवी, चढियौ आप सिकार ।
मूसौ दीठौ न्हासतौ[4], दीन्हौ घोडो लार ॥
जातौ पिंगळ राय- रै, गयो ज डेरा माहि ।
सूती ऊभा देवडी, कटि[5] नीचै वो जाहि ॥
दीठी राजा देवड़ी, राणी दीठौ राय ।
मन माही अचिरज[6] थियौ, अइयो रूप अथाह ॥
देखी ऊभा देवडी, राजा थांमी वाग[7] ।
जो माणइ अे नारि नै, तिणरौ मोटो भाग ॥
तुरत राय पाछौ वळचौ, आयौ सगळा सत्य ।
पिंगळ आडो आवियो, मिळिया भर नै वत्य ॥
साथ सहू तिह उतरचौ, नळ राजा ससनेह ।
कीधी भगत भली परै, पिंगळ राजा तेह ॥

राजा वाग थामै ऊभौ रहचौ । पाछौ फिरण लागौ इतरै पिंगळ राजा वारै आयौ । दोनू राजा माहोमाहि मिळिया । उतरि मतवाळ माडी । कसूवा[8] कढाया । गोठ ठावकी कर जीमण री तयारी करी । पातिया दे दोनू राजा भेळा जीमिया । पछै दोनू राजा चौपड रमै छै । इतरै मांहे मारवणि री धाय आपरा घरा सू राजलोक माहे जाय छी सु ढोलाजी रै धाय ताय दीठी तद अेकण पिगळ राजा रा चाकर नू पूछियौ—आ कुण छै ? उण कहचौ—मारवणि री धाय छै । ताहरा[9] वळै पूछियौ—आ गोद मे वेटी कुण री छै ? जद धाय वोली—वेटी पिगळ राजा री छै । जद ढोलाजी रै धायभाई पूछियौ—धायजी, थारो नाव कासू ? धाय वोली—म्हारो नाम है मा धाय । वळै पूछियौ—राजाजी रै कितरी महळ[10] छै ? वाई दोहिती कुणरी छै ? धाय वोली—राजाजी रै

---

[1]पास [2]खरगोश [3]निकला [4]दौडता [5]कटि [6]आश्चर्य
[7]लगाम [8]अफीम [9]तब [10]स्त्री ।

महळ च्यार छै। बाई दोहिनी देवड़ा री छै। वळै धायभाई पूछियौ—राजाजी रो अठै आवणौ क्यू हुवौ ? धाय बोली—अठै पांणी घणा अर उठै मेह न वूठौ, जिण सूं खड़[1] पाणी रो कसाळौ[2] हुवौ, तद अठै आय रह्या। इतरी वातां आपस में हुई। पछै नळ राजा पिंगळ राजा कना सूं सीख माग ऊठिया।

मारग में आवतां ढोलाजी नै धायभाई राजा नळ नू मारवणि री सगळी हकीकत कही। वळै कहण लागौ—मारवणि वहोत सरूप[3] छै। आ ढोलाजी नै परणाईजै तौ भली। पछै राजा नळ डेरै आयौ। आय दरीखाने वैठौ। परधानां उमरावां सारी मारवणि री हकीकत कही। वळै कह्यौ—आ सगाई होवै तौ भली। राजा नळ राजलोक माहे गया। राणिया आगे मारवणि री सरव हकीकत कही। मारवणि सू ढोला रो विवाह करस्यां। जद राणिया कह्यौ—भली वात छै। राजा नळ वारे आय कामदारा, परधानां नै कह्यौ—आप म्हे पिंगळ राजा रै उठै जावां तद थे उणारा ठावा माणसां सू सगाई रो कहाव कीजौ। परधानां कह्यौ—प्रमांण चढै। पछै नळ राजा पोसाक सारा साथ रै वणाय, सुखपाळ[4] वैसि कोतल, छडीदार, चोवदार, नकीब भली सजाई इतमाम[5] सू पिंगळ राजा रै डेरै आया। डोढिया आंगण उतरिया। ताहरा चौवदारां पिंगळ राजा नै गुदरायौ[6]। आंपणै डेरै नळ राजा पधारिया छै। इसो सुण नै पिंगळ राजा सांम्हा जाय मिळिया। दोनू राजा दरीखाने[7] गिलमा[8] रा विछावणा ऊपर वैठा। दोनू राजा राजा वाता करै छै। इतरा मे नळ राजा रै परधान पिंगळ राजा रा परधानां नू कह्यौ—थारै डेरै राजा नळ मारू मागण पधारिया छै। आ हकीकत पिंगळ राजा रा परधाना आपरा धणी नू कही—मारवणि ढोला नै परणावौ, राजा नळ भोत चाहै छै। राजा कह्यौ—भली वात। पछै राजा पिंगळ नळ राजा सू अरज करण लागौ—म्हारा देस माहे घास पाणी रो कसालौ हुवौ जद म्हे रावळी धरती मांहे आण रह्या छा। इसो सुणि नळ राजा वोलियौ—आ किसी वात। धरती राजरीज छै। म्हारी थारी अेक हीज छै।

राजा नळ आदर कियौ, जिम राजा वड लोग।
देस वास मैं रावळा, अै घोडा अै लोग॥

---

[1]घास [2]अभाव [3]सुन्दर [4]विशेष प्रकार की सवारी [5]ठाट वाट से [6]खवर की [7]मर्दाना वैठक का कमरा [8]गिद्दे।

पिंगळ राजा घणौ खुस्याळ हुवौ। ताहरा राजा नळ बोल्यौ—मारू म्हारे खोळै[1] घाली। ताहरा पिंगळ बोल्यौ—आप फुरमाव्यौ[2] सु कबूल कियौ। पण म्हे अवार वीखै आया छा। ताहरा नळ राजा बोल्यौ—वीखौ क्यांरौ छै? ज्यारै हाथी घोडा हसम[3] रैत सारी ही साथै छै। थे मारू म्हांनै द्यौ, तिण सू आपणै विसेख हितारथ[4] होय। ताहरां पिंगळ राजा कह्यौ—प्रमाण। आप राजी तिकू कबूल। आ मारवणि म्हे आपरै खोळै घाली। इसो सुण नळ राजा खुस्याळ हुवौ।

सगपण होवै जो गुणी, वधै[5] प्रीत असमांन।
नळवर राजा पिंगळै, कहिया अेह्वा वैण॥
कुवर अनोपम माहरै, सग जोडी मसार।
तिण नै मारू दीजिये, दीसै देवकुमार॥
तव राजा पिंगळ कहै, वात अेह प्रमाण।
सही करै सैणा तरौ, पूछी नै परियाण॥

नळ राजा बोल्यौ—अेकरसा कुवरि नै बुलावौ, ज्यू म्हे देखा। हेमां वाय मारू नै नळ राजा री हजूर ल्याई। नळ राजा देख खुस्याळ हुवौ।

नळ जद निरखी मारवी, जाणै वियौ[6] मयक।
उभाखौ[7] आनीर अलि, कोई नही कळंक॥

नळ राजा मारवणि री खोळ भरी। सीख दीवी। पछै नळ राजा पिंगळ राजा कना सू सीख माग डेरै आया।

राजा नळ राजलोक माहे गयौ अर कह्यौ—म्हे कवर री सगाई कीवी। ताहरा सारो राजलोक राजी हुवौ। राजा पिंगळ पण राजलोक माहे गयौ। मारवणि नै लडावण[8] लागौ। तद ऊमा देवडी बोली—आज वाई नै क्यू लडावौ छौ। ताहरा पिंगळ राजा हस नै कह्यौ—मारवणि ढोला नै दीधी। आज सगाई करी। आ हकीकत सुणि ऊमा देवडी बोली—धिग[9] म्हारो सुहाग। म्हारी डीकरी मोनू विण पूछिया ही दीधी। म्हारै तौ बेटी जीव छै।

आखै[10] उमा देवडी, मालम हीय विचार।
मोह पियारी मारवी, दीधी ममदा पार॥

---

[1]गोद [2]कहो [3]सेना [4]हितार्थ [5]बढे [6]दूसरा [7]उजाला [8]प्यार करने लगा [9]धिक [10]कहती है।

कथा अणदीठी कुवर, कियौ ज सनमन[1] काय ।
पटराणी सू पी कहै, जिहा सीर त्या जाय ।।
राजा राणी सू कहै, देखे कवर बुलाय ।
तौ सगपण कीजौ तरै, दीठा आवै दाय ।।

ताहरां पिंगळ राजा री राणी नळराजा नू कहाडियौ—जु आवतही कवरजी नै हेकर सांमेळज्यौ । ताहरां नळ राजा पोसाक बणाय, सिरपाव पहिराय मेलियौ ।

नळवर नळ राजा तणौ, ढोलो कवर अनूप ।
राणी राव पिंगळ तणी, रीझै देखी रूप ।।

रांणी कवर नू देख वहोत राजी हुई । खोळ भराई । सीख दीधी अर पिंगळ राजा सू कह्यौ—

पिंगळ रावरी मारवी, दीधी समदा पार ।
आखै ऊमा देवडी, वालम हीय विचार ।।

राणी वोली—महाराज, आप सगाई कीवी सो तौ भलो कांम कियौ पण अवै विवाह तौ पिंगळ जाय कीजौ । अवार विवाह करस्यां तौ लोग कहसी—वेटी देय वीखौ काढियौ ।

राणी राजा सू कहै, वात विचारी जोय ।
विखै दिया ज डीकरी[2], हासौ करसी लोय[3] ।।

ताहरा पिंगळ राजा वोल्यौ—

जिम थे जाणौ तिम करौ, राणी सुणौ सविद्ध ।
राजा राणी सू कहै, म्हे यो सगपण किद्ध ।।

इतरी वारता राजा राणी रै हुई । पछै भला पिडत वुलाय लगन थापियौ[4] । रगराग हुवै छै । पथर रा तोरण थाभ रोप्या छै । घणा उछाह[5] करै छै ।

नीले नेत्र माण्डहो[6], तोरण थभ अमोल ।
गाव वधेरे परणिया, मारवणी नै ढोल ।।
पिंगळ विवाह रचावियौ, पढिया वेद पुराण ।
धण भटियाणी मारवी, ढोलो कूरम राण ।।
पिंगळ राजा री कुवरि, नळ रो कवर सगाह ।
ढोलो मारु परणिया, छोटी ऊमर माह ।।

[1]सगाई [2]लडकी [3]लोक [4]निश्चित किया [5]आनन्द [6]वधू पक्ष के लोग ।

मीज समर्पं मागणा, वस ववारैं वात।
ढोने परणी मारवी, दे कोड़ी लग्र दान॥
मारु मिरै महळिया[1], ढोलो मिर कवराह।
कड़वा वोल न जाणहि, मीठा बोलणियाह॥
अति मोटै आडवरा, कियो विवाह जेण।
अरथ गरथ खरचा वहुत, पिंगळ नरवर तेण॥

इण तरै घणा उछाह सू विवाह कीधौ। पछै पिंगळ राजा डायजै[2] घोड़ा, ऊठ, चाकर, छोकरी, सोना-रूपा रा थाळ और ही घणौ द्रव्य दीन्हौ। नीलकरि[3] सुखपाळ, रथ १२, सेजवाळ १२, इतरा डायजे दीन्हा।

अवै पुगळ नगर सू पिंगळ राजा रै भाई गोपाळदास कागद मेल्हियौ—आप वेगा[4] आवज्यौ। अठै सुगाळ हुवौ छै। पछै कागद लेनै राजा पिंगळ नळ राजा रै डेरै आया। कागद दिखाय नैं अरज कीवी—अवै म्हानू घरा री सीख होवै। पछै नळ राजा घणी मनुहार सू गोठ जिमाई। पिंगळ राजा नै सीख दीवी। नळ राजा पण पहुंचावण आया छै। उठै नळ राजा कह्यौ—थे इतौ डायजो दीन्हौ सु तौ वडो काम कियौ पण मारू नै अेकरसा मेल्हौ। ताहरा पिंगळ बोल्यौ—मारू भोळी छै। धाय विनां, माय विना घडी अेक रहै नही। अवार तौ वरस सात अथवा आठ ताई कोई मेल्हा नही। ताहरा नळ राजा पण सीख माग पाछौ आयौ। आपरा देस नै चढियौ।

पिंगळ पुगळ आविया, देसे थयौ सुगाळ।
तिन्है न मेली सासरै, अजेस मारू वाळ[5]॥
नळ राजा हिव आपणा, आयौ नरवर देस।
गाम गाम रा लोक सह, लेले आया पेस॥
नळ राजा आवै सकळ, परजा वात सुणाय।
जात करै आया घरै, ढोला नै परणाय॥

नळ राजा परधानां, लोका आगे, कवर परणाया रा सगळा समाचार कह्या। रावणौ[6] सारो ही राजी हुवौ। पिंगळ राजा पण भाई गोपाळदास आगै और ही रावणा आगै मारू परणाया रा समाचार कह्या। तरै सहकोई राजी हुवा। वळे कहण लागा—थे वडो काम कियौ।

---

[1]महिलाओ मे [2]दहेज मे [3]हाथी विशेष [4]जल्दी [5]छोटी [6]राजवर्गी।

यूं करतां मारवणि वरस तेरा री हुई। ढोलो कवर पण वरस सोळा री हुवौ छै।

साल्हकुवर आयौ हिमैं[1], जोवन में भरपूर।
राजा मन मे जाणियौ, पिंगळ हुई जहूर[2] ॥
मत कोई जाणावज्यो, मारवणि विरतत[3] ।
भुय अळगीं नै भुच नर, थळ नै भुरट अनंत ॥

नळ राजा आपरा खवास पासवाना सगळाहीनै वरजिया—ढोला नै मारवणि री दिस जणावौ मती। ढोला री सगाई माळवै करस्यां।

माळव देस सुहामणौ, जंह सुखिया मह्लोक।
परणावीजै माल्ह नै, देसी सगळा थोक ॥
माळव देस सुहावणौ, भीमसेन भूपाळ।
माळवणि धी तनु तणि, सुन्दर नै सुकुमार ॥

माळव देस रै विखै भीमसेन राजा कनै नळ राजा परधान मेल्हिया। तद परधाना भीमसेन राजा नू कह्यौ—राजा री कुवरि नळ राजा मागै छै। कंवर आपरी झोळिया[4] घालै छै। तद भीमसेन राजी हुवौ। आपरा कुटव राजलोका नै पूछी सावो थापियौ। सावो देनै आपरा परधान साथै मेल्हिया तिकै आण नळ राजा सू मिळिया। सावो झिलायौ[5]। नळ राजा जान करि चढियौ। आय नै ढोला नै माळवणि परणाई।

माळव देसावर धणी, राजा भीम नरिंद[6] ।
तासु तणी धी माळवणि, सुन्दर सिर मकरद ॥
साल्हकुवर रो नातरौ, कियौ मन आणद।
सजणा मे सोहै कुवर, ज्यू तारा मे चद ॥
खरचै अरथ गरथ घणा, पण पा इधकी प्रीत।
सारीखो दाईं[7] विना, चउटै नाही चीत ॥
हाथ मुकावण हाथिया, दीन्हा तिण सै पच।
नगर पचास दिया वळे, अेराकी सै पच ॥
ढोलो तिण परणावियौ, अणगळ दीधा हत्थ।
ढोलो अति सुख भोगवै, माळवणि रै सत्थ ॥

भीमसेन राजा आपरी बेटी ढोला नू परणाई। घणौ दत्त डायजौ ३०५ हाथी,

---

[1] अब [2] प्रकाशमान [3] व्रतात [4] गोद [5] तय किया [6] राजा [7] जोडी।

पांच सौ घोडा, पचास नगर इतरा दे सीख[1] दीवी । नळ राजा ढोलै नै परणाय घरे आया । माळवणि अति चतुर छै तिण सू कंवरजी अति हेत राखै छै । महलांहीज रहै छै—

आया नळवर गढ हिवै, जोवन जोग प्रताप ।
आया मन अति रग सू, सुख माहे दिन जात ॥
चतुरपणै लागी हिवै, ढोला सेती प्रीत ।
लागौ रग मजीठ ज्यू, चतुरपणै बहु चीत ॥
ढोलो माळवणि हिवै, करै कतूहळ केळ ।
ढोलो मनमांनी घणौ, माळवणि मनमेळ ॥
सोळै ज वरसा माळवि, कतज वरसां वीस ।
जोड़ी इसडी तो मिळै, जो तूठे जगदीस ॥
हसै विकसै माळवी, अर गळ लावै कत ।
ढोलो मोहित अति घणौ, दाडिम जेहा दत ॥
माळवणि जाणै घणू[2], मारू मायै सल्ल[3] ।
पिण ढोलो जाणै नही, वीछडिया वेवल्ह ॥
वैण न लोपै माळविण, इणनै सढै नेह ।
प्रीत ववारण सुखकरण, वलि मीठे वयणेह ॥
नित नवळी मौजां करै, नित नित नवळी सेज ।
ढोलो माळवण अेकठा, इधकै[4] इवकै हेज[5] ॥
ढोलो मोह्यौ[6] माळवि, ज्यू मधुकर वयणेह ।
वहु वा मन लागी इसौ, सारीखै सयणेह ॥

ढोलोजी माळवणि रै वसि हुवा छै, तिण सू माळवणि ऊपर सासू घणी रीस मे छै ।

अेक दिन रै समाजोग कंवरजी पण वारै पधारिया छै । खवास पासवानां मुजरो कियौ, तद माळवणि विचारियौ[7] आज तो सासू रै पगै लागण जावू । ताहरा घणा अहकार मांन सू पगे लागण चाली । सासू माळवणि नै देख वोलती हुई—हूं तो अठा सू परी ऊठस्यू । माळवणि रो मुहडौ[8] देखू नही । पगे लगाडूं नही । तरै सासू रा मुंहडा आगै दोय च्यार पुखती-वडेरी लुगाया[9] हुती, त्या

---

[1]विदा [2]बहुत [3]शल्य [4]असाधारण [5]प्रेम [6]मोहित किया [7]विचार किया [8]मुँह [9]स्त्रियाँ ।

कह्यौ—थे गुनौ माफ करौ। पगे लागणदयौ। तद वांरौ कह्यौ मांनियौ। माळवणि आय पगे लागी। जद सासू बोली—कोई नही, अर कहण लागी—

गरव गहेली माळवण, कहियौ कोइक बोल।
मारवणि अळगी हुई, तद मोह्यौ तें ढोल॥

सासू आपरी सखिया नू कहै लागी—वडी वहू मारवणि रो आंणौ करस्या। इसौ सुण माळवणि सासू कन्हा[1] सूं मुरडि[2] परी ऊठी। माळवणि घरे जाय विचारियौ—सासू सुसरौ मो ऊपर गाढा रीस मे छै, सु मारवणि रो आणौ करासी। म्हारी दौड तौ कवरजी ताई छै, सु हूं म्हारै जतन गाढौ करू।

तरै पाधरी कवरजी री हजूर आई। कंवरजी ढोलिये वैठा छै। माळवणि आण मुजरौ कियौ, तद कवरजी हाथ पकड नै घणा आदर सूं माळवणि नै ढोलिये बैसाणी। पण माळवणि बेदल[3] घणी छै। तद कवरजी पूछियौ—थे दिलगीर क्यूं? माळवणि बोली—हज आज मोनू सखिया कहे लागी—तू इतरौ सुहाग रो गरव करै सु तौने कवरजी सुहाग रो कासूं[4] दीन्हौ? ढोलोजी बोलिया—थं फिकर मत करौ। कहस्यौ तिको देस्या। था उपरन्त[5] म्हारै काई छै। म्हारो जीव छै सोही म्हे थानू दीन्हौ छै। और ही थांरे जोईजे सो मागौ। हूं थानै देस्यू। तद माळवणि बोली—आप देस्यौ पण सुसरोजी नही देसी। ढोलोजी बोलिया—मोनू चावसी सु थारो हुकम कोई लोपै नही। ताहरा माळवणि बोली—च्यारे दिस रा मारग म्हानै सूपीजै। डोढी म्हांनै सूपी जै। म्हारै विगर[6] हुकम आपसू कोई पगे लाग मिलण पावै नही। वळे डोढीदार, खवास, पासवान, रावळीहजूर सारे ही म्हाराहीज रहै। इतरो कवरजी कन्हा सू मांगू छू।

कवरजी इण वात रो कागद लिख दीन्हौ। कबूल कियौ। माळवणि आपरा इतवारी चाकर, भला भला ठावा माणस आदमी सै दौड बुलाया। तिणा नै घोडा सिरपाव[7] घणौ द्रव दे राजी किया। पछै कितराहेक नै कह्यौ—थे आदमी चाळीस अथवा पचास ताई[8] तौ च्यारां ही कानी नळवरगढ रा दरवाजा रहौ। कितराहेक नै डोढिया राख्या। कितराहेक नै कवरजी री हजूर राख्या। माहिला वारलां सै कोई नै कह्यौ—कोई पूगळगढ था आदमी आवै तिण कन्है

---

[1]पास [2]गुस्से मे वल खाकर [3]हताश [4]क्या [5]बढकर [6]विना [7]पूरी पोसाक [8]तक।

मारवणि रो कागद होय तौ कागद खोस नै फाड नाखज्यौ अथवा म्हानै पहु'चतौ करज्यौ। आदमिया नै मार नाखज्यौ। इसी भळावण[1] दे, च्यार दरवाजा आदमी राख्या—

तिहा माळवण राखिया, पीहर पोहरायत[2]।
पथी जु पिगळ मारगा, मारया जावै नित्त ॥

इण भाति माळवणि ढोलाजी नै वसि किया छै।

इतरा मांही नळवरगढ मे अेक परदेसी घोडा रो सौदागर घोडा लेय नै आयौ छै। उणारा घोडा घणा ढोलाजी लिया। ताहरा सौदागर मास पाच नळवरगढ माहे रह्यौ। उठा सू पईसा घोडा रा चुकाय दिया तद सौदागर परो हालियौ। पूंगळगढ आण[3] उतरियौ छै। अठै पिंगळ राजा घणी मनुहार करि राखियौ। घोडा दो च्यार मोल लिया। हिवै मारवणि री वात चालै छै।

जिम जिम घण अमला[4] किया, तार चढती जाय।
तिम तिम मारवणी तणौ, तन तरणायौ[5] थाय ॥
हस गवण कदळी सुजघ, कटि केहरि जिम खीण।
मुख ससहर खजन नयण, कुच श्रीफळ कठ वीण ॥

मारवणि पदमणि, नै चद्रमा सो वदन, म्रगलोचणी, हस की सी गति, कटि सिंघ सरीखी छै। काया सोळमो सोनौ, मुख री सौरम किस्तूरी जिसी छै। गात री सौरम[6] चदण सरीखी छै। नासिका जाणै सुवा री चाच तथा दीपक री सिखा सरीखी छै। पयोघर श्रीफळ जिसा। वाणी कोयल जिसी। दात जाणै दाडिम कुळी। वेणी जाणै नागणी। वाह जाणै चपा री डाळ। अेडो सुपारी सी नै पगथळी स्यान[7] री जीभ सरीखी छै। वळे मारवणि माहे तौ अनेक गुण छै पण कवेस्वर कहै छै—अेकण जीभ करि कितराहेक गुण कह्या जाय। वळे मारवणि रै सातवीसी सहेल्या छै तिके पण महा सुघड छै। त्यासू मारवणि वात विगत करनै दिन वितावै छै।

इसै समै मारवणि गाव सू अध कोसेक वाग छै उठै खेलण नै गई। उठै ही सौदागर उतरिया छै।

---

[1]भलावण [2]पहरेदार [3]आकर [4]अधिकार [5]उभार पर [6]सौरभ [7]स्वान।

नाभ्र समैं सौदागरे, आ यण नयर उचार।
बैठा हस तिण अवसरे[1], नयणा नीर निखार॥

सौदागर मारवणि नै महा अद्‌भुत देवगना जिमी देखनै कह्यौ—

सुन्दर सोहग सुन्दरी, अहर[2] अलता[3] रंग।
केहर लकी खीण कटि, कोमळ नेत्र कुरग॥

वळे सखिया नै पूछियौ—

तिण देखत ही पूछियौ, कुण है राजकुमारि।
किह पीहर किह सासरो, विगत कहौ सुविचारि॥

सहेलिया बोली—

कुवरि पिंगळ राव री, मारवणि इण नाम।
नळवरगढ ढोले कुवर, परणी पोहकर[4] ठाम॥
वात सुणी सौदागरे, जाण्यौ सवै व्रतात।
वाळपणे परण्या विन्हे[5], अन्तर पड्यौ अनन्त॥

फेर सौदागर कह्यौ—

सौ जोयण जे मेल्हिया, ढोले कुवर तुम्हा।
को अवगुण था गोरडी, विघ दाखवौ[6] अम्हा॥
सिन्ध परै सौ जोयणा[7] झिळमिळ बीजळियाह।
ढोलो नरवर सैंरिया[8] मरवण पुगळियाह॥

इतरा माहे सखिया बोली—सौदागरजी, थे कठासू पधारिया छौ ? ताहरा सौदागर बोल्यौ—हूं नळवरगढ घोडा वेचण गयौ छौ, उठै महीना पाच-सात रह्यौ। ढोलेजी म्हारा घोडा लिया। मोसूं घणी महरवानगी करै छै। म्हारै भाई हुवा छै। तद सहेलिया बोली—उठा री म्हांने हकीकत तौ कहौ। कासूं रग-ढग छै ? इतरै सौदागर नळवरगढ री हकीकत कहै छै।

इतरै समै[9] पिंगळ राजा रो खवास घोडो फेरवा[10] सारूं आण निसरियौ[11] सु ऊ पण वैस गयौ। मारवणि छानैसी वाता साभळै[12] छै। सौदागर बोल्यौ—ढोलाजी तौ भीमसेन राजा री वेटी माळवणि परणियौ छै, तिण रै वस[13] घणौ

---

[1]अवसर पर [2]अधर [3]लाल [4]पुष्कर [5]दोनो [6]कहो [7]योजनो पर [8]शहर मे [9]समय [10]टहलाने [11]निकला [12]सुनती है [13]वश मे।



छै। च्यारा ही दरवाजा आपरा आदमी राख्या छै। खवास ढोलाजी कनै आपरा पीहर रा राख्या छै। डोढियां आदमी आपरा पीहर रा छै। अठा सू आदमी मेल्हौ छै जिको तौ नळवरगढ मे ही घसण[1] पावै नही। कागळ[2] खोस लेवै सु तौ माळवणि नै जाय सूपै अर आदमी नै मारनाखै छै।

आ हकीकत सुणि राजा रै खवास राजा री हजूर कही। ताहरां पिंगळ राजा सौदागर नै बुलाय सारा समचार पूछिया। सौदागर सारा ही कह्या। वळे सौदागर बोल्यौ—कवर मोटौ दातार, कामदेव रो-अवतार छै। आपरी बेटी पण पदमणी छै। इतरी हकीकत सुण सौदागर नू सीख दीवी। पिंगळ राजा रै मन मे चिन्ता घणी छै—

सौदागर सदेसडा, सामळिया श्रवणेह।
मारवणि मनमथ हुई, मूक्यौ[3] जळ नयणेह॥
सवै सहेली साथ करि, घरि आवै मैंमत[4]।
स्यामा[5] श्रावण सालियौ, चलै न चाहौ चित्त॥

मारवणि विरह री मैंमंत हुई थकी सखिया साथै चाली आवै छै। इसै समै उतराद री घटा हुती तिण माहे मेह गाजियौ। तद मारू बोली—

वीजळिया निलज्जिया[6], जळहर तूही लज्जि।
सूनी सेज विदेस पिव, मुघरइ मुघरड गज्जि॥

इतरै वीज[7] खिवी[8] ताहरा वीज नै दूहो कह्यौ—

वीजुळिया चहळावहळि, आभइ आभइ अेक।
कदी मिळू उण साहिवा, कर काजळ की रेख॥
वीजुळिया चहळावहळि, आभइ आभइ च्यारि।
कद रे मिलूली सज्जणा, लावी वाह पसारि॥

इतरी वात करती थकी, विरह-मैंमत हुई मारू घर आई। पण सखिया सू वात विगत करै नही। मन माही कुवरजी वस रह्या छै सु रातै सूता सपनो लाधौ—जाणै कवरजी आण मिळिया छै। जागी जद देखै तौ क्यूही नही। जद मारू अेकण सहेली नू कहै—

---

[1]घुसने [2]कागज [3]ढलकाये [4]विभोर [5]स्यामा [6]निर्लज्ज [7]विजली [8]चमकी।

जाणू हू हिवडै हुवौ, सैणा हदो[1] साथ ।
जे सुपनौ साचौ हुवै, तौ घालू गळ वाथ ॥

सुहिणा[2] आया फिर गया, मैं सर भरिया रोय ।
आय सुहागण नीदडी, सजना देखू सोय ॥

जद जागू तद अेकली, जद सोऊ तद वेल[3] ।
सुपना मोनै छेतरी[4], वीजी तीजी हेल ॥

सुपना तौ मोनै दही[5], तोनै दहज्यौ अग्ग ।
सौ कोसा सज्जण वसै, सूती थी गळ लग्ग ॥

सुपना मे सज्जण मिळ्या, मैं भर घाली वत्थ ।
नींद गई पिउ वीछड्या, जागत पटकू हत्थ ॥

जव सोऊ तव जागवै, जव जागू तव जाय ।
मारू ढोलो सभरै[6], इण पण रयण विहाय ॥

सहिया सोइ विदेस पिव, तन हि न जावै ताप ।
वावहिया[7] आसाढ जिम, विरहण करै विलाप ॥

सौ जोजण[8] सज्जण वसै, रैण सतावै आय ।
इण परदेसी वल्लहै[9], खरी सताई माय ॥

सपनै सज्जण पाइयां, हू सूती गळ लाय ।
औंर न खोलू अंखडी, मत सज्जण फिर जाय ॥

सखी सहेजा माणसा[10], सुपना पिव मिळियाह ।
फिट रै नयण कुलक्खणा, जागी नै गमियाह[11] ॥

मारवणि सखिया नै पूछै—

मारवणि सखिया कहै, मो परणाई केथ ।
पीव कठै जाणा नही, हू अेकलडी अेथ ॥

इतरा विलाप करण लागी तद सहेल्या वोली—

इक म्हा मन इचरज[12] हुवौ, साभळ[13] वात सप्रेम ।
त्या अणदीठा[14] सज्जणा, क्यू कर लागौ प्रेम ॥

---

[1] का [2] सपना [3] दो [4] छली [5] जलाई [6] याद करती है [7] पपीहा [8] योजन [9] वल्लभ [10] आनन्द लूटेंगे [11] खोगये [12] आश्चर्य [13] सुनो [14] अनदेखे ।

सगळी सखियां मारू नै कहै लागी—बाईजी थांनै विना देख्यां प्रेम उलटियौ सु कांई जांणीजै ? परणिया जद तौ वरस डोढ रा छा। कंवरजी तीन वरस रा छा। वीवाह थाळी मांहे हुवौ छौ सु थानैं याद ही आवै नही। कवरजी नू पिछांणौ[1] ही नही, अर प्रेम इतरो लगायौ छै। थे रात दिन कवरजी रो समरण[2] करौ छौ। अेक पल भूलौ न छौ सु म्हानैं घणौ इचरज हुवै।

सखिया आखैं[3] मारवी, तू मन निहचैं[4] राख।
आळजजाळ[5] मत करै, म्हासू साची आख॥

तद मारू बोली—थे अणदीठा री वात कही सु सांची, पण सिंघ रा बच्चा नू हाथी मारणा कुण सिखावै छै ? अर थे कांई और वात मन मे विचारता होस्यौ पण म्हारै तौ मन अेक निकेवळ[6] ध्यान कवरजी रो हीज छै। कंवरजी री सूरत म्हारा हिरदा मे वस रही छै। रात सूती नै कवरजी आण जगावै छै। रात-रात भर नीद आवै नही। म्हांरी खोड़[7] तौ अठै छै अर जीव नळवरगढ मे छै। थे धीरज वधावौ सु म्हे वात जांणा छा। पण मन कवरजी सू मिलण नै घणौ आखतौ[8] पडै छै।

सखी थे सज्जण वल्लहा, जे अणदीठा तोय।
पल पल भीतर सभरै[9], न विसरै खिण कोय॥
स सनेही समदा परै, वसैं जु हीय मझार।
कु सनेही घर आगणैं, सात समदा पार॥
जे जीवण ज्याही तणौ, सो ज्या चित्त वसत।
धारा दूध पयोहरा, क्यू वाळक चूघत॥

यू विलाप करतां रात नीठ[10] काढी। परभात रै समैं सखिया जाय राणी देवडी आगे मारवणि री सारी हकीकत कही—

सखिया रांणी सू सकळ, विवराये[11] सहनांणि।
साल्हकुवर सुपनै मिळै, पदमण अग कुमलाणि॥
ढोला सू सुपनै मिळै, मारू चित्त उदास।
कागद वेगा मोकळौ[12], खवर मगावौ जास॥

---

[1]पहिचानते [2]स्मरण [3]कहती हैं [4]निश्चिन्त [5]टालमटोल [6]केवल मात्र [7]शरीर [8]उतावला [9]याद करती है [10]मुश्किल से [11]वर्णन किया [12]भेजो।

अवै राणी सखिया गोढै आई। तरै समाचार साभळ[1] नै सखिया नू पाछौ कहै लागी—ढोलोजी तो माळवणि रै वस छै सु माळवणि मारग आपरै वसि कीना छै। आपणौ कासीद जाय तिको मारियौ जाय छै। मैं तौ कागळ समाचार घणा ही मेल्या पण पाछौ कोई आवै नही। वळे आदमी मेल्हू जिका मरण सू डरता जाय कोई नही।

पूगळ थी नित परठिया[2], ढोले निरत न होय।
माळवणी मारै तिहा, पूगळ पथी कोय॥
वाट न कोई वहि सकै, रूधा घाट खळाह[3]।
नळवरगढ पहुचै नही, सदेसा सयणाह॥

वळे राणी सखिया नै कहै—

राणी सखिया नै कहै, सुण वातडी समद्ध।
समझाई राखौ सवै, मारू महिला मद्ध॥

सखिया पाछी मारवणि कन्है आई। पाछा सू राणी वळे आदमी मेल्यौ—ढोलाजी कन्है। साथे कागद दीन्हौ, तिण माहे घणी मनुहार लिखी। कासीद[4] नळवरगढ जाय पहुतो[5]। तद माळवणि रा आदमिया कासीद नू मार नाखियौ। कागद लेजाय माळवणि नै सूप्यौ, तिण कागद वाच फाड नाखियौ। आदमिया नू सिरपाव दियौ। यू करता वरस वीतौ पण ढोलाजी ताई कागद कोई पहुतो नही। अेक दिन रै समाजोग तिखडिये महल मारवणिजी पोढिया छै। इतरै पपीहो वोल्यौ, तिण नू कहै लागी—

काम जगावण पिय कहण, वोल न वावहियाह[6]।
हू थ्हू चाकर गोरडी, कहि प्रिय आवण काह॥

सखिया मो परदेस पिव, तन ही न जावे ताप।
वावहिया आसाढ जिम, विरहण करे विलाप॥

वावहिया नै विरहणी, या विहु अेक सभाव।
जव ही वरसै घन घणौ, तवहि कहै पिव आव॥

वावहिया डूगर दहण[7], छडि हमारो गाव।
सारी रात पुकारियौ, ले ले पिव को नाव॥

---

[1]सुनकर [2]भेजे [3]दुश्मनो से [4]पत्रवाहक [5]पहुंचा [6]पपीहा [7]जलाने वाला।



वावहिया नील पंखिया, मगर[1] ज काळी रेह ।
मत पावस सुणि विरहणी, तलफ तलफ जिव देह ।।

वावहिया चढि डूगरे, चढि ऊंचे री पाज ।
मत ही साहिव वाहुडै, सुण मेहा की गाज ।।

विलापात करतां करतां मारवणि नूं घडी दो मीट लागी छै । इसै समै सर मांहे कुरभा वोली । तद मारू जाग नै कुरभा सू वोली—

कुरभडियां कुरळाइयां[2], घरि पाछिले दरग[3] ।
सूती सज्जण संभरया[4], करवत वूही अंग ।।

कुरभडिया कळिअळ कियँ, मरवर पहली तीर ।
निसि भर सज्जण सल्लिया, नयणे वूहा नीर ।।

सखियां कुरभा नै कहै छै—म्हारी वाईजी थानै ओळंभो[5] देवै छै । थे अवोली रहौ । मारू नै थारो साद ओरमो[6] लागै छै । थे रात नै क्यू कुरळौ छौ । थारा भरतार[7] तौ कन्है छै । त्रीजी थांनै किण वात री चाह छै सु थे कुरळौ ? म्हारी वाई नै थांरो साद सुणियां विरह उलटै छै, जद थानै ओळभा देवै छै । इतरौ सुण कुरभा बोली—

जुरा रूप जोवन खिसै, घटै ज नवळो नेह ।
अेक दिहाडै[8] सज्जणा, जम करसी जुध अेह ।।

मारू वोली—

रातै सारस कुरळिया, गाजि रहे सव ताल ।
जाकी जोडी वीछडै, ताको कूण हवाल ।।

वळे मारू कुरभा नै कहै लागी—

कुरभडिया द्यौ पांखडी, थांकउ विनउ वहेसि ।
सायर लघी[9] प्री मिळउ, प्री मिळि पाछी देसि ।।

म्हे कुरभा महिरांण री, पाखां किणहि न देसि ।
भरिया सर देखी रहा, उड आघेरि[10] वहेसि ।।

---

[1]पीठ पर [2]करुण स्वर में बोलने पर [3]पानी के गड्ढे पर [4]याद किया [5]उपालंभ [6]अनखावना, विरह-व्यथा जगाने वाला [7]पति [8]दिन [9]लाघकर [10]वहुत दूर ।



आथमणी[1] उपराठिया, दिक्खण सामहियाह[2] ।
अेक मदेसो कुरझडी, ढोला नू कहियाह ॥
माणस हवा त मुख चवा[3], म्हे छा कूझडियांह ।
पिव सदेसो पाठविसु, लिखदे पाखडियाह ॥
पाखे पाणी थांहरड, जळि काजळ गहिलाइ ।
सयणा तणा संदेसडा, मुख वचने कहिवाइ ॥

इतरा दूहा विलापात रा मारवणि कहिया तिके ऊमा देवडी सरव सुण्या । सुण नै पिंगळ राजा आगे जाय हकीकत कही—

संहि प्रियतम मदेसडा, मारवणि कहियाह ।
माता मन मे जाणियौ, विरह वियाप थियाह ॥
राणी ऊमा साभळ्या[4], मारू तणा ज वैण ।
ऊमा मन मे जाणियौ, मारू मेलू सैण ॥
आखै ऊमा देवड़ी, साभळ पिंगळ राव ।
विरह वियापी[5] मारवी, नहिं राखण रै दाव ॥

ऊमा देवड़ी राजा पिंगळ नै सारी हकीकत कही । ताहरा राजा पिंगळ वोल्यौ—

नित नित नवळा साडिया, नित नित नवळा साज ।
पिंगळ राजा पाठवै, ढोला तेडण काज ॥
उहा था इथ आवै नही, इहा का उथ न जाय ।
ढोला-मारु सदेसडा, वीच वटाऊ[6] खाय ॥

पिंगळ राजा ऊमा देवडी नै कहण लागौ—करा काई, आदमी तौ घणा ही मेल्हिया[7] पण पाछौ कोई आयौ नही । सारा ही मारिया गया ।

राजाजी घणा दलगीर थका वैठा छै, तरै राणी वोली—मैं तौ आपनै कह्यौ छौ—इतरी अळगी[8] मत द्यौ । तद राजा वोलियौ—सू तौ पार पडी पण अवै थे कहौ तौ भीमसेन पुरोहित नै मेल्हा[9] । राणी वोली —भली वात छै, मेल्हौ । तद भीमसेन पुरोहित नू हजूर वुलाय नै राजा कह्यौ—पुरोहितजी, थे नळवर-गढ पधारौ । कवर नै वुलाय ल्यावौ । ताहरा पुरोहित कह्यौ—प्रमाण ऊचा लेस्यू । इतरा माहे मारवणि री अेक सहेली सुणती हुती तिण आय मारवणि नै कह्यौ—

---

[1]पश्चिम [2]सामने, तरफ [3]कहें [4]सुने [5]व्याप्त हुई [6]वटोही
[7]भेजे [8]दूर [9]भेजें ।



राजा पुरोहित तेडियउ[1], जाई ढोलउ लाव ।
सखिया मारू नू कहइ, हुवउ आणंद उछाव ॥

ताहरा मारवणि अेक सहेली नू दूहो सिखाय नै पाछी मेल्ही—

वावा विप्र न मोकळी, ज्याकी उत्तम जात ।
मोकळ घर का मगता, विरह जगावै रात ॥
प्रोहित न मेल्हौ वापजी, मेल्हौ मंगणहार ।
गाय वजाय रिझावसी, ल्यावै साल्हकुमार ॥
ढाढी गुणी वोलाविया[2] राजा तिणही ताल ।
नरवरगढ ढोलइ कन्हइ, जावउ वागर वाल ॥

राजाजी अे दूहा साभळ नै पुरोहितजी नै तौ नेठिया । ढाढी दोय भाई छा त्यानै वुलाया—

राजा प्रोहित राखियौ, मेल्या मागणहार ।
जे भेदक[3] गीता तणा, वात करइ सुविचार ॥

राजाजी, दोनू भाई ढाढियां नै कहण लागा—देखा म्हारा नाहरा, जावता सूं जाज्यौ । घणा सावधान रहज्यौ । और ही गाव रो, और ही काम रो नाम लीज्यौ । कागद अेक पिंगळ राजा नै मेल्हियो[4] तिण माहे घणी अरज लिखी छै । अेक कागद ऊमा देवडी दमैतीजी नै मेल्हियौ तिण मे अरज लिखी—म्हे तौ आप रा थका छा । वाई नै आपरै खोळै[5] घाली छी । अवै तो कवरजी नै वेगा भेल्हज्यौ । वळे पिंगळ राजा ढाढिया नै घोड़ा दोय पाच-पाच सै रिपियां रा दीवा । तीन ऊठ वगदादी दीन्हा—सौ कोस जाय तौ ही थाकै नहीं । -डेरै-डांडै, कपडै-लत्तै जलूस वणाई छै । सोनै री कटारी तरवार वाधण नै छै । आदमी दसे'क चाकर साथै लीन्हा छै—

मारू सनमुख तेडिया, कहण संदेसा कज्ज ।
कहौ कदै थे चालस्यौ[6], कांइ विहाणै[7] अज्ज ॥
आज निसह[8] म्हे चालस्यां, वहिस्या पंथी-वेस ।
जो जीव्या तौ आवस्या, मुवा तो उणहि ज देस ॥

ढाढी दोनू राजा पिंगळ कन्हां सीख माग मारू कन्है आया । मारवणि सारा दूहा

---

[1]वुलाया [2]वुलाये [3]भेद जानने वाले [4]भेजा [5]गोद [6]चलोगे [7]सवेरे [8]रात ।

पहली आपरी सखी नू सिखाया हुता, उण सखी नै हजूर वैसांणी । मूंढै आगै ढाढी वैठा छै, त्यानैं सदेसा रा दूहा कहै छै—

मारू सखी सिखाविया, मारू राग उपाय ।
दूहा सदेसा तणा, दीया तिहां सिखाय ॥
नळवर देस सुहामणौ[1], जे ढाढी जावेस ।
मारू तणा सदेसडा, ढोले कवर कहेस ॥
ढाढी जो ढोलो मिळे, कहे अम्हीणी वत्त ।
घण करिणयर री कव ज्यू, सूकी तोइ सुरत्त ॥
पंथी अेक सदेसडौ, लग ढोले पहुचाइ ।
जोवन खीर-समुद्र[2] हुइ, रतन ज काढौ आइ ॥
पथी अेक सदेसडौ, लग ढोले पहुचाइ ।
जगा केळिनि फळि गई, स्वात जु वरसउ आइ ॥
पथी अेक सदेसडौ, लग ढोले पहुचाइ ।
जोवन जावै प्राहुणौ[3], वेगेरौ घर आइ ॥
पथी हाथ सदेसडौ, धण विललती[4] देह ।
पग सू काढै लीहटी[5], उर आसुआ भरेह ॥
सदेसा मत मोकळौ, प्रीतम तूं आवेस ।
आगळडी ही गळि गई, नयण न वाचण देस ॥
जे ढोला न आवियौ, सावण पहली तीज ।
वीजळ तणै झवूकडै[6], मूघ[7] मरेसी खीज ॥
जे ढोला न आवियौ, काजळिया री तीज ।
चमक मरेसी मारवी, देख खिवती वीज ॥
हिवडा[8] भीतर पैस कर, ऊगी सज्जण रूख[9] ।
नित मूखै नित पल्लवै[10], नित नित नवळा दूख ॥
अकथ कहाणी प्रेम की, किणसू कही न जाइ ।
गूगा का सुपना भया, सुमर सुमर पिछताइ ॥
चंदण देह कपूर रस, सीतळ गग प्रवाह ।
मन रजण तन उल्हवण[11], कदै मिळेसी नाह ॥

---

[1]सुहावना [2]क्षीर सागर [3]पाहुना [4]विलखती हुई [5]लकीर [6]चमक से [7]मुग्धा [8]हृदय [9]वृक्ष [10]पल्लवित होता है [11]उल्लसित करने वाला ।



वालभ[1] अेक हिलोर दे, आइ सकई तौ आइ ।
वाहडिया वे थविकया, काग उडाइ उडाइ ॥

हिवै ढाढी पूगळगढ सू चालिया छै। पोहर रात गया ऊहड सोळखी रै गाव आण उतरिया छै। पछै डेरौ कर, दोन्यू भाई सुभराज करण नै ऊहड सोळखी रै दरवार गया। उठै जाय सुभराज कियौ। उरली-पैली वात करनै पूछियौ— ठाकरा, राजरा गाव सू नळवरगढ कितरा कोस छै? ऊहड वोलियौ—थारै नळवरगढ कासू काम छै। तद ढाढी वोलिया—राजा नळ वडौ दातार छै, तिण नै जाचवा जावां छा। ताहरा ऊहड वोलियौ—जाचण जावौ छौ सु म्हानै मालम छै। अर थे म्हासू डरो मती। म्हे थानू नळवरगढ रा सारा समाचार कहस्या।

जाचिग[2] जाचण हालिया[3], ऊहड साम्हा तोय।
उणारै अेसी गोरडी, जाण न पावै कोय॥
थे जावौ छौ नळवरै, ढाढी सुणो ज वात।
माळवणी चौकी रहै, पथिया करै ज घात॥

सारा ही नळवरगढ रा समाचार ऊहड सोळखी ढाढिया नै कह्या। माळवणि री चौकी[4] रहै छै तिकी सारी हकीकत कही। ढाढिया नै घणौ आदर दीन्हौ। सखरी जायगा डेरौ दिरायौ। ढाढी रातै उठै रह्या। परभात ही डेरौ लाद ऊहड सोळखी कन्है आया। आय नै सुभराज कियौ—

ऊहड मोटौ राजवी, सोळखी सिरताज।
थासू मिळिया मन महे, आणद हुआ ज आज॥

ऊहड कना सू सीख माग ढाढी आगा चालिया छै। मारवणि पूगळ वैठी दिन गिणै छै। ढोला री वाट देखै छै। नितका[5] काग-मोर उडावै छै। एक दिन रै समाजोग[6] परभात ही मारवणि ऊठ झरोखै वैठी छै। इण समै काग आण मोडै[7] वोलियौ। ताहरा मारवणि वोली—कवरजी पधारै तौ उडज्या। इण भात थाकी काग-मोर उडावै छै। वळै काग नै कहै छै—

कागा पीव न आवियौ, कियौ वडेरो चित्त।
लकडी होय त दोय जळि, हू अेकलडी नित्त॥

---

[1]प्रिय [2]याचक [3]चले [4]पहरा [5]हर रोज [6]इत्तफाक [7]दरवाजे पर।

काग़ा जेथा पिव बसै, उडी तिहा चलि जाय।
ले मारू की पासळी[1], ढोला देखत खाय ॥

मारवणि वायस सू इण भाति विलापात करै छै। ढाढी ऊहड सोळखी नखे[2] सूं चालिया हुता सो कितराहेक दिना मे नळवरगढ जा पहु ता।

आगै दरवाजा चौकीदार वैठा छै त्या सू ढाढियां रै धकौ[3] हुवौ। चौकीदार मार-मार ऊठिया। तद दोनू भाई ढाढी अर पाच सात चाकर हुता तिकै तरवार ढाल तीर कावठा उभारचा[4]। वळे कहण लागा—ठाकर पधारौ छौ तिणहीज भात पधारज्यौ। तरै वा पण जाणियौ—अवै तो सरीखीज[5] वाजै। ताहरा चौकीदारां माहे अेक दानौ[6] आदमी हुतौ, तिकौ कहण लागौ—इणा नू हकीकत पूछ खानाजगी[7] करौ। ताहरा चौकीदार पूछण लागा—थे कठाती आया ? कठै जास्यौ ? तद ढाढ़िया कह्यौ—देस माहे राजा नळ नू जाचण आया छां। म्हे यू जाणता कै राजा मागण आवै त्यानै मरावै छै, तौ कोई आवता नही। तद चौकीदार बोलिया—थे पुगळगढ रहौ छौ, मारवणि रा समाचार ल्याया छौ तौ आपणै वाधौ[8] होसी। ताहरां ढाढ़ी बोलिया—म्हे तौ पिंगळगढ को दीठौ, न सुणियौ, न कोई मारू नै ओळखां[9]। थे भला रजपूत होय इसी वात कासू कहौ ? चौकीदारा ढाढियां नै ऊचा नीचा घणा ही लिया पण ढाढी सधीर[10] रह्या। पछै चौकीदारा ढाढिया रौ सगळौ डेरो भात-भात कर पाच सात वार-उथळ-पुथळ दीठौ तौ ही कागद कोई निजर आयौ नही। तद ढाढी बोलिया—वडा रजपूता म्हे तौ जाचण आया छा। म्हा कनै क्यारा कागद होसी। वेकाम म्हांमे फोडा[11] क्यू पाडो। ताहरा ढाढिया नै छोड दीन्हा। वळे कहण लागा—कागद ल्यावसी सु अेकलौ आवसी, इतरा क्यानै आवसी। पछै ढाढिया आपरै किसव[12] सू गाय-वजाय गाढा राजी किया। तद चौकीदारा ढाढिया नै उठै राखिया। अेक रात घणा हीडा[13] किया। सहर री पण सारो हकीकत कही—च्यार दरवाजा छै, वे तौ मारवणि री चौकी छै। उठै था सू खेचल[14] करसी। अेक बारी छै—उत्तर दिस नू वाल्हा कुंभारी रा घर कन्है।

---

[1]पसली [2]पास [3]टक्कर [4]वाहर निकाले, संभाले [5]वरावरी का झगडा [6]वूढा, पुराना [7]झगडा-फिसाद [8]झगडा [9]पहिचानते हैं [10]दृढ [11]तकलीफ [12]हुनर [13]वेगार [14]छेड-छाड।



उठै उणरो जावतो छै, सु उणनै थे राजी कर लीज्यो। इतरी हकीकत सुण राजी हुवा। परभाते[1] चालिया सु सोच करता जाय छै। गढ री झाकी[2] छै तठै गया। कुभारी न्याव[3] पचावती[4] हुती तठै ढाढी जाय कह्यौ—बाई अठै म्हानै आछीसी जायगां डेरा नै बतावौ। कुभारी बोली—थे मारू रा समाचार ल्याया छौ। ताहरां दूजो भाई बोलियौ—म्हे तो जाणा नही मारू कुण छै, कठै बसै छै? बळे हाथ सू अेक मोहर कुभारी नू देवण लागौ। वा बोली कांई छै? ढाढी कह्यौ पछै देख लेई। कुभारी देखै तौ मोहर छै। तरै घणी राजी हुई। कुभारी रो घर दरबार कन्है हिज छै। तठै कुभारी ढाढियां नै ले गई। ले जाय आछी जायगा डेरौ दिरायौ—

कूड कपट मन केळवी, आया नळवर देस।
नळवर कुवर भेटस्या, मन मे चिंत असेस॥

ढाढियां कुभारी नू कह्यौ—बाई ढोलाजी री हजूर माळवणि न होय, जद तू म्हानै खबर दीजै। कुभारी बोली—माळवणि न होय जद क्यू? तद ढाढिया कह्यौ—लुगाई नै मुजरो नही करण रो म्हारै नेम[5] छै। तठा पछै बाल्हा कुभारी रो भांणजो डोढिया रहण लागौ।

अेक दिन रै समै माळवणि नववीसी सहेल्या साथै लेय नै बाग माहे खेलण नू गई छै। तद कवरजी बारै पधारिया। ताहरा खवास पासवाना सगळां आणि मुजरो कियौ। कंवरजी दरीखांनै[6] बैठा छै। इसै समै कुभारी रै भांणेज आण ढाढिया नै कह्यौ—थे अौसर चावै छा तिको अबार छै। कवरजी दरीखानै आया छै। इसौ सुण ढाढिया सिरपाव पहरिया। बीण सरू कर मुजरा नै चालिया। ढाढियां जाय दरबान नै खमाहै कहवायौ—बारै ढाढी ऊभा छै। कवरजी कह्यौ—हजूर आवै। पछै ढाढिया आय नै सुभराज कियौ। कवरजी फुरमायौ—हेटा बैठो। पछै कंवरजी फुरमायौ—गावौ। ताहरा ढाढिया मारवणि रा सदेसा रा दूहा मारू राग माहे गाया।

ढाढी गाया निसह भरि, सुणियौ साल्ह सुजाण।
अोछै पाणी मच्छ ज्यू, वेलत थयउ विहाण[7]॥

---

[1]प्रभात मे [2]राजा के दर्शन देने का स्थान [3]आवा [4]पकाती [5]पण [6]बैठक [7]सवेरा।

ढाढिया सदेसा रा दूहा पोहर दिन छतां गावणा मांडिया छा सु गावता गावतां आधी रात गई। जद कवरजी नै तौ व्याळू ताई रसोडै बुलाया। ढाढिया नै सीख दीवी। जा'व पूछियौ कोई नही। ढाढिया साथै बुनियादी आगलौ चाकर छौ तिण नै मेल्हियौ—इणां री जवता खावण-पीवण री, माचा बोजा री सारी ही थारै हवालै छै। घणा जतन करजै। इतरी कहि आप रसोडै आरोगण पधारिया। सै कोई उमरावा नै पण आप कन्है वैसाणिया। आपरै थाळ आयौ। सह कोई सिरदारा नै थाळी आई। यूं आरोगता मतवाळ करता रात पाछली पोहर अेक आय रही। कवरजी घणा दिना सू वारे पधारिया छै सु सै कोई उमराव लोक मुजरै आण भेळा हुवा छै। सै कोई साथ वाता—विगता करता रात वतीत हुई। कवरजी पण रात नीठ नीठ काढी। मन मे अचभौ छै। देखा ढाढियां नै पूछू—अेडा ढोलो मारवणि कुण हुवा छै।

पौ फाटी दी ऊगियौ, आया पूछण वत्त।
कही ज तिण की वारता, जिणकी गय्या रत्त॥
कवण देस तै आविया, किहा तुम्हारो वास।
कुण ढोलो कुण मारवी, राति मल्हाया जास॥

तद ढाढी कहै लागा—

पूगळ हूंता आविया, पूगळ म्हाको वास।
पिंगळ राजा तास धू, मेल्या थाकै पास॥
मारवणी पिंगळ सु धू, अपछर रै उणिहार।
बाळपणै परणी पछै, मूल न लीन्ही सार॥
सदेसे ही घर भरया, कइ आगण कइ वार।
अवसि ज लागा दीहडा[1], सेड गिणइ गवार॥

ताहरा ढोलाजी वोलिया—आ हकीकत व्योरा सू कहौ। ढाढी वोलिया—कवरजी म्हांरी तौ कहण री आसग[2] कोयनी। आपरा उमराव, खवास, पासवान साराही जाणै छै। यानै पूछौ। ताहरा ढोलाजी सह कोई नै पूछियौ। मारवणि सू डरता कोई वोलै नही। सह कोई कहण लागा—ढाढिया नै हिज पूछौ। वळे ढोलेजी कह्यौ—ढाढिया थे हिज कहौ। ढाढी वोलिया—कवरजी कहा तौ मारिया जावा। ढोलोजी वोलिया—थांनै किण रो डर छै? वळे

---

[1] दिन [2] हिम्मत।

बारा[1] जावता नै कवरजी आपरा चाकरां नै ढाढिया दोळा[2] राख्या । ताहरा ढाढी बोलिया—पूगळनगर रो धणी पिगळ राजा, तिण री बेटी मारवणि उणरा मेल्या म्हे अठै आया छा । वळे ढाढी कहण लागा—

चद मुखी हसा गवणि, कोमल दीरघ केस ।
कचन वरणी कामणी, वेगौ[3] आव मिळेस[4] ॥

तद ढोलाजी रै मन भाव ऊपनौ—

ढोले मन आरित[5] हुई, साभळि ऐ विरतन ।
जे दिन मारू विण गया, दई[6] न ग्यान गिणत ॥

ढोलोजी आ हकीकत सुण गाढा राजी हुवा । वळे कहण लागा—बांरा हाथ रो कागद छै ? ताहरां ढोलिया कह्यौ—हूसी, राज वाचस्यौ ? तद कवरजी ढाढिया नै घणौ सनमान दीधौ ।

राजा घण आदर दियौ, पूछी कूसळ खेम ।
संदासा सुणिया पछै, हिवडौ[7] थयौ ज हेम ॥

वळे ढोलाजी पूछियौ—मारवणि रूडी[8] छै ? ताहरा ढाढी बोलियौ—

धन दिहाडौ धन घडी, धन महूर[9] धन वार ।
सुखलीणी सुन्दर तणी, साहिब पूछी सार ॥

वळे ढोलाजी पूछियौ—मारवणि किमीहेक छै ? ताहरा ढाढ़िया कह्यौ—

मगर चाल विसेख किय, वामा हंस वखाण ।
मारू ज्या निरखी नही, व्याही जनम प्रमाण ॥

हेकण जीहा किम कहूं, मारू रूप अपार ।
सकर तूठा पाइयै, उण उदार अवतार ॥

वळे ढाढिया नै मुख वचन समाचार मारवणि कह्या छा सु सगळा ही कह्या । पण ढाढी डरै छै। ताहरा ढोलोजी बोलिया—थे वेदल[10] छौ । तद ढाढी बोल्या—कवरजी आपनै दीठा तौ घणा राजी छां पण मरण सू डरा छा । अठा ताई तौ म्हे झूठ साच कर जीवता आया । दूजा कागद लेयनै आवता जिका पूगळ देसरा सौ आदमी मारया गया छा । ताहरा ढोलोजी ढाढिया नै घणी दिलासा दीवी ।

---

[1]उनके [2]चारो ओर [3]शीघ्र [4]मिलो [5]आतुरता [6]विधाता [7]हृदय [8]अच्छी [9]महूरत [10]हताश, भयभीत ।

कह्यौ—थे म्हारा जीव सुवाणा[1] छौ। ताहरा ढाढियां बीण[2] री नाळी खोल नै मारवणि रा हाथ रो कागद कवरजी रै हाथ दीन्हौ। कवरजी कहण लागा—वाह-वाह बडा जावता सू कागद ल्याया। ताहरा ढाढी बोलिया—महाराज-कवार कागद यू न ल्यावता तौ किण विध पहु चता। वळे कागद देखता तौ म्हे पण मारिया जावता। ज्यारी वा'र[3] ही होती नही।

पछै ढोलाजी मारवणि रो कागद लेय छाती सू भीडियौ[4]—

ढाढी ले कागद दियौ, लिखियौ मारू तेह।
ढोले उर सू भीडियौ, सैणा तणौ सनेह॥

फेर ढोलेजी घणे हेत सू कागद वाचणौ माडियौ[5]। कागद माहे घणी मनवार कीधी, तिका बाच-बाच कवरजी हसै छै। कागद माहे दूहा लिखिया छै जिका बाचै छै—

कूंकू कागद अक्खरै, पाठवियौ[6] सयणेह।
वण चावती गहळियौ[7], टपकते नयणेह॥

दुरजण वयण न सभरै, हिरदा मे विसरेह[8]।
कूंभा लाल वचाह ज्यू, खिण-खिण चीता रेह॥

कागद थोडौ हित घणौ, मोपै लिख्यौ न जाय।
सागर मे पाणी घणौ, (सु) गागर मे न समाय॥

कागद लिखू कपूर सू, विच विच लिखू सलाम।
साहिव मुख दीठा विना, सुख सोऊ तौ हराम॥

अवकै जो प्रियतम मिळो, पलक न छोडू पास।
रोम रोम में छिप रहू, ज्यू कलियन मे वास॥

सूता सपने मे मिले, इक सासे सौ वार।
मन राख्यौ हि न रहै, कर मेल्है करतार॥

ढोला जे आया नही, थोडा दिना ज माह।
तौ आया न लाभसी[9], मारू पजर माह॥

ढोले कागद वाचियौ, जाग्यौ नवळ सनेह।
मिळवा हिवडौ हूलस्यौ[10], जिम वावीहा मेह॥

---

[1]प्यारे [2]वीणा [3]पूछताछ, सुनवाई [4]लगाया [5]प्रारभ किया [6]भेजा [7]भिगोया [8]भूलता है [9]मिलेगी [10]हुलसित हुआ।

कागद वाच नै ढोलोजी वोलिया—

कागद आखर गाळिया, काइक थई कुवांरा।
कै पथी भीना वुहा, (कै) लिखरणहार अरणजारा॥

इतरो सुण ढाढी वोलिया—

भरै पलटै वीभरै, वीभर[1] ही पलटेह।
ढाढी हाथ सदेसडा, घण विललती[2] देह॥

कागद गळिया आसुआ, नैरो नेह विलग्ग[3]।
पड़ि पड़ि वूद पयोहरा, उवट[4] उवट तिरा लग्ग॥

कागद वळे छै—अेक नळ राजा नै, दूजो दमैंती राणी नै जिके पण पहुंचाया। वे घणा राजी हुवा छै।

अवै ढोलेजी नै मारवणि सू मिलण री चिंता घणी छै। ताहरा भाऊ भाट वोल्यौ—आपनै पण वेगो पधारणौ होसी। पण हमे ढाढिया नै सीख द्यौ। वांरै सै कोई आतुर होसी। वळे माळवणि जाणियौ तौ यासू खेचल[5] होसी।

सदेसा सहु सविगत, कहिया तिहा सभाळ।
माळवरिण सू सकता[6], सीख दई ततकाळ॥
ढोला तरणा सदेसडा, दिस सैरणा कहियाह।
हू आवू छू पावरणौ, वेगो ही वहियाह॥
सीख समीयै ढाढीहा, दीन्हौ लाख पसाव।
ढोलो मन मे हरखियौ, हरख्यौ नळवर राव॥

ढाढिया नै ढोलेजी सवालाख रो पसाव कियौ। घोड़ा दोय—हजार दोय रिपिया रा, दोय ऊठ—दोय सै रिपिया रा, दोना भाया नै सोना रा कडा, किलगी सिरपाव, सोने री साकत, सोने रा हथियार और ही द्रव घणौं ही दीन्हौ छै। पाच सै रिपिया नल राजा दिया छै। दोय सै रिपिया अर वीस सवागा[7] दमैंती राणी दिया छै। नळ राजा पिगळ नै कागद लिख दियौ छै जिण मे घणी मनुहार लिखी छै। कागद दमैंती राणी अेक तौ ऊमा देवडी नै लिखियौ अर दूजो मारवणि नै लिखियौ छै, जिण मे घणो दिलासा लिखी छै। वळे लिखियौ छै—थानै लेण सारू ढोलो आवै छै। थे जमाखातर[8] राखज्यौ। ढोलेजी पण घणी मनवार सू मारवरिण नै कागद लिख्यौ

---

[1]उद्वेग मे आकर [2]विलखती [3]लगकर [4]घुलकर [5]छेडछाड
[6]भयभीत [7]सुहागिन स्त्री की पोशाकें [8]पक्का, निश्चय।



छै। दस हजार रिपियां रो गहणो मेल्यौ छै। पाच हजार रोक[1] मेल्या छै। आपरा पैरण रा कडा-मोती मारवणि कन्है मेल्या छै। कागद मे लिख्यौ छै—अे कडा-मोती था कनै आस्या जद पैरस्या। हूं पण वेगौ आवूं छूं। म्हारो जीव थां कन्है छै, थां विन अेक घडी ही जाय छै सो अळखै[2] छै। इतरो कहि ढाढियां नै सीख दीवी। आप घोडे असवार होय पहुचावण गया। भाऊ भाट पण साथे छै। घणी दूर ताणी पहुचाया। ढाढिया नै कह्यौ—मारग में जतना सू जाज्यौ।

ढोलेजी पाछा हजूर आय मा नू पूछियौ—माजी मोनै कठेई वळे परणायौ छै। मां वोली—वेटा पिगळ राजा री वेटी मारवणि परणाई छी। व्याव री वीजी सारी हकीकत कही। तद ढोलेजी मा सू कह्यौ—राज हुकम करो तौ अेकर सां पूगळ जावा। तद मांजी वोलिया—पूगळ सिवावौ[3] तौ और काई जोईजै[4] छै। पण माळवणि हालण देसी नही। इतरै कवरजी मा कन्हां सू खीख माग ऊठिया।

कंवरजी आया नही छै जितरै माळवणि कई वातां विचारै छै। कवरजी आपरै महल पधारिया सु पैजार[5] पहरियां ही ढोलिये वैठा। उदास थका सोच करै छै। माळवणि री वडायण[6] आय कवरजी नै कह्यौ—अरोगण पधारो। ढोलेजी तडक नै कह्यौ—म्हानै तौ अवार कोई भावै नही। तद वडारण पाछी जाय माळवणि नै कह्यौ। तद माळवणि कवरजी री हजूर आय नै कह्यौ—राज पैजारां न खोली, कटारी न खोली। उदास थका वैठा सु कांई भलाई छै? तद ढोलोजी तडक नै वोलिया—जे थे भूडा रो काई दीठो? म्हे तौ रूडा[7] हीज छां।

मनह सकाणी[8] माळवणि, प्रियु काई चळचित्त।
कइ मारवणि सुधि सुणी, कइ का नवळी वत्त॥
सज्जण हरख न वोलिया, मुझसो रीसा आज।
का थे उनमणदूमणा[9], कहोस के वड काज॥
चिंता डाइण[10] ज्या नराह, त्या दढ अग थाय।
जो वीरा[11] धीरप[12] करै, भीतर मेती खाय॥

---

[1]रोकड [2]अकुलाता है [3]जाओ [4]चाहिए [5]शस्त्र आदि [6]राज्य घराने की दासी [7]अच्छे-भले [8]सशकित हुई [9]विक्षिप्त [10]डाइन [11]वैर्यवान [12]धैर्य।

ताहरा ढोलेजी मन री वात प्रकासी—माळवणि म्हारै तौ अेक महल और साभळा छां। तद माळवणि बोली—आ वात भूठी छै। तिण ही गोळे टगाया न छौ ? ताहरा ढोलेजी बोल्या—थेट सू ढाढी सेगू आया छा त्या साथै मारवणि रै हाथ रो कागद आयौ छै। त्यानै लाख पसाव करि पाछौ सीख दीन्ही। तद माळवणि बोली—मै यू साभळियौ छौ कै हेक कवरजी नू गह श्री तद राजाजी नू पंडिता कह्यौ—इज कवरजी नू अेक नीच रै घरे परणावौ जिम भार[1] टळै। तद अेकण नीच रै घरे परणाया छा सु वा महल होवै तौ जांणा नहीं। बीजी तौ कोई नहीं। आप सारा लोगा नै पूछे देखौ।

पैला माळवणि सारा लोगा नै सिखाय मेल्हिया हुता। पछै कवरजी लोगां नू पूछियौ तद लोगा डरतां थका वाहिज[2] वात कही। तद कवरजी अेक पुरोहित घर रो धनवत[3] हुतौ तिण रै घरे गया। पुरोहित रो नाव श्रीकरण छै तिण आगे जाय ढोलेजी सारी हकीकत कही। अर वळे कह्यौ—

श्री करणू मनसमी, जावौ मारू जोय।
मो मन दूहा रजिगा[4], नींद न आवै कोय॥

ढोलोजी पुरोहित नै कहण लागा—श्रीकरणजी थे पूगळ जाय खबर ल्यावौ। देखा मारवणि रा सदेसा ढाढी ल्याया छा सो आ वात साची छै कै भूठ छै। म्हे तो मारवणि रा समाचार सांभळचा छै। म्हारै तौ मारू सू मोह ज्यादा छै। माळवणि कहै छै, लोग कहै छै—आ वात भूठी छै। तिण री खबर लेय नै वेगा पधारज्यौ।

पूगळ प्रोहित मेलिया, लारा चद खवास।
मारू वसी मुझ मने, खबर ज ल्यावौ तास[5]॥

श्रीकरण पुरोहित साथे आप रो इतवारी चदो खवास छै, सु मेलियौ। वीस असवार साथे दीन्हा। पछै दिन दस बारह मे पुरोहित जाय पहुता।

राजा पिंगळ साभळ वहोत राजी हुवौ। पूछियौ—पुरोहितजी, राज महरवानी कर पधारिया सु तो रावळो[6] घर छै पण काई काम होय सो फरमावौ। तद पुरोहित कह्यौ—कवरजी मारू री खबर करण नू मेल्हिया छै सु म्हे जाय पाछी

---

[1]नक्षत्र का कु प्रभाव [2]वही बात [3]धनवान [4]भाये [5]उसकी [6]आपका।



खबर देस्यां, तद कवरजी अठै पधारसी । कवरजी रो जीव मारवणि माहे छै । इतरो सुण पिंगळ बोलियौ—म्हानै इण री चिन्ता घणी छै, सु आ तौ कवरजी म्हा ऊपर घणी महरबानी करी । इतरो कह पुरोहितजी नू भली सी जायगा[1] डेरो दिरायौ । घणा हीडा[2] किया । दिन पाच सात राखिया । पछै पुरोहितजी मारवणि नू कहायौ—आप म्हांनै अवै पाछी सीख दिरावौ । तद मारवणिजी पुरोहितजी नू आपरी हजूर बुलाया । पुरोहित हजूर ऊभौ छै । मारवणि उरला-पैला[3] सुणाय ओळंभा देवै छै—हज मोनै कवरजी मना ही विसार मेली । जाज्यौ म्हारौ भाग, हू अवै किसै अधार जीवू ? अबै तौ कवरजी नू कहज्यौ—म्हांरी बेगी सम्भाळ[4] करै । तद पुरोहित कह्यौ—भला राज प्रमाण । वळे कह्यौ—माजी सीख दिरावौ ।

इतरो सुणि मारवणि परेच[5] ऊंदी करि पुरोहितजी रै हाथ सिरपाव बीड़ी देण लागी । इसै समै पवन सू सारी परेच उड गई । ताहरां पुरोहित री अर खवास री निजर मारवणि आई । मारवणि री सीवी देखताई दोनू मुरछागत आय हेठा पडिया । तद सहेलिया दौड पीपळामूळ रगड, सचेत कर उठाया । इतरै चंद खवास तौ अमूज मे मुवौ ।

सह सिंगार कर मारवी, सखिया लिया ज साथ ।
मुरछे[6] चंदणियौ मुवौ, वीडौ रहियौ हाथ ॥

पुरोहित सचेत होय मारू कन्है आय ऊभौ रह्यौ । ताहरां मारू बोली—

प्रोहित ढोले मोकळ्यौ, मारू कहै वचन्न ।
जोवन लहग लेय छै, खीण[7] भयौ मो तन्न ॥

कहती सकू[8] मन व्यथा, विन कहियां तन ताप ।
मो जोवन मैमत हुवौ, विरहण करै विलाप ॥

परणी वरसा डोढरी, जोवन पहु तो आय ।
प्रोहित थासूं आखियौ[9], कीजौ मालम जाय ॥

प्रोहित चाल्यौ सीख कर, राजी कियौ जुहार ।
कंवर ढोले आखज्यौ, मतां ज लावौ वार[10] ॥

---

[1]जगह [2]सेवा-चाकरी [3]आगे-पीछे के [4]सुध लें [5]परदा [6]मूर्छा से [7]क्षीण [8]सकोच करती हूं [9]कहा [10]देरी ।

पुरोहितजी राजा पिंगळ अर मारवणि कन्हां सू सीख माग उतावळा खड़िया। दिन दस माहे नळवरगढ आण पहु ता।

इसै समै पोहर दोय रात गई छै। मेह् वरसै छै। वीजळी झबूका[1] देय छै। सीळी[2] वाव[3] वाजै छै। कुवरजी झरोखे वैठा मारवणि रो रूप खिण-खिण चितवै[4] छै। उंण वेळा झरोखे कन्है पुरोहितजी आय निसरिया[5]। घोडा री पौडा वाजता सुण झरोखा सू देखण लाग्या, तद पुरोहितजी निजर आया।

पुरोहितजी मनमे विचार करण लागा—अवार तौ कवरजी पोढिया होसी तिण सू अवार तौ आपणै घरा जावा। परभाते कंवरजी री हजूर जास्या। इसी वात सगळा साथ नू कह सीख दीवी। आप घरे गया। पाछा सू कवरजी मन मे विचारियौ—मारवणि री जिका हकीकत हुसी सु लुगाई आगै पुरोहित कहसी। तद कवरजी पण पाछा सू पुरोहित रै घरे तुलछी वीडो[6] छौ, तिण माहे जाय वैठिया। इतरै पुरोहितजी हथियार खोल ढोलिया ऊपर वैठा छै। मूडा[7] आगै पुरोहिताणी वैठी छै।

पुरोहिताणी बोली—

जिण जोवण कज मेल्हिया, ढोले कुवर तुम्हा।
कहौ गुण केहि गोरडी, विध दाखवौ अम्हा॥

तद पुरोहित वोल्यौ—

हेकण जीहा किम कहू, मारू वौत गुणेह।
इन्द्र सेसजी गुण कहै, थाह न लाभै[8] तेह॥

इतरी हकीकत सुण ढोलाजी मन मे खुसी हुवा अर महल पधारिया। पछै परभात रै समै पुरोहित कवरजी री हजूर आयौ। तद कवरजी पूछियौ—चद खवास अठै क्यू आयौ नही? तद पुरोहित कह्यौ—मारवणि रो रूप देख दोना नै मुरछा आई। मनै तौ मसळ-कुसळ उठायौ, इतरै चद खवास तौ मुवौ। तद ढोलेजी वोलिया—मारवणि इसी छै? पुरोहित कह्यौ—आप वखोणौ[9] विसीज छै।

चद वदनि म्रगलोचणी, लखण[10] वतीस विवेक।
मारू जेही[11] अपछरा[12], इन्द्र तणै नहिं अेक॥

---

[1]चमक [2]ठण्डी [3]पवन [4]चिंतन करते हैं [5]निकले [6]पौधो का झुण्ड [7]मुंह [8]मिले [9]प्रसशा करते हो [10]लक्षण [11]जैसी [12]अप्सरा।

मारू नारी पदमणी, बोलै अमरत बोल।
अंग अग की ओपमा, वरणै कवि किल्लोल ॥

पुरोहित भात-भांत सू मारवणि रा वखाण किया। ढोलोजी सुण बहोत राजी हुवा। वळे पुरोहित नू कह्यौ—मारू सू मिलण री तौ खात घणी छै तौ ही माळवणि नै लोपे[1] नै हालणी पण आवै नही। इसो कहि पुरोहित नू तौ सीख दीवी। आप माळवणि रै महल आय ढोलिया ऊपर वैठा। उरली-पैली वात कर ढोलेजी कह्यौ—

माळवणि तू मन-समी, जाणै सहू विवेक।
हिरणांखी हसनै कहो, (तौ) करा दिसावर अेक ॥

माळवणि वोली—

गढ नरवर अति दीपतो, ऊचा महल अवास।
घर कामण हरणाखिया, किसौ दिसावर तास ॥

तती नाद तवोळ रस, सुरह सुगघी जाह।
पग मौजा आसण तुरी, किसौ दिसावर त्याह ॥

तद ढोलाजी कह्यौ—

ईडर राजा ओळगण, जे थे कहौ त जाह।
ओथ घडावा आभरण[2], माळवणि मेलाह ॥

मालवणि फेर कह्यौ—

ईडर राजा ओळगण, थानू जाण न देस।
इथ वैठा ही आभरण, मोल मूहगा लेस ॥

साहिव कच्छ न जाइये, तिहा परायो द्रग[3]।
भीभळ[4] नैण सुचग[5] घण, मूल्यी जाइस सग ॥

जिकै ज वामण वाणिया, निकै दिसावर जाय।
राज कुवर राजा तणा, तोय दिसावर काय ॥

साहिव रहौ न राखिया, कोइ प्रकार कियाह।
का था कामण मन वसी, का म्हा दूहवियाह[6] ॥

चळे माळवणि वीनवै, हू थ्री दासी तूझ।
चिता जोइ भीतर वसै, सो प्रकासौ मूझ ॥

---

[1]टाल कर [2]गहने [3]दुर्ग, देश [4]काजरारे [5]सुन्दर [6]नाराज हुए।

ढोला आमणदूमणौ, नख सू खोदै भीत ।
हमथी कुण छै आगळी, वसी तुहाळै[1] चीत ॥

तद ढोलाजी कही—

सुण सुन्दर साची चवा[2], भाजै मन री भ्राति ।
मो मारू मिळवा तणी, खरी विलग्गी खाति ॥

माळवणि कौ तन तप्यौ, विरह पसरियौ अग ।
ऊभी थी खडहड पडी, जाणै डसी भुजंग ॥

माळवणि मुरछागत आणे हेठी पडी, जद सहेलिया पवन घाल पीपळामूळ घिस नीठ सावचेत करी ।

सीतळ पाणी छाट मुख, वीझण[3] हन्दे वाय ।
हुई सचेती माळविणि, पिव आगळ विललाइ ॥

दाडम अवा मेल कर, चाखै काचर बोर ।
कत न जावौ उण दिसे, देस दई कौ चोर ॥

सह पाछा ऊतर दिये, समझै नही गिवार ।
वैण न मेल्है माळवण, नैण न खडै धार ॥

देस सुरगौ भुइ[4] सुजळ, मीठा बोला लोय[5] ।
मारू कामण भुंय दिखण, जे हर तूठै होय ॥

विरहण काय अणखजै[6], मारू हदो देस ।
महिळा सिरहर मारवी, मो मन लाग्यौ तेस ॥

माळवणि विचार कियौ—कवरजी रहण रा नही, तद बोली—

थळ तत्ता लू सामुही, दाझौला पहियाह ।
म्हाकौ कहियौ जो करो, घर बैठा रहियाह ॥

ढोलोजी विचार कियौ—माडा-हाला[7] तौ लुगाई जीव देसी । तद दोय मास उठै रहिया ।

नेहा वध न वधिया, वळि रहिया दुय मास ।
स सनेह बोलै नहीं, मन मारू रै पास ॥

---

[1]तुम्हारे [2]कहे [3]पखा [4]धरती [5]लोग [6]तिरस्कार करना [7]बुरे हाल में ।

गोखा बैठा अेकठा, माळवणि नै ढोल।
अबर ठीदौ ऊनम्यौ, तें चीतास्यौ बोल॥

पग पग पाणी पथ सिर, गड्ढी बादळ छाह।
पावस आयौ पदमणी, कहौ त पूगळ जाह॥

माळवणि बोली—

ढोला सावण आवियौ, ऊमट आयौ मेह।
चमकण लागी बीजळी, दाझण[1] लागी देह॥

प्रीतम कामणगारिया, थळ जळ बादळियांह।
घण बरसतें सूकिया, लू सू पागरियाह॥

बाजरिया हरियाळिया, बिच बिच बेला फूल।
जे भरि वूठौ भादवौ, मारू देस अमूल॥

डूगरिया हरिया हुया, वनां झिंगोरै मोर।
इण रित तीनू सचरै, चाकर मगत चोर॥

फौज घटा खग दामणी, बूंद लगै सर जेम।
पावस पिव बिन वल्लहा[2], कहि जीवीजै केम॥

जिण रुत बहु बादळ झरइ, नदियां नीर प्रवाह।
तिण रुत साहिब वल्लहा, मो किम रयण विहाय॥

सावण आयौ साहिबा, पगे विलूवी गार।
अच्छ विलूवी वेलड्या, नरा विलूवी नार॥

इतरो सुण ढोलाजी बोलिया—

आज धरा दिस ऊनम्यो, काळी घड[3] सिखराह।
वा धण देसी ओळभा, कर कर लाबी बाह॥

माळवणि बोली—

ढोला न हुय उतावळौ[4], मिळस[5] दई कै लेख।
म्हाकी कहियौ जो करो, दसराहा लग देख॥

माळवणि कह्यौ जद ढोलाजी दसहरा ताई वळे रह्या।

दसराहा लग आलसै, माळवणि वैणेह।
मारू जिम जिम सभरै, जळ मूकै नयणेह॥

---

[1]जलने [2]वल्लभ, प्रिय [3]घटा [4]उतावला [5]मिलेगा।

माळवणि ढोलो कहै, हिव म्हां मीख करेह ।
ऊन्हाळा वरखा विन्हे[1], रहिया तूज सनेह ॥

तद माळवणि कहै—

सीयाळै तो सी पडै, ऊन्हाळै लू वाइ ।
वरसाळै भुइ चीकणी, चालण रितु न काइ ॥

जिण रित मोती नीपजै, सीप समदां माह ।
तिण रित ढोलो ऊलट्यौ, इम कौ माणस जाह ॥

जिण दीहे तिल्ली तिडै, हिरणी झालइ गाभ[2] ।
तांह दिहा री गोरड़ी, पडतौ झालै आभ ॥

जिण रित नाग न नीसरै, दाझै वन खड दाह ।
जिण रित माळवणि कहै, कुण परदेसा जाह ॥

दिन छोटा मोटो रयण, ठाढा नीर पवन्न ।
तिण रित नेह न छाडियै, हे वालम वड मन्न ॥

सांभळ ढोलाजी कह्यौ—

माह महारस मयण[3] सव, अति ऊलटै अनंग ।
मो मन लागो मारवण, देखण पूगळ द्रंग ॥

ढोलो हेल्लाणौ[4] करइ, धण हल्लिवा न देह ।
झव झव झूवै पागडै[5], डव डव नयण भरेह ॥

माळवणि वोली—

हालू हालू मत करो, हियडा साल म देह ।
जे साचै ही हालस्यो, सूता पल्लाणेह ॥

ढोलो कहै—

था सूता म्हे चालस्या, अेह निचीती[6] होय ।
रइवारी ढोलो कहै, करही आछी जोय ॥

पलाणियो पवने मिळै, घडिया जोयण जाय ।
रइवारी ढोलो कहै, सो मो आवै दाय[7] ॥

---

[1]दोनो [2]गर्भ [3]मयन [4]रवानगी [5]रकाव से [6]निश्चिन्त
[7]पसन्द ।

रैबारी कह्यौ—

दूजा दोवड चौवडा, ऊट कटाळा खाण[1] ।
जिण मुख नागरवेलिया, सो करहो केकाण[2] ।।
नागरवेली नित चरै, पाणी पीवै गग ।
ढोला रइवारी कहै, करहो अेक सुचग ।।

ढोलो आतुर होय कहै—

किण गळि घालू घूघरा, किण मुख वाहू लज्ज ।
कवण[3] भलेरो करहलो, मूघ मिळावै अज्ज ।।

करहो कहै—

मो गळि घालौ घूघरा, मो मुख वाहो लज्ज ।
हू ज भलेरो करहलो, मूघ मिळाऊ अज्ज ।।

तद ढोलोजी करहा रै मोहरी घात पौळ रै वारणै आण वाधियो । ढोलोजी कम्मर वांधण नै महल पधारिया । इतरै माळवणि नै खवर हुई सु माळवणि करहा कन्है आई ।

माळवणी मन दूमणी[4], आई वरग विमास ।
रइवारी पूछी करी, आई करहा पास ।।

आय नै कह्यौ—

म्हारा भाई करहला, दान इतौ मो देह ।
जद ढोलो चढि नीसरै[5], तद खोडो हुय रेह ।।

तद करहो वाल्यौ—

खोडा हुवा त डाभिजा[6], वाघा भूख मराह ।
थे वे मज्जण रळि-मिळी, म्हे विच दुख सहाह ।।

माळवणि कह्यौ—

वावू वड री छाहडी, नीरू नागरवेल ।
डाभ समाळू हाथ सू, चोपड सू चपेल ।।

---

[1]खाने वाले [2]घोड़े के समान [3]कौन [4]खिन्न [5]निकले
[6]डाभणो—लंगडे ऊंट का पैर ठीक करने के लिए गरम लोहे से दाग लगाना ।

करहो कहै—

अब ही मेली अेकली, करह्रो करह कलाप ।
कहियौ लोपां सामि को, सुदरि तरा सराप ॥
सुन्दरि मो सारो[१] नही, कुवर वहेनी मग्ग[२] ।
साहिब चित्त उपाडियो, जिम केतांणा वग्ग ॥

माळवरिण कह्यौ—

करहा सुण सुन्दर कहै, मिहर[३] करो मो आज ।
साहिब म्हारो ऊमह्यौ, हिव सगळो तो लाज ॥
भाई कह वतळावसू, नागरवेल निरेस ।
हच हच करहा कुवर नैं, मत नेजाय विदेस ॥

माळवणि करहा नैं आपरो करे पाछी महल आई । ढोलोजी कमर बाध करहा कन्है आया । करहा नैं उठाय ऊभौ कियौ सु तीन पगा रै पांण ऊभौ, हेकरण पग खोड़ो होय रह्यौ । ढोलाजी रै चढण री ताकीदी छै । इतरा मे डावो विनायक वोलियौ तद माळवरिण विचारियौ—अै तौ चालण नै सुगन सखरा हुवा । ताहरा विनायक ऊपरा री सांवळी, इतरै ढोलाजी रैवारिया नै बुलाया । रैवारी आय ऊंठ दोळा फिरिया । ताहरां माळवणि री सखिया जाय नै कह्यौ—करहा नै डाभै छै । ताहरां माळवरिण अेकण सहेली माथै कहायौ—

ढोला म्हारा बाप रै, छो करहा री वग्ग[४] ।
जे करहो खोडो हुवै, (तौ) गादह दीजै दग्ग ॥

तद डावो विनायक (गधौ) वोलियौ छौ तिण नैं पकड मगायौ अर डाभ दीन्हौ । तिण दिन रो ओ खाणो छै—'ऊट खुडावै'र गधा डाभीजै' । तिण दिन तौ ढोलाजी रै चढण रो महूरत सो तौ टळियौ । ढोलाजी महल पधारिया । करहा नै तबोळण रै घरै वाधियौ । अेक रैवारी करहा रा जतन[५] मारू राख्यौ छै ।

पछै माळवणि परण ढोलाजी कन्है आई । दोनू अेकण ढोलियै वैठा छै । माळवणि विचारियौ—कवरजी रहण रा नही—चालसी । ताहरा कह्यौ—

पिव माळवरिण परहरे[६] , हाल्या पूगळ देस ।
ढोला विच मे हेकला, वासा घणा सहेस ॥

---

[१]वश [२]मार्ग [३]महर, कृपा [४]टोला, झुण्ड [५]देख रेख [६]छोड कर ।

ढोलोजी कह्यौ—

गोरी राख्या न रहा, जास्या पूगळ देस।
ढोला विच मे हेकला, वासा घणा सहेस॥

गोरी क्यान हव[1] करौ, था क्या नयण भरेस।
म्हे तौ राख्या ना रहा, ज्यास्या पूगळ देस॥

माळवणि तू अत भली, तू छै नीकी नार।
पूगळ हदै मुलक मे, नहि मारू उणिहार[2]॥

माळवणि ढोलाजी नै घणा ही विलमाया पण ढोलाजी रहै नही। ताहरा माळवणि कह्यौ—मो नै नीद आवै जद चढज्यौ। ढोलेजी कह्यौ—भली वात छै। थानै नीद आसी जद हालस्या।

माळवणि घणौ ही हठ कियौ। पनरा रात दिन ताई सारीखी जागी। सोळवै दिन अेक घडी रात गया कंवरजी कपट[3] नींद सोय रह्या। तद माळवणि विचारियौ— कवरजी तौ पौढिया छै, हू पण थोडी सी वार सोय रहूं। इतरै माळवणि तौ सोय रही सो अघोर-निंद्रा[4] आय गई। तद ढोलाजी छांनै ऊठ्या। हालण नै आय करहो झेंकियौ।

घाली टापर वाग मुख, झेंक्यौ राज दुआर।
करह किया टहूकडा[5], निन्द्रा जागी नार॥

तद ढोलेजी कह्यौ—

करहा तू र जगावसी, म्हानू जाण न देस।
निंद्राळू जागै नहीं, (तौ) जास्या पूगळ देस॥

माळवणि जागै नही, करहा तू न जगाय।
जो सुन्दर जागै सही, तौ गळ लागै आय॥

ढोलेजी चढता आधी रात रा पोळ किवाड खिडकिया[6]। खोलतां वळे करहौ टहूकियौ तद माळवणि जागी। सचेत होय नै देखै तौ ढोलो नही। तद हियै निहाव पडियौ। ढोलेजी चढता कह्यौ—

ढोले करह चलावियौ, करि सिणगार अपार।
आस्या तौ मिळस्या वळे, नरवर कोट जुहार॥

---

[1] वश [2] समान चेहरे वाली [3] वनावटी [4] गहरी नींद [5] लंबी आवाज [6] खोले।

माळवणि पण विलाप करण लागी—

ढोलो चाल्यौ हे सखी, वाज्या विरह निसाण।
हाथे चूडी खिस पड़ी, ढीला हुया सधाण॥

ढोलो चाल्यौ हे सखी, वज्या दमामा ढोल।
माळवणि तीने तज्या, काजळ तिलक तबोळ[1]॥

सज्जण चाल्या हे सखी, दिस पूगळ दौडेह।
सायधण[2] लाल कवाण ज्यू, ऊभी कड मोड़ेह[3]॥

सज्जण चाल्या हे सखी, सूना करे अवास।
गळे न पाणी ऊतरै, हियै न मावै सास॥

सल्ह चलतै परठिया, आगण वीखड़ियाह[4]।
सो मो हियै लगाडियां, भरि भरि मूठड़ियाह॥

सज्जण वल्ले[5] गुण रहै, गुण भी वल्लणहार।
सूकण लागी वेलडी, गया ज सींचणहार॥

अे वाडी अे वावड़ी, अे सर केरी पाळ।
वे साजन वे दीहडा[6], रही सभाळ सभाळ॥

वावा वाळू देसडौ, जह डूगर नहि कोय।
तिण चढि देवू धाहडी, हियौ ज उरळौ होय॥

सारसडी मोती चुगै, चुगै त कुरळै काय।
सगुण पियारा जै मिळै, मिळै त विछडै काय॥

सज्जण हाल्या हे सखी, वड री डाहळ मोड।
हियौ कळेजौ काळजौ, तीनू लेग्या तोड॥

इतरा विलापात कर नै माळवणि सखिया नू ढोलाजी लारै दौडाणी—हज आज ढोलाजी नै पाछा वाळौ। सहेलिया दौडी पण करहा रो खोज न लाधौ। जिसै अेकण थळ रै पासे सारस बोल्यौ। सहेलियां जाण्यौ करहो बोल्यौ। आगै देखै तो सारस चुगै छै। तद कह्यौ—

सारस रै मिस पातरी[7], जाणै करह भकाय।
देखू थळ ऊपर खडी, जाण पखेरू जाय॥

---

[1]तबोल [2]स्त्री, मालवणि [3]मोडे हुए [4]पदचिन्ह [5]चले गये विछुडे [6]दिन [7]भूली।



सहेलिया ढोलाजी नै पूगी नही, तरै माळवणि कन्है आई। आय नै कह्यौ—कवरजी तौ म्हांरी निजर कोई आया नही। इसो सुण माळवणि निरास हुई अर विलाप करण लागी—

हइ रै जीव निलज्ज तू, निकस्यौ जात न तोहि।
प्रिय बिछुड़न निकस्यौ नही, रह्यौ लजावण मोहि॥

सज्जणिया सिधाय कर, मदिर बैठी आइ।
मन्दिर काळै नाग ज्यू, लहरी दे दे खाइ॥

सज्जण गुणा समन्द तू, तर तर थक्की[1] तेण।
अवगुण अेक न सभरै, रहू विलूवी जेण॥

सांई देदे सज्जणा, राते इण परि रुन।
उर ऊपरि आर ढळै, जाणि प्रवाळी चून॥

सोरठा

गया गळती राति, परजळती पाया नही।
से सज्जण परभाति, खडहडिया खुरसाण[2] ज्यू॥

ढोलाजी अर माळवणिजी रै अेक सूवो हुतौ तिणनै माळवणि ढोलाजी पासै मेल्है छै।

सूवा अेक सदेसडौ, वार सरेसी तूझ।
प्रीतम पासै जायनै, मुई सुणाई[3] मूझ॥

इतरी हकीकत सुण सूवो उडियौ सो चदेरी रै तळाव जाय पहु तौ।

चदेरी बूदी विचै, सरवर केरी तीर।
ढोले दातण फाडिया, आय पहु ता कीर॥

ढोलेजी पूछियौ—

कह सूवा कित आविया, ढोलो पूछै कत्थ।
कै माळवण मेल्हियौ, कन्हा[4] अमीणै सत्थ॥

सूवो वोल्यौ—

साल्ह कवर सूवो कहै, माळवणि मुख जोय।
प्राण ज तजियौ माळविण, लछ्ण[5] लागै तोय॥

---

[1]थकी [2]तलवार [3]सुनाना [4]या [5]लाञ्छन।

इतरो कह्यौ तोई ढोलोजी वोलै नही। तद सूवो कहै—

कहि न सकू वीहतौ[1], हेकज वात हुईह।
राज अपूठा वाहुडौ[2], माळवणी मूईह॥

इतरो सुण ढोलेजी वोलिया—

वल्हा माणस वीछड्या, मुवौ न मुणियौ कोय।
सालर केरा रूंख ज्यूं, झुर झुर पीजर होय॥

भळे ढोलाजी कहण लागा—जे सांचांणी मुई छै तौ इतरी चाकरी म्हांरी तू पण कर।

दस मण चन्नण मण अगर, तेल सुगवी लेह।
गुण थाहरोई मानस्या, माळवणि दागेह[3]॥

तद सूवो वोलियौ—

सिवौ मिधावौ सिघ करौ, वेगा ही वळियांह।
ऊमर केरा रूख ज्यू, सहगोठा फळियांह॥

ढोल सुवा नै सीख दी, जा पछी ग्रहवास।
उडि र पाछौ आवियौ, माळवणी के पास॥

सूवो माळवणि कन्है पाछो आयौ—कहण लागौ—

सूवो पाछो आवियौ, ढोलो गयौ ज आज।
मो कहिया वळियौ नही, तौ सो केहो काज॥

सूवे वैण सुणाविया, ढोले कहिया मोय।
धइ मुरछागत माळवण, सकै न ऊभी होय॥

माळवणि सूवा रा कह्या समाचार साभळ नै विलापात करै छै। ढोलोजी चदेरी रा तळाव सू दांतण कर चढिया सु चंदेरी रा वजार माहे आया। ताहरां अेक व्यवहारियो वोलियौ—ठाकरा अठासू साठ कोस ऊपर सहर छै सु थारै मारग मे छै। अेक सायत थे ठहरौ, आपनै कागद लिखदचू जो आथण[4] तांई पहु चै। ढोलो ऊभौ रह्यौ। व्यवहारियो वासै हेला करतौ आवै छै—वडा सिरदार, था सरीसा पुरस आदमियां सू ही म्हारो काम सझियौ[5] नही तौ और सू ही काई सभमी। ताहरा ढोलोजी कह्यौ—ऊभा रह्या तौ सभै कोनी। थारै काम छै तौ ऊठ

[1]डरता-हुआ [2]लौटो [3]दाह-कर्म करना [4]संध्या [5]पार पडा।



भेंकावू[1] छू। तू लारे चढि बैस। कागळ-लिख मोनूं देय परो उतरे। ताहरा व्यवहारियौ ऊठ ऊपर बैसि- कागळ लिखण लागौ। कागळ पूरौ हुवौ जितरै सहर आय गयौ। व्यवहारियौ देख हियौ फूट मूवौ।

पछै ढोलोजी पोहकर रा तळाव री पाळ-आय निसरिया. तठै थभ-तोरण दीठा। हेकण आदमी नै पूछियौ—औ थभ-तोरण कुणरा छै। अठै कुण परणिया हुता। ताहरा आदमी बोल्यौ—

अेथ-ज चौक पुराविया, पढिया वेद पुराण।
घण भटियाणी मारवी, ढोलो कूरम राण॥

ढोलोजी पूछण लागा—अे ढोलो-मारवणि कठारा वासी हुता। आदमी बोल्यौ—नळवरगढ सू नळ राजा आयौ छौ कवरजी री जात्रा देवण नै अर पिंगळ राजा अठै बिखै आया छा। पिंगळ राजा री बेटी मारवणि अर नळवर राजा रो बेटो-ढोलो या दोना रो विवाह अठै हुवौ छै।

करहो घणौ तिसाहियौ[2], आयौ पोहकर तीर।
ढोले ऊतर पाइयौ, निरमळ सरवर नीर॥

जगळ-देस अजग थळ, कोहडै ऊडा नीर।
ढोलो खडै उतावळा, सैणा तणै ज सीर॥

देस कुरगी ढोलणा, भला विछूटा आय।
मन वछित लाभै नही, करहो कासू खाय॥

करहा नीरू जव चणा, कटाळौ अर फोग।
नागरवेली करहला, था चरणी नइ जोग॥

करहा, नीरू सोइ चर, वाट चलंतउ पूर।
द्राख[3] विजउरा नीरनी, सो वण रही स दूर॥

इतरौ सुण करहौ तौ मन मे घणौ रिसाणौ[4]। ढोलोजी खडिया।

अति अणद उमाहियौ[5], वहे ज पूगळ वाट।
तीजै पहर लघाहियौ, आडावळा रो घाट॥

अबै करहो थाकौ। भूख पण लागी तिणसू-मुधरो[6] चालण लागौ। तद ढोलोजी बोलिया—

---

[1]बैठता हू [2]प्यासा [3]दाख [4]नाराज हुआ [5]उमगित हुआ [6]मन्द गति से।



करहा तूझ विसासडै, वीसरिया सह काज।
रखै वीच वासौ करै, मारु न मेळै आज॥

ताहरां करहो पण राजी होय कहण लागौ—

सड सड वाहि म कंचडी, रागा देह म चूर।
विहु दीपा विच मारवी, मो थी केती दूर॥

ढोलाजी उतावळा खडिया जाय छै। इतरै थळां[1] माहे ढोलाजी मारग भूला। अेक अेवाळ[2] तठै छाळिया[3] चरावै छै। तिणनू पूछियौ—पूगळ नगर रो मारग किसौ ? तद अेवाळ कह्यौ—कासू काम छै ? ढोलाजी नै नकारे री अर झूठ वोलणै रो प्रतिवध हुतौ। तद ढोलेजी वोलिया—म्हारो सासरो[4] छै। ताहरां अेवाळ सुसरा रो नै लाडी[5] रो नाम पूछियौ। ढोलाजी वोल्या—सुसरा रो नाम पिंगळ राजा अर लाडी रो नाम मारवणि। ताहरां अेवाळ वोलियौ—वडा ठाकर, पुगळ री वेटी मारवणि तौ म्हारी साथण छै। काले तौ म्हारै साथै छाळियां चारती हुती। इतरो सुण ढोलोजी मन-भग[6] हुवा। पाछौ वळण[7] रो मतौ कियौ। तद करहै धीरज वधाय कह्यौ—

क्रम क्रम ढोला पथ कर, ढाण[8] म चूकै ढाळ।
आ मारू दूजी महळ, आखै झूठ अेवाळ॥

करहा रा कह्या सू ढोलाजी वळे आघा हालिया। इतरा मे ऊमर सूमरा नै ढोलाजी रै आवण री खबर हुई छै सु आपरो भाट पुगळ राजा रै मारग मे राख्यौ छै, तिण नै कह्यौ—तू ढोला नै मारवणि रा औगण[9] सभळाअे[10]। भाट मारग मे ढोलाजी नै आय मिल्यौ अर पूछण लागौ—राज कठा सू पधारिया ? ढोलाजी कह्यौ—आया तौ नळवर सू अर जास्यां पूगळ। उठै म्हे परणिया छां। इतरी हकीकत कहि पछै ढोलाजी पूछियौ—भाट, थे कठासू आया ? भाट वोल्यौ—महाराजकवार, हू पूगळ थी आयौ। तद ढोलेजी पूछियौ—थे पिंगळ राजा री मारवण दीठी ? तद भाट वोल्यौ—

जिण धण कारण ऊमह्यौ, तिण धण सदावेस।
तिण मारु रा तन खिस्या[11], पडर[12] हुवा ज केस॥

---

[1]टीवो मे [2]गडरिया [3]वकरियाँ [4]ससुराल [5]वहू [6]हताश हुए [7]लौटने [8]ऊँट की तेज चाल [9]अवगुन [10]वताना [11]ढीले हुए, ढल गए [12]सफेद।

ढोला मोडौ आवियौ, गइ वाळापण वेस[1] ।
अब धण होई खोरडी[2], जाए कहा करेस ॥

इतरो सुण ढोलाजी रो मन वेदिल हुवौ—

करहा कहि कासू करा, जो अे हुई जकाह ।
नरवर केरा माणसा, कासू कहिस्या जाह ॥

अवै ढोलाजी वेदल थका हळवा-हळवा[3] चालिया जाय छै। इतरै अेक रैबारी-लुगाई साथै जाय छै। रैबारी ढोलाजी नै पूछियौ—राज कठासू पधारिया, आगै कठै पधारस्यौ ? ढोलेजी वेदिल थका बोलिया—पिंगळ जास्या। रैबारण चतुर छी, मारवणि भेळी रमी छी अर पिंगळ राजा ढाढी खिनाया छा सु जाणे छी। तद रैबारण ढोलाजी नै कहण लागी—अेक म्हारी अरज सुणौ—आपनै भाट मिळियौ सु ऊमरा रौ छै। वे आपणा लागू[4] छै। राज उणरी वात मानसी नही।

दुरजण केरा बोलड़ा, मत पातरजी कोय ।
अणहू ती[5] हूंती कहै, सगळी साच न होय ॥

डोढ वरस री मारवी, त्रिहु वरसा रो कत ।
उण रो जोवन वहि गयौ, तू क्या जोवनवत ॥

ढोलोजी मन मे राजी हुवा खडिया जाय छै। आगै वारहठ मिळियौ तिण पूछियौ—कठा सू खडिया आवौ छौ ? ढोलोजी बोल्या—आया नळवरगढ सू अर पूगळ जास्या। वारहठ कह्यौ—राज[6] आपरी वाट जोवै छा। इतरो सुण ढोलो ऊंठ झेंक[7] नीचो उतर घणे हेत सू मारवणि रा समाचार पूछण लागौ। तद वारहठ दूहा कह्या—

गति गंगा मति गोमती, सीता सीळ[8] सुभाय[9] ।
महिळा सरहर मारवी, अवर न दूजी काय ॥

नमणी खमणी वहुगुणी, सुकोमळी ज सु कच्छ ।
गोरी गंगा नीर ज्यू, मन गरवी तन अच्छ ॥

मारू घूघट दिट्ठ[10] मइ, अेता सहित फुणिंद[11] ।
कीर भमर कोकिल कमळ, चद मयद गयद ॥

---

[1]वयस [2]बुड्ढी [3]धीरे-धीरे [4]दुश्मन, पीछे पड़े हुए [5]अनहोनी [6]पिंगळ राजा [7]ऊँट बैठा कर [8]शील [9]स्वभाव [10]देखे [11]नाग ।

मारू देस उपन्निया, ताह् का दत सुसेत।
कूझ बचा गोरगिया, खजर जेहा नेत॥

अहर पयोहर दुइ नयण, मीठा जेहा मख्ख।
ढोला अेही मारवी, जाणै मीठी दख्ख॥

ढोला सायवण मा'ण नै, झीणी पासळियाह।
कै लाभै हर पूजिया, (कै) हेमाळै[1] गळियाह॥

मारू सी देखी नही, अण मुख दोय नयणाह।
थोडो सो भोळौ[2] पडै, दिणियर[3] ऊगताह॥

तेता मारू माहि गुण, जेता तारा अम्भ[4]।
उज्वळ-चित्ता[5] साजणा, कहि किम दाखू सम्भ॥

वीसू चारण ढोलाजी नै कहै लागौ—राज वेगा पधारो, दिन थोड़ौ छै। मारू माहे तौ गुण अनेक छै सो कहता अत न आवै।

इतरो सुण ढोलोजी बोलिया—अबार तो मारू रै गहणी लेजावा छा सु औ आपरी निजर छै। आपरा कडा मोती दिया। लाख पसाव करि सीख दीवी।

दोनू भाई ढाढी जद नळवरगढ सू हालिया छै अबै पूगळ आण[6] पहु ता छै। दोनू ढाढी मन मे विचारै छै—हज म्हानै आवता मारग मे घणा दिन लागा छै। ढोलोजी पधारिया होसी। पूगळ आयनै ढाढिया पूछियौ—ढोलोजी पधारिया कै नही ? तद लोग बोलिया—कवरजी तौ कोई पधारिया नही। बाट जोवै छै। पछै ढाढी राजाजी री हजूर आया। नळ राजा रो कागद दीन्हौ। कागद बाच'र नळराजा घणौ खुस्याळ हुवौ, और ही ढोलाजी रा समाचार सुणि खुसी हुवा। कागद अेक दमैती रो ऊमा देवडी नै दीन्हौ। ढाढिया नै मारवणिजी हजूर बुलाया, पछै समाचार पूछण लागा तद ढाढिया मारग रा, उठा रा सगळा समाचार कह्या। वळे कह्यौ—

मारू ढोलो दीठ[7] म्हे, सवै सुरगौ सत्थ।
पग वा दीन्हा पागडै[8], वागा झालै[9] हत्थ॥

---

[1]हिमालय [2]भ्रम [3]सूर्य [4]अम्ब, आकाश [5]चचल चित्त वाले [6]आकर [7]देखा [8]रकाब में [9]पकड कर।

इतरो सुण मारू बोली—

साझ पडी नह आवियौ, कोयक थयौ अहत्य।
सर[1] चूकै पाराघ[2] ज्यौं, मूघ[3] मरोडै हत्य॥

इतरै ढाढी ढोलाजी रै हाथ रो कागद मारवणि नै दीन्हौ। तद मारू कह्यौ—

कागळिया[4] मत मोकळो, मोल मुहु गा लेह।
अक्खर भीजै आसुवा, नैण न वाचण देह॥

मारू जोवै वाटडी, ऊभी आगण[5] छेह।
कागळ जळ भेळा करै, नाखै नैण भरेह॥

सोह सुगंधी वाटली, मोती जडी ज हाथ।
जाणू साल्ह जगाइया, सोती माझल रात॥

इतरी सपना री वात सखिया नै कही अर ममाणी चारणी पण कन्हा थी तिकण मे देवतणौ[6] हुतौ तिण आगै मारू कहै लागो—हज म्हारै तौ आज सगळौ डावौ अग फुरकै छै। तद चारणी बोली—

जाघ फरूकै कर फुरै, कर फुर अहर[7] फुरत।
नाभि कुडळ जै फुरै, तौ पिव वेग मिळत॥

मारू निहचै राखि मन, चित्त डुलावै मित।
सज्जण वेगा आवसी, मिळसी थारो कत॥

ममाणी चारणी मारू नै धीरज बधावै छै—कवरजी आज सही पधारसी। अबै मारू थे संपाडा[8] री तयारी करौ। इसी बाता चारणी मारू नै कहै छै। अर ढोलोजी पण मारू खातर करहा नै उतावळो खडै छै—

करहो खडे मन समौ, आयौ ढोलो अेह।
इतरी धरती लाघता[9], पगा न लागी खेह॥

ढोलोजी पण पिंगळ आय पहु ता छै अर मारू नै पण आळगै[10]न छै सु रमण नै बारे आई छै। ममाणी चारणी पण साथै छै। सातबीसी सहेलिया अर बीजी लुगाइया महर री साथै छै। बाग मे मह रमण[11] लागी छै। लूहर[12]गाईजै छै।

---

[1]तीर [2]शिकारी [3]मुग्धा, मारवणि [4]कागज [5]आँगन [6]देवत्व
[7]अधर [8]स्नान [9]पार करने पर [10]जी लगना [11]खेलने
[12]नृत्य के साथ गीत-विशेष।

इतरा मे राजलोक आय करहा री निछरावळ कीवी। करहा रा घणा जतन किया। सहेलिया कहै—

कवर भलाही आविया, थ्यारी छौ मन चाह।
करहो मन ही आवियौ, मरवण मिळनी नाह॥

इतरी वात राजलोक करहा सू कीवी। मात वीसी सहेलिया, मारवणि, राजलोक सारोही साथ ढोलाजी कन्है जाय छै—

मारवणी सिणगार करि, मदिर कू मल्हपत[१]।
सखी सुरगी साय करि, गय गयर्णा[२] गय गत॥

सोई सज्जण आविया, जाकी जोंती वाट।
थाभा नाचै घर हसै, खेलण लागी खाट॥

घम्म घम्मंतई घाघरै, उलटचौ जाण गयद।
मारू चाली मदिरे, झीणे वादळ चद॥

मारू चाली मदिरे, चन्दउ वादळ माहि।
जाणै गयंद उलट्टियौ, कज्जळ वन रै मांहि॥

मारू ढोलेजी री हजूर आय मुजरो कियौ। तद ढोलोजी ऊठि नै मारू नै घणौ सनमान दीधौ। हाथ पकड ढोलिया ऊपर वैसाणी। आम्हा-साम्हा चौ निजर हुवा।

ढोलै जाण्यौ वीजळी, मारू जाण्यौ मेह।
च्यार आख अेकठ हुई, सैंणा वंध्यौ सनेह॥

मारू वैठी सेज सिर, प्री मुख देखै तास।
पूनम केरे चद ज्यू, मदिर हुवौ उजास॥

ढोले मन आणद हुयौ, चतुर तणे वचनेह।
मारू मुख सौरंभियौ[३], आवि भमर भणकेह॥

कठ विलग्गी मारवी, करि कचूवा[४] दूर।
चकवी मन आणद हुवौ, किरण पसारचा सूर॥

आसा लूघ उतारियौ, घण कचुवौ गळेह।
घूमै पडिया हसडा, मूला मानसरेह॥

---

[१]चली [२]गजगामिनि [३]सौरभयुक्त [४]कचुकी।

ढोलो मारू अेकंठा, करे कतूहळ केळ।
जांणे चदण रूंखडै, विलगी नागरवेल ॥

आजे रळी वधावणी, आजे नवंळा नेह।
सखी अमीणा गोठ मे, दूधे वूठा मेह ॥

ज्यू सालूरा सरवरा, ज्यू धरती सू मेह।
चपक वरणी वाल्हमी, चदमुखी मू नेह ॥

ढोलो मारवणि रमता हितारथ सू धापै न छै। वळे काव्य-रस लेवै छै—

सुदर चोरे संग्रही, सव लीधा सिणगार।
नदफूली लीधी नही, कहि सखि कवण विचार ॥

तद कह्यौ—

अहर रग रत्तौ हुवै, मुख काजळ मसिव्रन्न।
जाण्यौ गुजाहळ अछै, जेण न ढूक्यौ मन्न ॥

सहेल्या जाळयां माहे झाकती हुती तिके वोली—

सज्जण आया हे सखी, थानै किण कहियाह।
राय चपा रा फूल ज्यू, महले महमहियाह ॥

ढोलोजी कहण लागा—अवै म्हांनै सीख दिरावौ। पिगळ राजा बोल्यौ—घणा वरसा सू कवरजी पधारिया छौ, महीनो अेक अठै रहौ। जद ढोलोजी वोलिया—रह्या सझै नही। सीख रो हुकम होवै। तद पिंगळ राजा कह्यौ—भली वात। अवै मेलण री तयारी करा छा, इतरै दोय दिन वळे रहौ। ढोलोजी बोल्या—रथ सेझवाळां रो काम नही। म्हे तौ अठारा हाल्या[1] ठेट नळवर जास्या। वीच कोई रहा नही। म्हे हेकण ऊठ चढि ठेठ जास्या। जद पिंगळ राजा कह्यौ—म्हारी धरती खोटी[2] छै, अठै राज साथ लेनै पधारौ। आपणे ऊमर सूमरौ लागू[3] छै। तद ढोलोजी वात मानी। राजा पिंगळ रथ जुताय मारवणि नै माहे वैसांणी। सेझवाळां माहे सहेलिया बैठी छै। दीवाधरी[4] साथै दीन्ही छै। सौ असवार साथै दीवा।

ऊमर सूमरा नै ढोलोजी आया री खवर हुई छै सु मारग वाधिया छै—ढोला नै मारस्या अर मारवणि नै उरी लेस्या।

---

[1]चलते हुए [2]बुरी [3]पीछे पडा हुआ [4]वह दासी जो दीपक सजोती है।

इतरा में ढोलाजी पूगळ रै गोरि[1] मे आया छै। सूरज तद अस्त हुवौ छै तिण सू गाव री खबर काई पडै नही। वाग माहे कोहर[2] छै, तठै सानवीसी सहेलिया सू मारू रमती छी, तिण रो कोळाहळ सांभळि नै ढोलाजी कोहर दिस आया। इतरै ढोलाजी करहा नै काव वाही[3]। ताहरा करहो करहकियौ तद ममाणी चारणी वोली—

मारू ढोलो आवियौ, करहो कर कुहेह।
सहिज तूठा सज्जरणा, दूधा वूठा[4] मेह॥

इतरै ढोलेजी पण कोहर आया। कोहर कन्है पांणी री खेळी[5] भरी छी तठ करहा नै पाणी पावणौ माडियौ[6]। करहो पीवै नही तद ढोले कह्यौ—

करहा चरौ करेलिया, पान चितारि म रोय।
सरवर लाभै सिरजियौ, खूहड़िय मुह खोय॥

मारवणि तौ ढोलाजी नै जाणै नही। ढोलोजी पण मारू नै जांणै नहीं। चारणी माहे देवतण हुतौ सु वा जाण्यौ—ढोलाजी छै। ताहरा ढोलाजी कह्यौ—

सव ही ल्यौ वड वाळिया, सव ही के गळहार।
हेकण मारू वहिरी[7], सह वाड्या[8] जुहार॥

अवै मारू क्यू तौ दीठी नही, दीठि घूघटी काढ सहेलियां माहे धस गई। पछै सहेल्यां साथे होय महल पधारिया।

ढोलोजी वाग माहे उतरिया अर वागवान ऊंठ झालियौ[9]। अेकण वागवान जाय पिंगळ राजा नै वधाई दीन्ही—हुज ढोलोजी पधारिया छै। तद पिंगळ राजा ढाढिया नै मेलिया—देखा-देखौ कवरजी वाग माहे उतरिया छै। तद ढाढिया मुजरो कियौ। ढाढिया आय पिंगळ राजा नै खबर दी—महाराज कवर पधारिया छै। जद पिंगळ राजा, ठावा[10] उमराव कवर ढोलाजी सांम्हां आया। आयनै मुजरो कियौ। पछै ढोलाजी नै दरवार ले आया। राजा पिंगळ सू आणि मुजरो कियौ।

अवै पिंगळ राजा आपरा खवास नै कह्यौ—कंवरजी नै मरदन[11] करावौ,

---

[1]वस्ती की सीमा [2]कुआ [3]लगाई, मारी [4]वरसा [5]कुए पर जानवरो के पानी का स्थान [6]प्रारभ किया [7]विना, अलावा [8]लडकियां [9]पकड़ा [10]समझदार [11]मर्दन।



पोसाक वणावौ । तद खवास कवरजी नै सपाडौ[1] कराय सिरपाव कियौ । घणा केसर अरगजा मे गरक[2] हुवा । ढोलाजी री रूप सीवी[3] देख नै सहेलिया सगळी राजी हुई ।

अवै मारवणि पण सनान कियौ । अनेक सोरभ, सुगंध, चोवा-चदन रा विलेपन किया । केसा मे मोती सारि[4] सोळै सिणगार सझि तयार हुवा छै । हिवै पिंगळ राजा कवरजी नै कह्यौ—आप उतावळा खड नै पधारिया छौ सु थाका होस्यौ । महल पधारौ । सुख करौ । ताहरा ढोलोजी महल पधारिया । पिंगळ राजा रा खवास पासवान सारा ही साथे हुवा, तद ढोलाजी साळिया सहेलिया री सारी हकीकत वांनै पूछ लीन्ही छै ।

पछै सहेलिया आय ढोलाजी री चतराई परखण लागी । मारू री छोटी बहन हुती—वाल्हकवर तिण नै ढोलाजो कन्है मेली—देखा ढोलाजी पिछाणै क[5] नहीं । तद ढोलेजी देख नै कह्यौ—आ मारू नही, मारू रो उणिहारो[6] छै । वळे कह्यौ—वाल्हकवर पाधारौ, अर, घणौ आदर सनमान दियौ ।

वाल्हकवर तौ ऊपरा, लख अेक वारू नार ।
तिण माहे इवकी तिका, मारू रूप अपार ॥

सहेलिया कहण लागी—कवरजी सरीखा चतर कोई नही । पछै साल्हकवर तौ उरली-पैली वात करनै ढोलाजी नखा परी ऊठी ।

अवै मारवणिजी रै लारै सगळी राजलोक, सरव सखिया साथै छै । लहरा लेती, मतवाळी थकी जाणै किरती रो भूवको, असमान री उतरी मोत्या री लड । थाका हस सरीखी थेगा देती चली आवै छै । बीजौ राजलोक कहण लागी—आज ढोलाजी नै रूडा देखस्या ।

मारू पैला तौ करहा कन्है गई । जाय करहा री निछरावळ करी । तिणनै चौक रै वीचोवीच बाधियौ छै । सहेलिया कन्हा सू करहा रो डील झडकायौ छै । ताहरा मारू वोली—

करहा तू भल सिरजियौ, मेल्यौ साल्ह सुजांण ।
नातर कदै न आवतौ, तू हिज कारण जाण ॥

---

[1]स्नान [2]सरावोर [3]छवि [4]पिरोकर [5]पहिचानते [6]स्वरूप ।

सोव्रन जडित सिंगार वहु, मारवणि मुकळाइ।
गय हैवर दासी वहुत, दीन्ही पिंगळ राइ॥

हिव सूमर हेरा हुवै, मारू झूवण हार।
पिंगळ वोळावा[1] दिया, सोहड सौ असवार॥

ढोलोजी पहल वासे थळा[2] मे रह्या। अळगा-अळगा असवार चौकी रह्या छै। इसै समै दोनू जणा वाता करै छै—अेकण सेज वैठा थका। ताहरा ढोलाजी पूछियौ—थे इतरा दिन क्यूकर काढिया[3]। ताहरां मारू वोली—कवरजी साहव, कितरा हेक दिन तौ मोनू खवर न छी। सौदागर आयां पाछै खवर हुई छै। तठा पछै दिन दोरा घणा ही निसरिया। आप ताई[4] आदमी मेलवा सू आदमी सौ मारिया गया।

पछै ढोलोजी कहै—था विनां दिन गया तिके वरस ज्यू वीत्या। वळे कहण लागा·—

मारू थारा गुण घणा, किम हू कहू ज सार।
आखर तौ वावन रह्या, तुझ गुण अत न पार॥

यू वातचीत करता राति-वासो[5] लियौ अर नीद आय रही, तद दोनू पोढि रह्या। मारवणि रै सरीर री सौरभ किस्तूरी जिसी छै। उठै पीवणा साप घणा हुता तिण सूं रात सूती मारवणि रो सास पीग्या, तिण सू मारवणि निरजीव होय गई। परभाते जगाई जागी नही। ताहरा ढोलोजी, दीवाधरी सखी नै सगळा ही आणि भेळा हुवा। ढोलोजी अति विलापात करण लागा—

निसि भर सूती सुदरी, वालम कठ विलग्गि[6]।
मोहण-वेली मारवी, पीधी नाग भुयंगि॥

जिण देसे विसहर घणा, काळा नाग भुयग।
सुती निचती मारवी, ढीला मेल्है अग॥

वाही[7] थी गुण वेलडी, वाही थी रस वेलि।
पीणे पीवी मारवी, चाल्या सूतीं मेलि॥

मारू मारू कळइया, ऊजळ दती नार।
हंस नै दै हुकारडौ, हिवडौ फूटणहार॥

---

[1]पहुंचाने के लिए [2]रेगिस्तान [3]निकाले, विताये [4]लिए [5]रात भर का विश्राम [6]लगाकर [7]वोई।

वोलाऊ कहण लागा—कवरजी दुख मती करो। मारू नै दाग द्यौ अर थे पाछा चालौ। मारवणिजी री तीजी वहन चंपावती थानै परणावस्या[1] । ताहरा ढोलोजी वोल्या—

इण भव मारू कामणी, अन पाणी इण सथ्थ ।
पूगळ नू सह को वळउ[2], न करउ म्हाकी कथ्थ ॥

ढोलोजी घणा ही साद[3] दिया पण मारू जागी नही। ढोलोजी कहै—

वळतौ ढोलो इम कहै, कळ[4] अखियात[5] करेह ।
मारवणी पीणै डसी, हू ही साथ करेह ॥

तिण वेळा सिव पारवती समाजोग सू तिण ठौड़ आय निसरिया। तद जोगी रै भेख सिवजी वोलिया—

नर नारी सूं क्यू जळै, नर सू नारि जळत ।
साल्हकुवर जोगी कहै, अहळौ[6] केम मरत ॥

तद पारवती कहै—

सकर सू गवरी कहै, प्रीत मिळै किण पाडि ।
जो स्वामी[7] कहियो करै, तौ मारवणि जीवाडि ॥

पछै पारवतीजी अेक थळ पाछै छिप रहया। महादेवजी रो जीव तातू-माघू[8] करण लागो। तद पारवतीजी पाछा आया तौ सिवजी वोल्या—थानै दीठा विना घडी अेक हू घणो अचैन पायौ। तद पारवतीजी वोलिया—महाराज, इसी पीड लुगायां गी साराही नै हुवै छै। मारवणि रै हेत ढोलो लारै वळै छै। इण री दया देख मारवणि नै जिवाडौ। सदा सिवजी ढोला नै कहण लागा—लुगाई री लारां मती वळौ। तद ढोलोजी वोलिया—

सिव हू ती ढोलो कहै, कूडी गल्ल न कथ्थ ।
हूणा जीणा अेकठा[9], मरणा मारू सथ्थ ॥

महादेवजी विचारियौ—ढोलो खरै-मनै[10] वैठा छै। ताहरा सिव अम्रत छाटियौ, मारवणि जीवती हुई।

---

[1]व्याह देंगे [2]लौटो [3]आवाज [4]कलयुग [5]प्रसिद्ध, अमर [6]व्यर्थ [7]स्वामी [8]वेचैन [9]एक साथ [10]पक्का विचार।



हुई सचेती मारवी, ढोलै मन आणंद।
जाण अधारी रयण में, प्रगटयौ पूनमि चद॥

मारवणि नै सचेत करि सिव-पारवतीजी अलोप[1] होय गया।

मारवणि ढोलेजी नै पूछण लागी—लकडा भेळा कासू कीवा ? तद ढोलोजी बोलिया—मारवणि, थे निरजीव होय गया छा। पीवणो सांप थानै रात नै पी गयौ छो। अबै हालण री तयारी करै छै—

के मेल्या पूगळ दिसइ, किही भळाया भार।
साल्हकुवर करहे चढयौ, वासे चाढी नार॥

ऊमर सूमरे नै ढोला-मारू रै आवण री खबर मिळी तद आय मारग वांधियौ। बैठा मतवाळ कर रह्या छै। तद अै मारू री निजर आया। ताहरा मारवणि बोली—कवरजी, अै भला न छै। या सू टळ[2] नीसरौ[3]। अै आपणा दुसमण छै। ढोलाजी नै टळण री सौगन हुती, तिण सू टळिया नही। इतरा मे ऊमर सूमरो आडो आय फिरियौ—

ऊमर दीठौ करहलो, दीठा मारू ढोल।
आवौ कवरा मद पिवा, बोलै मीठा बोल॥

ऊमर ढोलाजी नै कहै लागौ—राज उरा[4] पधारौ। टळ'र क्यू नीसरो छौ। घड़ी अेक ऊतरौ ज्यू भेळा अमल-पाणी करा[5]। पछै म्हे म्हांरै गेलै[6] जास्या, राज राज रै मारग पधारज्यौ। इतरी मनुहार करि करहा री मोहरी झालि[7] करहा नै झेंकायौ। तद ढोलाजी ऊठ री मोहरी मारवणि नै झिलाई, आप ऊमर सूमरा साम्हे गया। आगे गलीचा रा विछावणा हुइ रह्या छै, जठै ढोलोजी जाय वैठा छै। तद ऊमर कह्यौ—

ढोला थाका देस मे, निपजै तीन रतन्न।
इक ढोलो बीजि मारवि, करहो कुकु वन्न[8]॥

ताहरां मारवणि रै लारा पीहर री डूमणी ऊभी छै तिण विचारियौ—अे घात खेलै छै। म्हे या रा वाला[9] कवा[10] खाया छै। काई समझावण करू। ऊठ रो गोडो पण वधियौ छै—यूं सोच करै छै।

---

[1]अदृश्य [2]टल कर [3]निकलो [4]इधर [5]अफीम आदि लें [6]रास्ते [7]पकड कर [8]वर्ण [9]प्यारे, मीठे [10]कौर।

गीतँ गावँती डूंमणी, खेली नवळी घात।
करहा ढोलो ऊबरै, कहि समभाऊ वात॥

तात तणक्कै पिव पियै, करहो ऊगाळेह[1]।
भल काढेसी दीहडा, विहि[2] जु काढण देह॥

सयण खळा मे मडियौ, ग्रेहज रग कुरग।
धण लीजै पिव मारिजै, छोडि विडाणो[3] सग॥

मारवणी नू ग्रति चतुर, हियै जु चेत गिमार।
जो कता सू कामडी, करहो कावे मार॥

डूमणी रा कह्या सू मारवणि समभी। करहा नै काव बाही जद करहो ऊठ तीना पगां सू हालतौ हुवौ। तद ऊमर वोलियौ—करहो जाण पावै नही। ताहरा राजपूत भालण नै ऊठिया। तद मारू बोली—ठाकरा, क्यानै दोडौ ? था कन्हा पकडावै नही। इणरा धणी नै मेल्हौ जु विसास[4] नै पकडै। तद ऊमर कह्यौ—ढोलाजी करहो पकड वेगा पधारौ। राजपूता नै कह्यौ—थे ढोला दोळा[5] रह्ज्यौ। पछै ढोलोजी करहा नै जाय पहु ता। विसासि नै करहा नै ऊभौ राखियौ। तद मारवणि कह्यौ—

ततखिण मारवणी कहै, साभळि कथ सुजाण।
ग्रापां चूकौ ऊमरौ, क्यू रक्खै ग्रापाण॥

ग्रा हकीकत सुणि ढोलोजी झैकि चढिया। ढोलोजी मारू साम्हौ जोयौ। मारू री ग्राख्या मे इमरत वसै छै, तिण सू ढोलाजी रो ग्रमल उतर गयौ। तद मारवणि कह्यौ—ग्राप करहा नै तातौ[6] खडौ। जद ढोलोजी करहा नै काव वाही। ताहरा ऊठ तीन पागा रै पाण पखेरू ज्यू उडियौ जाय छै। ताहरा ऊमर बोलियौ—ढोलो जाणे न पावै। ताहरा ऊमर सूमरो पाचसै ग्रसवारा था[7] चढियौ—

ऊमर ऊतावळि करे, पल्लाणिया पवग[8]।
खुरसाणी सूघा खयग[9], चढिया दळ चतुरग॥

हळ हलौ ऊमर कहै, पथी पडै पयाण।
जो भालै तिण लाख दयू, करहा नै कैकाण॥

---

[1]जुगाली कर रहा है [2]विधि [3]पराया [4]विस्वास मे लाकर [5]पास, चारो तरफ [6]तेज [7]से [8]घोड़े [9]घोड़े।



ऊमर विच छेती घणी, याने गयो जहाज।
चारण टोले सामुहाँ[1], आइ कियो सुमराज॥

अवै ढोलाजी रै नै ऊमर सूमरा रै आतरो[2] घणौ पटियौ। आगै मारग जाता ढोलाजी नै चारण मिळियौ तिण कह्यौ—ठाकुरां आना, ऊठ रो गोडो वधियो छै। थे दोय जणा चढिया। इतरी करहा माहे कामू चूक छै ? इतरो सुणि ढोलोजी दलगीर हुवा। कमर माहो सू कटारी काढ वद काटण रै लियै चारण नै दीन्ही। भळै कह्यौ—आ न्याणी[3] ऊमर सूमरा नै दिखाज्यौ। कह्ज्यौ—तीना पगा सू हिज करहै दिखम थळ लंघिया। अवै तो च्यारा पगा सू पथ काटै छै।

पछै चारण नै ऊमर सूमरो दूजै दिन मिळियौ। तद चारण कहण लागौ—

ऊमर सुण मुझ वीनती, दव्डि म मार तुरंग।
करह लंघियो[4] कूटियौ, आडावळा वड वग॥

चारण बोल्यौ—ठाकरा, घोडा मत मारो। ढोलो कोई हाथ आवै नहीं। वै तौ हमे नळवरगढ पहु ता छै अर वळे न्याणी रो सैनाण वतायौ। तद ऊमर सूमरो फीटो पड़[5] आपरै घरे गयौ।

ढोलोजी नळवरगढ जाय वाग मे उतरिया। वागवान जाय नळ राजा नै खबर दीवी—कवरजी पधारिया छै। महळ साथै छै। ताहरां नळराजा वागवान नूं घणी वधाई दीवी। राजलोक सू घणी वधाई दिरीजी, जिण सू वागवान रा दळीदर[6] दूर हुवा।

पछै नळराजा सुखपाळ खिनाई[7]। सुखपाळां माहे सगळौ राजलोक वैठो छै। सखियां सेझवाळा माहे वैठी छै। राणी दमैंती पण आई छै। वाग माहे कनातां[8] ताण, विछायता कीवी। मारवणि नू हजूर वुलायी। सासू मूडो दीठौ तद घणी रजावंद[9] हुई। और ही सारो राजलोक राजी हुवौ। मारू नै मूडा दिखाणी सासू दस गाव दीधा। तद सहेलिया वोली—कवरजी, मारवणि वास्ते नीद न लीवी छी, सु मारवणि इसीज छै।

---

[1]सामने [2]दूरी [3]वह रस्सी जिससे ऊँट का पैर वांधा जाता है [4]लाघ गया [5]शर्मिन्दा होकर [6]दलिद्र [7]भेजी [8]पर्दे [9]प्रसन्न, सतुष्ट।

पछै राजा नळ पडिता नै बुलाया, समूरतौ बूझियौ। ताहरा पडित कह्यौ—महाराजजी, आज रो समूरत तौ आछौ छै। जद राजा नळ आपरो खवास खिनायौ अर कहाड़ियौ—आज रो महूरत आछौ छै। कोट मे पधारौ। कंवरजी कह्यौ—भली वात, सेभ्स्वाळां जुपावौ। अवै कवरजी घोडै चढिया छै। सारी सहेलिया मगळ गावै छै। डूमणिया वधावा गाय रही छै। बत्तीस वाजित्र[1] बाजै छै। नाटिक नृतकारी कर रह्या छै। इण भात सामेळौ करि[2] वधाय नै ढोलाजी नै गढ माहे लिया। आयनै नळराजा रै पगे लागा। नळराजा वहोत राजी हुवौ। खवास पासवान उमराव साराही कवरजी सू मिळिया। मुजरा पछै नळ राजा कंवरजी नै सीख दीवी सु महला-दाखल[3] हुवा। सारा ही सहर माहे वधाई वटी। उछाह हुवौ। ढोलेजी महला जाय सारा राजलोक सू मुजरो कियौ। राजलोक सारे ही निछरावळ[4] कीवी। पछै ढोलेजी खवास पासवाना नै सीख दीवी। इतरा माहे मारवणिजी ढोलाजी री हजूर आई। पछै माळवणि पण सिणगार करि सखिया रै झूलरै ढोलाजी री हजूर आई। तीनू ही जणा झूलि[5] माहे वैठा छै। राजलोक सारो ही जाळिया माहे झाकै छै।

मारवणि नै माळवणि, ढोलो तिण भरतार।
अेकण मदिर रग रमै, की जोडी करतार॥

ताहरा माळवणि ढोलाजी नै पूछण लागी—कवरजी, किसी भात पधारिया, किण विध आया। ताहरा ढोलेजी अेवाळ री, भाट री, चारण री, मारग मे जिको हकीकत हुई छै तिकी सारी ही कही। वळे ढोलेजी पूगळ रा घणा घणा वखाण[6] किया। पिगळ राजा रा, आपरी सासू ऊमा देवडी रा घणा वखाण किया। ताहरा माळवणि बोली—

ततखण माळवणी कहै, साभळ भत सुरग।
सगळा देस सुहामणा[7], मारू देस विरग॥
वाळू वावा देसडौ, पाणी सदी ताति।
पाणी केरे कारणै, प्री छडै अवराति॥

---

[1]वाद्य यंत्र [2]स्वागत करने की रस्म अदा कर [3]महलो मे प्रविष्ट हुए [4]आत्मीयजन के सिर पर कोई वस्तु या द्रव्य घुमा कर दान कर देना [5]झूला [6]बखान, प्रशसा [7]सुहावने।

बाबा म देई मारुवा, वर कुआरि रहेसि।
हाथ कचोळो[1] निर घडो, सींचती य मरेसि॥

जिण भुइ पन्नग पीयणा, कयर कटाळा रूंख।
आके फोगे छांहडी, हूंछा[2] भाजै भूख॥

ताहरा मारवणि बोली—

बळती मारवणी कहैं, मारू देस सुरंग।
बीजा तौ सगळा भला, माळव देस विरंग॥

बाळू बाबा देसडौ, जह पांणी सेवार[3]।
ना पणिहारी झूलरै[4], ना कूवै लैंकार॥

बाळू बाबा देसडौ, जह फीकरिया[5] लोग।
अेक न दीसै गोरिया, घरि घरि दीसै सोग॥

तद ढोलाजी बोलिया—

मारू देस उपन्निया, त्यांका दत सुनेत।
कूंझ-बची-गोरगिया, खंजर जेहा नेत[6]॥

मारू देस उपन्निया, सर ज्यू पाधरियांह।
कडवा कदे न बोल ही, मीठा बोलणियाह॥

देस सुरगो भुंइ निजळ, न दियौ दोस थआंह।
घर घर चदव्रदन्नियां, नीर चढै कवळह॥

सुणि सुन्दर केता कहा, मारू देस वखाण।
मारवणी मिळियां पछै, जाण्यौ जनम प्रवाण॥

ढोलोजी मारवणि रा अर मारवाड रा वखांण किया ताहरा झगडो भागौ[7]। वळै माळवणि जाण्यौ—घणौ कह्या तौ कंवरजो वुरो मानसी तिण सू सरावै[8] पण हासी[9] करती जाय छै। माळवणि इण विध सराह पण करै, मसकरी पण करै तोही ढोलो मारू रो वुरो न मानै। बीजो राजलोक आपरै ठिकाणै गयौ।

ढोलोजी अर दोना राणियां बैठा वात करै छै।

---

[1]कटोरा [2]भुरट [3]ऊंचा [4]झुण्ड [5]फीके, कमजोर [6]नेत्र
[7]समाप्त हुआ [8]सराहना करती है [9]हंसी-मजाक।



जिम मधुकर नै केतकी, जिम कोइल[1] सहकार।
मारवणी मन हरखियौ, तिम ढोले भरतार॥

मारवणि नै माळवण, पायौ छै भरतार।
महला माहे रग रमै, विलसै सखरी वार॥

रायजादो ढोलो रमै, प्रिया ज मारू सग।
केसर वरणी साथ मे, अैसौ मारू अग॥

मारवणि सू ढोलाजी रो हेत घणौ छै। घर-रा महल-माळिया सगळा दिखाया छै। तद वीजा राजलोक वोलिया—आज तौ मारवणि नै वाग दिखावण लेजावा। तद सगळो राजलोक भेळो होय नै वाग गया। उठै मारू नै सगळी जायगा दिखाई। पछै राजलोक मारवणि नै कहण लागा—थे उठै पूगळ मे दूहा कह्या सो म्हे अठै साभळिया[2]। राजलोक कहै—

मारू तू तौ मोहणी[3], सह सिणगार सपूर।
महिला माहि उजासडौ[4], जाण क ऊगौ सूर॥

इतरी वात तौ वाग माहे हुई, पछै सारो राजलोक महिलां पधारियौ। ढोलोजी पण दरीखाना सू ऊठ महल पधारिया। मारवणि ढोलाजी रै हजूर आई। तद ढोलोजी वोलिया—

मारू महला सचरी, कनक वरणे तास।
पूगळ माहे ऊपनी[5], नरवर हुवौ उजास॥

ढोलाजी मारू सू अनि प्यार राखै छै। सासू-सुसरा पण मारू रो मांन घणौ करै छे। मारू पण सासू-सुसरा रा कथन मे रहै छै।

अवै पिंगळ राजा डायजौ मेलियौ छै। मारवणि रा सासू-सुसरा नै सवागा, करहा, कैंकाण घणा ही दीधा। मारवणि रै पचास हजार रिपिया रो गहणो—पाच हजार रो सोना रो गहणो, मोतिया रो गहणो, हार-गजरा मेलिया छै। सातवीसी सहेलिया मेली छै ज्यानै च्यार हजार रो रूपा रो गहणो। दस हजार रो सोना रो गहणो महेलिया मारू मेल्यौ छै। पिगळ राजा रो परधान डायजो ले'र आयौ छै, तिण री ढोलाजी अर नळराजा घणी मनवार करै छै। माथे ढाढी पण आयौ छै।

---

[1]कोकिल [2]सुने [3]मोहिनी [4]प्रकाश [5]उत्पन्न हुई।

आणद घणा उछाह अति, नळवर वाज्या ढोल।
ससनेही सयणा तणा, कळि[1] मे रहिया बोल॥

ढोले मारू घणा सुख विलास कीधा नै जुग-जुग त्यारा बोल रहसी। ढोला मारू रा बात दूहा मगर-वल्ह[2] गाया तिणा नै लाखपसाव ढोलाजी दियौ।

अबै ढोला मारू री वात सुणसी तिणा नै ढोला मारू रो सुख होसी। दुख उपजै नही। दिल खुस्याळी रहसी।

इति श्री ढोला-मारू री वारता, दूहावध सपूरण
सवत् १८७२, भादवा सुदि १४

---

[1]कलियुग [2]दोनो ढाढियो के नाम जो मारवणि का सदेश नळवरगढ ले गये थे।

जलाल - बूबना

बेटा कुलनहसीव का, जास गाहणी माय[1] ।
जिसकी औरत बूवना, सो मुमना न सुहाय ॥

थटाभखर रो वादसाह अगतमायची । तिणरी वहण, तिकी वुलख रै वादसाह कुलनहसीव नू परणाई । तिणरो गढ गजनीपुर राजस्थान[2] । तिणरै बेटा दोय हुवा । पछै बादसाह फौत हुवौ ।

सो वादसाह फौत हुवौ जाण भोमिया[3] ऊपर आइया[4] । उमराव फोडिया देखनै, गाहणी दोनू वेटा नू लेयनै, थटेभखर आई । भाई कन्है भाणेज दोनू मिळिया । तरै[5] अगतमायची वादसाह महरवान होय मनमव दियौ । पण जलाल क्यू ही सहूर[6] मे निजर अव्वल आइयौ । रूप रग मे जसो वादसाह रो छोहरू[7] होवै तिसौ हीज दीसै । उदार चित्त, घणौ माणगर[8], सो छोटे थका ही री निजर ऊमदा[9] । तरै जलाल नू हजार दस री जागीर दीन्ही और हजार तीन रोकड खजाना सू हाथखरच रा आवै । तनोमनो यार नै गखड़ो ढाढी गावै । आगै ओसाप परवाडा[10] वूढा रा, दातारा रा, माणगरा रा सुणावै । ताजियो गुहलोत तिको जलाल आगै देसा विदेसा री गल्हा[11] करै । फूलमदवो खवास खवासी

---

[1]माता [2]राजधानी [3]जागीरदार विशेष जिनकी जागीर भोम कहलाती है [4]आए [5]तब [6]ल्याकत [7]लडका [8]उपभोग करने वाला [9]वढिया [10]प्रवाडा [11]गप्पें, वार्ते ।

करै। रात दिन इतरा हजूर माही रहै। यू रहतां करतां जलाल वरस वारह में हुवौ। तरै हथियार बाध वादसाह कन्है मुजरै आइयौ। तरै खवास वादसाह रै नै जलाल रै विचै खाडो खडो कियौ। जलाल सलाम कीवी। तरै मामै पूछियौ— जे भाणेज, कमर वाध किस तरफ तयार हुवे, और वीच में खांडा क्यू खडा किया है? तद जलाल वोलियौ—जे हू ही वादसाह रो लडको छू सो सलाम तौ बरोबरी रै दावे नही करू, तीसू खांडो वीच रै मांही खड़ो कियौ। और सिपाही छा कठे ही पेट भरणे नू चालस्यां। वादसाह कही—दस हजार री जागीर पावौ छौ, सागे तीन हजार रोकड हथखरच[1] रा ही पावौ छौ, तोही निवाह[2] क्यू ना हुवै?

तद जलाल वोलियौ—चाकरी खूब करावौ पण वादसाहा रो अमल-दस्तूर[3] दुरस्त करियौ चाहौ तौ म्हारे मुरातवा[4] माफक मनसव[5] देवौ। वादसाह कही— मनसव क्या लेवोगे? जलाल कही—पाऊ तोपकसो पण पक्को हपतहजारी[6] मनसव देवौ, तिणसू चौदह हजार असवार अेका मौजूद पास रहै नै लाख अेक रिपिया छैमाहिया देवौ। तिण मे सात हजार ढळैत राखू रै हजार सात बरकमदाज रहै। मिळिया मिळिया हजार चौदह असवार रहै। हजार चौदह पियादा रहै। जुमो हजार अगई लोग सिपाही रहै। तरै खुसी आवै सो चाकरी करावौ। करडी मुही[7] मे भेजौ। इतरी देवौ तौ रहू। चाकरी हजूर री करू।

तरै बादसाहजी हस नै फुरमान कियौ—हपतहजारी मनसव रिपिया लाख रो छै। तरै जलाल जागीर मे आदमी भेज्या। भला सिपाही, साखदार[8] खांप-खाप रा राखिया। हमेसां सुधा मे गरकाव[9] रहै। कलावत[10] तवायफा[11], सात चाकर राखिया। राग-रग मे मस्त रहै। अमराव मुजरै नू आवै त्यांनै कस्तूरी कपूर री चोळी कर निपट मूहगे मोल रो वीडो देय इतर मे गरकाव रहै। हमेसां गोठा हुवै। दूवळा-लोग[12] जिका आवै धाप-धाप जावै। गरीब

---

[1]हाथ खर्च [2]निर्वाह [3]राज्याधिकार देने की रस्म [4]रुतवे के
[5]पद विशेष जिसमे रोकड या सवार रखने का खर्चा दिया जाता है
[6]मनसव विशेष [7]कठिन परिस्थिति [8]खानदानी [9]पगा हुआ
[10]गायक, गाने वाली एक जाति [11]गाने का पेशा करने वाली औरतें
[12]गरीब लोग



खैरात पावै। गरीवा नू नितका[1] नाज, कपडो जिको चावै सो पावै। ढाढी, गुणीजन आवै। इनाम पावै। पेटिया खावै। गुण गावै। मौजा करता जावै।

वागा मांही सैला करै। गुलावजळ री तूगा[2] सू सापडै[3]। छिडकाव गुलाव रो हुवै। केसर-कस्तूरी, भीमसेनी कपूर रो मरदन हुवै—तिणरो कीच मच्चियौ रहै। सो इण भात जलाल गहरी मौज आणद सू रहै। फूला री तिवारा[4] दारू पी'र लाल रहै। दिनरात सारो साथ मतवाळो छकियौ रहै। सो इण भांत जलाल राजस करै।

तिण समै सिंघ समुद्र रो वादसाह भंवर, तिण रै जीवणी वेगम जचणजात, तिणरी कूख दोय वेटी हुई—वडी मूमना, छोटी वूवना। वडी वरस अठारह मे, छोटी वरस पनरै माही हुई, जद वादसाह खासा[5] हजूरिया नू फुरमाई—जे वाया मोटी हुई। जसी वाया छै तिसाही वर जोवौ। सो वादसाह जलाल री बात सुणी थी.—

जलाल हाथा ऊपरै, वारू असुरांणीह[6]।
कपणा[7] किता विमाह[8] व्है, मात जा गाहणीह॥

मांणीगर दातार मे, रणचगौ[9] जस खग्ग।
जायौ अर नह जनमसी, जलाल जैसो नग्ग॥

अै दोहा सुण नेप गाहणी री वात पूछै। तरै वादसाहजी कहियौ—जलाल वडो दातार, भोगी-भवर[10] छैल छै, तिणसू वूवना तौ जलाल नू देवौ। आ पण वहोत सुघड छै। मूमना विसेस समभदार नही छै, तिणसू आ वादसाह अगतमायची नू देवौ। तिणरै तीन सौ साठ हुरमत छै, पण मोटौ सगौ छै। इतरो विचार कर दरवार रा आदमी सागे देय काजी नै मुद्दै कर, हाथी घोडा कपडो मेवौ रोकड वेवडा नारेळ टीके मेलिया। हकीकत सारी कही। सो चालता-चालता थेट थटेभखर पहु चिया।

वादसाह नू खवर हुई—सिंघ समुद्र रै वादसाह रै दोय वेटी छै, त्यारा नारेळ

---

[1]सदैव [2]तरल पदार्थ रखने का वडा वर्तन [3]स्नान करते हैं [4]तीन वार भट्टी पर चढाया हुआ तेज शराव [5]खास [6]मुसलमान स्त्री [7]कजूसो के [8]विवाह [9]रण-कुशल [10]रसिक, वहुत उपभोग करने वाला।

आइया छै। वड़ी मूमना तिकी बादसाह नू। छोटी बूबना तिको जलाल नू छै। बादसाह दोना री वात सुणी थी तीसूं कही—छोटी हमारे होवै तौ आछी। तरै काजी अरज करी—जलाल सुघड़ छैल छै, नै बूबना पण सयाणी छै—तिणसूं जोड़ी देख भेज्या है। बादसाह कही—सुघड छैल क्यूं करके जांणिये। तरै कह्यौ—सापड़ै[१] जणा माथा रा केस उळझाय देवै पछै कांगसी केसां रै ऊपर बरै तिकी पाधरी[२] चली आवै, अटकाव नहीं होवै, वरती तद चली आवै, तो पूरो सुघड छैल कहीजै। सो इसडौ जलाल छै। और आप वड़ा हो तिणसूं वड़ी लड़की आपरै तांई देणी फुरमाई है। तरै बादसाह कहियौ—तुम जलाल रै पास जावौ और छोटी रा नारेळ हमारे ठहरावौ तौ हम रजामंद है। इनरो कह काजी नू चाहियौ[३] लालच दियौ सो काजी ललचाय गयौ। तद बूबना रो नारेळ बादसाह नूं अर मूमना रो नारेळ जलाल नू दंवायौ। आया था तिकां नू रीझ-मौज[४] मिजमानी देय विदा किया।

पछै बादसाह जलाल नूं कहियौ—व्याहणे कू चढ़ो। तरै जलाल कहियौ—मामाजी, हू कहूं जितरो सामान दिरावौ। तद बादसाह हंस'र पूछी—मागौ। तद जलाल कही—सात सौ घोड़ा कंधारी, इकमोला हजारी तिकी सुनहरी रूपहरी साखत दिरायजे और खजाना सू रोकड दिरायजे। बीजो साथ सामान सगळौ म्हारो छै हीज।

तरै नवलाख रिपिया रोकड हाथखरच नू दिराइया[५] और आवता जावतां रो रोकड़ खरच दिरायौ। और बादसाह खुस होय कह्यौ—जलाल बादसाहां रै पूगड़ा[६] होय जैसा ही है। रोजगार रो हुकम सख्त हुवौ। तद जलाल आपरा सात सौ साईना—अेक रग, अेक रूप, अेक अवस्था त्यानै आप जसी पोसाक कराई। केसरिया, बादलाई पारचो, कबल, वागा, कपडो, कमरबध, पाग सब नू बंधाई। घोडा सातसौ अवलख, समदा भंवर, गंगाजळ, संजब, कुम्मेद और गुलदारो फुलवारी तयार कराया त्यांरै सुनहरी, रूपहरी सागे साखत साज सजाया। जडाऊ पलांण मडाइया छै सो सारीसा नूं सरबरा[७] कर चढ़णे नू दिया। बादसाह कह्यौ—जे चाहौ सो और लेवौ। तद हाथी तीन सौ गहणा सू गरक

---

[१]स्नान करते समय [२]सीधी [३]मनचाहा [४]प्रसन्न होकर इनाम आदि देना [५]दिये [६]शाहजादा [७]खातिर।

थका लिया। सो हजार चौदह घोडा और हजार चौदह प्यादा सू चढियौ। सवारी बणाय बादसाहजी रै मुजरै नू आइयौ। बादसाह झरोखे आय सवारी देख बहुत ही खुस हुवौ अर कह्यौ—जे मेरा बेटा जलाल अैसा नजर आवै है—जैसा आपणा वतन खाडे रै बळ आप लेवेगा।

बादसाह आपरो खाडो सिणगार हाथी रा मेघाडंबर[1] माहो खवास रै हाथ देय विदा कियौ तिके जलाल मजल दरमजल चाल, सिंध समुद्र जाय डेरा दिया।

बादसाह भवर अजेस[2] जाणै छै—जे बूबना जलाल नू छै, तिसै भरम उपजियौ। तठा पाछै साझ समै तोरण मारण रै ताई जलाल सातसौ असवार अेक रग सू वणाव[3] कर, हाथिया री कोर लगाय, नोबत बाजा बजावता, तवायफा नचावता चालिया। खलक[4] लोग तमासो देखै। जलाल कहै—छड़ी[5] मता करौ। तमासौ देखणे देवौ। सोने रूपे रा फूल उछळता आवै। खैराती[6] अरज करता आवै, सो खैरात पावै छै। इण भात हाथी रै मेघाडबर चवर ढुळता थका सूरजमुखी लागिया जलाल आइयौ।

जलाल रै सिर सेहरो, बूवना सिर सिन्दूर।
जाणै सिंध समुद्र मे, पच्छमगंड दा सूर॥

इसी भात तोरण मार माही नू गया। चवरी बैठ नका पढणे लागिया। तरै काजी कामदार बोलिया—बूवना बादसाह नू दीवी है। इतरी बात बादसाह भवर सुण काजी कामदार सू नाराज हुवौ और कही—हम सारीखी जोडी देख भेज्या था। तुम लालच पड कर फेरासारी[7] कीन्ही है। तद काजी नू खूब पैजारा[8] पिटवायौ। काज सू दूर कियौ। घरबार लुटाय-खुसाय दीन्हौ नै तोखा[9] माही दीन्हौ—

जलाल वाता फेरता, फिरियौ भवर साह।
काजी काज चुकावतो, पडियौ कजिया[10] माह॥

इतरो कियौ पण फेरासारो नह हुवौ। बूवना नू पोसाक पहराय खाडा कन्है आणी[11] और मूमना री चालढाल देख कही—

---

[1]हौदे का छत्र [2]अभी तक [3]साज-शृंगार [4]दुनियां [5]छेडछाड [6]खैरात लेने वाले [7]उलट-फेर [8]जूतो से [9]लोहे का भारी डडा गले मे मोड कर लटका दिया [10]झझट [11]लाए।



चवरी वैठी वूवना, भळहळ वदन भळाह।
जलो कहै पतसाह रा, श्रइयो भाग श्रलाह ॥

इमी कह नका पढी नै जलाल मनभग[1] थकियौ पोढणै गयौ। वीवी श्रावै तैसे वूवना री खवास नेत्रा बादी तिणनू जलाल कही—नेत्रा खवास, तुम्हारी वीवी वूवना हमारी श्रारती मनुहार नही कीन्ही। तद नेत्रा खवास कही—जलाल साहिव, वीवी श्रावै। तैसे वूवना श्रम्मा नू कही—जलाल साहिव नू देखणै जावू। कछु निछरावळ[2] जे करू ? तद मा हुकम दियौ, जणा वूवना श्रापरी सखी-सहेली, नेत्रा खवास नू श्रागै धर, जठे जलाल महल मे वैठा छै, उठै श्राई। तीनू श्रावती देख जलाल कही—

श्रटल मोती सिर तिलक, वेणी श्रधिक वणाय।
जाण'क हस मळफियौ, मानसरोवर माय ॥
कहर किया वे वूवना, हजी हजली हाय।
पडिया तडफै ताल मे, ज काजी करद किया ॥

इतरै वूवना श्राय खडी रही, तद जलाल कही—

न जाणू तै क्या किया, लाड[3] गहेली[4] मुज्झ।
नैणा नीद न जीव सुख, जदे न देखू तुज्झ ॥

तरै वूवना कहै—

वेटी भंवर साहरी, जवणी जचण माय।
परणी ही पताण की, तन मन दियौ तुमाय[5] ॥

जलाल साहिव, हमारे श्रगतमायची पिता थान कहै। इतरौ जवाव कर श्रन्दर गई। मा सू वहोत वेदिल[6] थकी मिळी।

कितरा श्रेक दिन पाछै वादसाह जलाल नू सीख दीन्ही। दत्त-दायजो दियौ, वूवना नू छतीस पाण दायजे दीन्हा, नेपडायो पडदार[7] साथे जावतै नू दीन्हौ, तिको जनम रो श्राधौ पण हिया री इसी समझ जे देखता नू खवर नही पडै। तिका महाडोल माही वैठाण सखी सहेलिया, दासियां रै घणा जलूस सू विदा किया। सो मजल छोटी-छोटी हुवै। कारण साहण-वाहण[8] घणा तिण सू वीजी मजल जाय डेरो हुवौ।

---

[1] निराश [2] वार-फेर [3] प्यार [4] पागल [5] तुझको [6] हताश
[7] डयोढीदार [8] घोड़े की सवारी।

उठै जलाल रो डेरो वूवना रै डेरा री कनात[1] सू कनात, तणाव सू तणाव अडाय हुवौ। तठै पाछलो पोहर हुइयो जणा मूमना अलियार वादी नूं सागे लेय वूवना रै डेरै आई। तरै वूवना ऊठ नै मिळी। तरै वूवना मूमना चौपड़ रो खेल माडियौ छै। मोहर पन्द्रह री वाजी लगाई। वूवना नै नेत्रा खवास अेक तरफ नू हुई। और मूमना नै अलियार वादी अेक तरफ नू हुई। अक रामत[2] री वाजी वूवना जीती। तरै त्रीजी वाजी माडी सो मूमना री जीत नजर आई।

इतरै जलाल रै मन माही वूवना वस रही सो जाणी। डेरा री कनात अेक लाग रही छै, नै वूवना देखू, इसी विचार नै कटार हाथ लेय ऊठियौ। आपरी तरफ सू वूवना रै डेरा री कनात जरड[3] देसी फाडी और मूडो कनात माही काढ़ियौ। उठी मूमना रो मुहडो साम्हौ थो और वूवना री पीठ थी। जलाल रो सूरज सो मुहडो मूमना नू नजर आइयौ सो मूमना रै हिया मे झाळ ऊठी। तरै पासो न्हाखती हाथ रो झालौ[4] परे जाणे नू कियौ। जं खोजो नाजर देख लेसी तौ वादसाह नू कह देसी तौ फिसाद होयसी। वादसाहा रा माणस देखीजै छै इसी साजस कीवी। इतरै नेत्रा खवास रै नजर आयौ, जद जलाल वेमन थकियौ मसनद ऊपर जाय वैठयौ।

इतरै मूमना वाजी जीत, विखेर, वेखातिर[5] होय ऊठ आपणे डेरै माही आई। इतरै रोसनी हुई। दासी सहेलिया आ मुमारखी दीवी। तरै नेत्रा वादी नू वूवना पूछी, कहणे लागी—मूमना जीती वाजी विखेर वेंदिल थकी क्यू उठ गई ? तरै नेत्रा खवास कही—वेगम साहिवा रै देखणे ताई जलाल साहिब कनात तोडी, तिण में मुहडो[6] घाल देखता था, तुम्हारी पीठ थी, मूमना साम्ही थी सो तिणनू देख वेखातिर हुई। मूमना नै जलाल साहिव कुछ लेखो नही छै। इतरी वात साम्हळ वूवना नेत्रा वादी ऊपर रीस कीवी—जे जलाल साहिव पधारै अर तू हमारे ताई सैन[7] मे कहै ही नही। आप ही रातदिन जलाल करती रहै।

इतरै डेरा उठाय चालिया। तीसरी मजल जाय ठहरिया। उठै अेक आवा रो वडौ पेड तिणरी डाल सू वूवना हीडो वधायौ और चाहियौ—जे इण हीडै हीडती कनात ऊपर होकर जलाल साहिव नू देखस्यू।

---

[1]मजवूत पर्दा [2]खेल [3]कपडे के फटने की आवाज [4]इशारा, सकेत [5]हताश [6]मुंह [7]सकेत।



आम टाळ मे बांधियो, पाटै[1] पीठ विजूह[2] ।
हींडै ला उन हेलिया, सैणा[3] साम्है मूह ॥

इण भात कितरा अेक दिन चालता-चालता थटेअगर आइया । बादसाह नूं मालम हुई तरै बादसाह बूबना नू महल दियो, बादसाह सू मुजरो कियो । पण वारो[4] वरस माहे अेक आवै । बादसाह वरसा पुगतो तिणसूं ड्याने जावती देय ड्योढी राख्या ।

जलाल बादसाह सू मिळियो । सारी हकीकत कही । बादसाह घुण राजी हुयौ । तरै जलाल नै पहरो चोकी खासी सोंपी ।

गढ रै पाखती जलाल रो महल छै, उठे मूमना रहै नै जलाल चौकीखाने दोय घड़ी दिन चढता आवै । सो सातमी खासा यारा सूं भुजाई[5] आरोगै और भगत जन भाट चारण सारा मुहडा आगै बैठ जीमैं और रांधियो कोरो नगर वटै । उण वखत भुजाई मे छप्पन भोग, छत्तीस व्यजन सगळो न्याय अेक सारीखो भोजन हुवै । जिण नू कठे ही मिळै नही सो उण वखत भुजाई मे जलाल री रहवास आवै सो मनमानिया भोजन जीमैं । वडो हंगामो[6] लागियो रहै । जीमिया पाछै पान सुपारी सारा नू देवै । कवीस्वर आसीस जयकार पढै तिण रो हगामो इसो हुवै जाणै सावण भादवै रो आभो[7] गरजै । इण भात आरोगै, वळे पाछो चौकीखाने आय बैसै ।

बूबना रा महल नीचै अेक वडो दरीखानो । मुहडा आगै छप्परखाव, तिण नीचै सारा उमराव आय बैसै । मनसवदार वडा-वडा आवै, त्या मांही जलाल पण बैसै । सो बीजा उमराव मनसवदार गल्हा-वाता[8] करै । जलाल तौ बूबना रा महल रा झरोखा साम्हो जोवतौ[9] रहै, पण बूबना रो दीदार[10] पावै नहीं । जलाल कहै—

लोचण[11] प्यासे दीद के, निरखत नित का नित्त ।
दरसण ही पावै नही, मित अेक हो कित्त ॥

हमे सन्ध्या समै रोसनाई हुवै, तहा बीजा उमराव तौ ऊठ डेरै जावै और जलाल रात घडी दोय जाता ऊठै । फूलमदवो खवास अरज कर डेरै लेय जावै ।

---

[1]पटडी [2]मजबूत [3]प्रिय [4]बारी [5]भोजन [6]चहल-पहल
[7]आकाश [8]गप्पें-बातचीत [9]देखता [10]दर्शन [11]लोचन ।



इण भात मास दस वीतिया पण दीदार दोनां ही नू नही हुवा। इतरै जलाल अेक दिन ऊठती कहै—

इत न्यारा वैठा रहा, साह लोग री काण[1]।
ओळग[2] नैंडी सज्जणा, भावै जाण म जाण॥

अेक दिन वूवना नेत्रा खवास नू पूछी—कदे जलाल साहिव वादसाह रै मुजरै नू आवै है कि नही? नेत्रा खवास कही—जलाल साहिब तौ चौकीखाने महल रै तळे[3] नित वैठा रहै।

आल्या आक चराह, पारै वे जम रतिया।
हिवडौ तुझ घराह, वेगो कठण ना करै॥
लाल सुरगे कापडे, सावर घी नयणांह।
गेहाणी फेरा दिये, ज्यू दाणी दाणाह॥

तद वूवना कही—देखें तू मिळनै पूछ। वात कर मेरे ताई आय कहीजे।

इतरै जलाल रात घडी दोय तीन वीतिया निसासो[4] मेल, फूलमदवा खवास नू खांडो झलाय ऊठिया। इतरै मे नेत्रा खवास आय कही—

आवदा[5] हिज म चवौ, ऊठदा[6] पिछताय।
हू तुझ पूछू हे जिया[7], तुझ उर वेदन काय॥

तद जलाल कही—

की चवा[8] की न चवा, कौण सुणदा[9] वात।
मनडौ चाहै रैण दिन, सयणा[10] हदो साथ॥

इतरी कही नै डेरै आडयौ। नेत्रा खवास वूवना नू जाय कही, तद वूवना कहै—

साई हदा हाथ सू, गमरू अै पै ठौर।
कैमी आखू वत्तडी, हम साई वदे चोर॥
आखर पिय रै नाम के, लिखे कळेजा माहि।
डरती पाणी ना पिऊ, मतहि विघोरा[11] जाहि॥
अेक घडी आधी घडी, ताहू आधो आघ।
जद ही मिळ के वैठिये, सो ही सुखिया साव॥

---

[1]आन [2]कीर्ति, यश [3]नीचे [4]निस्वास [5]आते [6]उठते [7]जीव [8]कहें [9]सुनता है [10]प्रिय [11]मिट जाना।

बूवना जलाल सू मिळणे पावै नही, इण तरह विरह करै। बीजे दिन नेत्रा खवास नू बादसाह री हजूर मेल अरज कराई—जे हुकम हुवै तौ वडी वहण रै मिळणै जाऊ। वहोत दिन मिळिया नू हुवा। बादसाह कही—जावो, वेगा आइ जाज्यो। तरै नेत्रा खवास बोली—जलाल साहिब, बूवना बेगम वडी वहण सू मिलणे जाती है, बेगम साहिबा का रथ है। इतरी सुण जलाल सहेलिया मांही पैस रथ भीतर जाय बैठियौ। सहेलियां लखियौ नही, रथ खडो राखियौ, बूवना उतरी नै सलाम कीन्ही। तद जलाल कही—

आस[1] घरदा आज सो, मिळियौ जोग दिखाय।
हम भूखे तुझ नेह के, अबूडा[2] ज चखाय॥

सुण कर बूवना कही—

जलाल अहडी ना कहौ, साची बात सुहाय।
खेत धणी[3] ना चाखिया, पथी कहा चखाय॥

तद जलाल कही—

झूठी झूठ न बोलिये, साची बात कहंत।
लडी पडी जे खेत मे, ढाडा ढोर चरंत॥

इतरी सुण बूवना लाज कर चुप रही, तरै जलाल बाह घाल, आलिंगन कर चुबन कियौ। माहो-माही अेकमेक हुइया। घणा दिन रो विरह दूर भागियौ। काम कोट माही लुट पडी। दोनू खुसहाल हुवा। सीख करी। जलाल बाहर आयौ। बूवना भीतर गई, मूमना सू मिळी। तद इतरी खुसबू जलाल री मूमना लखी[4], नै बोली—

विजय पडी क्या पथ मे, मिळियो बीच पठाण।
हेली तोरा कापडा, मो पिय हदी घाण[5]॥

बूवना कही—

अेसी वाता ना कहौ, समझ राख तू भाण।
धोबी धोया कापडा, केठा[6] विलगी[7] घाण॥

---

[1]आगा [2]आम [3]मालिक [4]समझी, जानी [5]सुगन्ध [6]कहाँ [7]लगी।

मूमन हासी[1] ना भली, वदसा हृदे धाम।
अेसा सूधा नित्त का, पिहरे भखर साम॥

सोहरण सोह न देखिया, अखिये दीनी व्याह।
दुख भरा इस अप्पणे, अेह सुणदा साह॥

मासे मासे मुहर दे, सूघो लेय तुलाय।
हेली गरब न कीजियें, भवर साह तमाय॥

हेली थारो करहलो[2], मोही विलगो वार।
कै काटा री वाड कर, कै घर वाधौ चार[3]॥

मूमना कही—

चदरण नीरू वरण[4] चरै, वरण नीरू सरण खाय।
अे हर ढीलो करहलो, जित वरजू तित जाय॥

तरै वूवना कही—

काची कळी न हेळियो[5], गुरणे न रीझवियोह।
हेली थारो करहलो, गहमाती गमियोह॥

मूमना कही—

चपो मरवो केवडो, नीरू तीने थोक।
अे हर ढीलो करहलो, झुकियो नावै[6] झोक[7]॥

करहो काची ना चरै, पाकी दिसा न जाय।
अवर विलवी वेलडी, तिरण नै घणो झुराय[8]॥

इण भात सू बाता कर वूवना आपरै महल आई। इतरै सावण रो महीनो आइयौ। तरै तीज रै दिन नेत्रा खवास नू कही—आज जलाल साहिब नू कहि आवजे—तयार रहज्यौ, म्हे लेवरण नू आवा छा। महल रै तळे वाग है, उठै विराज जे। इतरो कहि नै पाछी आई।

वूवना कहियौ तरै घणो राजी हुवौ नै सिणगार कियौ। पोसाक-वणाव[9] कियौ। अपाणी सू सारो साथ सदोरो कर आप सदोरो हुवौ। घणा अतर सुगध

---

[1]हसी [2]करहा, छोटा ऊँट [3]चरा [4]कपास का पौधा [5]आदी होना
[6]नही आता [7]वैठने की जगह पर [8]झुरता है, आतुर होता है
[9]श्रृगार।

सू फेर गरकाव हुओ। घड़ी तीन दिन थकां अेकलो ही नाजियो, तिण वेळा थेभो भाई, तनोमनो यार, फूलमदवो खवास, गम्डो ढाडी, नाजियो गेलीन देख्नै वात करणै लागिया—आपां विना कदे अेकलो नही जातो, नै असवारी चाकर, पोसाक कर आज अेकलो ही मुळकतो थकियो चालियो सो भलो नहीं। कूठोडा जाय छै। आगे वादसाह नू क्यू भरम छै। आपां वरजा तद थेभो कहै—

जला जेय न जाइये, सढ़हडिये नीमाण[1]।
आलरतो ढहि पडै, जग हंसी घर हाण[2]॥

जलाल सुणी अणसुणी कर उतावळा[3] पांवडा देय वाग मांही जाय वैठियो। घणी चमेली जूही री भ्रगी मे छिप वैठिगो। तरै माळी पण वात सुणी थी सो माळी जाणी—आज साह जलाल वूवना रै महल जायसी, सो ओळप[4] करै छै। दगो खायसी। तद माळी कही—

मास्यां वोल्यो मोरिया, ऊंचो कर की गाह।
जेथ पावरी भूपडा, चुगवा तै थम जाह॥

ओ दूहो जलाल सुण नै वोलियौ—रै माळी, के कहै छै? माळी कही—म्हरवान, मोर वैठ्यो भिगोर[5] करै छै तिण नू कहू छू। जलाल कही—कुट्टण, मैं सब जानता हू पण फूला री माळा खूव कर ल्याव। तरै माळी चौसर अेक अवल आण नजर कियौ। जलाल हार लेय जेव माही सू पाच मुहर काढ माळी नू दीवी। माळी बहोत राजी हुवौ।

अठी वूवना नेत्रा खवास नू कही—सताव[6] जाय जलाल साहिव नू लेय आव। तरै नेत्रा दासी पांच साथ लेय नीसरी। वीच मे ड्योढीदार पडाई वैठो छै सो पग वाजता सुणि वोल्यौ—नेत्रा खवास तू है? तद नेत्रां हूंकारो दियौ। जणा पडाइये कहियौ—किसे काम गैर वेळा जावो छौ। तरै नेत्रा कही—वादसाह साहिव आज वूवना रै महल पधार सै तिण वास्तै सेज विछावण नू फूल ल्यावण पाच जणी सायै जावू छू। तरै पडाइये कही—म्हारै हाथ ऊपर हाथ मेल कर जावौ तरै पाचू जणी हाथ ऊपर हाथ मेल मुळकती हुई गई। जलाल साहिव था जठै गई। मुजरो कियौ। माल्ण फूल सेर पन्द्रह वीण राख्या था तिकै वडे डालै मे फूल विछाय नै वीच माही जलाल साहिव नू वैठाण कर ऊपर फूल

---

[1]जलाशय [2]हानि [3]तेज [4]गलती, भोलापन [5]मस्ती [6]शीघ्र।

ढाक मालण रै माथै बोझो[1] देय डचोढी लेय कर आई। तरै पडाइये[2] कही—नेत्रा खवास, फूल ले आई ? तद नेत्रां खवास कही—जीवेजी डचोढीदारजी, लेय आई। तद पड़ाइये कही—भली करी। पण मेरे हाथ पर हाथ मेल कर जावौ। तरै नेत्रा और वे पाचू जणी हाथ पर हाथ मेल अन्दर आई, नै मालण आय कही—पड़दारजी हूं फूल लेय आई छू। पडाइये कही—हाथ मेल। तद मालण हाथ मेल्यौ। तद पड़ाइये कही—अरी मालण, फूलां रो तौ वोझ नही, बोझा माही मरद है, सो जलाल है—

पैर धम्मकौ सो हिये, माथे गर वोझाळ।
धीरी धीरी मालणी, तौ सिर साह जलाल ॥

तद नेत्रा खवास कही—आगे तौ आख्या हीज फूटी थी, आज तौ थारो हियो ही फूटियौ। इतरी सुण पडाइये कही—जे लौंडो मारी जायसी, तू साच नू झूठ वतावै छै। देखा वोझो उरो लाय[3]। तरै जलाल जाणी—ओ तौ पीहर रो छै तीसू झड़क[4] देसा। वोझा सू निकळ नै वोल्यौ। तद पडाइये कही—

जला अखाज[5] न खाइये, केही पडै कुवाण[6]।
माथा सू विन तांणिये, गेहाणी पण जाण ॥

जलाल कही—

लागी भूखा खाइये, अखज्ज तीजे दीह।
सिर दीन्हौ वूवन सटै, केहो[7] राखां वीह[8] ॥

इतरी सुण पडाइये कही—हू वूवना रै पीहर रो छू, पूरो हमारो विसवास छै सो मोनू ही मरावस्यौ नै आपने ही जोखिम छै, पण आज तौ जावौ। वूवना रो मुलाहिजो टूटै नहीं। यू सुण जलाल भीतर गयौ। घणी ही खुसहाली हुई।

अवै माही रहिता दिन तीन हुइया, तद लोगां जाणी—जे जलाल वूवना रा महल मांही छै सो सोका[9] जाय नै वादसाह नू अरज करी—वूवना वेगम रै महल माही जलाल छै। तद वादसाह रीस मान वूवना रै महल आणै लागियौ। जद नेत्रा खवास वोली—वेगम साहिवा, वादसाह सलामत आवै छै। वादसाह आय च्यारू तरफ जोवणे लाग्यौ सो कै तौ महल माही ढोलियो छै, कै खूणा मे

---

[1] भार बधा पुलदा [2] पहरेदार [3] इधर ला [4] डांट देंगे
[5] जो खाने योग्य नही [6] बुरी आदत [7] कैसा [8] डर [9] सौतो ने।

फूला री ढग दीसै । और क्यू ही दीखै नही । अर जलाल डर सू फूलां माहीं दवियौ सास लेवै तीसू फूल धीमे धीमे हालै । तद नेत्रा खवास कही—

भंवरा कळी लपेटिया, कायर थापै थाय ।
जीवियै जुग माणसा[1], मुवो त मांटै ठाय ॥

ओ दूहो सुणि बादसाह कही—रे बादी, या बात किण नू कही ? तरै बूबना सम्हाळ लीन्ही और बोली—जी हजरत, इस बाग मे अेक कमल है सो उसमे अेक भवरा दिनछते[2] आ बैठिया था । दिन अस्त होते फ़ूल मुद गया और वो भवरा भीतर रह गया सो कहती है । बादसाह कही—खूब, अब उसे छोड दो । बादसाह कही कुछ दीठौ नही तौ कही—मेरा पडाई बडा सच्चा है । इसके पास मेरे घर मे मोरिया[3] पैसे नही । यू विचार बादसाह महल पधारिया । जिण चुगली की थी तिण पर बादसाह रीस फुरमाई ।

दिन ऊग्या थेभो बादसाह रै मुजरै गयौ तद बादसाह फुरमाई—जे, जलाल नू दिन च्यार हुआ, मुजरे नू नही आया सो वो कहा गया है ? तद थेभो अरज कीवी—जी, वे हजरत सलामत जिसके हजरत से मामू[4], आ जवानी, मूमना सरोखी औरत पाई तिससे गैर महल मस्त हुवा रहै है । तद बादसाह राजी होय नै सुघाखाने सू अतर चोखो तेल, कस्तूरी, कपूर, केसर थोभे साथे जलाल नू मेल्या, सो लेय थेभो डेरे आइयो । पण घणो वेदिल[5] रहै । तनोमनो यार, गखडो ढाढी, फलमदवो खवास, ताजियो गुलाम अे सारा ही मिळ मजकूर करै । हमेसा बाट जोवै । इसा छै महीना माहीं रह्यौ ।

अवै जलाल बूबना सू सीख कीवी । तरै झरोखा सू रेसम रै लच्छां सूं उतरियौ । सो सूधे भीनौ थकियो, अतर रा भोला पडता, दोय लाख रो मोतिया रो हार गळै मे पहरिया थका महल नू आवै छै, सो थेभो व तनोमनो सगळा नू सुवास रो भोलो पवन सू आयौ । बारह मोहर तोळा रो इतर जलाल लगातौ, तिण री सुवास रा झोला पडणे लाग्या । तद सारा ही कही—खुसबू रा भोला आवै छै, सो देखो तौ सही जलाल आवै छै । पहलां तौ सारा ही जाणता था, जे वो मारियो गयौ । महीना ६ होवणे नू आया पण ओ तौ जीवै छै ।

---

[1]आनन्द लेंगे [2]दिन रहते [3]मोर (जलाल) [4]मामा [5]अनमना

सो सारा ऊठ साम्हा चालिया। इतरै कस्तूरिया अग जिसा लाल नेत्र कियां घूमतौ थको आवै छै। ग्रे देख नै घणा-घणा राजी हुवा। जलाल थेभे नू मुजरो कियौ। या सगळा जलाल नू मुजरो कियौ, मिळिया। थेभो कही—

जला जेथ न जायजै, केहर[1] री फोकांण[2]।
अम्हां लगाइ समै हणौ, (तू) मराइसै आपाण॥

और आगे हालियौ जद तनोमनो यार कही—

आका दतुण[3] न कीजियै, संपा न खाजे मास।
जला जेथ न जायजे, जेठा जद विनास॥

तरै जलाल कही—

आका दातुण म्हे करा, सरपा मीठा मास।
जलो वी ठा जायसै, जेठा जद विनास॥

तद गखड़े ढाढी जाणी, जे सीख री वात तो दाय आवै नही तरै गखडे कही—

ज्या वेल्या पोहरा पडै, कसिया रहै तुरग।
जे भल[4] जलाल चाखिये, महला घाल पिलग॥

जल्लै हदा दतडा, वूवन हदा गाल।
जाणै कचन ऊपरा, भला विराजी लाल॥

अवर लागी वेलडी, जिण फळ लागै लाल।
तो विन किण न चाखिया[5], हो गाहणी जलाल॥

जलाल ग्रे दोहा सुण वहोत ही राजी हुवौ और कही—जे गखडा, तै वहुत भला कही। यू कहि रीभ कर सगळी गहणो उतार दियौ। तद थेभो जाणी—जे कह्या तो क्यूं ही वणे नही, जद कही—

चलियौ जाय जलालिया, सैणां हदे साथ।
अवर लागे फूलडा, सो क्यू आवै हाथ॥

तद जलाल कही—

ऊंचा हूं नीचा हुवै, जे करतार करेह।
वावड हदे फूल ज्यू, आवे ऊभाडेह॥

---

[1]सिंह [2]गुफा, वैठने की जगह [3]दतुन [4]पकडकर [5]चखे।

इण तरै वात करता थका डेरै आया। जलाल मूमना रै महल गयौ तौ मूमना कही—

पर घर रीझण करह्ला, नीघरिया घर आव।
वीजा[1] अेक झबूकडा[2], वेला अेको साव॥

तद जलाल कही—

चूडाळी क्यू खै चवै, मन मे क्यू जाणे न।
अेका फळ खारा हुवै, अेका खाइज फैन॥

इयां गल्हां कर वादसाह रै दरवार आयौ। खग वीच राख मुजरो कियौ। वादसाह जलाल रो रूपरग पोसाक सुगध देख प्रसन्न हुवौ। तरै मन मे कही—मेरी बेटी रांडा विचारा मोरिया कू मरावणे नू तयार हुई थी पण भाणेज जैसा छैल है तैसा दूजा नही। तद वादसाह सलामत कही—

मूमन हदा महल मे, खेल खिलाडी ख्याल।
चुग चाहिया वे मोरिया, जोखा[3] रग जलाल॥

तद जलाल कही—

वासा[4] भूख न भाज ही, ओसा[5] भजै न प्यास।
सज्जण रहता सग मे, वरस थया[6] इक मास॥

वादसाह रा मन मे चमक[7] छै पण क्यू देखै तौ कहै। मास छ माही मिळियौ सो मोतिया री माळा, जडाव रा फूला री ढाल, जडाऊ खजरी, किलगी वगसिया[8]। जलाल डेरै वाहुडियौ[9]। वादसाह कही—

जलाल काना देय कर, सुण हम वातडियाह।
झकडी वाता वूझ कर, रमजो रातडियाह॥

तद जलाल कही—

भूखी अपणा ना गिणै, पीढी डाकणियाह।
सिर ऊपर ऊठा फिरै, दईज डरपै त्यांह॥

इतरी कहि जलाल डेरै आयौ। महल माही रहै।

---

[1]विजली [2]चमक [3]स्त्री का [4]सुगन्ध से [5]ओस से [6]हुआ [7]वहम [8]वक्शीश किये [9]लौटा।

वूवना सासू रै पगा लागणे आई तद सासू वदन देख कही—

सासू पूछै हे वहू, तोहि न आवै लाज।
काल सिवायौ काचळी,[1] सो क्यू फाट्यौ आज॥

वूवना कही—

वोदा कपडा वहुत रग, सीवणहार कुढग[2]।
धडहड टाका ऊधडै, वण मोडती[3] अग॥

सास कही—

उत्तर देवै छोकरी, उत्तर देय न जाण।
लाग्या छै कर छैल का, दरजी ग्रैव लगाण॥

इसा वचन सुण वूवना विलखी हुई महल आई। इव जलाल हमेसा महल गयौ रहै। खूव काम-कौतूहळ करै। तिण समै सोका वादसाह नू फेर कही—जे जलाल ग्रौर वूवना ग्रेक रात ही ग्रळगा[4] नही रहै।

तद वादसाह सिकार नू तयारी कराई ग्रौर जलाल नू वुलाइयो। सो वाता करता दोनू साथ साथ जाय छै सो वीस कोस गया। वादसाह तुरकी घोडे सवार छै। ग्रागे ग्रेक ग्रावा रो वडो पेड देख डेरा दिया। डेरा पेसखानो[5] तो पहुचियौ नही ग्रने विछायत पहुची हती सो हुई। नैणा तर करणे नू वैठा छै। घोड़ा कायजे ही खड़ा छे। पाछलो साथ ग्रावै छै, ग्रावा पाखती छै त्या नीचै उतरै छै। तद जलाल वादसाह नूं ग्रारोगण[6] सारू माजूम[7] लायौ ग्रौर ग्ररज करी—मामूजी, घोडा सू खेद हुवौ छै, माजूम ग्रारोगजे जो खेद रो रेजलो[8] दूर होवै। वादसाह भोळै मन रो, तिको मनमे जाणियौ—मेरा वेटा मोरिया हमारे डील का जतन करता है, इसकी चुगली करे सो झूठा।

देखू ग्रव कैसे जावेगा, यू जाण माजूम खाई। चांनणी रात खिल रही छै। वादसाह गाढी सदोरो माजम सू हुवौ सो नीद सू ग्रातुर हुवौ। तद मसनद सहारे होय जलाल नू छाती सू लगाय सोय रह्यौ। खिदमतगार दुडवडी[9] देवै छै। इतरै वादसाह नसा री नीद मे ग्रचेत हुवौ। या जाण खिदमतगार ग्रळगा जाय सोय रह्या। ग्रव जलाल सव नू सोया देख ऊठ्यौ ग्रौर वादसाह री सवारी रै घोड़े पर चढ कही—

---

[1]कञ्चुकी [2]ग्रनाडी [3]मोडती है [4]दूर [5]तरतीव से [6]खाने को
[7]भग मिला कर वनाई हुई मीठी वस्तु [8]भारीपन [9]पैर दवाता है।

पच कोसी पाळौ रहै, दस कोसी असवार।
तौ जाणी जे दुहु जणा, लगी न प्रीत लगार॥
यू क्यू मनमे जाणिये, घोडा थी घर दूर।
टुक ऊचे रासा[1] किये, जावै परवत चूर॥

सो रात आधी ढळता बूवना रै महल आयौ। बूवना वाट ही जोहती[2] थी सो सुगध रा झोला सू जाण, तुरत छींको नीचो न्हाक नै ऊपर लियौ। घडी पाच-सात माही रहि हस-खेल रजामन्द होय फेर पाछौ आय सो रह्यौ।

घडी दोय पाछै वादसाह जागियौ सो देखै तौ जलाल छाती आगै सूतौ छै। इतरै जलाल आळस मोड़ वैठो हुवौ। जगळ निपटणे गयौ, जद वादसाह कहो—मेरे वेटे लोग मोरिये कू कूडी[3] हीज तूफान लगाते हैं। इतरै चुगलखोर कही—घोडो जाय संभाळौ, आसूदो छै कै दौडियौ छै। वादसाह घोड़ो देखै तो पसेवा में गरकाव[4] छै। गरद मे गरक होय रह्यौ छै, तद भरम उपजियौ। इतरै जलाल आयौ जद वादसाह कही—जलाल, मेरा घोड़ा दौड कर आया हो तैसा दीसै है। जलाल कही—मेरा घोडा देखौ, खुररे विगर[5] कियां, नव यू ही है। इन घोड़ा नै इतरी दौड किस रोज करी है, तिससे जल्दी रखी है। जलाल रो घोड़ो देखै तौ चौकड़ो चवै छै। तवोळ पडै छै। काठा पसेवीजै छै। पाछै वादसाह जाणी—दुनिया कूडी ही लगावै छै। यू जाण नै पाछा सहर माही आया।

इतरै गिरवरगढ रो परगनो, तिण री खबर आई। तिण ऊपर वडा-वडा उमराव पाच-सात मेलिया जिके केइक तौ काम आया, केई लाज गुमाय नै भागिया। इण वात रो वादसाह रै मन बड़ो सोच हुवौ। जिण नै कहै सोही हा नही करै। तद चुगलखोर कही—पक्को सपतहजारी मनसव खावै छै, लाख रिपिया हर माह पावै छै, तरवारी[6] हुइयो रहै छै, तिण सू जलाल नू ही मेल जे। वोही इस काम लायक है। वादसाह कही—खूव याद दिलाई है। अव वो बूवना से किस तरह मिल सकेगा? तद जलाल नू वुलाय कही—तुम ही जावौ। जद जलाल कही—सरजाम[7] पाऊ सो सर[8] कर आण मुजरो करू, कै कागदा मे ही लपेटियौ आऊ[9]। इसी सुण वादसाह फुरमाई—तुम जे कहौ सो सरजाम

[1] लगाम [2] देखती [3] झूंठ [4] सरावोर [5] झाडे विना [6] तलवार चलाने मे निपुण [7] पूरी व्यवस्था, सामान आदि [8] जीत [9] मेरी मृत्यु का समाचार ही कागज मे लिखा हुआ आए।

तयार कराऊं । उहा पर कै तौ तुम जावौ कै हम ही जावें । जलाल कही— इसा पाजिया रै ऊपर आपका पधारना ठीक नही है । आप मुझको हुकम करौ । ११ लाख नकदी खरच और रिसालौ पाऊं । तद बादसाह खानसामे नू फुरमाई— जे खजाने सू नकदी दिरावौ और फौज रै बगसी नूं कही—जे रिसाला तयार कर देवौ । औंर तोपखाने रै दरोगे नू फुरमाई—जे हुकम माफक तोफखानो सताब[1] तयार करा कर जलाल रै डेरै दाखल करौ । देर ना हो । ढील हुई तौ ओळभा[2] तुमको होवेगा । फरासा नू फुरमाइयौ—खासा डेरा जाय खडा करौ । बादसाह जलाल नू कही—तुम्हारी कही माफक सरजाम तयार हो गया, अब तुम आज ही जाय डेरा दाखल हुवौ । तद जलाल सिरोपाव पहर उसी ही सायत डेरा जाय दाखल हुवौ ।

बूबना सुणी तद नेत्रां खवास नू कही—जलाल साहिब करडी मुहिम नू जावै छै । उठै आज आय सकसी नही, तिणसू सुखपाळ तयार करायजे । आपां चाल मिळसा । सो नेत्रा खवास सारी तयारी कर राखी । रात पहर ड्योढ गया महल सू उतर सहेलिया रै कांधे सुखपाळ बैठ चाली । नेत्रा खवास आगे जाय वधाई दीवी । तद जलाल वहोत प्रसन्न होय अेक लाख मोतिया री माळा पहरिया बैठा था सो उतार इनाम मे दीवी । इतरै बूबना माही आई सो साम्हा जाय दोय लाख रो जवाहरात रो गहणो बूबना री निछरावळ[3] कर सहेलिया नू दियौ । और जलाल बूबना रो हाथ झाल[4] पिलग पर लेय बैठ्यौ । घणा खुस हुआ । वाता हसीखुसी री करी । राजीवाजी हुआ । पछै सखरी[5] सलाह देय, घणी भोळावण देय पाछी महला नू सीख मागी, तद उठा सू ऊठता बूबना कही—

साई दीजे सज्जणा[6], ऊतर अे जाणाह ।
म्हारो[7] जिवडो थाव सू, थारी नह जाणाह ।।

तरै जलाल कहै—

जीव हमारा तै लिया, पजर भी अब लेहु ।
तेरे सिर पर वार के, फेर फकीरा देहु ।।

---

[1]जल्दी [2]उलहना [3]वार-फेर [4]पकड कर [5]अच्छी [6]सज्जन [7]मेरा ।

तरै बूवना कही—

मैं मन दीन्हो तोय, नैणा जिए दिन देखिया ।
सुधि क्यो रही न मोय, प्रेम लाज अब राखिया ।।

फेर जलाल कहै—

अैसी विधि ले कीजिये, मित्रा सू मन मेळ ।
सरसै सरस विरसै विरस, ज्यू पत्तो अहिवेल[1] ।।

फेर बूवना कही—

मेरे सज्जण मीत तुम, प्रीतम तुम परमाण ।
मोनू पग री मोचडी[2], जलाल करियो जाण ।।

सजव फळ्ज्यो फूल ज्यू, वड जिमि विस्तरजै[3] ।
मासा[4] पखवाडा मिळै, इण हिज रग रहिजै ।।

जावो जीभा ना कहू, वधो सवाई वट्ट ।
ऊघडमी था आविया, हेतारथ[5] रा हट्ट ।।

जलाल जेठा[6] थे वसो, वन वाळो जन देस ।
चोखे नयणा लोगडा, वा रीति ना करेस ।।

बूवना कही—जे परमेसर कियौ तौ वादसाह नू कहि नै घणो वेगो वुलायस्यू । पण थे सावण री तीजा ऊपर आया रहिजो । गेलो ज्यू गळै लाग नै कहै छै । दोना ही नू टकटकी लाग रही छै । तद नेत्रा खवास कही—

पाछा पग न भराय, सज्जण तजै घरा दिसि ।
तिरपति कदे न थाय, जो मिर अमृत पीवता ।।

इतरी कहि बूवना नू खैच निरजीव थकी नू सुखपाळ माही सुवाणी । फेर महला माही ले आई । दिन ऊगतां जलाल कूच कियौ, तिको जाय वारह कोसा डेरो कियौ । बूवना साभळ नै कही—

तौ विन दीसै तेहड़ो, गेहाणी गोठाह[7] ।
घरै पुहता जाणिया, जिहडे मारूडियांह ।।

---

[1]लता-विशेष [2]जूती [3]पसरना [4]महिनो [5]हितार्थ, प्रेम
[6]जहाँ [7]गोठ मे ।

अेह ज मिन्दर ये नगर, ये पिलग ये ठौर।
मन मोनै सज्जण विना, सह लागै कुछ और॥

महला दीपक जोइवा[1], बाहर कू इमि जाय।
जतन करै को हर इता, मो पर वाट लगाय॥

विछुडता ही सज्जणा, कासू कहणा लेष।
तिण वेळा सर सन्वियौ, जाणे सीधी लेष॥

अवकी सज्जण जे मिळै, कबहु न छोडू संग।
पी हरणा हरणांख ज्यू, होय रहू अरद्धंग॥

सूता नीद न जीव सुख, जवहि न देखू तूझ।
ना जाण तैं क्या किया, प्राण पियारे मूझ॥

चानणी रात नू देख बूबना कही—

अेहो उजळी रातडी, किण दुसमण दी बाळ।
पडी जळू मैं भवन मे, प्रीतम विन वेहाल॥

मत किण ही नू लागजौ, छोनौ वैरी नेह।
घुकै न धूओ नीसरै, जळै सुरगी देह॥

अग मराऊ चदला, इतते सिघ पठाय।
रैन करू उछाह सू, कै वाघा उर लाय॥

जीव उहा पिजर इहा, हिवडै हूला-हूल।
रे परदेमी वल्लहा, वेल विहूणा फूल॥

इण तरह विलपती[2] देख नेत्रां खवास कहण लागी—

बूबन मन मे माठ कर, पिउ नित प्रीत न पाय।
रजपूता र सिपाहिया, अळगे सदा रहाय॥

इसी भात बूबना नित विलखै[3], अेक टंक खाणो खावै, नेत्रां खवास वहोत धीरज वधावै, विलमावै[4] पण मानै नही अर धरती पर पडी रहै। पांन अरोगै नही, सुगध लगावै नही, नवोडो गहणो, कपडो—कपडी पहरै नही। खैरायत-खाणो डोढी ठौड-ठौड फकीरा नू कर राखियौ छै, जे जलाल री खातिर दुआ करावै। अठी तौ बूबना री इसी हालत छै।

---

[1] सजोने को [2] विलाप करती हुई [3] विलखती है [4] जी वहलाती है।

उठी जलाल गिरवरगढ सूं कोस दस जाय डेरो दियौ। हजार पचास फौज छै। आगे जोहियां रै गढ में साथ भेळो हुवौ सो हजार चाळीस सिपाही छै। गढ जुदो[1] सजियौ। सहर जुदो सजियौ। च्यारूं पासा[2] मोरचावदी कर रह्या छै। इतरै जलाल जासूस मेल खबर मगाई। जासूस सारी खबर आण[3] मालम कीवी। वीसूं[4] जांणी पहुंच सकां नहीं। साथ सामान भारी। गढ भेळण[5] नूं राड[6] करा तौ पण सजै नही।

तद आदमी अेक ठावौ[7] मेल गढ मे कहायौ—आदसाह जबरन सूं म्हांनूं आल्या अदीठ कीन्हा छै, सो साथ लेय सांच-कूड कर अठे दिन काढ़ण नूं आया छा। ओ थारो मुलक छै। खावौ-पीवौ। जैसी कीन्ही तैसी पाई। परेसान था तिकां खरच पायौ। हमे थे वैठा जोखिया[8] करौ। थारी छाया सूं म्हे गुजराण करस्या। फेर छाने कागज भेजै, हमेसा आछी वस्तुआ कपडो मेवो मेल्है-मंगावै, सो जोहियां नूं वाना सूं चाप लिया। वारा आदमी जलाल कनै आवै सो आछा खाणा नियामता खवायजे। रीभ-मौज दीजे, तीसूं सगळा वात ऊपर जीव टेक्यौ[9] और जोहिया बूवना री वात सुण पाई, तीसूं जाणी। इणनूं मरावण नूं हीज मेल्यौ छै, सो जोहियां कहायौ—थे सगळा आया सो हमे जाणी, पण सूधा[10] बैठिया रहौ। थारी हमारी सला छै। आदमी अे समाचार आप कहिया तद जलाल घोडो सिरोपाव जुहार फेर देय मेल्हिया, सो जोहिया उरा लिया पण गढ रो साज-सामान ज्यू रो त्यू राखियौ, कढाइयौ नही। अर जलाल आसोज रै महीनै हालियौ थो जिको उचरी धरती मे सूधो थको बैठियौ छै। साथ सगळां नूं वरजिया—जे कोई घास-फूस ल्यावौ जिको मोल देय ल्यावज्यौ, किहरी कूक-फरियाद आई तौ खराब होसी।

यूं रहिता जेठ काढियौ। आसाढ लागता ही अमापौ[11] वरखा हुई। तद जोहिया रै कटक[12] खटण जोहियो सरदार थो सो कही—खेती करता तौ भली। कहो तौ आप आपरै गांवा जाय हळ जुताय आवा। जलाल तौ दिन काढण नूं बैठियौ छै। आपा सूं मिळियौ छै। जद सगळा साथ नूं सीख हुइ गई सो सारो साथ विखरियौ। गढ मांहीं ठावा सरदार चार सौ रहिया। आदमी हजार दोय

---

[1]अलग [2]तरफ [3]लाकर [4]उससे [5]जीतने को प्रवेश करना [6]लडाई [7]विश्वस्त [8]मौज [9]धैर्य धरा [10]सीधे [11]अनाप-शनाप [12]फौज।

खेर-खेर रहिया, तद जासूस जलाल नू आय खबर दी। जद जलाल कटक माही वात कीवी।

परवानो पाछा बुलावणे रो बादसाह रो आयौ तद नागारो करायौ। सवारी वाहिर चलती कीवी। कोस पन्द्रह रो डेरो ठहरायौ और आप पण तोपखानो सारो साथ लेय थटेभखर सांम्हो कूच कियौ। कोस दोय गयौ तद जोहिया नू हलकारा[1] जाय कही—जे जलाल नू इसी ताकीद आई छै सो दर-मजल ताकीदी सू जायसी। तरै खटणजोहियो राजी हुवौ, सादीयाना[2] वजाया, मोरचा उठाय दीन्हा। इतरै जलाल उमरावा नू कही—जे पाछो मुह गढ कान्ही फेरौ तद सवार हजार वीस, पैदल हजार चवदह, तोपखानो पाछो घेरियौ सो पाछली रात रा अचानक जाय कर गढ लागियौ, नै निसरिणियां कराय राखी थी सो पैदल आदमी कोट ऊपर चढ भीतर जाय कूदियौ। तरवारियां रो रीठ[3] दियौ सो जोहिया रो सारो साथ मार उतारियौ। खटणजोहियो चार सौ सवारा सू काम आइयौ। केई नू पकड लीन्हा छै। घडी दोय दिन चढता तौ फतै रा सादियाना वजाय दीन्हा। आणदाण[4] फेरी, घोडा हाथी खजानो हाथ आयौ। दुहाई जलाल साहिब री फेरी। फेर तुरत ही घोडा रा झुण्ड कर देसा ऊपर दौडाया सो जोहिया रै आदमिया नू सं[5] पकड लिया और मारिया। पाछै थटै-भखर वादसाह नू मूमारखी[6] फतै पाई री मेल्ही।

जे जोहिया वारे था जिका पेसकसी[7] देय टावरा नू छुडाइया। वादसाह रो अमल[8] करडो कियौ। और भी सगळा भोमिया जलाल सू आय-आय मिळिया। पेसकसी सारा री चूकै छै। सगळा जमीदार पायनामी[9] हुइया। रिपिया तीस लाख और हाथी घोडा जितरा आया सो सगळा वादसाह रै पास भेजिया। अरजी लिखी सो बादसाह सुण नै घणो ही रजावन्द हुयौ। जलाल री सिपत[10] तारीफ वहोत-वहोत करी। बडो खुसी हुओ। सिर-पेच, मोतिया री माळा, खलित, तरवार, हाथी, पालकी, झालरदार नाही नौबत इतरी निवाजस भेजी और लिखियौ—उमराव थारे आगे आछी हुवै तीरी खवर तोनू छै। थारी

---

[1]खवर देने वाला [2]वाजा-विशेष [3]झडी [4]अधिकार की सूचना दी [5]सव [6]सूचना [7]कर, जुर्माना [8]अधिकार की रस्म [9]अधिकृत [10]सिफ्त।

मरजी माफक रीझ-बकसीस दीज्यौ, सारी कवूल छै। सो जलाल सारा नू रीझ-मौज जसा दीठा जिसी दीवी। सारा रजामन्द[1] हुवा। धरती सारी पर अमल अव्वल तरह रो हुवौ। ग्रासियो भोमियो कोई सिर उठावणे वाळो राखियौ नही।

अब सांवण री तीज रै आडा सात दिन आय रहिया। तद बूवना नेत्रा खवास, दास्यां, सहेल्यां, वादिया सै नू लेय वादसाह री हजूर आई। नादिर[2] हाथ खवर कराय अन्दर नू आई। सलाम कीवी, तद वादसाह फुरमाई—की तरह आज आवणो हुवौ। जद बूवना कही—

मेरी वहना मूमना, तासु पिया परदेस।
तीनू चैन तनक नही, निंद्रा पडै न लेस॥

म्हारी वहण मूमना है, उसका खांविन्द जलाल साहिब लडाई लडणे गये हैं। अब सावण की तीज आवै है। उसको तनक भी चैन नही सो अरज करणे आई हूं। तद वादसाह सलामत फरमाई—मूमना नू बुलावौ, उसके ताई पूछे, या तुम ही कह रही हो। सो नादिर नू भेजियौ। उवो[3] मूमना नू बुलावणे गयौ। जद बूवना नेत्रां खवास नू कही—मूमना कुछ वोले या न वोले पण तू हाथ झाल[4] बाहिर लेय जायजे और बूवना आप वादसाह सलामत नू अमल-पाणी कराय, हाव-भाव बतायनै वस[5] करिया। इतरै मूमना आई सो मुस्कराती हुई आई। बादसाह तीनू फुरमाई—जलाल नू बुलावणा है क्या? जद मूमना आसरे होकर गद्-गद् कंठ कुछ वोली, कुछ नही वोली। उसमें वादसाह कुछ तो समझे कुछ नही समझे। इतरै बूवना अरज करी—हजरत सलामत जलाल रै विना मूमना वहुत दुखी है। वात तक कहणी नही आवै, तीसू ही वहन रा दुख री खातिर अरज हे। वादसाह सलामत इतरी सुण तुरतं फरमाई—जे तुम ही परवाना लिख देवौ। हम उस पर दस्तखत मुहर कर देवेंगे। तद बूवना तुरत ही फरमान लिखियौ। मुहर दस्तखत कराय कागद ले घर आई, कासिद[6] बुलाय हुकम कियौ—जे तुरत जाय। और आप आपरी तरफ सू कागद घणा पडोज मनुहार सू लिखियौ। नीचे अेक ओ दूहो लिखियौ—

कागद थोडो हित घणौ, मो पै लिख्यो न जाय।
सागर मा पाणी घणौ, सो गागर नाहि समाय॥

---

[1]खुश [2]नाजर [3]वह [4]पकड कर [5]वश [6]पत्रवाहक।



कागद कासिद नू सौंपि, रीझ देणी कर ताकीद पोहचणो[1] नू करी। इतरै जी सोक री रात नू वारी थी सो कही—जे वूबना जलाल नूं वुलायौ छै। वीरो मन ती माही वहोत छै। तद वादसाह रा समुद्र रै टापू माही तीर सू कोस अेक ऊपर महल था उठे वूबना नू परगह[2] सूधा[3] राखी। ती महल रै दरवाजा तीन था, तिण मे अेक दरवाजा ऊपर किण ही रीत सू अजगर राखिया, दूसरै दरवाजा ऊपर सिंघ राखिया अौर तीसरै दरवाजा ऊपर पाचसौ चौकीदार राखिया, त्या चौंकीदारा नू हुकम दियौ—जे थारी नजर चढै तिण नू ही मार देवौ। भावै[4] सोही होवै। फिकर नही। हमारा हुकम है। अब देखू लोग कहते हैं—जलाल आवेगा तब पहले वूबना रै पास जावेगा, सो अब कैसे जावेगा, अौर जो गया ही तौ मारा जावेगा। इसा जतन[5] देख वूबना कही—

जळ विच कीन्ही कोटडी, सरपा किया किंवार।
जलाल मो विन ना रहै, भावै गरदन मार॥

इतरै कासिद कागद लेजाय जलाल नू दियौ सो वाच तयार हुवौ। तद थेभो जाणी—इतरा दिन तौ टळिया, जे अब भी टळै तौ आछी। असी जाण लिखी—

खाया पीया माणिया, मन कारज फळियाह।
आयौ जोये भरमला, गैंवर[6] सू टळियाह॥

जद जलारा पाछी लिखी—

कै हत्था गैंवर हणू, कै फाटू वड डार।
कै धण माणू[7] वूबना, कै छोड़ू ससार॥

ई तरह कहि देस गढ सहर री भोळावण देय असवार पांच सौ सू चढ कढिया तिको डाक चौकी चालियौ। मजल तीन सू पछै साथ तूट गयौ सो असवार अेक सौ सू थटेभक्खर सू कोस दोय आय डेरो कियौ। वादसाह नू मालम हुई, जे जलाल आयौ। दिन घडी दो रहिता साथ सू सहर मे दाखिल हुवौ। आप असला सदोरो होय वाकरा रा पीडा[8] घोडे री पताका[9] लगाय, फूलमदवा खवास नू साथ लेय वूबना री दिस हालियौ। जद जलाल कहै—

---

[1]पहुँचने [2]नौकर साथ [3]सहित [4]जँचे सो [5]यत्न-प्रयत्न [6]हाथी [7]उपभोग करू [8]बकरे के पैरो का हड्डी सहित मास [9]घोडे की जीन पर सामान टांकने का स्थान।

सरपा हदी वाड कर, सिंहा रो परवध[1]।
जो जम राणी मोहरू, सैणा मिळवौ संध ॥

इतरै चौकी मे गयी सो चोकीदार ओळखियौ[2]—जलाल आयौ। जलाल चोकीदार, ठावा माणसा नू पिछाण ओन्है[3] मे जाय वैठचौ। हकीकत कही। गहणो लाख अेक रो थो सो उतार चोकीदारा नू दियौ, और कही—जे तुम कहौ तौ आगै जाऊ। म्हारो जीव इण माहिली[4] सू लग्यौ है। चोकीदार गहणो देख ठडा पड़ गया। चोकीदार कही—जलाल वादसाह सलामत रो भाणेज छै और वूवना इणरी मामी छै। काल क्यू रो क्यू विचारसी। मामी कन्है जाय छै और वुराळ प्रीत छै और फेर या माग[5] ही जलाल री छै पण वादसाह कूड[6] कर जे परणी छै और वादसाह रै ३७० वेगम छै सो इण वूवना नू कोई वारो ना दीन्हौ छै तौ आपा किण वास्ते वरजा। जाणे देवौ। सो चोकीदारा कही—म्हे तौ सीख दीवी पण आगे जतन सू जायज्यौ। तद जलाल कहै—

सज्जण नेहे -कारणै, मैं अरप्यौ[7] तन प्राण।
जीवा तौ वांसू मिळा, मूवा अमर रहाण ॥

यू कहि फूलमदवा खवास नू घोडो देय सीख दीन्ही। आप दोन्हू वकरा रा पीडा लेय आगे हालियौ। इतरै नाहर भूखा त्यानू पीडा गेरिया सो धाप गया। आगै हालियौ सो अजगर आया पण वे तौ इतर री खुसवू स् मस्त हो सोय गया। उणा नू खुसवू सू घणी सीतळता वापरी, तिण स् नीद वस हुआ। आगै दरियाव आयौ सो जलाल वीमे कूद पडचौ सो धमाकौ सुण वूवना नेत्रा खवास नू कही—घडनाव[8] तू लेजाय। इव जलाल आयौ छै सो तकलीफ पायसी। सो नेत्रां खवास घडनाव लेय हाली और तुरत आय जलाल नू नाव माहि चढायौ। जलाल क्यू थाकियो हुवौ थो ही सो नाव पर चढ कर कही—खूव वखत पर आंण करके पहूची—

वूवन रा वड भाग है, जलाल कहिण वैन।
भमर[9] पडै थो वीच मे, ती मे प्राण रहै न ॥

---

[1]प्रबध [2]पहिचाना [3]ओट मे [4]महल के अन्दर वाली (वूबना) [5]मांग—जिस लडकी की किसी पुरुष के साथ एक वार शादी की वात तय हो जाती है, पुरुष उसे अपनी मांग समझता है [6]झूठ [7]अर्पण किया [8]खाली घडो को बांध कर वनाई हुई नाव [9]भँवर।

नाव महल पास पहुची जद जलाल उतर महल माही गयौ । बूवना मुजरो करती साम्ही आई । हाथ पकड भीतर लेय गई । पोसाक बदळाय, पलग पर बैठाय, निछरावळ कर नेत्रा खवास नू दीन्ही । मांहोमाहे मिळिया । घणा दिन रा वियोग री तपत[1] मिटाई ।

सूरत पाक सरीर सब, बोलत अम्रत बैण[2] ।
दोपहरा तक थिर रह्या, निरख निरख वे नैण ॥

काजळ तेल तबोळ कर, चलणै नू अब चाह ।
जाणै निकस्यो जात हैं, मयक बादळ माह ॥

वृकच भरिया प्रेम मद, हाले नाहि पयाल ।
पावै गोरी बूवना, पीवै साह जलाल ॥

नेत्रा खवास अे दूहा कह्या तौ जलाल खुस होय मोतिया री माळा अेक लाख री उतार बूवना पर वार नेत्रा नू दीन्ही । पाछै फेर खूब आनन्द-विनोद सुख-साथ कर रात घडी दोय रहिता[3] नाव बैठ, तीर आय, उतर नाव पाछी भेजी ।

आप अपणै महल आय पोढ रह्यौ । इतरै बादसाह नूं सोका कही— जी हा बादसाह सलामत, जलाल आपसू आण कर मिळिया कै नही ? तौ बादसाह कही—वो थकिया[4] आया है, अभी आराम करता होवेगा । बहुत दिनां सू आया है । मूमना सू मिळेगा, फिर वो हमारे पास आवेगा । तद सोका बोली—हजूर वो तौ बूवना के महल होवेगा । मूमना नू तौ नजर सू भी नही देखता है । जद बादसाह नादर नू हुकम फुरमायौ—जाकर देखौ, जलाल महल मे है कि नही । तद नादर गयौ । महल जाय देखै तौ जलाल साहिब ढोलिये पोढिया छै । नादर मूमना नू पूछो—क्या जलाल सोय रहे हैं ? मूमना कही—

कुण जाणै रहियौ कठै, रस-रमतौ[5] इण रात ।
हारघौ थकियौ आइयौ, कीन्ही कछू न वात ॥

इतरी साभळ नादर अणबोलियो गयौ । नादर सहदो[6] थो तीसू दीठौ सो कह्यौ, सुण्यौ सो नही कह्यौ । बादसाह कही—राडा जलाल जैसे मेरे भाणेज कू मराणा चाहती है ।

---

[1]ताप [2]बैन [3]रहते [4]थका हुआ [5]रति-क्रीडा करता हुआ [6]परिचित ।

परभात जलाल साहिब बादसाह सलामत रै दरबार माही आयौ जद बादसाह घणौ सनमान[1] कियौ। मनसब बधवारो[2] कियौ। हाथी घोड़ा सिरो-पाव तलवार कलगी मोतिया री माळा देय घर नू सीख दीवी सो आय अपणै डेरै रह्यौ और बादसाह सलामत बूवना नू दरियाव रा महल सू बुला'र पहला रै महल हीज राखी।

अबै जलाल साहिब नितका बूवना रै महल जावै। चार पहर रात रमै-खेलै। घणौ-घणौ रागरग रस होवै। अेक दिन झरोखे रै मारग न जाय सकियौ। रेसमी रस्सो थौ जे टूटो थौ, तद पहला री भात नेत्रा खवास आ फूला रै बोझे[3] बैठाण, मालण रै माथे घर भीतर नू लेय हाली। इतरै पड़ाइये पडदार बोझे हाथ घालियौ नै कह्यौ—हरामजादी लौडी, हमेसा जलाल कूं ल्यावती है? बादसाह रै महला भीतर इसा अन्याव करती है? तद नेत्रा खवास कही—रे पडाइया, थारो हियौ ही फूटौ दीसै छै। इतरै पडाइया रै हाथ माही बैंत री छडी थी सो ऊठता जलाल रै झाडी[4] सो जलाल रै जामा री चाळ[5] ऊपर लागी। इतरै जलाल रै हाथ खाडो थौ सो पाछो घिर दीन्हौ सो पडाइये रा दोय टुकडा हुया। तद नेत्रा खवास कही—जलाल साहिब, भलौ दुख काटियौ। इतरी कहि पड़ाइया नू उठाय तहखाना माही नाखियौ[6]। जलाल भीतर गयौ। बूवना पडाइये री मरणे री सुण राजी हुई। जलाल बूवना दोनू हस-खेल कर रात बिताई। परभात रा जलाल ऊठ छीके सू उतर कर डेरै आयौ। सोका बादसाह नू जाय कहो—जे पडाइये पैड़दार नू रात जलाल मारियौ। इसी वात बादसाह सलामत सुण फुरमाई—जावौ, जलाल रा हाथ काटौ। आ खबर बूवना नू हुई सो तुरत नेत्रा खवास नू साथ लेय बादसाह री हजूर आई। मुजरो करनै कही—

जलाल हदा हाथडा, न जोगा अहीयाह।
सार पछटण[7] वैरिया, का रमावण सहिया॥
जलाल दोऊ हाथडा, कै मूछा कै मूठ।
गोरी कठण पयोघरा, अेराकी[8] री पूठ॥

---

[1]सम्मान [2]बढाया [3]पुलन्दे मे [4]लगाई, मारी [5]जामे के नीचे का लम्बा हिस्सा [6]डाला [7]पछाडने को [8]घोडे।



ग्रे दोहा सुण बादसाह सलामत कही—तुम क्यू ग्ररज करती हो ? तुमको जलाल क्यू प्यारा लगता है ? तद वूबना कही—जी हजरत सलामत, मेरा वहनोई है। वहन को दुख होयगा सो मुझसे क्यो सहा जायगा। बड़ी वहन नै मुझको कहाया है तौ जाणी ग्रौर उसी के दुख सू ग्ररज करणे ग्राई हू। तद बादसाह सलामत फरमाई—जे जलाल नै बडा खून किया। हमारे डचोढीदार पडाइये कू मारिया। तद वूवना कही—हजरत, जलाल साहिव ग्रापकी हजूर ग्राता था सो मेरी डचोढी नजदीक ग्राय निकळिया। इतरै पडाइया नै गाळ[1] ग्रचानक दीन्ही, वेजवानां[2] बोली। सुणी जद वो भी हजूर का फरजन्द[3] था, फेर सिपाही था, उसकू भी रीस ग्राई, तद क्यू पाछो जावाव कहियौ। जद पड़ाइये छडी चलाई तौ जलाल साहिव खाडो चलाइयौ। जलाल साहिव रीस कर पाछा डेरे गया। मेरे ताई पडदार रै मरणे री खवर जद ग्राई, मोनू घणी रीस ग्राई, वहुत गुस्से हुई, पण पाछै म्हारी सहेली नेत्रा खवास सारी हकीकत कही तद म्हारी रीस उतरी छै। पडाइयो बेजवान ज्यादा बोलियौ। इतरी सुण हजरत सलामत फरमाई—जावो हमे तकसीर[4] माफ करी, खूब काम किया, सिपाही इसी नही सह सकै। भला तुम तौ डेरे जावौ। तद लोग कहण लागिया—

तमायची रै सहर मे, ग्रेक वडो ग्रन्याव।
चगो माड़ू[5] मारियौ, पूछै नही नियाव॥

इतरी वात जलाल री मा सुणी—जे जलाल नू पडदार गाळ काढी। जद मा बेटै नू साथ लेय वादसाह री हजूर ग्राई ग्रौर ग्ररज कीवी—

लाखा काज सुधारणा, लाखा सूवी वात।
लाखा रीझै ग्रापणौ, ते क्यू कटियै हाथ॥

इतरी वात सुण वादसाह लाजियौ। ऊठ नै बारै ग्राइयौ। पडदार नै मरिया री लोग कहै—खोटी हुई। तद खास खेळी[6] रा लोग था त्यानै वादसाह कह्यौ—मेरा वेटा जलाल खून रै ऊपर खून करै है। इसकू मारिया चाहिए। तद चाकर कहै—

मायू बीज दहै भड़ा, पूता रियौ पठाण।
जलाल्लिये सू ग्रेकलो, कूण सहै केवाण[7]॥

---

[1]गाली [2]ग्रनुचित [3]सन्तान-तुल्य [4]गुनाह [5]मनुष्य [6]मडली, टोली [7]तलवार।

यू सोच करै छै, इतरै जलाल आयौ। वादसाह सू मिळियौ। बूबना कह्यौ थो त्यूंही अरज कीवी। तद वादसाह कही—खूब किया तैंने। सिपाही की राह यही है। यू दिलासा कर सीख दीवी, सो जलाल बूबना रा महल नीचै आय निकळियौ। तद बूबना झरोखे आई। मांहे-माहे नैण मिळिया। जद बूबना कही—

सज्जण सेरी साकड़ी, कायरजाळौ[1] लोग।
नैणा मुजरो मानजे, नांही मिलणो जोग॥

ऊचा गोखा बैठणौ, नीचै वहै खलक्क[2]।
खलक जेम सजणां मिळै, अइयो वाह हलक्क[3]॥

जलाल इतरी वात सुण ऊ ठाव सू आगे हालियौ। पावासर रा धाकिया हंस ज्यूं मन मे मुळकतौ[4] धकियौ खुसहाल छै।

जलाल फूलमदवा खवास नू कही—

तीखा नैण तनारसी[5], सायक काजळ सार।
छाती छेदै छैल की, निकस्या परलै पार॥
नैण झळक्का लागिया, पंजर पडी पहार।
कै ओ घायल जाणसी, कै वो वाहणहार॥
घायल तन घायल कियौ, महल अपूठा दीठ।
नैन दुवा सू दे गया, घाव न दीसै पीठ॥

यू वाता करतौ हसतौ मुळकतौ डेरे आड्यौ। गोठां करै। रीझ-मौज हमेसा करै।

अवै वादसाह चिंता करै। जे काई वुद्धी उपाय सू जलाल नू मारणौ। सो उण साइत[6] मजकूर करि कहियौ—वडो डेरो हमारे झरोखे साम्हो खडो करौ और तणाव ढीलो राखौ। जिको आवसी सो डेरे तळाकर[7] आवसी। सो जलाल आवै उस वक्त तणाव छोड दीजै जे जलाल दब जायसी, फेर तीनू पकड लीज्यौ। पछै चाहस्या सो ही करस्या। अवही तौ आसंग[8] किण ही री न पडै। यू विचार नै गजर डेरो खडो करायौ और जलाल नू बुलायौ। सो जलाल खवास नू साथ लिया डेरा नीचै आइयौ। इतरै तणाव छोडिया सो जलाल डेरो पडतौ देख कटार हाथ मे थी सो ऊची की तिण सू डेरो फाट चौडो पड गयौ। सो डेरो

---

[1]पडयत्रकारी [2]दुनियां [3]वहार [4]मुस्कराता हुआ [5]धनुष [6]क्षण [7]नीचे होकर [8]हिम्मत।

पड़ता पहला कूद निकळ गयौ। खवास दव'र मुवौ। बादसाह झरोखे बैठ्यौ देखै छै। जे जलाल कुसळ रह गयौ, सो बादसाह फरास सू रिसायौ—कुट्टण[1] जलाल जैसा फेर कहा मिलता ? अैसा ढीला तणाव क्यू बाधिया ? यू कहि निछरावळ मेल, हजूर माही बुलाय, मिळ, हाथ फेर, कुसळ-समाध पूछ सीख दीवी। जलाल दोय लाख रिपिया खैरात किया। बूबना निछरावळ मेली। लगर वाटियौ[2]। माता लगर बाटियौ। थेभो भाई सू मुहिम छै। जलाल कही—

कैकाणा[3] विण पयडौ, धण विण रैण विहाय।
सो भाया विण आणियौ, यू ही अकारथ जाय॥

नैण दीठा क्या हुवै, जै न हमेळौ[4] थाय।
पेट पड्या ही धापियै, ऊवै खेज गमाय॥

जे विग्गुचण डर करै, तै क्यू नेह कराय।
हिरणां हरिया खेत ज्यू, हाकता चर जाय॥

जलाल यू कहितौ रहै। अेक दिन बादसाह कहै—जलालिये के मारणे का इलाज कोई नजर नही आवै। तद अेक हजूरिये कही—जी हजरत सलामत, जे तकसीर[5] माफ हुवै तौ अरज करू, बेअदवी री अरज छै। जद बादसाह फरमाई—माफ करी, तद उण कही—

जलाल मरिया जे सुणै, बूवन अपणे कान।
जीवित फिर नाही रहै, तुरत छोडदै प्राण॥

इतरी सुण बादसाह कही—आछी बात।

दूसरे ही दिन बादसाह सिकार नू हालियौ और जलाल नू आपरै साथ लियौ। करोला[6] री साथ सिकार खेलै छै। इतरै जलाल रो अेक चाकर थौ सो अबार गैर चाकरी मे थौ, तिणनू बादसाह लालच दिखाय बेदिल थकियौ बुरी तरह रोवतौ-पीटतौ सहर नू मेलियौ। तिणनू सिखाय दियौ—जे तू रोवतौ-रोवतौ जाय गाहणी नू खबर कर, जे आज सिकार मे जलाल और सेर रै आपस मे खुस्ती हुई सो जलाल तौ सेर नू मारियौ और सेर नोचियौ[7] तीसू

---

[1] दुष्ट [2] गरीबो को खाना खिलाया [3] घोडो [4] मिलाप [5] गुनाह
[6] वे आदमी जो शिकार को घेर कर लाते हैं [7] नौचा।

जलाल मर गयौ। सो चाकर जाय इण भांति ही गाहणी नू खबर सुणाई। गाहणी सुण पछाड खाय गिरी। छाती कूट धुरी तरै रोवणे-पीटणे लागी। सारै हाहाकार मच गयौ। सुणता ही बूबना रो जीव हकारै साटै निसर गयौ। ऊभी थी सो ढह पडी[1]। नेत्रा खवास नै बीजी सारी सखिया-सहेलिया रोवणे-पीटणे लागी। चाकर जाय बादसाह नू खबर सुणाई—जे बूबना फौत हुई। जलाल आ बात सुणी सो सुणता ही प्राण निसर गया। बादसाह घणो ही प्रसन्न मन हुवौ। जलाल नू उपाड लेय सहर आइया। जद बादसाह फरमाई—जे दोना मे नेह बहुत था सो दोनों को अेक ही कबर मे दफनावौ। बादसाह री इजाजत सूवा[2] दोनू अेक कबर मे दफनाया गया। तद तनोमनो यार कही—

आज न दीसै गोठ मे, सज्जण थारो दीह।
तारौ दीसै डाखरौ, सेरी वधियौ सीह॥
जलाल तौ विन कोटडी, चन्द विहूणी रैण।
तौ आया चांनण हुवै, दीसै भलास सैण॥

बादसाह सलामत इब बहुत खुस हुवा। सोका सारी अपणे-अपणे महल माही घणी-घणी खुसी री बधाई वाटी। सूमना दुखी थी।

तीसरै दिन श्री संकर भोळानाथजी पारवती साथै जलाल री कबर कनै आय निसरिया। ती समै बी[3] कबर रै ऊपर भवरा गुजार कर रहिया, सुगंध इतर री सारै फैल रही, तिणसू सारी वनस्पती सुगन्धित होय रही छै। जद पारवतीजी सदासिवजी नू पूछी—

ना गुलाब ना केतकी, सकर इहा दिखाय।
सुगन्ध सब ठा व्है रही, फिरै भवर की दाय॥

सुण कर श्री भोळानाथ हसता हुवा पारवती नू कही—

सुण गिरजा ई[4] कबर मे, प्रेमी प्रेम निभाय[5]।
जला बूबना सो रहे, विना काळ गम खाय॥

तद पारवतीजी हाथ जोड विनय करी—महाराज, अेक बार उवै दोनू प्रेमी मोनू दिखावौ। जद श्री संकर भोळेनाथ नादिया सू उतर अपणे चीमटै सू धूळ हटाय, जलाल-बूबना समीप लेटिया दिखाया, सो देख पारवती गद्-गद् होय कही—

---

[1]गिर पडी [2]सहित, अनुसार [3]उस [4]इस [5]निभा रहे हैं।

'जीव दान देवहु इन्हैं, मरण जोग ये नाहि।
सकर भोळानाथ मैं, करू विनय तुम पाहि ।।

पारवती री हठ देख कैळासनाथ आप उण रै छीटा दीन्हा सो दोनू जी ऊठिया। सामनैं श्री सकर पारवती नू देख स्तुति करी। जद महादेव पारवती रजामन्द होय कही—आज सू तीसरैं दिन अगतमायची फौत होयसी। थारैं टीको होयसी। इतरी कहि सिव-पारवती अलोप हुवा।

दोनू ऊठ बाग मे आया। माळी नू मेल तनेमने यार नू और गाहणी नू खबर कराई। सुणता ही उवैं सताव लेय साम्हा आय निछरावळ करी। जलाल मुजरो कियौ। खैरात करी। गाजैं-वाजैं सू सारा तीसरैं दिन सहर माही आया। अगतमायची दोना नू आया सुण तुरत मुवौ।

जलाल बादसाह हुवौ। बूवना मूमना नूं साथ लेय सुख माथै राज कियौ। गाहणी नू सुख दियौ। धरती सारी अमन-चैन हुई। जैजैकार हुवौ।'

जलाल वडो आलीजो भवर बादसाह थौ।

पढै 'सुणै चितसै इहैं, जलाल साह री वात।
सुख-सपति सकर तिन्है, अमर सुयस दै तात ।।

उन्नीसौ पिचयानवै, सुभ सिवरात्री जाण।
नारायण परसाद नैं, लिखी लिखी परमाण ।।

जलाल-बूवना री वात समाप्त।

डाढ़ाळौ सूर

जम्बू दीप भरतखंड मे अढार गिर, पण अढार गिरां रो सिरौ[1] अरबद[2] किसौहेक छै—

वनस्पती पाखर वणी, वणिया टोक विहद्द ।
पटा विछूटा नीझरण[3], आयो मद अरबद्द ॥

घेघू वीलू वीघटा, सिखर पखिया सद्द ।
लग सू सूवा वाळिया, आजूणो अरबद्द ॥

चपा माणै निर चढै, आवा भखै अवल्ल ।
अरवद सू अळगा रहै, ज्यारा कूण हवल्ल ॥

आवू गढ रा खेतडा, केतकिया री वाड़ ।
अन देसी अजस करै, सीस पागडी चाढ ॥

जाणै जिके सुजाण नर, ना जाणै सो वोक ।
जमी'र असमाना विचै, अरवद तीजो लोक ॥

जिण अरबद ऊपर अढारह भार-वनस्पती[4] भुक रही छै। घणौ ही चपो, चमेली, मोगरो, जुही फूल रहिया छै। फेर अडसठ तीरथ आय विसराम[5] लियौ छै। श्री अचलेसरजी रै दरसण करण रै पगा[6] फेर अठचामी रिसी, नवनाथ,

---

[1]सिरोमणि [2]आवू [3]निर्झर [4]घनी वनस्पति [5]विश्राम [6]लिए ।

चौरासी सिद्ध, निन्याणवे किरोड राजा, गिद्ध, तैतीस किरोड देवता भेळा भरै। इसौ अरबद छै। मृत्युलोक माही सरग छै।

तिण ऊपर अेकल डाढाळी तपस्या करै। अेक भूडण तिण अरबद ऊपर तपस्या करै। दोना नू बारह वरस तपस्या करतां नू होवता आया, अेक दिन आडो छै। सो दिवना रै लेखे सू भूडण प्रात.काळ घटी दोय रै तड़कै ऊठ सूरजकुड मे स्नान करणे नू गई। वींही समै देवजोग सू डाढाळी वींही सूरज-कुड माही स्नान करणे आयी, सो देखै तौ भूडण स्नांन कर रही छै। तद नूर पासै[1] आयी। भूडण कही तू कुण ? तौ डाढाळी कही—हू अेकल डाढाळी छू। सुणि भूडण कही—मोनू आज बारह वरस तपस्या करता हुआ, आज तक मरद सू सभासण नही कियौ। न की मरद रो मुह दीठौ। पण तू मोनू आज दीठौ, सभासण आय कीन्हौ तोसू बारह वरस री तपस्या गई। हू तोनू सराप[2] देयस्यू, सो झाल[3]। तद डाढाळी सुण कही—मोनू ही आज बारह वरस तपस्या करता हुआ छै। पण हू किही स्त्री रो मुह नी दीठौ, न सभासण ही कियौ पण आज तू आगे आई। थारी सिखा रा म्हारै छींटा लागिया तोसू म्हारी तपस्या में कजी पडी। सो हू तोनू सराप देयस्यू, तू झाल।

यू लडता-झगडता दोनू नवनाथ चौरासी सिद्धा रै नेडै गया। तद उहा[4] इण री बाता सुण इणरै पूरब जनम री बात जाण'र कही—

सफळ तपस्या जाण, दोनू श्रापां नाहि।
विधना री गत आण, सुख भोगो जग माहि॥

जद उहा अरज करी—जे हमा घणा वरसा कस्ट उठायौ, श्री सदासिवजी रो ध्यान कियौ, ब्रह्मचार[5] रो पालन कियौ सो इब इसौ काम क्यू कर करां। आयुस[6] रो किही भरोसो नही तोसू कमायोडी[7] क्यू गमावा। म्हानू तौ स्परस[8] रो ही पातक[9] लागसै। और घरवास किया तौ सारी तपस्या हीण होय जासी। आगै तौ क्यूहीं करम किया तौ कर निकृष्ट जूण पाई। इब की होणहार छै ?

तद नौ नाथ चौरासी सिद्ध कही—जे थे दोनू ही पूरब जनम मे यक्ष था, सो कुवेर रै खजाने पर रुखाळा था। सो अेक दिन कुवेर रै पाक सिद्ध हुओ,

---

[1]पास [2]श्राप [3]पकड, स्वीकार कर [4]उन्होंने [5]ब्रह्मचर्य [6]आयु [7]कमाया हुआ [8]स्पर्श [9]पाप।

तीमे था स्त्री पुरुख दोनू पहलां भोजन कियौ सो कुबेर लखियौ जद रीस कर थानू कही—थे सूकर री ज्यू क्यू खावौ। जावौ थे सूकर जाय हुवौ। श्राप सुण थां दोनू ही हाथ जोड़ कै अरज करी—जे म्हारै साधारण अपराध बदळै दड मोटो दियौ। यूं कहि दीनता करी। तौ कुबेर कृपा करि कही—जे श्राप तौ मिटै नही, भोगियां हीज सरसी, पण था जाय आबू पर जनम पावौ। तपस्या कर महादेव श्री अचलेसरजी रो ध्यान धरौ। उठै थे दोनू भेळा रहौ। थारी घरवास होयसी। पाछै थारै पाच पुत्र होयसी। फेर था साहसी थकिया लड कर काम आवस्यौ—

इण भांति सारी कथा, दीन्ही तिन्है बताय।
समझा कर आग्या दई, धर वासहु इब जाय॥

सुण कर डाढ़ाळी भूडण नू आपरी थेह[1] लेय आयौ। वीं समै भूडण रितुमती हुई थी सो भूडण नै आसा[2] रही। महीना पूरा हुआ जद चील्हर[3] पाच जाया। उवां मे वडा रो इसी पुळ में जनम हुऔ जे जरख में आग लागै, वनस्पती जळै। वीजै रो इसी पुळ मे जनम हुवौ जे इणा सू अरवद छूटै। तीजै रो इण वखत जनम हुवौ जे आपरो पेट मोहरो[4] भरै। चौथे रो इसी घडी मे आ जनम हुवौ जे धरती रै धणी सूं राड[5] हुवै। पाचवे रो इसी पुळ माही जनम हुवौ जे बाप-भाई काम आवै, मा सती हुवै और आप राड़ मे घणा नू मार जीवतौ घर मे आवै। इसी नखत-पुळ मे पूत पैदा हुवा। दिन-दिन मोटा हुवै।

मास दोय रा हुवा और डूगर मे आग लागी। वनस्पती, कन्दमूळ, घास व फळफूल सह वळिया, नीली पाती न रही। सूरजकुड रै आसपास दूबडी रही, जे चील्हरा नू चरावै। डाढाळौ नै भूडण वडा दिनकसाली काढै।

अेक दिन सारो परवार लियां डाढाळौ नै भूडण सोय रह्या छै। इतरै जाझरकै री वखत री ठाडी पवन आई। तौ पवन री साथ हरिया जवा री वोय[6] आई। तद भूडण ऊठ वैठी हुई और कही—हरिया जवा री खुसवू आवै छै। हालौ जौ चरा। जद डाढाळौ कही—जव सिरोही रै धणी रा छै। इया जवा ऊपर कजियौ[7] होयसी। चील्हर नैन्हा छै। मारिया जासी। वीजै लोगा रा

---

[1]रहने की गुफा [2]गर्भ [3]वच्चे [4]आसानी से [5]झगडा, युद्ध [6]गन्ध [7]झगडा-फिसाद।

जवा रा खेत परलै पासै छै और राजा रा जव उरली आडी छै। तीसू इया जवा पर कजियो भारी होसी। तौ भूडण कहरणे लागी—

डाढाळा भूडरण कहै, वछडा भूख न मार।
लिखिये मरसी आपरै, भावै[1] जव ना चार॥

तद भूडण रै कहै डाढाळौ अरवद सू उतरियौ सो सिरोही आयौ। सिरोही री सवजी[2] वरणी नही जाय। साखियात[3] इन्दर लोक समान सोभा छै। दूसरी अमरावती हीज छै। जव गेहू चणा री क्यारिया मांही नै खुसवू छाय रही छै। तिजरो फूल रह्यौ छै। गूदगरी, रामगरी, गुळवाड री वाड़ा लाग रही छै। पग-पग नाळा-नीझरणा बह रह्या छै। घणा ही आवा-महुवा रा मोर झुक रह्या छै। अढार भार बनस्पती झुक रही छै। भवरा ऊपर गुजार कर रहिया छै। सारसा बोल रही छै। मयूर झिगोर[4] करै छै। अनेक भात रा पसुपक्षी कलोळ[5] करै छै। सो इसी दीसै जाणजे कैळासपुरी[6] कना[7], अमरावती कना, वरुणपुरी, असी सिरोही विराज रही छै। वी ठाव वडो राव वीसलदे बाघेलो राज करै, जिण रो इसो तेज अमल छै सो नाहर-वाकरी भेळा चरै। गाय-सिघ अेक घाट जळ पीवै, साढिया रा वरग[8] सूना ही चरै, वाजारा री हाट में कोई बोपारी ताळो न मारै। वडी वाकी भोमीचारै री जायगा छै तिणरै चिलोडरी उगूणी दिसा छै। जोधपुर उतरादी छै। ईडर उतराध री सीध मे छै। सारा ही मुलका रै वीच सिरोही छै। साढा तीन हजारी गावा रो राजा सिरोही रो धणी छै। इतरा परगना रो अमल गोठवाड, दातीवाडो, सिवणची कूभटगढ और ही छोटा-मोटा परगना घणा छै।

इसा-इसा अमराव चाकरी करै ज्यानै परणायजे नै परणीजजे। सो सिरोही, चित्तौड, जोधपुर, अणहलवाड़ा, पाटण, जाळोर री आसग[9] मे न आवै सो कागद वाई सुख राखै। रिसाला मेल मगावै।

सो डाढाळौ सिरोही आयौ। अेक रात गेहुआ रा खेत और साठा री वाड़ मे रहियौ। घणा दिना री भूख काढ धाप नै अरवद साम्हो हालियौ। तीसरै दिन अरवद जा पहुचियौ। कवीलै सू जाय मिळियौ। भूडण सारा समाचार

---

[1]भलेही [2]सरसव्जपना [3]साक्षात [4]मस्ती [5]किल्लोल [6]कैलास-पुरी [7]या [8]झुण्ड [9]हिम्मत।

पूछिया—जे डाढाळा, सो जायगा[1] किसडी'क छै? चारो किसडो'क छै? तद डाढाळै कही—जायगा कैसीक वताऊ जाणे दूसरो सरग हीज छै। मोकळौ[2] खावण नू जौ, गेहूं, चणा, गुळवाड छै। पग-पग ऊपर जळ घणा, रूखा री ठाडी छाया। सिरोही चालिया छोरा वेगा ताजा-मोटा होयसी। पगे सताव[3] होयसी। सो पहर तीन डाढाळौ आवू ऊपर रहियौ। पाछली पहर रात री समै अरबद सू उतरियौ। भूडण चील्हरा नू लिया नळा, खाडरा, रूखा, झाड़ा री झगी रै ओल्है चालै। डाढ़ाळौ चौड़े[4] पाधरो धरती चालै। ताहरा क्यू भूडण कहणे लागी।

> अेक विराणा[5] जव चरै, चालिस ऊगै सूर।
> डाढाळा भूडण भणै,[6] मागा भाखर दूर॥

तद डाढाळौ कहणे नू लाग्यौ—

> फूटरिया हिरणी जणे, बोह कूदणो घट्ट।
> ज्यारो माही वाकडो[7], थामै राखै थट्ट॥

भूंडण इतरी सुण वाकी धरतो छोड पाधरी धरती मारग आई। आगे वाराह छै। पाछै पाच चील्हर छै। त्यारै पाछै भूडण सू सलाह कर सिरोही आया।

वीसलदे रा वाग मे आय थेह दीन्ही, सो घणा आवा महुवा झुक रहिया छै। अगूर जमी सू लाग रहिया छै। केळा री घडां आय रही छै। जम्मेरी, नीवू, नारंगी आय रहिया छै। चमेली, मोगरो, केवडो, जूही, गुलाब सह महक रहिया छै। कारंजा रा नाळा खिळक[8] रहिया छै। चादरा छूट रही छै। वी ठाव आय पहला तौ लोटिया, थकाण मिटाई, पाछै तूड सू जमी नरम कर थेह वणाई। इतरै वागवान आयौ। पग दीठा[9] जद पगा-पगा गयौ। देखै तौ वाराह लौटिया छै तिणरी डोका छै। आगे देखै तौ चैड़ा पडिया छै। अगूर केळा तूटा पड़िया छै। और जम्मीरी अनार अधकचरिया पडिया छै। तठै आम री छाया नै चमेली मोगरे नजीक नहर कारंज कन्है सूअर डार नू लिया सूतौ छै। सो देख वागवान हकालौ[10] देय गाळी काढी। तद डाढाळौ ऊठ साम्हो आइयौ।

---

[1]जगह [2]बहुत [3]शीघ्र [4]खुले मैदान मे [5]पराया [6]कहती है [7]वाका, सूअर [8]कल-कल करते हुए ढल रहे हैं [9]पद-चिन्ह देखे [10]जोर से आवाज देना।

जे बागवान नू बोलणे सम्भलणे नहीं दियौ। उठाय थू डर सूं उलट नाखियौ। जाघा दोनू फाड नाखी। ऊठतै रो पेट फाड, मार गिरायौ। पहलो मुकावलो डाढाळै रो बागवान सू हुऔ, सो भगवान री दया सू डाढाळै री जीत हुई। बागवान मरियौ। मनचितिया[1] मनोरथ हुआ। चील्हरा नेन्हा नू लडणे रो दाव दिखाय सिखायौ।

बागवान री पुकार दरबार पहुची सो दिन तीन पहला बडो राव बीम्लदे जनाने-दाखल-हुवौ[2]। घोडा रो रातब-दाणो, महीनदारा रो महीनो, मोदीखाने री जिनस[3] और ही सारा लोगां रो सरजाम भरतत कर, घोड़ा नू खुद रै खेत भोळाय, हाथिया नू गुळवाड री वाड़ भोळाय आय गैरमहला[4] रहियो। देस रो काम सारो मुत्सदिया नू देय आप जनाने मांही ऐस[5] करै। अमला मे सदोरो रहै। ऊगै-आथा री खबर नही। चारण भाट मंगत लोग आवै था तिका नू आसा पूर विदा किया। घोडा रो लोहो कढाय घोडा खुद बद किया। घोडा रो जाबतौ घणो दियौ। राव री रीझ घोडा सू घणी। जिण रो घोडो ताजो हुवै मैंच पकडे तिणनू इनाम दीजै।

सो घोडा रै जवा नूं जिका जावै तिका डोळी घलिया आवै। सो बाराह रो पुकार हुई, तद सिरकार रो लोग सह चढियौ तिका पता बरकमदाज और घणा लोग तमासगीर आदमी तीन सौ चार सौ भेळा होय डाढाळा ऊपर हालिया, सो उहां रै भाग डाढाळौ थेह मे न थौ। भू डण-चील्हरां सू मुकावलो हुवौ। आदमी दस-पन्द्रह मारिया। आदमी साठ-सत्तर घायल हुआ। घोडा वीस-तीस घायल हुआ। होसियो लोग थो सो नाठौ[6] आयौ। सहर माही खबर हुई। ताहरा गाडी डोली साम्ही मेल्ही जद पकड़ कर आया। लोग सारो बुरो दीठौ। डाढाळै री फतह हुई। घोडा घास विना रहणे लागिया। ताहरा फौजदार नू विदा कियौ। सौ असवार, पाच सौ पैदल ले'र थेह ऊपर हालिया। नकारो वाजियौ तद भू डण सुण डाढाळै नू कही—ओ कासू[7] बोल छै? जद डाढाळौ कही—ओ नकारै रो बोल छै। नकारो बाजै छै। भू डण कही—ओ किसड़ौ वाजै छै? डाढाळौ कही—जिकां ऊपर जायसी तिका जीत पायसी, इसडौ वाजै

---

[1]मनचाहा [2]जनाने महलो मे प्रविष्ट हुआ [3]जिन्स [4]जनाने महल [5]ऐश [6]भागा [7]काहेका।

छै। नकारै वाळा भाज[1] जायमी। इतरी कहि डाढाळी चेजो[2] करणै नू गयौ। भूंडण चील्हरा नूं लिया बैठी छै। इतरै फौजदार आय थेह घेरी। हाथाजोडी करनै चौगिरद दोळां फिर गया। गोळी तीर वाहणै लागिया। जद भूंडण पाचूं चील्हर छाती आगे लेय इसा ताव सूं नीसरी सो का तौ थह माही दीठी थी, का फौज माही नूं रुळती[3] हीज दीठी सो पाळा नूं पाळ पाधरी। पछै फेर असवारा माही आई सो अवसाण खता कर दिया। पाळा तौ ऊभा जोवणै लागिया, तिका सूं तौ दोय चील्हरा कजियो कियौ। भूंडण और तीन चील्हर मिळ असवारा सूं कजियो कियौ। सौ मारिया, घायल किया, घणा घोडा रा पेट फाड़िया, घणा घायल किया। असवार घणा ही बरछी-भाला बाह्या पण भूंडण धकै चढियौ जिको तौ जम रै घर गयौ और चील्हरा रै धकै पडियौ सो घायल हुवौ।

डेढ पहर रात हुई, खेत हाथ आइयौ सही। जीत हुई। सात ताखडी साहजानी तोल रो खून भूडण रा डील माही रहियौ। तठा पाछै सारोही साथ औलस बैठ रहियौ।

दिनां नू जावतां वेळा कीही नही लागै। महीना दोय डाढाळी भूडण चीन्हरा सूधां जव गुळवाडी[4] चरता नू हुवा सो मोटा-ताजा, वळपूर मस्त हुवा। तरह-तरह री जड़ीवूटी खाधी थी तिणसू जखम सावळ[5] हुआ। घोडा जवां विगर रहिया। हाथी वाड विगर रहिया। इसी दहसत[6] पहुंची सो कोई भी दरियावा जावै नही। दूसरे महीना मांही राव बीसलदे महला सू बाहर आयौ। अमरावां हजूरिया कामदारां सागिरद पेसे सगळा आण मुजरो कियौ। घोडा, हाथी, हवालदारां आण नजर गुदराया। राव बीसलदे बोलियौ—ठाकुरा घोडा-हाथियां जवा रो नै बाड रो मच दीसै नही, की वात सू। तद मुत्सदिया-साहणिया अरज कीवी—महारावजी घोडा जौ कठै चरै, हाथी वाड कठै चरै? जवा माही नै बाड माही तौ जिकी वलाय[7] आय थह दीवी छै सो आदमी सौ-सवासौ राव रा काम आया। घोडा पचास सिरसद के हुइया। जवां रै वास्ते साहणी सागिरद पेसे रा लोग पहला गया तिका सै वेहवाल हुइया।

---

[1]भाग [2]चुगा, चरना [3]तेजी से प्रविष्ठ होती हुई [4]गन्ना [5]अच्छे [6]धाक [7]वला।

पछै फौजदार साथ लेय गयौ सो उणसू कजियो कियौ। सो घाप'र फोजदार रा ही जे पग छूटिया[1] । घणा आदमी-घोड़ा काम आया। आदमी डेढ सौ घायल डोळी घाल ल्याया था सो पाटा-चौपड खावण नू सरकार रा कोठ्यार सू पावै छै। हमला वारै ऊपर तीन किया सो वी तीनूं ही वार फौज मोडी। अेकल वाराह सही जीत रहियौ। इब महारावजी रो हुकम होय तिसी करां। इनरी सुण वडो राव वीसलदे घणू ही अेतराज कियौ और कही—वडा राजपूता, म्हारा घोडा विगर जवा रहिया—रोही रा जानवर आगे। सो लाठा ग्रासिया कनै घरती क्यूकर राख स्यौ। तद अमराव-वरकमदाज वीजो ही सारो लोग आण भेळो हुवौ। उण दिन तौ राव घणौ आतुर रहियौ। रात तौ नीठसी बीती कीवी। भाग-फाटती[2] हुकम हुवौ—नकारो करौ। नकीव सारै फिर जायतौ करौ। सारा सिरदार आय हाजर होवौ। सो सूरा-पूरा[3] सोह[4] चढी। कायरा नू कांपणी छूटी। नगारो सुण भूडण कही—आजरा निसांण कैसा'क बाजै छै। तद डाढाळौ कही—

भूडण मन आणन्द कर, वाजण दे नीसाण।
जो मौजा गावा जिया, तौ वगियां परवाण॥

जद भूडण कही—

अहरण[5] ठमको म्हे सुण्यौ, लोहो घडे लुहार।
घडजै घमजै वप्पडा, तौ काजै हथियार॥

दासी फिरै उतावळी, साटा[6] लेवण हार।
गोखा वैठी गोरडी, वाटै सिल वेसवार॥

तद डाढाळी कही—

अहरण भाजू गज गिलू, समूचौ[7] वो लुहार।
घोड़ो पाड़ पाखरयो[8], सू वरछी असवार॥

मसाला रहसी वरधा, दासी रहसी रोय।
गोरी मसळै हायडा, काम कथ रा जोय॥

फेर भूडण कही—

अेक विराणा[9] जव चरै, दूजै भय ज नाही।
कदे अेक देसावस्यू, लड वाहर फळ मांही॥

---

[1] छूटे [2] पौ फठते [3] सूरवीर [4] जोग [5] एरन [6] सूअर का चरबीदार मास [7] समूचा [8] जीन समेत [9] पराये।

जद डाढाळौ कहै—

भूडरा लेजा चील्हरा, हू जावू रण थाट।
कै रोवाण, पदमणी, (का) मांस विकाऊ हाट॥

रावत राखू खेत मे, तिरा राखू तिरियाह।
तौ तू जाणे कामणी, डाढाळौ वरियाह॥

इतरी अेक वतळावण डाढाळौ अौर भूडण दोना रै वीच इण भांत हुई। अेकण नकारे घोडा रै खुररा हुआ छै। दूसरै नकारे खांणौ-दाणौ कर सारा तैयार हुआ। भूडण कही—

कथ पराये गोर मे, भाजै सोहि गवार।
लाछण लावे दुहू कुळा, मरणो अेकहि वार॥

जद डाढाळौ कही—

गयदंतो[1] पाडा खुरो[2], अेकण मल्ले अवीह।
जिण वन कवळौ सचरै, तिण वन फेरै सीह॥

तीजो नकारो हुवौ। सगळा असवार हुवा। तद वडेराव वीसलदे रो साळो झालो ठाकुरसिह, सो हाथ जोड अरज कीवी—राज रो जोधपुर ऊपर नकारो कसीजै का चित्तौड ऊपर कसीजे, का अणहिलवाड़ा ऊपर, का भुजकछ ऊपर, का थटैभखर पर, का जाळोर ऊपर नकारो कसीजे। इण भाति जगळ रा जिनावर ऊपर नकारो कसियां भाई-सगो हसी जे करसे। गिलो[3] करसे। रावजी जिण उमराव नू हुकम देसी तिकोही हरामखोर नू जाय मार गिरासी। इतरा दिन तौ कोई राजपूत चढ्यौ न हुतौ, न कोई इसो खयाल ही कियौ। सरकार रो लोग खास खेली सो तमासगीर गयो हुतो सो खात राख[4] कजियो न कियौ अौर फौजदार पण भोळप सू चढियौ। साथ सामान क्यू विसेस न ले गयौ तीसू कजियो विगडियौ। हमे जो रावजी रै ख्यांत लागी तौ इण पसू रो कासू। ओ तौ आपणो खाज[5] हीज छै। तद रावजी पान रो वीडो झाला ठाकुरसिह नू देय फुरमायौ—जे जावौ, हरामखोर नू परवार समेत मार ले आवौ जे गोठ करा। ताहरा ठाकुरसिह आपरो सारो साथ सजियौ अौर की रावजी

---

[1]मूअर [2]सूअर [3]मजाक [4]पूरा खयाल रख कर [5]खाने की वस्तु।

री फौज पण लेय डाढाळ ऊपर हालियो। तिण दिन इण रो भाग, डाढाळी तौ थेह मे सूतो पडियो छै ओर भूडण चीलहरा नू लेय सिरोही नूं कोस डेट ऊपर गुळवाड छै उठै चेजो करणे नू गई छै। इतरै फौज रा आदमिया री नजर मे भूडण आई।

ताहरा सारा गोळ कर प्यादा मुह आगे लेय असवार केहेक डावा, केहेक जीवणा लेय कही—जे भाला ठाकुरसिह खबरदार रहिजो, जो नीसर जावसी तौ खोहरा खुडा[1] नजीक छै। जिणा मे वड जासी तौ भूडा पडसी। तिणसू सै ठौन पगा रहज्यौ। इतरै मे वदूका रै पलीता[2] लगाइया। कामठा सू तीर छूटिया मुह आगे आण-आण पडणे लागिया। तद भूंडण चाचरो[3] ऊपर उठायनै साम्है दीठी। जद फौज चौगिरद[4] निजर आई, सो भूडण चीलहरा पाछू छाती रै गागे लेय फौज रै साम्हा चलाया। सो जठै ठाकुरसिह भालो किरणिया[5] दियां ललकार करै छै। खडो छै। तिण फौज भेळा किया। जे भूडण रे धकै चढै सो जमपुरी जावै, नै चीलहरा रे धकै चढै जिका जखमी अधमुवा[6] हुई जावै। पहर अढाई कजियो रहियो सो सगळा धाप रहिया आपो आप पासो न्याय ऊभा रहिया। खेत मे आदमी काम आया तथा कई घायल माणस व घोडा पडिया। सो फौज री आसग उठावणे री नही। परली तरफ भूडण चील्हरा लेय जाय खड़ी हुई और सरीर नूं धडघड़ी दीवी, सो तीर भाला वरछी बुहारी रा तिणका ज्यू विखर गया। इसो पराक्रम देख सारा थक रहिया, तद कहै।

भूडण खादी धडधडी, गिरिया भाला तीर।
देख पराक्रम भेंपिया, चकित रहया सै वीर॥

भालो पूछै ठाकुरा, पडियो कीं कड[7] न्याय।
कासू दिसावा मुहडो, राव कन्है इब जाय॥
गाव लोग अर गढ धणी, हुमसी सह सिरदार।
गोरी हंससी गेह मे, कैसी की करतार॥

इण भात भालो ठाकुर सिह ऊभो-ऊभो विसूरणा करै छै। हाथ मसळे छै। घोडलो आपरी सवारी रो सुन्हली साखत सू खेत माही पडियो छै। सो साज

---

[1]खड्डे [2]आग [3]मुह [4]चारो ओर [5]छाता [6]अध मरे [7]पक्ष।



तक सम्भाळणे री आसग नही और लोह मण सवा दोय पक्के तोल रो भूडण रै सरीर मांही रहियो। तीन रौळा[1] भूडण जीती ऊभी रही। पछै डाढाळै सांम्ही मुळकती थकी जावै छै। होळै-होळै जाय छै। सगळा ठाकुर सिंह भाले रा साथ रा मुवा अर घायल हुवा नू सम्भाळै छै। मुवा त्यानू उठाय दाग[2] दीन्हो और घायला नू डोळी घाल घर लाया। घोडा मर गया था सो तौ काम आया और घायल था तिका अलग टाळिया छै। तिण मे घणा घायल घोड़ा रै बचणे री आसग नही दीठी तिणारै गळै छुरी दिराई, सो इसा घोडा सात बीसी था। इण भात कजियो हार भालो ठाकुर सिंह पाछो गयौ। राजपूत दिलासा[3] करता परचावता नीठ-नीठ जे जावै छै। ठाकुर सिंह भागे-मन[4] उदास थक्यो निसास गेरतौ जावै छै। रात घडी च्यार रै गया, पाधरो आपरै डेरे आयौ—

चढिया घोळा दीहडा, आया पडिया रात।
पूछै बामण वाणिया, कासू इसडी वात॥

सो साथ रो माणस कोई बोलै नही। अबोल-आबोल ही वहै। सहर रो लोग जठै-तठै मसकरो अधिक बोलो हुवै, तिण मे ओतौ सिरोही रो लोग सदा सूं अधिक बोलो, सो घायला री डोळी वहती देख पूछणे लागिया—

माचा ऊपर मुळकता, ले चलिया पायल्ल।
म्हे थाने पूछा ठाकरा, सूअर कै घायल्ल॥

सो सरकार रै रसाले रो लोग साथे थो जिको रावजी रै पास गयौ। जाय नै हकीकत थी सो सगळी मालूम कीवी—जे महाराज ओ तौ सूअर नही, कोई बड़ी आफत छै, म्हे सारा जाय दोळा फिरिया सो तिण मे सूअरा इसी उठावणी[5] कर आय भिळिया सो बदूक तीर किही रो वहणे नही दियौ। आप भिळही जे गया। सो सगळो साथ छीट-छीट कण-कण[6] कर दियौ। ओसाण[7] खता हुई गया। घोडो माणस जे धके चढियो सोही गुड भेळो हुवौ। इसी इसी वाता कही सो रावजी सुणकर बहुत नाराज हुआ। रात तौ फिकर करतां, भाज-घड़[8] करता करता व्यतीत कीवी। परभात पोह पीळी रो नकारो हुवौ। नकारे री गाज अवाज सुणकर भूडण कहणे लागी, आज रा निसाण कैसा हेक वाजै छै?

---

[1] झगडे, युद्ध [2] दाह क्रिया [3] ढाढ़स [4] टूटे दिलसे [5] जोश से तेजी के साथ लपकना [6] अलग-अलग [7] अवसर [8] विचार।

तद डाढाळी कही—फतै उला री पैला भाजे, कै उलां रो मोडी नही का पैला री मोडी नही ।

इतरै मे वात हुनां वार[1] लागै, वडो राव वीसलदे हयदल पैदल लेय असवार पाच हजार, पैदल सात हजार, धनुषधारी सह म्होटा आगे दिया। भूखा हीज हालिया । ऊगतै सूरज दोळा आय फिरिया । डाढाळी थेह रै माहि सूतौ छै । भूडण नै चील्हरा बैठा छै । इतरै फौज दिखाळी[2] दी । तद भूडण कहणे लागी—

सूअर सूतौ नीद भर, भूडण पोहरा देह ।
ऊठौ नाहि निदाळुवा, घर रूंधौ घोड़ेह ॥

तद डाढाळी भूडण री कही सुण म्होडो उठाय फौज साम्हो देख, सूतौ ही कहै—

कामण तूं निहचै रह, मन मतना हो भग ।
घोडे का असवार नू, करि हू कसूवन रग ॥

इतरी वात सुण भूडण कहणे लागी—जे फौज देखां, काल वाळी हीज छै कै दूसरी हीज आई छै । यूं जांणणे नू ऊठी । राड तीन जीतियोडी थी, जीसू चील्हरा पाचू छाती आगे देय हाली—फौज रै सांम्ही ।

फौज रो लोग आगेरो भागियोडौ थो, मारेल[3] थो, सो उठ वोलियौ—महारावजी साहिव अेकल आइयौ । रावजी कही—इहा रै माही अेकल किसौ छै ? तद लोग कहयौ—लागिया पाच तौ चील्हरा छै नै छठौ अेकल छै रावजी कही—गवारां अेकल रै खग[4] होसी, इण रै तौ खग नही दीसै । काल्ह थे इणसू ही कजियो कर भागिया ? रावजी नाराज होय कही—फिट[5] रे रजपूती, राड आगे भला भागिया । साथ नू रावजी हकारो दियौ—कोई भागणै पावै नही, अपणे घोडा री बाग उपाडी, भूडण चील्हरा समेत फौज सू जा भिळी । फौज दोळी चौगिरद फिरी । सवा दो पहर फौज सू राड हुई । पछै भूंडण रा पग छूटिया, सो वा चील्हरा नू लेय थेह माही आई । डाढाली समाचार पूछिया, भूडण! दळ[6] किसडा अेक छै ? तौ भूडण कही—आज फौज करारी, पण कजियो आछौ कियौ छै और कालरो डील जखमायल[7] छै तिणसू विसेस लड सकी

---

[1]समय [2]दिखाई [3]घायल [4]लवे दात [5]धिक्कार [6]फौज
[7]जख्मी हुआ हुआ ।



नही । फेराघरे री फुरती माफक रही । पण इतरो तौ कमाय आई छूं—

पद्य—पाखरिया दळ आया दीखै, सूरज चद्र तिया सिर साखी ।
अेक वार री थेह मैं राखी, दह दह वार घरा मे दाखी ॥

तीन वार रोळा म्है कीन्हा, चौथी वार पग पाछा दीन्हा ।
तू घर वैठ रह्यौ अळसाय, भागा भाखर दूरो जाय ॥

दोहा—देस विगाड्यो रावरो, फेर विनासी[1] फौज ।
डर वैठा कासूं हुवै, राजा लाग्या खोज ॥

तद डाढाळौ ऊठ आळस मोड भूडण नू कहरणे लागियो—

रोळो करस्यू राव सू, सूरज करसूं साख[2] ।
फौज विरोळू[3] अेकलौ, अबळा वैण न भाखि ॥

ताहरा भूडण कहीं—आज रो जे साथ करारो नजर आवै छै । भूंडण रा डील माही लोहो सवातीन मण पक्के तोल रो हुवौ । रावजी फौज ऊपर हस घणौ दियौ । चौथा वांटा[4] रा लोगा नू मारियां, घायल किया । मोटा मोटा राजपूता रा घोडा घायल किया । सिरदार घायल किया । सो आपरा घाव सम्भाळै छै । उठी भूडण वेहूदी थकी मांस लटकिया थका डाढाळै कन्है कान लटकाया ऊभी छै । सो भूडण री इसी दसा देख डाढ़ळै कही—

भूंडरा आमरा दूमरणी[5] , की फरकावै कान ।
की करडा की कव्वरा, देख मजीठा जाण ॥

यू कहि डाढाळौ थेह सू वाहर आइयौ । भूडण थेह माही दाखिल हुई । चील्हरा पाचू ही छाती मा लीकरं[6] छै । फूल रहिया छै । वेपरवाह थकिया खेल रहया छै ।

डाढाळो उठा सू हाल दह[7] आयो । सपाडो कियौ । पछै ऊची बरडी[8] ऊपर नै आय ऊभौ रहियौ । ऊभौ रहि नै श्री सूरजनारायण नू अरघ देण लागियौ । इतरै माही रावजी री निजर उठी जाय पडी तद रावजी वोलिया—हे ! ठाकुरां हे ! अमरावा रे ! राजपूता जिण रो नाम सगळा डाढाळौ अेकल वराह कहीजै जोवौ तिको हमे आवे छै । सावधान हुवौ । डाढाळै नू तोह–करौ[9] जिको

---

[1]विनष्ट की [2]साखी [3]तहस-नहस करू [4]पाती [5]अनमनी, खिन्न चित्त [6]चूघ रहे हैं [7]पानी का गड्ढा [8]टेकरी [9]प्रहार करो।

समझ कर, सावधान होय नै करजौ। इण म्हारो घणो विसाहणो विखेरियो छै। म्हारो वड़ो दुसमण छै। जिण रै आगे हो डाढाळौ निसरसी तिण नू म्हारी सिरोही माही दो पग जमीन नह छै। सेर आटो पण नही छै। डाढाळो रावरा इतरा वचन सुण नै मन मे विचार कियौ—न करै परमेसर जे कोई सिपाही रो सेर आटो हूँ गमाऊ, किणरे माथै गूदडा दिराऊ, किण रो दुरसीस[1] लेऊ।

डाढाळै चौगिरद देख नै फौज नजर मांही काढी। सो वड़ो राव वीसलदे घोडे ऊपर सवार छै। किरणियो आडो छै। चवर ढुळै छै। आदमी वीसेक रावजी रै घोडा रै आसपास ऊभा छै। वीजी फौज वाळा वरकमदाज सारा हरोळाई[2] मे खडा छै। सो डाढाळो नजर राव ऊपर गखी। श्री परमेस्वरजी रो नाम लेय राव ऊपर उठावणो कीवी। सो का तो उठा सू हुलनतो दीठो का रावसू भिळतौ दीठो, वाह[3] करतौ दीठो। रावरा घोडा रै तग री ठौड खग[4] लगायौ सो घोडो च्यारू पगा उपड गयौ। रावरी जाघ तो वच गई पण घोड़े रो काळजो वुकडा आतडा ओझडा फाट काछ जावतौ निसरियौ। घोड़े रो डाडर[5] जाय धरती पटड़ियौ, च्यारू पग चहल हुवा। राव वीसलदे रै घोडो वीजो कोतल हाजर थो, सो आण हाजर कियौ। राव नू चाढियौ। लोग साथ रा साराही भेळा हुआ। लोग सगळा घुमरो[6] किया ऊभा रावरो डील सम्भाळै छै और डाढाळो निलोह थकियो परलै पासै जाय ऊभो खेरू करै छै। छटा धूणे छै सख सू खम लगाय फौज साम्हो जोवै छै। जे राव रै कन्है घणो लोग चढियो पाळे रो घुमरो दीठो। सो त्यू उठायनै फौज मे पाछा नाखिया ज्यू वघूळिये[7] आया सुगड़ा पान घास रा तिणका उडजावै त्यू सारो लोग विखर गयौ। मुँह सू आयौ कहितां ही चालिया, भागिया परा जाय छै, ज्यू लुहार घण मारते मुह सू जिको जवाव निसरै सो ही जवाव घणी ताळ लग चलियो जावै। त्यू रावरी फौज असी विजळवाई गई सो वाजे-वाजे लोग आव कोसताई गयो उठा ताई मुँह सू उही जवाव आये-आये रो रहियो और अेक घुमरे मे वीस पचीस घोडा घायल जखमाय्ल[8] कर पाळा जे पचास हेक धकै चढिया त्यानू तूड सू उलाळतौ धूड़ सू भेळा करतो पाधरो ही राव रै घोडा कन्है गयौ। सो तीनू तूड सू उलाट दीन्हौ सो उवो राव समेत परे पडियौ। राव रै साथळ रै

---

[1]दुरानीश [2]अगाडी [3]प्रहार [4]दांत [5]पीठ [6]घेरा [7]वात-चक्र [8]हक्की-वक्की (जैसे विजली गिरने से हत्प्रभ) [9]जख्मी।

जवरी जवक आई और डाढाळौ निसर गयौ। कहीका अजरायला[1] रावता हाथ री छूटी वरछी वाही। घोडो तौ कोई लंघाय सकियौ नही, ऊभा ही उलाळ विछूटी वरछी वाही, केही तीर गह्या सो डाढाळे रा डील मे लागिया पण परलै पासै जाय सागी वरडी ऊपर आय खडो रहियौ। धुगधुगी देय भाला तीर उछाळ दिया। केही अेक मुह सू पकड़ काढ नाखिया। ऊभौ-ऊभौ सख सू खेह लगावै छै। धरती खोद रहियौ छै और उठी नू रावजी रै धोरे सारो लोग आय भेळो हुवौ छै। राव नू सम्भाळे छै सो पग जखमाइल हुई गयौ तीसू ऊभो नही हुवौ जावै। कटारी निसर परै जाय पडी सो सम्भाळ कर लीवी। तरवार माणसां रै नीचै दवी, वीरो म्यांन किरची-किरची[2] हो गयौ सो वा तरवार सम्भाळ कर लीवी। सवारी रै पगा हाथी मगायौ जिको आण हाजिर हुवौ। हाथी नू वैठायौ छै। राव आदमी पाच-सात मिळ सम्भाळ हौदे[3] माही वैठाणे और-राव ई वेळा मुह सू आहिज कहै छै—जे वड़ा सरदारा सूअरडै रो जावतो राखजौ, मुहो झालिया रहो, लोग सभीड़ो देख फेर आण पडसी। सो सारां नू इसो भय लागियौ जे सगळा ऊभा-ऊभा सूअर रै साम्हा जोवै छै। अेक वीजे नू आडा देय ऊभा छै। तद रावजी कही—भला भला तीरमदाज[4] हाथिया ऊपर चढ लेवौ। सो तीस पैतीस हाथी फौज साथै था, खासा खासा हाथी साथ मे लिया था, वीजा हाथी सारा पाछै राख आया था, सो इव सारा हाथी याद आणे लागिया।

मैंजूद हाथिया ऊपर सब आदमी भला भला तीरमदाज धणी[5] जलन्वरी धांमण[6] रा कामठा, सुही रा तीर, तिण रै सवा-सवा पाव रा भाला तीन-तीन आगळ चौडा, विलात-विलांत भर लावा लिया इसा इसा जवान हाथियां चढ साम्हा हुवा। इतरै माही डाढाळौ नजर ऊची नू करी, फौज नजर मा कर काढी सो इतरा हाथिया पूठै रावरो हाथी नजर मे कियौ, ठावो कियौ। फेर उठा सू उठावणी कीवी, सो सारा आयौ-आयौ करै छै। इतरै तौ आण भेळिया सो लोग सारो छीट-छीट[7] हुई गयौ। हाथिया आय वागो[8] सो ऊपरा सू तीरा रो मारको[9] होणे लागियौ, सो कितरा ही तीर डील मे गरक हुआ छै। सो इतरौ

---

[1]वांके, वहादुर [2]टुकडे-टुकडे [3]अवारी [4]तीरदाज [5]प्रत्यचा
[6]लकडी विशेष [7]अलग-अलग [8]भिड़ा [9]मार।



मार खावतौ हाथी लोप[1] पाधरो राव रै हाथी कन्है आयौ सो रावरा हाथी रै पाछलै पग इसो खग लगायौ सो हाड जाय रडकियौ। हाथी नूं जखमाइल कर परलै पासै निसरियौ। हाथी रै पूठै सवार खडा था तिका नू तूड सूं नाखतौ थको घायल करतौ थको परलै पासै पार हुवौ। उठै जाय घडघड़ी खाय तीर सारा नाखिया। केई माही गरक था सो मोहडै सू काढ परा किया। उठै डोळे कन्है खादरियो पगां सू खैरू कियौ। खग सख सू लगावणे लागियौ। सारा ठाकुर सूअर ऊपर आ घिरिया। इतरै सुअर वळे फौज सू भिळियौ सो सारी फौज फरोळतो[2] रू दळतौ[3] फिरै छै। इसी तरठ घणौ कजियो कर पार हुवौ। सूअर घणा तीर वरछियां सू पूर हुवौ। वरछिया रा फळ[4] माहे टूट रहिया। तीरां री सांठी[5] टूटी, भाला री गास[6] मांही रही सो लोहा सू पूर हुवौ थको पार होय जा वरड़ी ऊपर खडो रहियौ। भला रावता ठाकुरां माही हा-हू हलचल हुई रही छै। डाढाळौ सूअर राव सू विकराळ होय लडियौ, भला भरोसावध राजपूता रा घोडा रुळ रहिया छै। तीन पहर राड हुई। साढे सात मण साहजानी पक्के तोल रो लोह डाढाळै रै डील माही रहियौ। महाभारत जीत सूअर खडो रहियौ।

राजपूता-सिरदारां वड़े राव विसलदे सू अरज कीवी—वागा हाथ घातीजै, प्रवाडे-वाड़-कीजै[7], लोग कितराअेक तौ घरा री वाट लीवी। रावजी सू ठाकुर लोग अरज करी—महारावजी जगळ रै पसू सू राड किसी, परा जावौ। तमासो करणे आया था सो कजियो कियौ। हमें परा जावौ। सो राव आमणदुमण अमूभियो[8] ही ऊभौ छै। वोलै क्यू ही नही छै। ठाकुर लोग कहै छै—किही सिरीखे आगै मुड़िया रो मोहडो होवै छै। रोही रा जानवरा सू वाद किसो। वो आपणो किसो सारीखो थो, इतरो विमाहणो तौ चित्तौड कनां जोधपुर सू लाग खाता तद थो। फतह कर ऊभा रहिता सो तौ कदेक किही री आसंग कोई हुई नही। हमे खमा कीजै।

डाढाळौ राव री फौज रो मुह तोड घणे प्रवाडे-पूरियौ[9],आपरी थेह आडयौ

---

[1]टाल कर [2]उथल-पुथल करता हुआ [3]रौंदता हुआ [4]वरछी के आगे का हिस्सा [5]तीर की डडी मे जहाँ तीर लगा रहता है [6]भाले की नोंक [7]युद्धार्थ तैयार हो [8]मन मे घुटा हुआ [9]बहादुरी से लडा।

भूडण नू डाढाळौ कहियौ—अरवद सू मन हुवै तौ चालो पहुचावा। पण भूडण दारू रै मतवाळे ज्यू इडकरी हुई। लोहिया सू पूर हुओडा डाढाळौ अर भूडण दोनू अरवद नूं हालिया।

पाव कोसे'क गया जद डाढाळौ वोलियौ—भूडण, महा सूरवीर रो खेत-रिण[1] रो छोडियो आछौ नही। घावा वडो धरम छै और म्हारो सरीर सू समार छै। काल्ह पगपमार थे-म्हे मरीस[2] तौ अगत[3] जायसै, मौनू अगत होयसी, थांनू वडो महणो होसी। राव वडो रजपूत छै, सूरवीर छै। पाछौ जाय काम आयसू[4] तौ गत होयसी। रावरो चित्त सान्त होवै। मोनू फेर इसो सापुरुष[5] कोई मारणे हारो नही मिळसी तीसू राजी होय मोनू सीख देवौ जे काम आवू। तद भूडण कही—आपनू काम आया पाछै जे म्हारो पाछौ[6] करै तौ कीसू करा ? तौ डाढाळौ कही मै राव नू इसा हाथ दिखाया नही जो थारो पाछौ करै। मै घणी ज्यान दीवी छै और कदादिच पाछौ करै, वडे चील्हर रै माथै तिणौ मेल्ह जायजे, फेर फौज पडै तौ वीजे रै माथै तिणौ मेल्ह आगे जायजे। पाछै भी जाय पडै तौ तीजे रै माथै तिणौ मेल्ह जायजे, फेर भी जे आय लागै तौ चौथे रै माथै तिणौ मेल्ह जायजे और पाछै भी जे लालच पड'र पाछौ ही करै तौ पाचवें रै माथै तिणौ मेल्ह तू अरवद री थेह जाय लीजे। इतरी कहि डाढाळौ सीख कर पाछो घर आयौ—लोहा[7] रो छकियौ[8]।

पणघट ऊपर आयौ। इतरा माही पणिहारी देख नै वोली—हे बाई ! गाव रा ठाकर नू कहा जे खोडौ सूअर जावै छै। वे इणनू मारसी तौ साटा खायस्या। इतरी सुण डाढाळौ कही—

हे पणिहारी मत कहै, खोडो सूअर जाय।
धव[9] रै घर खुटसी कोई, नाहक मरसी आय॥

इतरै डाढाळा नू चेत हुवौ। उठासू हाल थेह आयौ। सावधान होय भाखरी नू हालियौ। भाखरी ऊपर आय चढियौ। देखै तौ काम आयोडा नू दाग दिरीजै छै। घायल सम्भाळ वहीर[10] किया था, जे कूकीजै छै। सो कोई तौ भागियोडा सहर गया था, तिका जाय कजिये री कही। तीसू कुअर वीसलदे रा सवार

---

[1]रणक्षेत्र [2]मरेंगे [3]गति नही होगी [4]काम आऊगा [5]सत्पुरुष [6]पीछा [7]शस्त्रों [8]छिदा हुआ [9]पति [10]रवाना।

घणी तरवारियां रा वाढ[1] उछळ रहिया छै। घणी तरवारिया रा वाढ झडै छै। हा-हू होय रही छै। डाढाळी घणा नू तूड सूं उलाळ-उलाळ न्हांकिया छै। कइया नू घायल किया छै। कई रा पेट फाडिया छै। आंतड़ा रुळ रहिया छै। घडी च्यार तांई सारै साथ सू लडाई करी। आदमी साठ सत्तर फेर मारिया। घणा घायल किया। मो वाढ पुरजो-पुरजो कर न्हाखियो छै—जाणजे रंगरेज री गाठ खुली। लोही सूअर रो हुतौ सो तिलकां सू उपड़ियौ। अेक-अेक बूद सगळा रै माथै आई। राव प्रवाडौ[2] जीन खुमहाल हुवौ। खग दोनूं सेवा में राखणै रो हुकम हुवौ। सख दोनूं सोने सू मंढाय नै पाग माही राखणै रो हुकम हुवौ। फतह कीवी ताहरा मन छाजै आयौ।

जिण जे अरिदळ हणै, वण वची परणेह।
तिण दिन आपण पै समौ, हमिरा नगरी रोह॥

रावजी बोलिया—इण महा सूरवीर रै मुह चढ काम आया सो वैकूठ री वाट वुहा[3], जिणा रो सोक न करणौ। काम आया जिका राजपूत अेक ही चिता माही दिया, जिणा नै दाह पड़ै छै।

इतरा माही कुअर हजार दोय असवारा सू आंण मुजरो कियौ। तद रावजी फुरमायी—आज अठै गोठ हुवै सो सगळां रो सोक भाजै। आदमी जिनस रै पगा[4] सहर मेलिया। आटौ, चावळ, वेसण, खाड, घिरत, दारू रा घट, वाकरा वीजी ही सारी वस्तु वासण देगचा चरवा सगळा ही मगाया। तद कुअर अरज करी—साख चरणै रेढा[5] जावै छै, हुकम जै हुवै रेढा मार ल्यावा। गोठ रो सवाद[6] तौ रेढा ही छै। तद रावजी फुरमायौ—दुरस्त वात छै, पण जावतो घणौ कर जायज्यौ। आगे ही लोक घणौ काम आयौ छै। तद कुअर मुजरो कर नै वाग उठाई सो हजार दोय घोड़ा री वाग ऊपडी। तिण मे रूडा राजपूत तिके स्वर्ग रा उतावळा, वैकुंठा लोडाऊ, 'अवधां विरदां रा वहणहार[7]', तिणां री वाग ऊपडी। कोस दोय-तीन ऊपर जावता वे भूडण-रेढा नू पहूचिया। इतरै भूडण वडा रेढा रै माथै मे तिणो मेल्हियौ और कही—

भूडण भूडी नह जणै, ना पिह लोपै रेह।
तिण सू पहला ठहर तू, दंद[8] मचावै खेह॥

---

[1]तेज धार [2]युद्ध [3]गए [4]लिए [5]सूअर का बच्चा [6]स्वाद
[7]युद्ध और कीर्ति की राह पर चलने वाले [8]द्वन्द्व।

दुसमण सगळा रोळदे[1], खूब चला तू तूड।
तो डाढाळा वाछड़ा, गुड सू भरस्यू रुड॥

भूंडण पूरा लोहा छिक रही छै। वड़ो रेढ़ो पाछो फिरियौ। श्रेक घड़ी ताईं सारी फौज थाभ राखी। फौज रो मारकौ रेढा ऊपर पडै छै। रेढो उणरै तूड री देवै छै सो घोडो नै सवार गुड भेळा हुवै छै। श्रेक घडी तक सारी फौज सू लडियौ। अठै रावता तरवारिया सू वाढ़ कर खतम कियौ।

तद फेर आगै कढिया[2]। फेर ही पहु च वळै बीजै रेढै घेरियौ। उण फौज रोकी। तीन रेढा चौथी भूडण आगै चाली। श्रेक घडी वीजो रेढो फौज सू लडियौ। फौज वाळा इणनू वाढ आगे हालिया। तद तीसरो रेढो ऊभौ रहियौ। घडी श्रेक फौज सारी थाभी। इणनू मार फौज आगे हाली। चौथो रेढो फिरियौ सो इसो आकरौ आय फौज सू भिळियौ सो सागी[3] कुअर कन्हा गयौ। घोडो सवारी मे छै तिण रै तूड री दीवी सो उलट कर सवार घोडे समेत गिरियौ। घोड़े री जान गई तद भूडण कही—'

सूअर वाही दंतळी[4], जाय रडक्की हड्ड।
भाई हुवै सो वाहुडै[5], गये विडाणै छड्ड॥

च्यार घडी तलक च्यारू रेढा घणा सखरा लडिया। आदमी घणौ घायल हुवौ। सारा थाप रहिया अर आवू रा विवर पण भूडण व रेढा री नजर आया। तद सारो साथ उठै ऊभौ रहियौ। कुअर नू सभाळ घोडै सवार कियौ छै। इतरै भूंडण-रेढो विवर जा वडिया। तद साथ सारो, घायला नू रेढा नूं सभाळ पाछा आया। आय रावजी सू मुजरो कियौ। रावजी रेढ़ा च्यारूं देख वडा राजी हुवा। कुअर नू घणी सावासी-दाद दीवी। निवाजस कीवी। कुअर री साथ श्रीर लोग रजपूत थो तिणनू अलग-अलग दिलासा दीवी। निवाजस-इनाम रो हुकम हुवौ। राव रो मन वहोत राजी हुवौ छै। वहोत खुसी हो कही—

रण जीतण तोरण वधण, पुत्र वधाई चाव।
अे तीनू दिन त्याग रा, कहा रक कहा राव॥

गोठ री तयारी कीवी। अमला री रह-छह[6] मडी छै। भूरो, मेवती, काळो

---

[1]नष्ट करदे [2]निकले [3]उमी [4]दांत [5]लौटे [6]महफिल।

हजार दोय सू चढिया। इतरै वीच मे घायलां री डोळी मिळी तिकांनू पूछतां पलक लागी। इतरै मे सुअर फौज री नजर पडियौ। तद राव वोलियौ—डाढाळौ आयौ, सावधान हुवौ। इतरी सुण कायर था तिकां रा होठ सूख गया, छाती वैस गई। तद राव धीरज दै छै—राजपूता री खेती छै, सावधान हुवौ। राव कही—रण रहियां अमर होय, भागिया रजपूती जाय।

रण घर रजपूती करै, सोही अमर कहाय।
कायर रोवै जीव नू, सो फिर आप नसाय॥

इतरा माही सारां री नजर काळ-रूप दीठौ। देखता समान कायरा रा प्राण घुटणे लागिया। वहत्तर नाडी सू प्रांण नीसरिया। राव कही—सावास भला राजपूत हुआ। इतरी कहि आपरी सवारी रै हाथी नू आगै चलायौ। वीजा हाथी राव रा हाथी री वरोवर क्यू[1] पाछा दवाया मो धणी भाला हाथ सम्भाळिया छै। राव रै हाथ लाहोरी कवाण री छै। वडी खपरिया रा तीर च्यार तौ मूठ मे छै और तरकस दोय होदां मे छै। राव राजपूता नू विरदावै[2] छै, ललकारै छै, सो घोडा रा सवार हाथी सू पावडा[3] वीस तीस अगल वगल ऊभा छै। वरछियां हाथा माही लें खडा छै। इतरै मे सूअर वरडी सू होळै-होळै उतरियौ सो पग सू खुडावतौ उतरणे लागियौ छै। तद राव उतावळे सी राजपूता नू कहणे लागियौ छै—भलो हुवौ, सूअर जे खोडो हुवौ आवै छै। थाक रहियौ छै। अवार मार लेवा छा। तद इतरो वचन राव रो सुण सूअर कहणे लागियौ—

खोडो खोडो मत कहौ, खोड़ो वडो रूसाळ[4]।
रेस[5] खवाई रावनू, रहियौ वागा माल॥
हाथी पाडू हीडता, घोडा पाखरियाह[6]।
तौ जांणीजै रावता, भूडण रा जणियाह॥
फौज न फेरौ रावरी, हू आयौ कर रोस।
भाग्या भड न कहावस्यौ,[7] दूध लजास्यौ ओस॥
रावा रावत धीरपौं[8], नाही भाजै जाव।
करस्यू साकौ[9] अेकलौ, राखू कळि मे नाव॥

---

[1]कुछ [2]जोश दिलाता है [3]कदम [4]गुस्से वाला [5]हार [6]कवच लगे [7]कहलाओगे [8]धैर्य वंधवाओ [9]महत्त्वपूर्ण युद्ध।

इतरी बात सुणतां ही ठाकुर लोगा नू चिणक लागी सो खिजिया। खडा था त्यू गाठ कर ललकारता थका सूअर रै साम्हा हुआ। इतरा मे रावजी रा हाथ सू भालो छूटियौ सो जाय सूअर रै लिलाड लागियौ सो आधो तीर गरक हुवौ। तीर लागिया सू इसो कालो[1] हुवौ सो राव रै हाथी रै आगलै पग रै मुरचै री साध मे खग री दीवी सो मुरचै रो खालडो मास हाड जाय रडकियौ। तीसू हाथी लचको खाधौ। भुकियौ तद सूअर री खबर पडी। जे हाथी नू घायल कर पगा मे आय भिळियौ। सो हा-हा हुई रही छै। पण बरछी तीर रो दाव किंही रो लागै नही और सूअर हाथियां रै पगा मे वडियौ[2] सो सारा हाथी घायल किया। पग फाड अहड किया। सारा हाथी आपोआपै मुहै नै भागिया। महावत घणा ही थाभ रहिया, घेर रहिया, पण थभै ही नही। राव रिसाय रहियौ, पण महावत रो वस नही। हाथी तौ आपो-आप ही खिड[3] दूर जाय ऊभा रहिया।

हाथी सै घायल किया, फेर चल्या दे पीठ।
वीसलदे री फौज मे, भलो वजायौ रीठ[4]॥

डाढाळौ अेकल रणखेत रै मांही खड़ौ छै। च्यारू दिसा नै निहारै छै। तद सारा ठाकुर बोलिया—

घेरो घेरो सह कहै, मुहडै चढै न कोय।
डाढ़ाळै री भाट[5] मे, सारा रहिया जोय॥

तद डाढाळौ फौज साम्है देख कही—

छांडौ-छाडौ पागड़ा, साम्है आवौ थट्ट[6]।
डाढाळौ कह रावता, जे माचै गहघट्ट॥

इतरी डाढाळै कही नै सारा ठाकुर पागडा छाड, परगह सारी आगै कर और बरछिया री कोड कर फळसा मां होकर चौगिरद सू आया। इसा हीज आया सो दीठा ही वण आवै। कही नही जावै। डाढाळौ जिण पासै मुहडो किया खडौ थो त्यूही साम्हौ धसियौ सो जाय भिळियौ। सारा ठाकुर ऊपर आय भुकिया। इसो रीठ वाजियौ जिसो न भूतो न भविस्यत। घणी बरछियां रा वाढ[7] हुवै। केई आगै नीसरै छै। तरवारिया री भटाभट लाग रही छै।

---

[1]पागल [2]घुसा [3]बिखर कर [4]शस्त्रो की आवाज, झडी
[5]झपट, प्रहार [6]समूह [7]टुकडे।

किसनागर, आगराई, मरोडी, मुहरतोलो लाभै तिण भात रो केसरियौ[1], पोतां घोळियौ मनुहारा हुवै छै।

अमला सताव उगावण रै पगा वावडी रो नीपनो तिजारो लोटिया मांही नै खोपरा-दळ[2] रो इगतीस ताड़ीरो, तिण पिया पाछै महीनां रो लोही ठाह रहै। आधूआध कालपी[3] मिसरी मिळायोडो, कोरी गागरां माही घालियां थका राजेस्वरा रै मुहडै आगे मनुहारा सू पायजे छै। अमलां री चरसा री मनुहारा होय छै।

उठी आवूजी री तळहटी जाय नै भूडण विचार कियौ—जाया पूत मरिया छै। डाढाळा सरीखो खाविंद मर गयौ। इव कोनू जीवणौ छै। तद पाचवें रेढा नू कहण लागी—तू सापुरुष छै। सुअर वीर सू उपजियौ छै, तीसू थारा बाप सरीखो होय और राव सू खेटो[4] करे। इणहीज भाति, इणहीज धरती माहे जो-गेहू वाढ चरे। वळ रा काम करे। विसरजे मता। भूडण कहै छै—

सो सपूत जे पीछो राखै, दुरजन हीण कदै ना भाखै।
वैरा तिणा विसारै वेहा, सो जाया ही अणजाया जेहा[5] ॥

रेढो कहै छै—

तू माता निस्चित रह, मन मह मत कर सोच।
राव निंचितो ना करू, कदे न खाऊ मोच ॥

जो धण थैंरा चूघिया, रावा भजू माण।
तोनै भली कहाडस्यू, डाटाळा री आण ॥

इसा वचन सुण, तन री प्रफुल्लतता देख भूंडण कही—

अजर अमर चिर जीवणौ, रहज्यौ विसवेवीस।
अेम कहै अति हरख[6] माँ, देय चढी आसीस ॥

इण तरह कहि भूडण अरवद सू उतरी ओर विचारी—जे मोनू तौ डाढाळै रो साथ वार-बार मिळै नही, तीसू इव ही हाल वीरो साथ करणौ छै।

जाती वेळा तौ च्यार घडी लागी थी, पण इव सतचढ़ी अेक ही घडी माही आय पहुंची। उठै सारा साथ रा रावजी रै पातै[7] वैठा छै। तद रजपूता

---

[1]अफीम [2]खोपरे के दल जैसा [3]एक प्रकार की वढिया मिश्री [4]युद्ध [5]जैसा [6]हर्ष [7]भोजन की पंक्ति मे।

कही—रावजी भूडण ग्राई। रावजी कही—सावधान रहो, देखां भूडण कासू करै। तुरत घाव मता घालौ। इतरै मे भूडण चाली सो जठै डाढाळा नू दाग दियौ ती ठाव ग्राई। पारवनी सूरजकुड ग्राई, स्नान कियौ, सूरजनारायण नू प्रणाम करि, ग्राय उण चिता दोळी च्यार प्रदक्षिणा कर सूरजजी नू मुख ऊंचौ कर ग्रर्घ देय कही—वार-वार डाढाळौ पति पाऊं। इतरी कहि चिता माही गरक[1] हुई। रावजी देख नै घणी प्रससा करणे लागिया।

इतरा मे ग्रलकापुरी सू विमाण वैठ यक्ष ग्राइया। ग्रै पण सागी देह घर जगरा सू निसरिया सो विमाण माही जाय वैठिया। सगळो साथ देखै छै। ग्रचभौ इचरज मानै छै। सब वडाई करै छै। इतरै यक्ष सरीर सू डाढाळौ कहै—सगळा साथ सू म्हारो रामराम छै। सावास मोटा राव, थारै विना मोनू सराप सू मोख[2] कुण देवै। श्री परमेसर थारी जै करै। थांरो घणौ प्रताप हुवौ। थारा राज मे विघन[3] उपद्रव कदे मत हुवौ। रजपूत जिको इण तरह काम ग्रासी, ग्रापरै धरम मे रहसी सो इण भात विमाण बैठ सरब सुख पायसी। सूरजमडळ भेदसी। देह मे नेह कदे नह राखै, या ग्रमर नही छै तिणसू ईं देही सू भलो होयजे-करजे। जस सदा ग्रमिट रहै छै तिणसू माया-मोह छोड जस प्राप्त करणौ व धरम रो सग्रह करणौ, परोपकार करणौ।

इतरी कहिता विमाण लोप हुवौ। पछै रावजी गोठ जीम, सारा ठाकुरा रो -सोक भजाय, खुस वखत होय वैठिया। जिका सरदार लोग काम ग्राया था तिका रा भाई-वेटा नू घोडा, सिरोपाव, तरवार, मोतिया री माळा देय मांन कियौ। घोडा तीन सौ वकसिया, घायला नू तरवार-सिरोपाव दिया सो सातसौ तरवार वकसी। रिपिया पन्द्रह हजार पटावधाई[4] खरची रा दिया। उम्मीदवार काम ग्राया त्यानू पट्टो जागीर दीवी। खास चौकी माही राखिया। वडी महरबानी, कायदो-कुरब, मुलाहिजो दियौ। पछै सादियाना वडा राव वीसलदे घरा पधारिया। कवीस्वरां गुणिजना मगता नू दान दिया। ब्राह्मण जिमाया। ग्रासीस लीवी—

सुर नर नाग न घड़िया, केळ केहरियाह।
जलपुरिया परवाण ज्यू, गल्हा ऊवरियाह॥

ग्रेकल वाराह डाढ़ाळ री वात समाप्त।

---

[1]समाविष्ठ [2]मोक्ष [3]विघ्न [4]जख्मो के इलाज के लिए।

राठौड़ अमरसिंह गजसिंहोत री बात

अमरसिंह गजसिंहजी रै वडो कुवर। साचोर रा चहुवाणा रो दोहितौ। सो गजसिंहजो री रजा[1] नही। अमरसिह निराठ सारी वात में अव्वल, वड़ो देसोत[2], माटीपणे रो आक[3]। तद गैरचाकर लोगा सू वाता कर, लोग सारो साथ लेय आगरे वादसाह साहजहां कन्है गयौ। वादसाह आछी तरह सू राखियौ।

आमेर रै घर परणियौ थो, जोधपुर रै धणी रो वडो वेटौ, फेर आप वाता सयाणो सो आछी तरह सू रहै। नकदी खरची पावै। लोग सारो सवळौ रहै अर वादसाह री घणी मेहरवानगी।

महाराज गजसिंहजी समाया[4] मो मरती वार अमराव मुत्सद्दिया नू जसवन्तसिंह री भोळावण दीन्ही। तीं पर जोधपुर मे राजसिंह खीपावत कूपावत परधान थो सो सारा अमरावा नू एकरग राखिया[5]। अमरसिंह घणा ही जतन किया पण राजसिंह किही नू फूटणे नही दिया। वादसाह री हजूर जसवन्तसिंह नै ले गया। घणा ही मजकूर हुआ पण जोधपुर जसवन्तसिंहजी नू लिखायौ। अमरसिंहजी उदास हुवा, तद वादसाह घणी दिलासा देय नागोर खालसे थो सो लिख दियौ। राव रो खिताव दियौ। तीन हजारी रो मनसब कियौ। वीजा ही

---

[1] मर्जी [2] देशपति [3] वीरता का प्रतीक [4] स्वर्गवासी हुए [5] एकता तथा वरावरी के सूत्र मे वाँध कर रखा।

परगना आगरा रै गिरद रा दिया। वतन मे नागोर।

तद मुत्सद्दिया अरज कीवी—अेक वार नागोर पधार, मुलक में लोगां नूं पटो देय फेर हजूर पधारज्यौ। तद कही—थे जावौ, गावा रो उतारो कर सताब मेलज्यौ, तिण माफिक लोगा नू पटो मेल देस्या, सो सारो सरतत[1] कर दियौ। आछी जमीरत कीवी। लोग सारा आप आपरी जायगा वाधी। लोग सबळ हुवौ। इतरै मे चापावत वलु गोपालदासोत अर भार्यसिह जोधपुर छाडि सुराणे जावणे री सूरत कीवी। तिण पर अमरसिंहजी रा मुत्सद्दिया जाय वात कर अमरसिंहजी नू लिखियौ। उठा सू पटो हजार तीस रो वलु नू, हजार पन्द्रह रो भार्यसिह नू आयौ। अे नागोर आया। कूपावत, ऊदावत, करमस्योत, रतनोत जोधा सारा ही आया सो नागोर मे अमरसिंहजी झाल लिया[2]। आछी तरह खातिर सू राखै सो लोग सारो राजी। तिण मे अेक दिन अमरसिंहजी रै खेलण री वरत्री जायल खालसे माही मेली थी सो कछवाहा रा केई माग'र ले गया। दरवार नागोर मे हुवौ छै। मुत्सद्दी सै बैठा छै। वलू पण दरबार मे छै। उण वखत आय कूक घाती[3]। तिण वेळा मुत्सद्दिया कही—सारा चढौ। हाकम चढियौ, वलूजी आप असवार हुवौ, तद वलू कही—घणी ही वकरी-टाटा जासे जिण पूठे कासू चढां? छोटी आसामी वाळा चाढ़ देवौ, ले आसी, टाटा घणी ही छै। टाटा रो कासू। तद मुत्सद्दी रग फोड[4] कही—ठाकुरा; पटायत चाकर[5] दरवार रा छौ, आ कासू कही। अठै तौ बकरी म्हारै भावे हाथी छै। ठाकुरा किसै दिन हाथियां रा घेरा माडस्यौ। इतरी सुणत सुना वलू ऊठियौ अर कही—जिण दिन हाथिया रा घेरा आयसी उण दिन हीज आस्या। ऊभो पटो छोड़ वाहिर हुवौ। पूठे[6] माणस गया, घणोही कहियौ पण रहियो नही।

आगरे वादसाह कन्है गयौ। उठै नव सदी रो मुनसव हुवौ। चाकरी अव्वल तरह करै। आछी तरह रहै। कनै का लोग नू अणीपाणी[7] सू आछी तरह राखै। अमरसिंहजी वार दोय-चार कहायौ पण आयौ कोई नही। इव करता वरस दोय-तीन नूं वादसाह रो कूच लाहोर नू हुवौ। सो लाहोर आयौ, कावल ऊपर मुहीम[8] करी। तिण पर नवाव मोहवतखान नू विदा कियौ। वीजा

---

[1]इन्तजाम [2]रोक लिए [3]फरियाद की [4]गुस्से मे आकर
[5]जागीर वाले नौकर [6]पीछे [7]इज्जत [8]सेना का पडाव।



मनसबदार साथ घणा दिया तिण में केसरीसिंह जोधो हजारी रो मनसबदार थो सो उहा नू पण तैनात कियौ। सो नकीव[1] कहि गयौ—तुम नवाब रै काबुल कू तइनाथ हो सो तैयारी करौ। तद केसरीसिंह नकीव नूं तौ क्यूंहीं कही नही अर परभात नू बकसी सलावतखा कन्है गयौ अर कही—दूजी जायगा मेलौ, तैयार छा। कावल री माफ करौ। तौ सलावत खा कही—जो बादसाह रा हुकम ई तरह का ही जे है तौ और कैसी जगा मेले। तुम बादसाही नौकर हो, खाविंद फुरमावे जहा नौकरी करणी। फेर केसरीसिंह कही—नौकरी तौ नामुकर नही, जठै फरमाई जाय उठै जावा, काबुल माफ करौ। तौ बकसी कही—कावुल क्या है जो तुम कबूल न करौ। इण कही—आडी अटक[2] वहै छै सो हिन्दू नू मना छै, तिण वास्ते अरज छै। तौ बकसी कही—हिन्दू तौ इण तावे मे वहुत है, उनने तो किसी नै नाही नही करी, तुम कुछ उनसे अलग हो क्या ? तौ फेर कही—वारै मन मे गिलानी नही, मेरे मन मे है इणसू माफी करौ। बकसी कही—तुम जैसे नौकर हजरत के वहोत हैं, मैं किस-किस कू माफी करूगा। तुम तौ तैयारी करौ। इण कही—अटक तौ उतरणी आवै नही, और जिस तरफ चाहो हाजर हैं। तौ बकसी कही—जे तुम नही उतरोगे तौ मुनसब उतरेगा। इण कही—मुनसब खाविंद के हाथ है, चाहे सो करौ। म्हारो धरम म्हारै हाथ मे है सो राखसां, खोवां नही। यू जवाब-सवाल वहोत हुवा। तौ पर केसरीसिंह मुनसब छोड डेरे ऊठ आयौ। तिण पर चारण कही—

कळाहरो[3] चढती कळा, जीपण[4] जग भाराथ।
केहरी[5] अटक न ऊतरै, साहजहा रै साथ॥

सो नबाव चढ गयौ। केसरीसिंह बैठ रहियौ। मुनसवत तागीर[6] हुवौ। जद अमरसिंह नू खबर हुई जे केसरीसिंह नवाब रै तावे[7] कियौ थो सो गयौ नही तिण सू मुनसब तागीर हुवौ। तौ अमरसिंहजी केसरीसिंहजी रै डेरै गया। अठै च्यार गाव थाहरै म्होडा आगै छै, थे उठै नागोर पधारौ। सो वडा ही गाढ सू केसरीसिहजी नै नागोर मेलिया[8]। हजार तीस रो पटो, सांवा ओडीट वगहरा

---

[1]जाति विशेष का व्यक्ति जिसका काम बादशाह की सवारी के आगे आवाज देते हुए चलना होता था [2]अटक नदी [3]कला रायमलोत का वशज [4]जीतने वाला [5]केसरीसिंह [6]जब्त [7]तावेदारी मे [8]भेजे।

लिख दिया अर रिपिया दस थाळी रा कर दिया और लिख दियौ—चाहे जठै हवेली नागोर मे सरकार सू करा दीज्यौ। नागोर रो जापतौ आपरै हाथ छै। सो केसरीसिंह नागोर आयौ। गीनाणी ऊपर हवेली कराई, अठै रहै। गावा लोग रहै। असवार पचास कन्है रहै सो रिपियो आधो घोडे री सरे पावै।

उण दिना मे कछवाहा अर लाडखानी नागोर नू उजाड करै। तद केसरीसिंह कागद लाडखानिया नू रावजी कन्है मेलिया—जे थे मोटा सगा छो, ठाकर छौ, उजाड माफ करौ। जे कोई भूखो छै तौ अठै आवौ। अठै पांच सेर जुवार छै सो वाट खास्या, पण उजाड़ मत करौ। तिण पर मास अेक तौ कोई दौडिया नही। पछै एक दिन वोची सिवदडे रा मागर भेळा होय दौडिया[1] सो एक गांव रा अे सौ वळध लेय गया, तेरी कूक आई। तद केसरीसिंह रसोवडो करायौ, जीमियौ। इतरै मे सहर रो लोग सोवणी करणे लाग्यौ। लोग वजार मे आयौ थो सो सुण गयौ, तिका आण कही। आप सुण चुप रहियौ, पछै चढियौ सो आपरै पटे रै गावां माही करतौ[2] निसरियौ। लोगां नू कही—सताव भेळा होय आयज्यो, हू आगै जाऊ छू। थां गांव सूं आघ कोस ऊपर आय डटज्यौ। आदमी अेक मेरै कन्है मेलज्यौ।

सो आप सारा सवारां सागै सिवदडे गाव आया। कोटडी जाय राम-राम कियौ। कही—स्यावास[3] मोटा सगा, भली किरपा करता, हू तौ थाहरे आसगे आयौ थो तीसू इतरी अरज लिखी थी सो भली पीठ[4] राखी। इव थाहरै धरणौ छै। म्हारी आयेरी राखौ[5] सो निराठ[6] नरमी[7] दीवी। तद कुम्हार रै डेरो दिरायौ।

पूठै कछवाहा मसकरी करणै लागिया—जे इण रै भरोसे इतरा दिन निकमा रह्या। तौ अेक वडेरो थो उण कही—मोटो सरदार छै, जे इतरी नरमी देवै छै तौ नारा[8] परा देवौ। गोठ करौ। तद केई कहणे लागिया—जे वासला[9] दिन वैठा रहिया तिण रा धोका[10] आवै छै। इण वामण रो मुलाहिजो कियौ। अठै तौ इव राजा ही गरीवा रो पाळू[11] छै। अेक कही—राजा मे तौ भाग रो

---

[1]लूटने को रवाना हुए [2]होकर [3]शावास [4]मदद रखी [5]इज्जत रखो [6]बहुत [7]विनम्रता [8]बैल [9]पिछले [10]पश्चात्ताप [11]पालने वाला

खायजे छै। इणनूं पटो दियौ जितो आपांनू देवै तौ खवर पड़ै। कोई मीव माही कर तौ नीसरै। सो कछोटियो लोग ओछा अधका वोल वोलै, ठठोळियां[1] करै।

इतरा मे सभ्या पडतां अेक आदमी आय कही—साथ सारो टीवा पूठै खडौ छै। तद केसरीसिह माणस नू पाछौ मेल, आप कमर वाघ, आदमी पचास सू कोटड़ी आयौ। सारा सरदार आण भेळा हुवा। तौ केसरीसिह कहणे लागियौ—जे मोटा ठाकुर छौ, डांगरां[2] रो वाद क्यूही नही छै, आपा भाट मगत नू ही उठाय देवा छां। थां मौनू वकसावौ[3] , आगी मता खांचौ[4]। हू तौ सगा जाण थाहरै आसंग ऊपर पहर तीन वरणो दियौ। इव जावा छां। तौ कछवाहा मजाक करणै लागिया—जे ठाकुर, टीको खीचडो करावा छां, था जावौ मता। परभात वाता करस्यां। काई करा, भूखा था जे ल्याया सो केई अेक तौ राज नू दिरास्या, वाकी तौ लोग भखो थो सो ले गयौ। इव करतां गाव मे लोग वोलियौ—कुण थो, ओ साथ कैंरो? इसो रोळो कोटडी सुणियौ। लोग देखणे नू ऊठियौ। इतरै मे केसरीसिह कढ पडियौ[5] सो सरदार वीस-पच्चीस वैठा था सो तौ कूट नाखिया। वहदो हुवौ ज्यो पहला ही उठाय आया सो आदमी न्हासता-भाजता मारिया। गांव का लुगाई टाबर सारा भेळा कर कोटडी में पडसाला झूंपडा था तिका मे दिया। गाव सारो लूट लियौ। सारो घन सूं पूर हुवौ। आदमी हजार तीन, दिन ऊगता आण भेळो हुवौ, केहर पाडियौ। परभात चढिया सो गांव दूजी वळे जाय मारियौ। पछै वीजा गावा नू पासरणा छूटा सो वित्त[6] सारो घर ले आया। गाव दोय री तो जमा ऊठण दीवीं। इसी तरह केसरीसिह कछवाहा लाडखानिया ऊपर वाह वाही। नागोर आया, सारा सुपारस कीवी, टका दिया, जवान दिया—उजाड़-विगाड़ रा।

अमरसिहजी कन्है कासिद[7] गया सो सारा समाचार मालूम हुवा। उठा सू हाथी, घोडा, सिरोपाव मेलिया, वड़ी निवाजस आई। राजा राजी हुवौ। अमरसिह रो आपस माहे रस नही। वकसी रै जसवन्तसिहजी सू इकळास, सो अमरसिहजी सू वात-वात मे गिलो करै। वात अमरसिहजी ही सुण पावै तिण सू आपस में विष लाग रही।

---

[1]हल्की मजाक [2]गाय-भैंस आदि का [3]बक्सिश करो [4]मुहावरा—बात को आगे मत बढ़ावो [5]निकल पड़ा [6]गाय-भैंस आदि पशु-धन [7]पत्र-वाहक।

इतरै मे नागोर औरै वीकानेर आपस मे कजियो हुवौ—गाव जखाणिया वावत, सो नागोर री फौज भागी। वीकानेर री फतह हुई। केसरीसिंह जोधो काम आयौ। करण भोपतो चापावत काम आयौ। गोयददास, जगरूपसिह, मेडतिया विहारीदास, गोकुलदास, उदावत हरीसिंह, साहिवसिंह, भोपतसिंह, करणोत खेतसी, रायसिंह, अखेराज करमस्योत, सेखो पातावत, जसो वारहट इतरा तौ नांमी, वीजो ही घणौ लोग काम आयौ। साथ वुरी तरह भागियौ। तद चारण दोहा कहै—

सिहमल सिलकिया[1] करमट कूदिया,
कटका हुई ज हालोहाल।
सेखा दुरजनसाल समोभरम[2],
रोपौ पग विडारण[3] माल।

सो आ खवर अमरसिहजी नू गई, सो सुणत सु वा काळौ मरट[4] हुय गयौ। हाथ पटकै, दाता सू हथेळी नू वटका भरै, कटारी सू तकियौ फाड़ नांखियौ। जे म्हांरी घणा दिना री सची[5] जाजम वीकानेर रा खाली कर दीवी। मैं तौ इहां नू जोधपुर रै पगा[6] संचिया था सो हमे जोधपुर री आस[7] तौ चूकी दीसै छै। मुत्सद्दी अमराव हजूर री धीरज वधावै, परचावै, पण अमरसिंह तौ वावळै री सी वात करै। आठ पहर तौ नामारूम[8] थाळी न वैठो। पछै सारा हठ कर नीठ थाळी पर बैठायो। अन्न छूट गयौ। सारा नू कहै—नवाव कन्है जावौ, विदा करावौ, कै हू विना विदा चढ़ जायस्यू। वकील सू ताकीदी करै—जे मोनू हर भात कर बिदा करावौ। लोग कूड़ करै—आज तौ नवाब मिळिया नही, आज मोसर[9] लाभौ नही।

सो दस रात इण तरह नीसरी। मुजरै नू जावै नही। लोग अरज करी—मुजरै नू पधारौ। दिन घणा हुवा सो माडे सू मुजरै नू लेय गया। उण दिन सलावतखान वकसी नही आयौ, दीवाण आयौ थो, उण सू कही—रावजी विदा री अरज करै छै। जणा दीवाण कही—वकसी कू आणे देवौ। उनसे कहके अरज करावेगे। अमरसिंह कही—उवौ तो वकील छै, काहेरो वकसी छै। उणनू सोक[10] चाहिजै सो म्हारै पास नही। तद दीवाण कही—वादसाह का जे वकसी

---

[1]खिसक गये [2]लडका [3]नाश करने को [4]गुस्से से काला
[5]जमाई हुई [6]लिए [7]आशा [8]महरूम [9]अवसर [10]रिश्वत।

है, तुम मोटे सिरदार हो, तुमकू यह न कहणी चाहिज। या वात सलावतखान सुण पाई।

अेक दिन वकसी वादसाह सू अरज करी—जे अमरसिंह वार-वार बिदा की अरज करवाता है सो हजरत की कैसो मरजी हैं? जद वादसाह सलामत फरमाई—हम तो इनकूं आगे एक-दोय बार कही—जे तुम देस जावौ, सो जब तो कबूल ही नही करी, इब क्यू अरज कराता है। तद सलावतखांन अरज करी—जे फिसादी है। वीकानेर रा गाव था सो दावता था। उण दावणे नही दिया ती पर फौज कर उन पर गया। इनकी फौज किस्त खा गई। हजरत की किरपा से वीकानेर वाळे की सही जीत रही। तीसू विदा मागता है, जे उहा पर जाय फिसाद करसी। इनकू विदा होगी उस वक्त वीकानेर का राव बिना ही सीख चढ जावेगा। उनका वकील हमेसा मेरे पास मे आता है सो इस तरह अरज करता है जे अमरसिंह कूं सीख देवौ तौ हमारे तांई[1] ही सीख देवौ। पीछे निवड़ेगी सो आप मालूम होवेगी। सो इस तरह फिसाद है। अब फिसाद की मरजी हो तौ सीख दीजिये, नही तो मना करिये। तौ वादसाह फरमाई—मना कर देवौ। अभी काहे को सीख देणी है।

वादसाह री रुख देख सलावतखान आपरै डेरै आ गयौ। दूजे दिन वकील नू साथ ले'र अमरसिंह रा मुत्सद्दी सलावतखान रै डेरै गया। कही—अरज कर बिदा करावौ। तद नवाव कही—इस तरह कैसे बिदा होगी। वादसाह-सलामत के नौकर हो सो मुनसव जागीर पाते हो। मुख निकली और सीख कीवी सो तौ खाविंद-चाकर का इरादा नही। रावजी की क्या तरह है। तुम सब उनके घर के मुत्सद्दी हो, वुजुर्ग हो, क्या इसी तरह सीख होती है? तद इहा आय अमरसिंहजी सू कही, नवाब कहै छै—सुस्ताय जावौ; मैं वादसाह सलामत री मरजी देख अरज करसू, तुम काहिल[2] मता करौ। तद अमरसिंहजी नाराज हो इहा नूं कावळ-सावळ वचन कहिया। वकसी नू पण कावळ-सावळ वोलिया। कही—का तौ था परभात सीख करावौ छौ, नातर[3] हू वादसाह सू रूवरू अरज करस्यू। विदा तौ होयसी। तद फेर मुत्सद्दिया अरज कीवी—जे आप अरज न करौ, परभात मे नवाव नू दवाय फेर अरज करस्या। राव नू ठडो घात अै

---

[1]लिए [2]तग [3]नहीं तो।



मगळा व्यास गिरधरदास रै डेरै आइया, कही—व्यासजी महाराज, रावजी तौ विदा व्हेई और वकसी सीख देवै नही। अरज करा जद क्यारी-क्या[1] कहै छै सो आप महाराज सू अरज करी जे धीरज धरै। आपरै अरज करणे सू ही धीरज होयसी। तद व्यासजी कही—थे तौ परभात नवाव री तरफ जायज्यौ, हू अवसर पाय अरज करस्यू। सो परभात व्यासजी रावजी नू सेवा करावणे पधारिया। मुत्सद्दी, वकील सारा नवाव रै डेरै नू हालिया। व्यासजी सेवा मे वैठा रावजी नू कही—सारा मुत्सद्दी नवाव रै जावै छै सो आप इतरी काहिल न करै। वकसी री रुख तौ आपनू मालूम छै, अवसर सू सीख होयसी। अवार तौ वकसी सीख रो उत्तर ही दियौ छै। आप वार-वार माणस मेलो छौ सो आछो नही लागै छै। अमरसिहजी इतरी सुण'र कही—व्यासजी, वात आडा दिन जावै छै। व्यासजी कही—दिन कोई नही जावै। साम्हो आपां पाच माणस आपरा करस्या, क्यूं वादसाह कन्हैं मदत लेस्या। तद व्यासजी री अरज सुण मुत्सद्दिया नू पाछा वुलाया, अधवीच सू।

पण अमरसिह रै पेट मे वात मावै नही सो महिना ग्यारह तौ निसरिया[2]। सलावतखान अरज करी—जे राव फीळ[3] चरावणी न देवै और पण लाजमे रा जवाव-सवाल न करै। तौ वादसाह फरमाई—फीळचराई लेवौ। तद गुरज-वरदार मेलियौ सो आण कही सो अमरसिह रा मुत्सद्दिया सुण गुरजवरदार नू सीख दीवी। पाछले पहर अमरसिहजी जागिया जद अरज कीवी—जे टका फीळ-चराई रा मागण नू गुरजवरदार आयौ थो सो सुणता ही आग लग गई। कही—सिवु रै सिर चढी वहै छै। टाळो तौ घणौ ही कीजै छै पण नेट सिर मेलिया रहसी। इतरी कह सवारी री तैयारी कर वादसाह री हजूर पधारिया। रात रो वखत थो, गोळखाने मे जाय मुजरो कियौ। आदमी तेरह साथ छूट था सो पहली डचोढी छोड दूसरी डचोढी वैठा छै। अमरसिहजी भीतर जाय खडा छै। सलावतखान साम्हे खडो छै और पण लोग खडो छै। इतरै मे अमरसिहजी नू देख खान कही—रावजी, फीळचराई रा सरतत करौ। अमरसिहजी कही—फीळचराई री तौ दीससै[4] पण थानू इतरा दिन कहता हुआ जे अरज कर सीख दिरावौ, सो थासू इतरो ही काम निसरियौ नही सो

---

[1]कुछ की कुछ [2]निकले [3]हाथी जाएगी।

म्हे तोनूं जाण रहिया । हमें तोनूं नहीं करस्या । आफे[1] अरज करस्या । इतरी सुण सलावतखां नाक चाढ बोलियौ—रे गंवार, किस तरह बोलता है ? इतरी कहतां पाण तौ अमरसिंहजी ऊभा था तिकी जगां सूं तमक जाय खान सूं भेळा हुई गया । कटारी दीन्ही सो मोटे पेट मे हाथ तंक गरक हो गयी । और कही—पाजी मुंह सूं साभळ बोल ! यूं कहि फेर दूजी दी सो मियों तौ हक होय[2] गयौ । वाद साहजादो दारा सूकर दोनूं ऊठ ऊंचा चढिया । लोक खडा था सो राव री खुसामदी कर डचोढी नूं चलायौ । साहजादे ऊपर सूं कहियौ—हरामखोर जाणे नहीं पावै । तद गौड अरजनदास विठलदास रो खडौ थो सो अरज कीवी—खाली हाथ छै । तद साहजादे ऊपर सूं तरवार झलाई[3] सो लेय गौड़ आय पहुंचौ, कहियौ—रंग छै[4] , राठौड था विना हिन्दुवा री मरजाद[5] सरम कुण राखै । यूं कहि जाय पोहच्यौ सो डचोढी माहे निसरतै नै वाही सो खवे आय वाजी । पड़ता कटारी वाही सो अरजन रा कान रै लागी ।

अमरसिंह गजसिंह के, करी अचळ राठौड ।
कान वाढ वूचो कियौ, गुन्हैगार छै गौड ॥

इतरै वीजी तरवार वाही सो वाढ नाखियौ । उठै सूं झोळी मे घाल, वाहर मांणस था उहारे म्होडा आगै आण नांखियौ । खिडकी जड लीवी । साथ रा माणसा देख कही—ओहो, आज तो म्हारो खावद[6] वारह हजारी हो आयौ सो वाहर लोह लागिया । तद कहणै लागिया—मसाल उरी ल्यावौ, देखा सभाळा । तद सारो लोग ऊपर भेळो होय गयौ—दरवार मे वैठो थो सो । फेर इहा गाठ में आछी तरह सूं वाव वाहर ला माणसा नूं झलायो और तेरह जणा था सो घिर पडिया सो इसो रीठ डचोढी मांही वजायौ सो दीठा ही वण आवै । मिया सखरा-सखरा[7] मुनसवदार तीस जणां था तिका नूं मार तेरह ये ही काम आया । तिण तेरह रा नाम—गोकळदास, इन्दरसिंह चापावत, मोकळसी, मनोहरदास ऊदावत, स्यामसिंह, रामसिंह, कन्हीरामोत मेडतिया, केसरीसिंह, गवरधनोत, देईदास, भगवानदासोत कूपावत, जोधो जगन्नाथ, सादूळसिंह, महेसदास, नेतस्यौत जेतावत । पाच भाटी—हरनाथ जगन्नाथोत, वलू केसोदासोत, अमरसिंह भवरसिंहोत,

---

[1]अपनेआप [2]मर गया [3]पकडाई [4]शावाश है [5]मर्यादा
[6]मालिक [7]अच्छे-अच्छे ।

नथराज, सुन्दरदासोत, रामचन्दर, जसवंतोत, चोहान गोयंददास, जोगीदास, रामसिहोत, अे तेरह जणा खासा माहे काम आया। वादसाह सलामत सुण फरमाई—जे हिन्दू वडी वलाय थे, जिनने इतना जुल्म किया। तद भाट कहै—

साह कू सलाम करि मरियौ है सलावत खा।
नेक न साभरचो वोल कीनो ठौर ठागरो ॥
केतो उमराव मारे गिनती न आवै जाकी।
खेलत सिकार जैसे मृगन मे वागरो ॥
कहै मनीराम गजसिंह जू के अमरसिंह।
राखी रजपूती मजबूती नव नागरो ॥
पाव सेर लोह ते हलाई सारी पतसाही।
होती समसेर[1] तो छिनायलेत आगरो ॥

फेर चारण कही—

(गीत साणोर)

वडी ठौड राठौड अखियात[2] राखण वडी।
जोरवर जोधमा डाढ जमरा[3] ॥
दिलीपत सलावत मारियौ देखतां—
आयां तिण वार रो रूप अमरा[4] ॥
गजण[5]रा केहरी नमो झुंझार गुर।
माण तज जगत सोह हुकम मानै ॥
पाड़ियौ तिको पतसाह री पारवती[6]।
खास सुरतांण दीवाणखाने ॥
हामवे दिली दरियाव हीलोळतौ।
ढूकवे साह अमराव ढाहै ॥
आगरे सहर हड़ताल पड़िया अमर।
मारवा राव दरियाव माहै ॥
हाथ पाठ पहिरे तठे हाथ हुय ही रिया।
लोह वहै छोह असमान[7] लागै ॥

---

[1]तलवार [2]अमर [3]यमकी [4]अमरसिंह [5]नष्ट करने वाला
[6]पास [7]आकाश।

तेज सोळमो जूंझियौ हिन्दू तुरक।
अमर अकवर तणे तखत आगे॥

इण तरह सू कीवी। फेर वजार सू आवतौ चारण सलावतखां री हवेली आगै निसरियौ सो वीवी रोवती सुणी तद गीत कहै—

अमर आगरे अखियात उवारी,
भल विरद जीता भारी।
पच हजारी खान पाड़ियौ,
कमधज[1] राव कटारी॥—१

झूरे मृग-नयणी झूरै,
मेह[2]तणी रुत मोरा[3]।
जोंगण पूठ दिया रायजादी,
घूमर ऊपर घोरा॥—२

दस-दम पास खवासी[4] दामी,
चपवक वदन पहरिया चीर।
सिस[5]वदनी नाम्ने सिसकार,
मींया कहा हमारा मीर॥—३

इन्दु वदन गोखड़ो ऊभी,
ठाया काजळ टीवी।
गळती रात पुकारे गोरी,
वावहिया[6] ज्यूं वीवी॥—४

अमरसिंहजी री लोथ डेरा आई। जे लोग काचो थो, वजार रो थो, सो तौ काढ दियौ अर व्यासजी गिरधरदासजी, वलू गोपालदासीत, भायसिंह चांपावत रे डेरै जाय कही—जे इण तरह कजियो हुवौ। राज रो लोग छै, तिणरी सरम थासू रहै, थाहरी वारी छै। तद अ दोनू उठे आया, कहियौ—मोहल काढौ, रावजी नू झाझरके दाग देवौ। सो कुवर रा सोमासूधो मान पूरे पहुंचाया। अर वलू कही—गौड री खवर करौ, जे डेरै हुवै तौ हाल उण पर जावा। सो गौड तौ डेरै नहीं उठे ही जे रह्यौ। अर जिसे दिन ऊगता रावजी साथ केई

---

[1]राठौड [2]वर्षा [3]मोरो की तरह [4]चाकरी मे [5]शशि
[6]पपीहा।



सती हुई तिणनू दाग दियौ। इतरै वादसाह सू मालूम हुई—जे गौड़ अरजन री हवेली ऊपर राठौड चढिया था सो अरजन हाथ न आयौ। राठौड विगडिया[1] बैठा छै। वलू भायसिह उहा सू पण जाय सामल हुवा छै। कजिये ऊपर बैठा छै। इतरै मे सत्रुसाळ हाडे कनै सोनगरो भोजराज, जगनाथो और राठौड था सो आय भेळा हुवा। मेडतियो एक गौड कने थौ भोजराज सो पण इहा सामळ हुवौ। पातसाह सू मालूम हुई। तद वलू गोपालदासोत भायसिह कन्होत नू कहायौ—जे थे वादसाही चाकर छौ सो थे हरामखोर सू क्यू सामळ हुवा ? तद इहा कहाई—जे हरामखोर हजरत का भी न है, पाजी मुह से हजूर मे गैरजवान वोलै सो कैसे सहै ? यह भी राठौड था और हमारा तो खाविन्द था सो हम कैसे पासा खावें। अव्वल मे पहला इण वधारे[2] तद पीछे हजरत ही वधारे।

तद वादसाह सय्यदखान नू विदा कियौ सो सारी फौज ले तोपखाने लेय हालियौ। इहा नू खवर आई जे फौज विदा हुई। तद व्यास गिरधरदास, मुहता खगारमल, प्रयागदास आपस मे वात कर सारा सरदारा नू कही—जे वादसाह सू जग छै तिण मे जीवण री, जीपण[3] री आस नही। सो आपा तो खाविंद रै पूठे[4] साको करणे ऊपर हुवा। अर नेट पूठला इणरी ही जे चाकरी करसी, रिजक लेयसी तौ विना माणसा कुण चाकरी करसी ? किसी तरह रिजक मिळसी ? आगै ही वळै फेर जतन वावजे, सो लेखो आण बणियौ छै तिणसू बासलो[5] ही जतन बिचारजे अर साको पण करजे। तद सगळा मिळ कही—था नै प्रयागदास नीसरो सो सारो सरतत कर लेयस्यौ। तद व्यासजी कही—मौनू तौ खाविंद इण तरह नही राख्यौ जे नीसरू। ओ तौ थे चार सरदार कजियो हाथ सभाळ खडा रहो छौ तिणसू था सामळ ऊभौ रहस्यू नही तौ पण मोसू इण खाविन्द रो सागो[6] छूटै। तद सारा ही कही—जे व्यासजी ओ खाविन्द सारा ही नू जे इसो प्यारो छै। पैंला रा चाकर था सो ऊभौ रजक[7] छोड-छोड हीज आया। जे खाविन्द निराठ आवरू सू राखिया, पेट काठा घपाया, मारवाड री रूहाड मिट गई, तिणसू इण माहेलो कोई रहै नही। व्यास

---

[1] पूरे गुस्से मे [2] वढाए [3] जीत [4] पीछे [5] पिछला [6] साथ
[7] रिजक।

फेर कही—यू अरज नही करूं छू जे था सागी न रहौ पण कुवर छै, सखरा परचासुध रजपूत छै, तिका नू कुवरजी भोळावण दे काढजे, आपा पाच माणस रहिस्या सो साको करस्यां।

तद सारा वात मानी। सो आदमी तीन हजार था त्यामे जीरो किंही रो वेटो थौ सो काढियौ। माणस पाच सौ रहिया सो केसरिया करिया। तिण वखत व्यास नू फेर सिरदारा दवायौ—जे था रहौ जे मारा रो खातरजमा[1] रहसी। तद व्यासजी कही—म्हारी खातरजमा छै। मोटियार मोसू चढता छै। थांहरी चाकरी अव्वल तरह सू करसे। फेर क्यू कहणँ-दवाणै लाग्या। यू कहि व्यासजी मोड वाघ ऊभा रहिया, तद सारा चुप रहिया। इतरै मे फौज आई हीज।

सैयद हाथी ऊपर चढियौ ललकारा करै छै। इतरै मे व्यासजी कही—हवेली नू तोपखाने सू खिडाय[2] देयसे, पछै लोग जखमी होयसे तौ बेतरह काम आस्या, तिणसू किंवाड[3] नाख[4] नीसरौ। तरवार भेळौ। न तौ आपणै जीव राखणौ, न कोई उपराळौ तिणसू आपा हवेली माही लडा। तद बलू कही—व्यासजी साची कहै छै। आपा इसा नीसरौ सो सागी हाथी जावा। ताहरा सवार मोहेर[5] हुवा, पाळा पूठे किया, त्यानू कही—थे पावरा तोपखाने ऊपर पडज्यौ। सो किंवाड इसाही जे निसरिया जे मिया री फौज चमक खडी रही। चकाचौंधी सी लाग गई। सो सागी हाथी जाय वागिया, होदे री पेटी रा रस्सा वाढ नाखिया अर इसा ही जे फौज मे फिरिया, फौज सारी गह[6] लीवी। पाळा तोपखाना साम्हा गया जे पलीतौ[7] लागै जणां तौ नीचा बैठ जावै, छूटियां पछै आगै वढै सो जाय कर भिळ गया। लोग घणौ मार तोपखानो छुडाय लीन्हौ। सैय्यदखान जहा रो हौदो पडियौ, खान जहा ऊठते रै बरछी दीवी सो खवो[8] फोड नीसरी। तद खानजहा होदे नीचै वड गयौ। सारी फौज रो लोग जखमी हुवौ। फौज रो लोग वखतरिये थो अर रावजी रो साथ तौ साके ऊपर थो तिणसू साग रै केसरिया वागा था सो घडी च्यार लग भलो सो रीठ वागियौ। घणौ लोह उडियौ, राठौड नीठ पड़िया[9]। तिण समय

---

[1]विश्वास [2]विखेर [3]कपाट [4]डाल कर [5]अगाडी [6]रौंद
[7]तोप छोडने की आग [8]कधा [9]मुश्किल से मारे गये।

रो गीत—

विजड[1] ऊठियौ धुए गिर मेर रो वहादर,
इसो अवसाण[2] म्हे कदी पावां।
अम[3] मेला नही जावतौ अेकलो,
आगरा लडण म्हे कदी आवा ॥
अमे राठौड राजा तणा उमरा,
जुडेवा पारकी छडी जागा।
वलू पतसाह सू वोलियौ वरावर,
मारता राव रो वैर मागा ॥
केसरा[4] माहे गरकाव वागा[5] करे,
सेहरा वाव हलकार साथे।
अमर रो वैर चौथे पर उछळयौ,
वलू नै आगरो हुवा वाथे[6] ॥
पटो नवे परो सह मू चटा पडी,
कोमरे कँट सचे कुमायौ।
वाळियौ वैर-वैरा तणे वाहरू[7],
अमर मुहरे हुवे सर ग्ग आयौ ॥

सो आदमी च्यार सौ तुरकडे री फौज रा काम आया। घायल माणस सात सौ उपडिया। मियो आप जखमी हुवौ। रावजी रै साथ रा आदमी अेक सौ वीस काम आया। माणस सौ घायल हुवा। सो पगा-पगा हालता वीजा डेरै गया। मियां पर तौ इसी डाट वुही सो पाछो फिर दीठौ ही नही। मारवाडा ठावा नामी[8] माणस अे काम आया—वलू गोपालदासोत, भायसिंह, कान्होत चापावत, व्यास गिरधरदास, हरनाथसिंह, भवानीदास, गोपीनाथ चापावत, मुकुन्दसिंह चन्दरसेनोत, अमरसिंह, नरहरिदास, रणछोडदास, रामदास, मेडतिया भाखरसी, भोजराज, नथराज भानसिंहोत सोनगरो, भाटी मुकुन्ददास, हरदास, उदयसिंह, जसवन्त, तिलोकसिंह, चौहाण हरदास, बीजो ही हरदास, उदयसिंह, विजयसिंह, सूजियो, वीरम, जसराज, मुहतो खगरमल्ल, प्रयागदास, अजीजखा, नायक इब्राहीम

[1]वहादुर [2]अवसर [3]अमरसिंह [4]केसरिया रंग [5]पोशाक के कपड़े
[6]लपटे-वस्त्र [7]वैर का पीछा करने वाला [8]प्रसिद्ध।

पंजाबी अगरवाळो, रामदास इतरा तौ नांमी था। वलू रै साथ रा अर रावजी रै और ही घणा लोग कामं आया। बीजा लोग सो मारवाड नै घणी ही ऊजळी कीवी। सारा ही हिन्दुवां राजा घणी स्यावास दाद दीवी। और ही सिपाही नवावां रा सारा सुपारिस-सिपत कीवी। सारो हथियारवंध सिपाही हथियार-वधतो अमरसिंह रो नाम लेय वाधण लागो। वादसाह हिन्दुवां री तारीफ कीवी। तथा पाछो वादसाह हिन्दुवां नू चाकर राखण री चुप कीवी। वलू मार्यसिंह वडी अखियात कीवी। पछै चारण वलू नै कहै—

सिर वाधे मौड करे केसरिया[1],
चापा इस चन रीत चलु।
अेकण लगन रोद वड अपछर,
विहु ठौडा परणीज वलु॥—१

गोळी नाळ गुणीजन गावै,
लस्कर अमर जाणिया लार।
माडण हरो दियतौ मिळियौ,
साम्हें ले वीडा घण सार[2]॥—२

पल तणौ तोरण आखीजे,
वड वेहडा[3] घट टोप विचाळ[4]।
आखा तीर आरती अममर,
वामे अग घाले वरमाळ[5]॥—३

ब्रह्मा नारद करै वेदोगत[6],
चवरी होम कटक चढियौ।
फिरियौ नहीं चवर खत फाटे,
फेरा कमध इसा फिरियौ॥—४

भाळा साळ पोढियौ भाजे,
काळौ[7] राती सेज करूर।
माथे त्याग करे राव मारू,
सूर[8] तणै रथ वैठौ सूर॥—५

---

[1]केसरिया वाना पहन कर [2]लोह, तलवार [3]फौज [4]वीच मे
[5]वरमाला [6]वेदोच्चारण [7]वीर [8]सूर्य।

ठपो खुर मनपै रही, चपो नावे चीत।
मत कद ही चपो करे, राठौडा री रीत॥

साहजहा पतसाह रै, चपो महल न जाय।
मति वलुवो गोपाळ रो, ऊठे छावा माय॥

सो वलु इसा-इसा काम किया सो सारे मसहूर हुवौ। पछै राव रासे नू वादसाह री हजूर ले गया। नागोर चाकरी करी जे मोटियारा रिझाय लियौ। वडो खवरदार हुवौ। राव रासे भलो राज कियौ।

राठौड़ अमरसिंह गजसिंहोत री बात समाप्त।

महाराजा श्री पद्मसिंह री बात

महाराजा श्री करणसिंहजी बीकानेर रो वडो राज कियौ। वडा अडपायत, आटीला[1] राजा हुवा। श्री लक्ष्मीनारायणजी रा वडा ही भक्त हुवा। परभात रा तुरक रो मुहडो नही देखता। दरबार री सईयत[2] तुरक था तिणरी डाढी सुवरावता, काना मे मोती घालता। बादसाह चाकरी बदळे अहदी[3] मेलिया सो भली तरह जापतो करावता, खावण नै मोकळो देता, पाणी खारो पावता। कहिता—म्हारे मुलक मे इसो हीज पाणी छै। घोडा नू घास भुरट रो नखावता[4]। सो सारा डेरा मे भुरट रा काटा खिडता[5] तिणसू गुरजबरदार[6] दोरा होवता। सळी लागती सो पाकती तिणसू दुखी होय तुरक विदा होवता। देस रा लोगा नू फरमाय राखियौ थो जे अहदी आवे तिणनू खारा पाणी अौर भुरट वाळे मारग ल्यावणी। पाछा लौटती वखता दरबार सू ओठी देता जिका नू आही जे फुरमावता—जे इण मारग काढज्यौ तिणसू बादसाही माही करणसिंह भुरटियौ ही जे कहीजियौ।

महाराजा श्री करणसिंहजी रै च्यार कुवर हुवा। वडा कुवर महाराजा अनूपसिंहजी रामपुरा रै चन्द्रावत रुखमादजी रा दोहिता। दूजा कुवर केसरीसिंहजी

---

[1]बांका [2]मुसलमानो मे पूज्य वश का [3]तलब का हुक्म लेकर जाने वाले व्यक्ति जो खाने-पीने के लिए तग करते थे [4]डलवाते [5]बिखरते [6]गदाधारी व्यक्ति जो सूचना देने का काम करते थे।

खण्डेला रै राजा द्वारकादासजी रा दोहिता। तीजा कुवर पदमसिहजी बूंदी रा हाडा रा दोहिता। चौथा कुवर मोहनसिहजी, श्रीनगर रा पंवार वखतसिहजी रा भाणेज सलसलोत रा दोहिता। पाचवा खवासवाळ वनमाली-दास हुवौ सो पण वड़ी बलाय[1] हुवा। बादसाह औरगजेब सनाखत हुवौ। महाराजा अनूपसिहजी बीकानेर रा राजा हुवा, वड़ा परतापी बुद्धिमान था। वारी बाधी मरजाद, सरतत देख-देख दूसरा राजावा राज बाधियौ। इसा बुद्धिमान हुवा सो औरगजेब सरीखा बादसाह कन्है आपरी सावत राजस लिया रहिया। साढा तीन हजार री मुनसब तौ सासतीक[2], पाच सौ कच्छी[3] सो इतरा परगना सासतीक रहिता—सरसो, भटनेर, वाहणीवाल पुनिय सिवराण, तोसाम, फतियाबाद, अहिखो, रतियो अे सारा गाव ठाकुर लोगा नू पट्टै मे दिया था। करणपुरो, नीरगाबाद कनला[4] परगना तीन दूजा दिखण[5] मे था। सो वडा परतापीक राजा हुवा। वुद्धि रै प्रमाण सू वडा राह-वेघी[6] राजा हुवा। तीरो गीत यू कहियौ छै—

करे परताण सुरताण असुराण सोह करेवा,
तेग साम्हें न कोउ और तोलै।
माण तजि राण खुमाण गयौ पहाड़े,
आज हिन्दुवाण बीकाण[7] आले[8] ॥—१

पेख[9] उतराध दिखणाध पूरब पछम,
धुज मन सरम सारी धरा की।
सबळ दोय राह री साह री माने संक,
ताहरी करन उत ओट ताकी ॥—२

कूरमा यादवा अहडा कमधजा,
चलावे चिहु जुग विचै चावी।
मान हिन्दू धरम तिण सारी मिळै,
अने राच कन्हे चाल आवी ॥—३

---

[1]खूखार [2]हमेशा [3]कच्छदेशीय [4]पास के [5]दक्षिण [6]वडा वीर [7]राव बीकाजी [8]वाले [9]देख कर।

हुवो घटते कलू अवट वीकाहरो[1],
भलो सो भाग समार भाखै।
राज हिन्दुवाण चौ[2] सरम जिम रहावी,
राज री लाज रघुनाथ राखै ॥—४

सो महाराजा अनूपसिंहजी इसा हुवा—

सूवे दखिण सोहियो, अनो[3] कमध अणभग[4]।
सूरहरो[5] आखाड सिघ,[6] जीपण रण घण जग ॥

जुडै वीजूजळां, मछर परवाडा मल,
लीदा भडै सवळा, भ्रतकेसा वळ।
तिण पर सबकी रीभ, भून किरण सुरज ताणी,
वळ के बादळ वीज, इसो पाणी आणी ॥

दूहा

अलड अलगे ओदकै, भारथ खग भिडवाव।
तौ ऊभां करनेस तण[7], पण न लागे दाव ॥

दाव लगा ले खग खडा, भागा बार[8] हजार।
सेन सोह सिवराज रो, जैते जेम निभार ॥

वडो अदवक, महा युद्ध जीपियो[9]।
दूजो रायासिंह, परवाड़ा दीपियो ॥

दूहा

हम कहिया जे तुम करो, खीजे खान दलेल।
त्या मे कमधज[10] बोलिया, देख राव जड खेम ॥

दिस रणखेत भजेय, रहै सत पायका,
रिस[11] कर सीसं करेय, कहै मन दायका।
मूठ कर खग्ग मेल, मूछा वळ घालिया,
दारुण रूप दुभेल, हवेनी हालिया ॥

---

[1]राव वीकाजी का वंशज [2]की [3]अनूपसिंह [4]अजयी [5]सूरसिंहजी का वंशज [6]युद्धप्रवीण [7]करनसिंह का पुत्र [8]बारह [9]जीता [10]राठौड [11]गुस्सा।



दूहा

डेरां आया दळ सबळ, रच पाखर गज रूप।
मुरड़े खान दलेल सू, उरड़े चढै अनूप ॥

दळवळा जुड़ता[1], नगारा वाजिया,
जाण कई परभात, गहरी नुर गाजिया।
देखत रहै नवाब, जवाब न दीखिया,
राजा आरभ राम, रहै क्यू राखिया ॥

दूहा

वान वधारे बीकपुर, मारे खान गुमान।
राजा भले पधारियौ, राठौडा री जान ॥

वडे वडे नरनाह, से न घण सभळी,
आनद हुवौ उछाह, कगूडी उछळी।
वीरत कीरत[2] वात, पिरथि मिर वापरी,
आयौ ओरगवाद, फतह कर आपरी ॥

सो नवाव बादसाह सू कूक लिखी। इहारा वकील पण गया सो मालूम करी। तद जबाव-सवाल सुण वादसाह नवाव सू रीस फरमाई और महाराज नूं दीवाण जुल्फकार खा रै तैनात किया। सो जुल्फकारखां वडे मुरतव सू मुलाहिजे रै साथ महाराज नूं कन्है राखिया। सलाह पूछतौ जिण माफक काम करतौ। सो महाराज तौ इसा हुवा।

बाकी तीनू ही भाई मुनसवदार हुवा। कोई किही भाई रो चाकर आसकारियौ[3] नही हुवौ। आप नामी हुवा, दातार, जूझार[4], नमकहलाल हुवा। सोळहो गायो थो सो साचो कियौ।

कुवर वखाणू (राजा) करण रा, दातारे दातार।
धीर वीर वळ वाकुरा, जूझारे जूझार ॥

जोया कुवर जोधाण रा, दीया पूर अवेर।
सारी बादसाही विषे, वड हथ बीकानेर ॥

---

[1]भिडते समय [2]कीर्ति [3]आशा रखने वाला [4]जूझने वाला।

दिन ऊगे मोजा दिये, करहा जे कैकाण ।
अनो विजाई रायसिंह, वाचै कवि वाखाण ॥

रतन कुंवर सिर राणिया, अनो कान औतार[1] ।
जोड़ी अविचल करोड जुग, कर कायम करतार ॥

फेर केसरीसिंहजी वादसाह रै साहजादा ही वाजिया । अढाई हजार रो पक्को मुनसव । सो वादसाह साहजां नू दारा सूकर कैद कर आप तखत वैठी । तद जयसिंहजी नू कागदा सूं औरंगजेव दक्षिण दौलतावाद रै सूबे सू उठाव कियौ । मुरादसाह गुजरात रै सूबे थो तिण नू औरंगजेव बुलायौ । ये सताब आवो, वादसाही थांरी दारे सू दूर करस्या । इण हजरत सू बेअदवी कीवी । तेरे पगां आया दिल्ली जायस्या । हू तौ फकीर छू सो तोनू तखत पर वैठाण मक्के जायस्यूं । तद मुरादसाह सूस कोल कर दिल्ली आया, कुरान उठायौ, आण मामळ हुवा । तिण वखत मे केसरीसिंहजी औरंगजेव रै तावीन रह्या । डचोढी ढोलियो थितियौ[2] रह्यां । रातरा सरदारी चौकी फिरता । हमेस मुजरो कर डेरै जावता । सिमा स्याम आवता जद मुजरो करता खड़ा रहता । वादसाह मेहरवानी कर वतळावता । केसरिया कुवर कहिता ।

उजोण में जसवन्तसिंहजी वाईसी[3] ले देहली सू साम्हा आया । औरंगजेव सू लडिया सो मजकूर रतनसिंह महेसदासोत री वचनिका[4] मे छै । तिण वखत केसरीसिंहजी घणा आछा हुवा । घोडा फेर दोय तीन भेळिया, वादसाह नजरा दीठा । पछै वादसाह जसोल नू मेल्ह पगे पकडाई । आपरै मुख सू स्यावासी आफरीवाद[5] फरमाय असवारी रा हाथी रै आगे खड़ा किया । जद सू सदा हाथी रै आगे वहिता । फेर धोलपुर मे हाडे सत्रुसाल रै आगे वाईसी दे दिल्ली सू मेलिया । कजियो धौलपुर हुवौ, तिण मे केसरीसिंहजी रै हाथ सू दोय उमराव काम आया सो औरंगजेव दीठी । घणी दाद फरमाई । आप हाथ सू कमर री तरवार उण वखत दीवी । फतह कर डेरां पधारिया जिण वखत मे लाय डील दीठौ । डील रै जामा[6] री कसा आपरै हाथूहाथ सभाळी । फेर दिल्ली दाखिल

---

[1]अवतार [2]निरतर [3]फौज [4]'जगो खिडियो' द्वारा रचित ग्रथ, डॉ० एल० पी० टैसीटरी द्वारा सम्पादित (Asiatic Society of Bengal) [5]धन्यवाद [6]पोशाक विशेष ।

होय, मुरादसाह नू पकड़, तखत बैठाण, पछै पवेह करायौ। कुरान रो सूस उतारियौ। इतरै में जसवन्तसिहजी रो उठाणियौ शाह सूजो पूरब में ऊठियौ। बादसाह रो कूच सूजे साम्हो हुवो। वडी फौज। सगळा राजा लार। सो पूरब में। खजवे गाव राड़ माडी। सूजे रो वजीर हजार बारह घोड़ां सू बाग उठाई सो जसवन्तसिहजी कहायौ—थे बाग उठाय आवौ। फौज में भगी हू घाल देयस्यू, सो उवो आडयौ। ज्यूं जसवन्तसिहजी भागिया सो जसवन्तसिहजी कन्है आपरी चाळीस हजार फौज थी सो सारी भागी। हुरमां[1] हाथियां चढी पछाडी नू खडी थी सो लूट लीवी अर चलता रहिया। चाळीस हजार भाजै जणां दूजा कुण पग माडै सो सगळा ही भाग गया। सिरफ हजार तीने'क खडा रहिया। खोजो बादसाह रै हाथी ऊपर पूठै बैठौ थो सो अरज मालूम कीवी—हजरत फौज कैसी किस्त खाई? बादसाह री नजर कुरान मे थी सो उवौ देखै तो फौज सारी चलती रही। तद बादसाह मुठागारा[2] तीर काढ हौदे में ढिगली किया। हाथी रै पग बेडी घलाई। आप गोडी मार कमाण पकड़ी। इतरा मे नवाब औरगजेब-औरगजेब कहितौ आयौ। सो केसरीसिहजी नवाब रै साम्हो बाग उठाई। बादसाह देखै छै। इतरा मे नवाब बाही, सो केसरीसिहजी रै सागे राजपूत थौ सो टाळ दीवी। फेर केसरीसिहजी दीवी सो दो बटका हुवा। घोडो खाच लियौ। इतरै सूजे री फौज भागी। बादसाह रै सादियाना बाज्या। सूजो तौ उण दिन रो भागियौ फेर जाहिर नही हुवौ। तद चारण कहो—

केहरिया करनेसका[3], सूजो भागो सार।
देहली सपने देखसी, गयौ समुद्रा पार॥

पिंड सूजो पाधोरियौ, औरग लियौ उबार।
पतसाही राखी पगे[4], केहर राजकुमार॥

सो इण दोहे री किही बादसाह नू चुगली कीवी—जे केसरीसिह कुवर चारण पास किस तरह कहावता है? तद बादसाह चारण नू बुलाय फुरमायी—तैनें केसरिये कुवर-कू किस तरह कहा? तद चार वारे'क तो नटियौ पण बादसाह फेर गाढ कर पूछी जद चारण वाण चाढ दूहो कहियौ सो बादसाह सुण घणा माणसा रै सुणता फरमाई—जे उस रोज तो केसरिया ऐसा हीज हुवा।

[1] बेगमें [2] विशेष तरह के तीर [3] करनसिंह का पुत्र [4] कायम रखी।

तौ सगळा देखता ही जे रहि गया। चुगलखोरा रो मुह फीको पड गयौ। फेर ग्रेक दिन वकसी रै नायव वादसाह सू मालूम कीवी[1]—जे केसरिया कुवर गैर-हाजर। तौ वादमाह सुण फरमाई—केसरिया हाजर था। उस रोज तुम न थे। तद नायव फीकौ मूह कर खडो रहियौ। ग्रेक दिन ग्यारस रै दिन केसरीसिहजी वादसाह री हजूर मुजरै ग्रावता था। वीच मे ढेड-कसाई था सो किसव करै था। केसरीसिहजी मना किया। वा मानी नही। तद कही—ग्राज थाहरै खरच हौवै सो मेरै कन्है सू लेवौ। ग्रो काम थे मत करौ। तौ ही नही मानी। तद कही—म्हानू ग्रागै जावरण देवौ, पछै थाहरी दाय पडै[2] ज्यू करज्यौ। ग्रौर गाय था पकडी छै सो उरी देवौ, रिपिया वीस थानू देस्या। पण कसाई री नीच जात, फेर ग्रौरगजेवी वादसाही सो ग्राधा हुवा वहै। सो मुह सू गैर लवज[3] वोलिया ग्रौर गायनू पछाडी। तद केसरीसिहजी लोगां नू ललकारिया सो ग्रादमी वत्तीस तौ जीव सू मारिया, वाकी घायल हुवा, इहा नू मार केसरीसिहजी हजूर गया। उण दिन कमर वाहर खोल फेर भीतर गया। वादसाह ग्राम खास वैठा छै। लोग सारो खडो छै। इतरा मे कसाई मुरदा माचा मे घाल चिराका कर ग्राय कूकिया सो वादसाह देख सुण घणौ ही जे काळौ-पीळौ हुवौ। ग्रागै जद पूछी—कुण जुलम कियौ? तौ मालूम हुई, केसरियो कुवर। सो नांम सुणता ही वादसाह रो चेहरो सफेद होय गयौ। साम्हे देख पूछो—क्यो, केसरिया कुवर किस तरह? तद केसरीसिहजी सारी वारदात जाहिर करी। तौ वादसाह सलामत रीस कर कोटवाळ नू हुकम फुरमायौ—जे इन सव कसाइयो को यहा से हटा कर पुरानी दिल्ली मे जाय वसावौ। मुरदा नू दफनाग्रौ। सीधो हुकम होना सातर कसाया नू हटाय पुराणी दिल्ली मे बसाया। केसरीसिह वादसाह रै इतरा लाडला था सो खून माफ कियौ। सूजा रो काम पेस चढियौ[4] जद सू तीन गुन्हा हमेस रा माफी मे था।

फेर महाराजा जसवन्तसिहजी रै साधू कुभो मालावत चारण ग्रायौ सो घणा दिन रहियौ। महाराज घोडो, कडा, मोती-सिरोपाव देय रहिया तद विरावते सू गयौ। महाराज जाणियौ[5]—हाथी रो देवाळ करणसिहजी रा कुवरा विना कोई नही। तौ ग्रादमी मेलह वरजाया[6]। कुभो म्हासू विरावते

---

[1]की [2]मन मे ग्राए [3]लव्ज [4]पार उतरा [5]जाना [6]मना किया।

आयौ छै, सो हमार तौ थे ही क्यू मतां दीज्यौ—पदमसिंहजी मोहनसिंहजी जो डेरै था सो उहा सू तौ माणस मिळ कही। तद इहा कही—महाराज मोटा छै। चारण भाट सू कैसी रीस वाद आपा रै ही लागै जे सिरजिया[1]। भली वात, महराज फुरमाई त्यूही जे करस्या। और केसरीसिंहजी वादसाह री हजूर था सो माणस डेरै कहि गयौ सो माणस उठै डेरा पाछले पहर गयौ तद कही·— जसवन्तसिंहजी इण तरह कहायौ छै, सो सुण आप हसिया। वादसाह ऊही दिन रूपहरी होदे सू हाथी केसरीसिंहजी नू दियौ थो तिण पर सवार हुवा डेरै नू आवता था। इतरै कुभो घोडे चढियौ वजार मे साम्हो मिळियौ, सुभराज कर कही—

केहर राजा करण के, निरधन किया निहाल।
सै सोवन्ता सायरा[2], थे पोढौ सुखपाळ ॥

केहरिया करनेसका, तौ हथा बळ जाव।
जिन्हा खेत न सपजै[3], तिन्हा दीन्हा गाव ॥

केहर भोळे चक्कवे, का वावळ खुदाय।
जो लका हाजर हुवै, (तौ) पल मे देय लुटाय ॥

सो केसरीसिंहजी हाथी सू उतर, कुभे सू वात कर, हाथ झाल, हाथी ऊपर चढाय, आप डरै पधारिया। दूजै दिन जसवन्तसिंहजी सुणी तद कहायौ—थानू म्हा मने कराया था सो हमार भलो दियौ। तौ केसरीसिंहजी कही—जे म्हानू तो गम नही, कहौ तौ इव मगाय लेऊ। तद कहियौ—मंगायौ सो जाणियौ। तिण पर कुभो कहै—

उरा करा कस सरा छत धरा ईतरा,
मनगरा इठरा माण मुका।
गज वकस केहरी दिया है,
देखी गोमरा सिधरा सघर, रैण मुका ॥

पेखि मदझर[4] गुमर भयकर पहर हर,
घर रज लगण असमाण घर रै।
ठग ठगी लगी डरि धग-धगी ठीठरा,
ठहक ठठ ठोकरा नगा ठरै ॥

---

[1]रचे गये [2]बिछौना [3]मिले [4]हाथी।

करां हद दुरद[1] दीवा जुतें करन रा,
सोख मद रद दुवा फरद सारा।
तिलक कमधा तणा, अड समर ताहरा,
लगरा घीसिया वहे[2] लारा[3] ॥

अपम कमाल तजै इद-चढ आजसे,
ललच ओढै सकर तुचा[4] लावी।
पृथ्वी का नरा की सुरा कहिवो परा,
वगते सिन्धुरा धजा वांधी ॥

सो केसरीसिहजी पण इसा दातार मानगरा हुवा। वडा-वडा पखाडा[5] दखिण मे किया। वादसाह सू अेकरस[6] रहिया। अेक वार वादसाह वीकानेर री फरमाई, तद केसरीसिहजी अरज कीवी—वीकानेर म्हांरै ही जे घर मे छै। ठौड लायक अनूपसिहजी ही छै। हू तौ हजरत रै ही जे कदमा रहस्यू। सो रोकड पण जाफे मुनसव सू पावता। इसी महरवानी वादसाह सलामत री थी। जे जागीर थी सो तौ थी ही पण रीझ-मौज अलग पावता।

मोहनसिहजी डेढहजारी मुनसवदार था। हजार अेक री और अरज होय रही थी। चाकरी मे चुस्त रहता। वादस्याह सलामत री वडी मेहरवानगी थी और साहजादे रै तावे[7] था। और पदमसिहजी अढाई हजार पक्की रा मुनसवदार था सो साहजादे रै तावे मे ही रहै छै। अेक दिन मोहनसिहजी रै हिरण थो सो छूटौ, तीनू कोटवाळ पकड लियौ। तद मोहनसिहजी माणस[8] मेल कहायौ—जे हिरण म्हारो थारै आयौ छै सो दिरावौ। कोटवाळ नट गयौ। तद इण चोकस कर फेर कहायो। कोटवाळ क्यू'क वाद कर फेर नट गयौ सो समाचार सुण मोहनसिहजी गुस्से में होय गया। दूजे दिन साहजादे रै मुजरै पधारिया। दरवारी कचैरी मांहे जाय खडा। इतरै मे पदमसिहजी पण पधारिया, सोही जाय कचैरी खडा रहिया। साहजादो भीतर थो, दरवार रो लोग सारो कचैरी में खडौ छौ। तखत विछ रहियौ छौ। तद पदमसिहजी वाहर डचोढी आय वैठिया। हवालदार कन्है हुक्को मगायौ सो वैठिया आरोगै छै। हाथ मे मोटे-मोटे मिणियां री सुमिरणी[9] थी सो काढ पाग मे घाली। इतरै मे कोटवाळ आय

---

[1]हाथी [2]चलते हैं [3]पीछे [4]त्वचा [5]महत्त्वपूर्ण युद्ध [6]मिलकर [7]तावेदारी मे [8]आदमी [9]माला।

भीतर नू वडियो। तद पदमसिहजी होळै सी साहजादे रै दरबारी नू कही—जे मोहनसिहजी रो हिरण इण पकड़ियो। तो वदळै दोय-तीन वार माणस मेल हिरण माग्यो सो दियो नही और खोटा-मोटा जुवाब पण कहिया। मोहनसिंह पण वाळक छै। उवै भीतर नू छै और कोटवाळ पण भीतर नू गयो, सो था भीतर जाय मोहनसिंह नू या कोटवाळ नू लेय आवो। दोनू भेळा[1] रहिया आछा नही। तद दरवारी भीतर नू ऊठियो। तीनू किंही दूजै अरज रै पगा खडो राखियो सो उणसू वात करणै लागियो। पदमसिहजी फेर कही—जे था भीतर नू जावो। उणनू घड़ी अेक वतळावता लागी और मोहनसिहजी अमलां-चाक[2] था सो कोटवाळ नू देखता ही बोलिया ही—सेखजी, म्हारो हिरण थारै आयो छै सो दिरावो। कोटवाळ कही—हमारे तो नही आया। तो मोहनसिहजी कही—नटो मता, म्हारो आदमी देख आयो छै। हिरण-खाने रै पूठले[3] छपरे मे अेकलो वधियो खडो छै। तो कोटवाळ कही—झूठा है, झख मारता है। मोहनसिहजी इसो जवाव सुण लाल होय कही—झूठ दोनै सो झक मारै। हिरण तो मैं छोडणे का नही। तद कोटवाळ फेर रगफोड[4] नै कही—किसका मुह है सो मुझसे लेगा, तुझसे छोकरे वहोत देखे है। इतरै मे मोहनसिहजी मूंछ पर हाथ देय आगै नू साम्हा होय तरवार वाहण नू ऊंची कीवी। इतरै मे कोटवाळ वाही सो साम्हें मुह ऊपर झलकी लागी। मोहनसिहजी वाही सो कोटवाळ तरवार आडी दीवी सो तरवार वाढी टाळ दी। इतरै कोटवाळ रै साळै वासिया वाही सो मगर सारा खुल गया तीसू ढह पड़िया। माहीं नू वहदो हुवो त्यूंही दरवारी दौड पडियो और पदमसिहजी पूठे लागिया। भीतर वडिया सो कोटवाळ रो भतीजो साम्हो ही जे आयो। पदमसिहजी कचहरी रै पावडसाला चढ त्यांनू इण जाजम ऊपर मखो थो वाही सो गोडे री ढकणी रै हाड ऊपर लागी तीसू गोडो टिक गयो, दात लीला हो गया, ऊठिया, चढण लागिया। इतरै वागो थो नीचो सो पगा आडो आय गयो। इतरा मे उण तरवार वाही सो माथै ऊपर पड़ी। पाघ रा पेच वढ सुमरणी जे वाढी। इतरै मे आप ओझाड वाही सो उणारा दोय वटका हुवा और आप वागे री दावण खीच फाड नाखी। कोटवाळ खिसणै लागो तद कही—सोधु पग मारा, हमे

---

[1]शामिल [2]अमल के नशे मे [3]पिछले [4]गुस्से मे आकर।

जायसे। कोटवाळ तखत रै बरोबर जावतै रै दीवी सो दो वटका हुवा। आप पाछो आवतौ मोहनसिंहजी कही—भाभाजी, हथ मारो जावै, सो पहोच साळै रै दीवी सो दोय वटका[1] हुवा अर तरवार माही नीसर थाभै मे लागी सो पत्थर रो टुकडौ दूर जाय पडियौ, तद चारण कही—

मोहन संभळ मारियौ, दौड न ग्यो दरियाह।
पोहचे इम कहियो पदम, सीवृ खग सवाह॥

सो पदमसिंहजी मोहनसिंह ऊपर आय खडा रडिया, देख'र कहणे लागिया—इतरो माटीपण[2] बळ राखतौ सो कासू हुवौ। इसै चोदू लोह सू ढह पडियौ, आपौ नाख दियौ, ऊठ खडौ रहि। मोहनसिंहजी कही—म्हारो काम तौ निमड[3] गयौ। आप वैर सब सेखो लियौ, हमे पधारौ, वैरियां पूळो मता देवौ। पदमसिंहजी कही—तोनू छोड कठे जावां? यू कहि हाथ झाल उठायौ सो ऊठै नही। तद नीचा होय बाथ घाली, एक हाथ सू, सो हाथ घाव माहे उतर गयौ। तद जाणी जे घाव जबरौ, नही तौ मोहनसिंह इसा लोहा नू कासू खातिर मे आणै। तद मोहनसिंह नू छोड कई'क तखत री पूठ कान्ही खडा था त्या साम्ही रोडक कीन्ही[4]। सो उवे भाग केई भीतरली खिडकी मे बड आम ताक दिया। केई पूठ दीवाळ थी सो चढ कूद गया। तद चारण कही—

नाहर पदम निडार नर, गय औरग चे भीच।
लज साकळ तोडे रवद, पडे हवंदा वीच॥

पछै आप आय मोहनसिंहजी नू सभाळ कडिया चाढ लिया, ड्योढी रै बाहिर लेय आया। सो लोग सारे इसी नजर दीठा सो सारा पासो खाय गया। आपरा माणस था त्यानू सापिया[5]। सो गोयद मुलाणी-जाट साहरण मोहनसिंहजी रो हजूरी थो, उण दौड झट सभाळ लिया। पालखी साथे थी तिण मे जाय पोढाया। आदमी बीसे'क तरवारा काढ ली अर पालखी रै चौगिरद लाग गया। पदमसिंहजी सगळा रै पूठे लाग गया। सो डेरा नू ले बाहिर हुवा। इतरै मे गौड़ अरजन रो वेटो असवारी किया साम्हो आयौ। आय पदमसिंहजी सू मुजरो कियौ अर कही—हू तौ रावरो रजपूत छू, हुकम हुवै तौ साथै वदगी माहे होऊ। तौ पदमसिंहजी फरमायौ—था सदा से हाडी-चटा छौ,

---

[1]टुकड़े [2]मर्दानगी, हिम्मत [3]निपट [4]लपके [5]सुपुर्द किया।

पाछली कानी हाडी चाटी छै। तद गौड कही—हांडी घर रै धणी किही चटाई छै, हमे किही रा होय हांडी चाटा। आप खातिर खुमाळी सूं पधारौ, काम-कजिये याद करस्यौ तौ चाकरी मे हाजिर छा। सो गौड इसो रग दीठौ तींस् पासो खा पूठौ परो गयौ। तिण वेळां री नीसाणी[1] चारण गोरवन लक्ष्मीदासोत यू कही—

इळ साका अवरग, तखत इम हुवा उचारे,
दिसा चहु रह थह दिली, सुणिया पहसारे।
हिरण हिरण होत, वहु वां पर नैक विचारे,
मेल्ह वकील मगाविया, कोटवाळ- नकारे।
पाजी सम सर दाखवे[2], अत पुग तारे,
मोहन गुस्से दीखिया, मनै परचाया प्यारे।
भावी टळै न टाळिया, सदा यही आचारे,
मुदे दरग हरखिया[3], लिखिया सचियारे।
तद न हुवे करनेस का, मुजरे नू पवारे,
वस- छतीसे खानजी, मीर रहत अहंकारे।
आव दुनी साहिब इसा, मजलसा थारे,
बेठा चजरा जागिया, हुय निजरा च्यारे।
तामे खटके मामले, सू सला संभारे,
कुवदी क्या जाणे किया, मिया मन हारे।
वे बुनियाद कुवोल, कहि वकवाद वधारे[4],
तामे कणेठी कडकिया, वळ जेठी वारे।
कहि कुण जाणे वार वार, वहि वारोवारे,
मुख साम्हे वामे मोहन, छुर लोह छकारे।
पेख इसो अवसर, पदमसिह वर साधारे,
इसा सवेगा[5] ऊठिया, मनु असमान उभारे।
मेर[6] सतो अडोल, मन कहि वचन अकारे,
सा वहि वाहि सवाही, साह अवसाण विचारे

[1]छन्द विशेष [2]कहते [3]हर्षित हुए [4]वढाते हैं [5]शीघ्रता से [6]सुमेर पर्वत।

अेक हया ओभण हणे, खग वीज विहारे,
कीवा तन तरवर, विसुव धर सुत उतारे।
मुख वाणां पडिया मुगल, गल्ह इसी उवारे,
वपनीज पूठै पूठवी, अर पड लोह अपारे।
वागा कट तन वंचिया, अन[1] देख दिखारे।
राजा पण साजा रहै, हरि हैं राखण हारे।
अरि पाडे वळिया, इमा चहुं दिसा विहारे,
तव सब भागे आप, आप नह ताप सवारे।
गोमल खाने के गया, दुहता के दीवारे,
दडवड दरवाजा किता, हडवड हाकारे।
किता कटहडा[2] कूदिया, चढ चढ चमकारे,
खडा थड़ा पडिया किता, ख आखे अपणारे।
हुवो घम गोघम[3] इसो, गया जम भी हारे,
पावा तळ दिया पिसण[4], कुण मके वकारे।
छर छाणा सब वाळिया, आम खास मंभारे,
सूरत रता पदम, साह राह उणियारे।
रूप किया नरसिंह का, हिरणाकुस मारे॥

सो इण तरह सू कजियो कर डेरा नू पधारिया। मोहनसिंहजी तो डेरा आवतां-आवता परलोक सिधारिया सो दाग दिराय, लोग नू दिलासा कर, आप पुरे नू चढिया। वादसाह नू सारा समाचार मालम हुवा। वादसाह सुण उणरै बेटा सू तागीर कीवी। साहजादे नू वादसाह आप लिखो—अहडी गफलत रखते हो, किस तरह वादसाही कुमावोगे? यह राठौड हैं, जवरदस्त नौकर हैं, इनका मुलाहिजा हमेसा रखणा। पदमसिंहजी रै वकील नू वुलाय'र दिलासा फरमाई। कही—कोटवाळ भी मारा गया, मोहनसिंहजी भी मारा गया। मोहनसिंहजी के कोई लडका होय तो हजूर लावौ, उनका मुनसव वाल रखें। वकील अरज कीवी—लडका कोई नही, लुगाई कू आसा[5] है। तद पचसदी मुनसव राखियौ, जागीर वताय दीवो। पछै मोहनसिंहजी रै वेटी अेक हुई सो

---

[1]दूसरे, अन्य [2]कटघरा [3]झगडा, युद्ध [4]दुश्मन [5]गर्भ।

हाडा किसोरसिहजी कोटे रै धणी नूं श्री महाराजा अनूपसिहजी परणाई। पछै पदमसिहजी वकील नू मिरी—जे शाहजादे री नावीन सू पासे करी अर नवाव रै तावे कराग्रौ। तीसू वकील अरजी कीवी जद सूं नवाव रै तावे हुवा।

अेक दिन सवारी वहता गनीम आय पड़ियौ। महाराजा अनोपसिहजी जंगाल था सो गनीम हजार पन्द्रह घोडा सू आय पडियौ। राड[1] निराठ[2] भारी पड़ी। लोग सारो भेळो होय गयौ। गनीम ताव घणी दियौ। तद भीम वलभद्रोत तवणीरोत महाराज रै मूह आगै खड़ो छै। लोगां नू उवौ ललकारै छै। प्रतावसिह भीमोत आय कही—उवां गागरी में घेर लीवी। हमे मरण विगड़ै छै। ठाकुर, घोडा भेळौ[3] ज्यू काम आवां। साथ आपरो नवाव दूर रहियौ। उपराळौ कोई दीसै नही छै। पदमसिहजी हरोळ था, नवाव रै, सो उहानू खवर हुई—जे महाराजा पास गनीम जाय लागियौ, दवाय लिया। तद पदमसिहजी जाय पाछा घेरिया सो पूठ आण दावी, निराठ दवाय लियौ, जद गनीम रो लोग भागियौ। गनीम पूछी—कुण छै? तद लोगां कही—पदमसिहजी आय पडिया। जणां नाम सुण गनीम पासो खाय निसरियौ और कहणै लागियौ—आ बुरी वलाय पडी, इणा सू मालिक वचावै। सो सगळा पदमसिहजी री मरदमी-सिपाहीगिरी जाणै था तीसू गनीम तौ नीसर परो हालियौ। तद पदमसिहजी गनीम नू भांज पाछा ही जे घिर गया। महाराज नू उरळाई हुई। तद हलकारा नू पूछी—गनीम लड़तौ थकौ पासो खाय क्यू गयौ, कीरा[4] ताव सूं। तौ हलकारा तुरत खवर लेय आय मालम कीवी। गनीम रै पूठै सू पदमसिहजी आण पड़िया सो मार विचळाय[5] दियौ। तीसू ही गनीम भाज गयौ। तद महाराज वहोत राजी हुवा। जाय डेरां दाखल हुवा। दूजे चार ठावा मांणस मेल्ह कहायौ—भाई, अेकरसी मिळौ। म्हानू थासू मिलणै रो कोड[6] छै। जणा पदमसिहजी कहाई—घणा ही मिळस्यां, हमार तो माफ करौ। तद आदमिया दवाय अरज कीवी तौ पदमसिहजी कही—थानू गम नही छै। भाभोजी जाणै छै। तौ इहां पाछा आय अरज कीवी—जे ओ जवाव दीन्हौ छै। ती पर महाराज फरमाई—सांच

---

[1]युद्ध [2]वहुत [3]युद्ध मे पिल पडो [4]किसके [5]वचलित कर दिया [6]तीव्र इच्छा।

कहै छै। आ कहि आप निसासो[1] नाखियौ। लोगा घणी ही पूछी पण कही काई ही नही, उणरो चेहरो उतर गयौ[2]।

पाछै पदमसिंहजी सरे, नवाब रै तावे हुवा सो अेक दिन गनीम सूं राड़ हुई सो इसी ही जे हुई सो दीठा हो बण आवै। सो पदमसिंहजी हरवळ[3] था सो इहा सू ही जे रोठ बाजियौ। मो फेरा पांच तौ आपरै डील घोडो फेरियौ। तरवारिया खड़ाखड वाज रही छै। नवाब पण खडौ-खडौ देख रह्यौ छै। पदमसिंहजी रै सिर दक्षिणी आय जूझिया छै। पाघ ऊपर चौकडी तरवारिया री पड़ रही छै। पण अेक अतीत रो दियोडौ यत्र पाघ मे रहतौ और महाराजा करणसिंहजी री दीन्ही स्याळियासीगी[4] सदा पाघ रै मांही रहती तिणसू सरीर री रक्षा रहती। पण पाघ वढ गई। इतरै मे आपरो लोग पण आण हीज पहोचियौ। सत्रुसाळ, रत्न महेमदासोत अै सामळ रहिता। बडो इकळास[5] थौ सो पण आ पहोचिया। इतरै मे राघोजी घोसलो फौज रो मुद्दी थौ तीनू पदमसिंहजी मार लीन्हौ। तद लोग सारो भाग गयौ सो फतह कर डेरां पधारिया। नवाव डेरै आयौ। बाथ घाल मिळियौ। हाथी अेक, घोडा दोय दिया, रुपिया सौ निछरावळ किया, डील सारो सभाळियौ अर पाघ दीठी सो वटको-बटको वढी हुई छै सो देख चारण कही—

पग लागा आभ आम सिर लागौ,
सुणियौ नह भागौ ससार।
मोटी पाघ ऊपरै पदमसिंह,
टूटी घण वहणी तरवार।
थारो सुयस अमर करणावत,
वासुर वहु दिन हुवै व्यतीत।
वाढ़ा[6] छयौ पाघडी विढतै,
चहराडियो नही वड चीत।
सामे आणि उरडियौ[7] सामो,
फौजा निरख न कियौ फेर।

---

[1]निश्वास [2]मुंह उतर गया [3]फौज के आगे [4]कल्पित पदार्थ जिससे सिद्धि प्राप्त होती है [5]मेल [6]तलवारो से [7]जोश के साथ लपका।

तैं अन्त कियौ रै करणावत,
नरा विया सिर वीकानेर।
भलौ भलौ सारो जग भाखै,
कही न रागी वात कही।
मगज धरवधर न मोटा,
मोटी पाघ समार मही।

तद नवाव डेरै जाय वादसाह नू सारी हकीकत लिखी। पदमसिहजी री घणी तारीफ लिखी। वादसाह राजी हुवौ। अेक तरवार और रिपिया वीस हजार हाथखरच नू मेल्हिया। फरमान दिलासा रो आयौ। आप रिपिया लिया तिण मे पांच हजार सत्रुसाल रतनोत रै डेरै मेलिया। उवा हा-ना कीवी तद आप डेरै जाय दे आया। सो पदमसिहजी रो सत्रुसाळजी सू वडो इकळास। दोनू जणा एक जीव दो देह। सो आगे सूं दस्तूर इसो ही जे छै के जसौ माणस हुवै जसी ही सोभत[1] राखै, तिसा सू ही इकळास प्यार राखै। कजिये रो सरदार होसी सो कजिये रो माणस कन्है राखसे। रिजाळा लक्षण होसी सो रिजाळा भडवां नू कन्है राखसी, वधारसी[2]। चुगली री चुप होसी सो नामरद, बेहिम्मत होसी सो चाडीचुगल राखसी। ग्यानी सरदार होगी सो पिण्डत-ग्यानी माणस धरमात्मा कन्है राखसी। सो सगत-सोभत देख सरदार रा लक्षण सुभाव जाणजे तिणसू सत्रुसालजी माटीपणे रो आंक तीसू पदमसिहजी वडौ इकळास राखै। चढियां-उतरिया डरा सामल रहै।

वादसाह सलामत पदमसिहजी रै माटीपणे रो आक देख, पराक्रम सू राजी होय सतेसा ठहराया। दलेल खा पठाण पाच हजार सवारा सू सतेसो। उणनू अेक दिन पुरे सू सिकार पधारिया था सो घोहरा री झळ[3] थी तीमे सूअर जोवण नै लोग सारो खिड गयौ। जोवतो फिरै छै। इतरै मे आपरै मुह आगै अेक सिह नजर आयौ। सो आप लोक नू तौ किही नू न वुलायौ और घोडे सू उतर, ढाल हाथ लेय सिह नू वुलायौ। सिह आय हाथळ री ढाल ऊपर दीवी। ढाल रा फूल च्यारू सोने रा था सो उड गया। ढाल परे जाय पडी। फेर आप सिह रै तरवार री दीन्ही सो दोय वटका होय पडियौ। इतरै मे लोक आण

---

[1]सोहवत [2]वढायेगा [3]झगी।

भेळो हुइयौ छै। सारो लोक कहणै लागियौ—जे आ तौ श्री लक्ष्मीनाराणजी सहाय करी छै, पण महाराज नू आ नही चाहिजे। जे यू अेकला कजियो कियौ तौ पछै म्हे लोग किसे कारण था। सो महाराज पदमसिंहजी छाती रा इसा जवर था।

अेकर सू कुवर पदम महाराजा करणसिंहजी कन्है था। वादसाह करणसिंह जी सू दगो कराइयौ। सो पठाण दलेल खा नू कहायौ—जे तू किही तरह करण नै पकड। दलेलखा भलो मनगरो[1] सिपाही थौ, महा वळवान थौ। सो महाराज नू अेक दिन सिकार री कही, लेय चढियौ। मन रै माही दगो थौ, जे होदे सूं होदो भेळ'र पकड म्हारै होदे भेळ लेयस्यूं। यू विचार हाथी नेडै ल्यावतो जावै। इतरै मे हाडे भावसिंह नू खवर ठावी आई[2]। तद पदमसिंहजी डेरै में था त्यानू कहाई—जे मिये रै मन महाराज सू दगो छै। था सताव चढ जावौ। महाराज नू लेय आवौ अर कजियो हुवै तौ खवर करज्यौ। जीण सारा कर राखा छा। सो पदमसिंहजी विना पलाणे घोडे चढिया, सवार च्यार सौ रै सग सूं हालिया। नवाव अर महाराज रै हाथी मे थोडी सी वीच आय रही छै। इतरै मे पदमसिंहजी जाय पहुच्या। महाराज सू मुजरो कर कही—सिंधु[3] रै मन दगो छै, हुकम हुवै तो मार लीजे। इसी वात सुणतां ही नवाव तौ पासो खाय[4] टळ गयौ। दलेल खा घणौ वडो मरद थौ पण पदमसिंहजी री इसी नजर देख पासो खाय परो गयौ। अर कही—जे इसी वलाय सूं खुदा ही वचाया। वडी आफत रै धक्के चढिया था। राजा का साई भला करे जो मन्है कर लेय गया। पछै महाराज नू पण चौकस खवर पड गई—जे नवाव रै मन इसो दगो छौ।

कहा करै वैरी प्रवळ, जे सुदृष्टि रघुनाथ।
करणसिंह नू पदमसिंह, राख लियौ हो साथ॥

पदमसिंहजी सू वादसाह घणौ ही मेहरवान रहतौ। चाकरी रै पगा करड़ी सो काम सोंपतौ सो आप भली तरह सिर चाढता। अेक दिन खजानो गाजदीखां नू पहुंचावणो थौ सो मारग मे गनीम रो डर थौ। नित ऊभा रहै सो नीसरणै री[5] आसंग किही री नही। तद खास चौकी रा सवार सागै[6] देय

---

[1]आनवान वाला [2]खवर लगी [3]सिंधिया [4]झेंप कर, मान कर
[5]निकलने की [6]साथ।

नवाव कोस वीस थी उणनूं पहुचायौ सो रात री रात थैली घोडा ऊपर मेल पहुचाई। पदमसिंहजी उण नवाव कन्है था। तद नवाव पदमसिंहजी नू वुलाय कही—रावजी, खजाना आया सो पहुंचावणा। इहा कही—हाजिर हूं। तौ नबाव कही—तुम विना तौ अेकला मैं भी नही रहूं। सारी ही फौज ले चलौ। महाराज कही—दुरस्त छै, पधारजे। तद कूच कियौ। सो पदमसिंहजी सत्रुसाल रतनोत हरवळ किया। चदोल, जंगाल, वगाल बगाय नै कूच कियौ सो गनीम आय हरवळ सू राड़ जे खाधी। तद गनीम नू चलायी। वी पूछी—कुण लडै छै? तौ हलकारा आय खवर दीन्ही—पदमसिंहजी करणोत है। तद पारो खाय गयौ। आदमी गनीम रा मुवा सो दूजे दिन चदोरा ऊपर पडिया सो फौज मार गया। फेर तीजे दिन ही चदोल सू लडिया, सो साथ भाज नवाव सू मिळ गया। तद नवाव महाराज नूं वुलाय कही—चदोली तुम संभाळौ। तद अेक-चदोल हुवा। सो नवाब रो तौ कूच हुवौ। महाराज सेवा करै था इतरै माहो जादवराय दस हजार असवार सू आय पडियौ सो राड़ माडी[1]। आप सेवा सूं ऊठ पोसाक कीवी। सो आगै तो सदामद सेवा सू ऊठ, पाघ[2] रा पेच चौकडी च्यार खोल, चोटी-पटा दोनू आधोआध कर, पाघ रै अड-पेचा मांही काढ, ऊपर गाठ देय, पछै च्यार अड़पेच देय पेच लेता। तीसू कजिये माही पाघ मजबूत रहती, डिगती नही। पण उण दिन उतावळ हुई। गनीम सू राड लाग गई सो पाघ तुरत देय, कमर ही जे वाधी, जतन न कर सकिया, तुरत असवार हुवा। दमामी आणद रै घाव था सो आला[3] था, फूहा दीजता, वहल वैठो वहतौ सो उण दिन कमर वाध, नगारे चढ़ियौ। इतरै आप देख फुरमाई—आणद, थे वगू चढिया, घाव आला छै। तद आणंद अरज कीवी—जे आज हू नगारे पर महाराज सू आघो कोई रहू नही। तद आप कही—आज कासूं छै? आणन्द कही—आज वैरीसाल हाथा नै झालै छै।

इतरै मे पाछै सू फौज रो खुर आयी हीज। गोळी-तीर वहि रहिया[4] छै। जादवराय पटेल रो छोटो भाई सावतराय, तीन सौ पाळा, मुहं आगै दिया आप घोडे सवार ललकारतौ थको आवै छै। तद पदमसिंहजी वोलिया—भाई सत्रुसाळजी, दिखणी अेकलो पाळा नू छाती चढिया लडावै छै, सो इणनू वरछी लगाऊं छू। तद सत्रुसाळ कही—महाराज माफ करो, मोनू हुकम दीजे।

---

[1]युद्ध प्रारभ किया [2]पगड़ी [3]गीले, ताजे [4]चल रहे।

इतरी सुणत सुवा आप वाग उठाई सो वेराणी समसेर नाम घोडो सवारी में थौ, काछी थौ, निपट चालाक थौ, वड़ी रेख रो वडो घोडो थौ। सो आदमियां माहाकर सावतराय रै वरछी री दीवी सु पेट फाड, पलाणी[1] भाज घोडे रा मौर भाज, काछ मे जावती मुड, हाथ नीसरी सो उपरे रो ऊपर सीफ गयौ। भाई जादवराय री हथणी कन्है जाय खिर पडियौ। सो घोडो सो असवार, घोडे नै जाणौ मेख मारी। जादवराय नै भाई पडियौ दीसियौ, सो छाती मे आग सी लाग गई। इतरै मे असवारी रै घोडा रै लिलाड मे तीर री लागी सो घोड़ो ऊभ कर गयौ[2]। नेट ताजी तीसू आप जमी ऊपर आय गयौ सो फटकारै मे पाघ उतर पड गई सो घणी जोई पण लाभी नही। तद कमरबन्ध रो सेलो थौ सो खोल[3] माथे वाधियौ। इतरै मे अेक पुरबिये नू आप घोड़ो बगसियौ थो सो आण हाजर कियौ अर असवारी वाळो घोडो फौज सामे हालियौ। आप कुवर गोयन्द कन्है खडौ सो गोयन्द भुस गयौ। तद आप गोयन्द मूळाणी नू कही—गोयन्द, आज रो लोह बिगडियौ तिणसू तू इण नदी रै ढाहे चढ देखबो कर, गिणती कर, म्हारी कितरी हाथ वाह हुवै। तद गोयन्द कही—वाह-वाह मोनू इण वेळा भली चाकरी फरमाई। तद आप कही—म्हानै थारो इतवार[4] छै। थारै बिन दूजे किण री छाती जे लोहो गिणै, तीसू तू जाय गिण। सोस दिराय, गोयन्द नू काढियौ सो गोयन्द ढाहे पर जा खडो रहियौ। इतरै सत्रुसाळ जी कही—महाराज, आ डूगरी पूठ थकी बलाय छै। जे आ लेवा तद पूठ पाछै भाखरी रहै। मुह आगै निसक सू राड़ करा, नही तौ दिखणी आय दोळा[5] फिर जासी। तद आप कही—भाई सत्रुसालजी, जे कोठी में कुण का छै? तौ कही—डूगरी सारे नही जो कुण का खूटा छूटै। तौ कही—डूगरी सू रहै नही, तिणसू हमे पाछा पग देवा नही। तद आप अठारै वार घोडो भेळ नै तरवार वाही सो जिणरै देवै तिण रा दो बटका[6] हुवै। अेकण पूरे पहरिये रै दीवी, टोप ऊपर पडी सो टोप वाढ, जाडा आवती तरवार रही सो तरवार तूट गई। इतरै उणहीज पूरविये, तरवार अेक आप बकसी थी सो आण दीवी। इतरै घोडो वढ गयौ। तद चारण गोरधन रै भाई नू घोडो वकसियो थौ, वी

---

[1]जीन का भाग-विशेष [2]पिछले पैरों पर खडा हो गया [3]कमरबद का कपडा [4]ऐतवार [5]चारो ओर [6]टुकडे।

रो नाम पतासो कहता, सो आंण हाजर कियौ। उण रै ऊपर आप असवार हुवा सो लोहां पूर हुवा[1]। लोगा नूं दकालै[2] छै सो पाघ पडियां पाछै लोह लागिया। सत्रुसाल घोडा फेर च्यार भेळिया, लोहा पडिया खेत[3] में। तद गोरधन गाडण गीत कहै—

दिली चाढ खग भाड रिण।
गोड दिखणाध दल,
लोह छक पोढियौ परव[4] लाधँ।
अछर सत्रुसाले विना वाणा ऊपडी,
आपरे वे विच सगर आधँ॥
अचभियौ भाण मधकर हरा ऊपरै,
घोम दुहवा इसो वाद धिखियौ।
वरे तु केम[5] रभ उरे विधाता,
लेख मे जीवता संभु लिखियौ॥
किरण पत आवियौ कहँ सुण सुर कुवर,
थिये मत गरम जा घरे धारे।
पणे सू जवेह सू हुकम सु पावते,
सूर वर इसा करनार सारे॥
अपछरा था हूर तन रो आणियौ,
दीहपत अेह कर न्याव[6] दीयौ।
विहड खण्ड हुतौ जोड़ियौ विधाता तन,
कमध[7] जग जीवता सभु कीधौ॥

सो सत्रुसालजी लोहां पूर पडिया। कुवर रघुनाथसिह पण लोहां पूर पडियौ[8]। तद दोहो कहै—

वरसां तेरा वाज, लजधारी[9] सारी रुघा।
तू आइयौ अगाज, पोरस दाखे पदमउत॥

पछै कछवाहो कुसळसिह थौ सो घोडो भेळियौ। दोय तीन फेरा किया सो काम भली तरह आयौ। तीरो गीत—

---

[1]बहुत घाव लगे [2]हिम्मत बंधाते हैं [3]रण-क्षेत्र [4]पर्व [5]किस तरह [6]न्याय [7]योद्धा [8]घायल होकर गिरा [9]लज्जा रखने वाला।

कहितौ इम आद लगे कछवाहो,
सुरा[1] मरणो सही ससार।
दुमगळ[2] हुवा अमगळ देखै,
नाम कुसळ मत देखै नार॥
सव दिलगरा जाणे भरम,
मुवर दतो प्रता सुध।
नवानि जोखि गिणे न विनता,
जोखा जाणें हुवै जुध॥
धारण कधार कळोवर,
परणी सू दाखतौ[3] प्रकार।
आयौ काम सुणी सुपरव आये,
विप्र दियौ मम करै विचार॥
पदम सुछैल अवसाण साप नै,
हीचियौ[4] खागा खडग हथ।
कलत सरस कय जिका अहतौ,
कीध जिका ही जस ची कथ॥
नित कहितो सुज वोल निवाहे[5],
लोह चढे[6] जस घणौ लियौ।
साका वध कामण साभळियो,
कत सुरा विच वास कियौ॥

पछै भगवन्तराय पूरवियौ हजारी थौ। भलो साचो सिपाही थौ, अर सौ वरकमदाज रो जमादार थौ सो लोग तौ सारो कजिये मे कट गयो थौ। आप असवार दस सू महाराज रै आगै खड़ो थौ। इतरा मे सागे सवार सौएक पाळा पचासे'क डावे पासे दिखणी आ लागिया। तद महाराज सू मुजरो कर उहां साम्हा नाखिया[7] सो खिडाय दिया। पावडा सौएक ऊपर जाय काम आयौ। वीजो लोग घणौ काम आयौ। इतरै मे नागोर ऊपर दिखणी आ पड़िया। महाराज घोडो उठाय भेळियौ सो गर हुवौ। लोहा तौ आगे ही पूर था पण साहस

---

[1]वीरो [2]युद्ध [3]कहता [4]युद्ध में जूझा [5]वचन निर्वाह करने वाला
[6]घाव लगने से [7]डाले।

सू खडा था सो नागोर दवियौ देख चलाय गया सो घोडो ही कट गयौ। आप पण खेत मे नगारे आगै पडिया, लोहां तौ समार पण सावचेत। पूठै आणन्द नगारची नगारो फाड काम आयौ सो घोडे री उठावणी देख कवित्त कहै—

श्री करणेस नरेस को नन्द चढ्यौ,
पदमेस सनाह न काछै।
सिह कू सिह लियौ चहू ओरन घेर,
अरी कर राजन आछै॥
वारन कुभ विदारन कुभ नु दारन,
केहर मार कळा छै।
टूट पड्यौ अरि के सिर ऊपर,
छाह रही पग वीस के पाछै॥

इतरा मे खेत मे महाराज नू पडिया देख, गोयन्द मुळाणी आय लोहां भिड़ियौ सो महाराज रै च्यारे'क पावडा[1] आगै पडियौ।

मिळै घाट विपमो कळह लाट लोहा मिळै।
वाज गुण चाट वेठाट वागा ऊकटे।
उकटे काट निराट अभ्रियामणां[2]।
वाट खडै जाट सिर भाट खागा[3]।
पदम मुख आगली दिखणिया पहारण।
वह राण खडग घड करण वा वार।
वळो वळ वाजनै महारण वाजियौ।
साहा रिण तणै सिर सावणी सार।
विजड अवभाड खळ पाड जम डाढ।
वख विढ अवसाण कीधौ वडाळौ।
फाचरां चाचरे हुवै रिण फावियौ।
चोधरी जाजरा लोह चाळौ[4]।
मूळउत जीवता सभु दळ मोहरी।
दिन खडग रावता तणै दावै।
गहण रण वाज घुरण घटा गोदडौ।
पटा मोटा भला जाट पावै।

[1] कदम [2] वीर [3] तलवारों की [4] युद्ध।

सो गोयंद लोहां पडियौ, आणन्द नगारची काम आयौ।

कहर काट ऊकट कटक अव चढिया,
कळह चालिया करमा खाय काचा।

अमामी वार जुघ नगारे ऊपरे,
दमामी वजाया सार डाका॥

वाण सर सोक सहनाइया वरघुवा[1],
सार खट तीस नौवत सजाई।

वाळां[2] खळा सिर जोर लाखण तणे,
घुराई भाट भट वीजड घाई॥

आणन्द जुघ वहिस राजा पदम आगली,
लडंते रोस रस अरस लागै।

निसाणा दरवाणिया तणै माये निहस,
खेच चढ रूड़ाई वस्व खागे॥

दमामी राड[3] अत भाड भाका दिया,
घोड ऊभाड खग चाढ धारा।

खेल चोटां विछूट घाव वाज्या खग,
दाव सिखा डग्यौ वाज दारां॥

सो लोग कितरो'क तौ काम आयौ। कई घाव खाय रण मे पड़िया। कई'क हालता रहिया। रणक्षेत्र में वहदो मिटियौ। सो जादराव रो भाई पदमसिहजी वरछी सू मारियौ। आप देखता, सो दिखणी रा पेट मे भाळ लाग रही। जणां उण वखत निम छळाई मे हथणी सूं उतर पदमसिहजी ऊपर चलाय गयौ। पदमसिहजी रणखेत मे वैठा छै। इतरै में जादूराय आय माथे रै माही तरवार री दीवी, सो माथो फाड त्रिकुटी आण वैठी। इतरै मे महाराज वैठा ही लप-भडप मारी सो वागे रा दोर हाथ मे आया, सो खांच लियौ। तीसू मुहडे आडे आण पडियौ। जद आप अेक-दोय कटार मारी सो काम सारो सीभ गयौ। आप पण उणरै ऊपर ढह पडिया। दिखणी दौड़िया सो जादूराय नू खींच, काढ हाथी रै होदे माही नू घाल परा लेय गया।

---

[1]एक फूक वाद्य [2]नगारो [3]युद्ध।

अंबुधि सात कहावत है क्षिति[1],
   श्रोण को सिंधु नयो कद जूझ्यो।
जोग नृत की सो व्रत भई,
   अब मुण्ड की माल अब अमूझ्यो॥
लागै है भयभीत सबही जग,
   यो मघवा निज लोक हैं बूझ्यो।
त्यू कर जोरि कहि इन रण मे,
   पदमे संग महीपति जूझ्यो॥

फेर जादूराय नूं इण तरह लियौ, तिण पर गोरधन गाडण रो कहियौ गीत यू छै—

पड़िया पाछै लियौ अरि पाड,
   पिंड गोगादे तिणी पर।
....

सो इण तरह काम आया। दुघडिये लोग आय दाग दियौ। घायला नू सभाळ लेय गया। उठा सू पुरे नू कासिद मेलियौ, सो आय खबर दीवी। महल सत कर खड़ा बादसाह रो डर, तीसू वकील कन्है माणस[2] मेलियौ। वकील मालूम कीवी। बादसाह सुण धोखो[3] कर कही—हिन्दू असा सिपाही होणा नही। भला सांचा निमकहलाली था। जावौ इन हिन्दुओ के होता हो सो करौ। तद जाझरके[4] खबर आई सो खबर आता ही महासतिया जे तयार हुई। ढोल नगारो वाजणे लागियौ।

अेक नबाव तीन हजारी। उणरै महाराज नू बडो इकळास[5]। महाराज डेरै जावता जणा आप साम्हे आय हाथ झाल ढोलिये बैठावतौ। आप जमी ऊपर बैठतौ। तवाइफा[6] गावै थी। हवालदार दोनां नू दारू पावै थौ। आप हसीखुसी करता। और नबाव जद महाराज रै डेरै मे आवे थौ तौ महाराज भी यूही जे करै था। रागरग हुवै था। अेक वार दोनू सरदार बैठा था जणा नबाव

[1]पृथ्वी [2]आदमी [3]अफसोस [4]प्रभात के समय [5]मेल [6]गाने-नाचने का पेशा करने वाली औरतें।

कही—भाईजी, जो तुम्हारे मे कुछ से कुछ होवै तौ मै क्या करू और जे मेरा कुछ का कुछ होवै तौ आप क्या करोगे ? जद महाराज फरमाई—जे इण वखत इसी वात कुछ नही। दोनू ही जे खुसहाल छां। इसी बातां क्यू करा। खुसवखती री वाता करौ। असी[1] वातां नू जावरण देवौ। तौ नवाव कही—आ बात तौ वणी बणाई खडी छै। जद महाराज कही—वणसी जिण दिन दीसी जासी। अवार तौ कोई खुसहाली री वातां होवण देवौ। नवाब साहिव महाराज नूं कही—भाई, मै तौ कुछ वद खवर[2] सुणूगा तव फकीर वण चलता रहूगा। तौ महाराज कही—भाई, म्हारे सू फकीरी नही वण आवै। मैं तौ जे कुछ बद खवर सुणूगा, उस दिन कोई गनीम होसी तौ उणसू कजियो कर काम आऊला। जे गनीम नही होसी तौ लस्कर मे ही हर किसी सू कजियो कर'र काम आऊला। पण या जिन्दगी नही राखूला।

नवाव मुहीम सर कर पदमपुरे सू पाव कोसे'क गाव थौ उणमे आ उतरियौ थौ। इतरै उण वखत रा ढोल नगौरा वाजिया जिका सुण'र पूछी—आज भाई के पुरे मे ढोल नगारे जो वाजै है सो किसी की सादी है या कोई कुवर पैदा हुवा है या किही ऊपर फतह हासिल की है ? सो जाय सताव खवर लेय आवौ। जणां आदमी खवर नू गयौ। आदमी तुरत आय सारी खवर सुणाई। सो सुणता ही नवाव अपणे डेरा आगै वडी आमली थी उणरै नीचे आय बैठियौ। आपरा मुत्सद्दिया नूं वुलाय कही—जे अभी सब सिपाहियो का हिसाब लगावौ। जणां सगळा अरज करी—सरकार, हम तौ कदीमी[3] नौकर हैं, असा आज क्या हुवा ? घर पधारिये। वहुत दिन से कवीला आया है। सादी करिये, हिसाव फिर हुवा करेगा। नवाव कही—इसी से कहता हू जे मैं अन्दर जाऊंगा, वहुत दिन लगेंगे, सो सवको परेसानी होवेगी। इससे सवका हिसाव आज करना। पछै सवरो लेखो करातो गयौ, टका देतो गयौ, फारगती[4] लिखायतो गयौ। सिपाहिया रो हिसाव कर, सागिरद पेसा रो हिसाव करा, टका देय, फारगती लिखाई। पछै दीवाण बकसिया रो हिसाव कर, टका देय उणसूं फारगती लिखाई। दिन दोय पहर आय गयौ। जद कही—सबका हिसाव हुआ, और कौण रहा ? तरै सारा अरज करी—सवका हुवा। कोई वाकी नही रहा। तद नवाव हुकम

---

[1]ऐसी [2]बुरी खवर [3]पुराने [4]चुकते हिसाव की रसीद

दियौ—जावौ, तोसाखाने[1] से अेक वाफता लावौ। सो मंगाय चादर उठै हो ज वैठा सिवाई। सारा देखरणै लागिया, गम किही री नही सो पूछै। चादर तैयार हुई सो बीच सू फाड़ गळे मांही घाली। सारो लोग हाहाकार डूब गयौ, और रोणे-पीटणे लागियौ। आप तौ सारां सू मोह खैंच लियौ। माणसा नू कही—हमारा तुम्हारा इतना ही सीर था। अब चीजवस्त है सो मा कूं व लडका कूं देणी। दोय चाकर खिदमतगार था सो साथ मे फकीर हुवा। पस्चिम कान्ही वहिर हुवा।

आदमी वस्तु-भार सारो घरा जाय सांपियौ, परठ कह दीवी। तद मां पालखी चढ जाय पहुंची। घणी नीठ[2] घरा लेय आई। आप वाग मे ठहरियौ। लगाइयां दोय थी सो आय रोई अर ख्वाहिस करणे लागी। पण आपरै कुछ खातिर में नही। पछै कही—मां के डेरै जावौ, काहे कूं ख्वाहिस करौ। फेर वादसाह नूं खवर हुई जद अेक माणस मेल कहायौ—जे फकीरी लेणी आछी नही। उनसे तुम्हारा घणा इकळास था तौ जो बात तुमने भेळे[3] वैठ कर करी उसका तरक करौ। राग सुणी हो तौ राग छोडौ। सराव पी हो तौ सराव छोड़ौ। जो काम सारो कियौ सो छोड़ौ, पण रिजक संभाळौ। घणौ ही परचाइयौ[4] पण नवाव तौ मन निपट ही काठो कियौ। महिने दोय तौ वाग मे वैठियौ सो मा घर सू खाणो आछो करनै मेल्है। दूजे तीजे दिन लुगाइया आय वैठै। सखरी सी विछायत, ढोल्या आवै। अेक दिन रात रा सव छोड वहिर हुवौ सो पदमपुरा रै परले पासे अेक जायगां थी उठै जाय वैठियौ। परभात समै घर वाळा जोवै तौ नही दीसियौ[5]। दिन वीसे'क पछै ठावो पड़ियौ[6]। जणां मां फेर गई, जाय मनुहार की, तौ कही—नही आऊ। जे अेक टंक फकत सूखो टुकड़ो मेल्हौ, अर लुगाई छोकरी नही आवै तौ फेर आऊ। जणा मा कवल कर फेर लेय आई। जुमेरात री जुमेरात पुरे मे आवतौ, ड्यौढी आय सलाम कहावतौ। अेक दो वार भीतर सू कुछ कपड़ो-लतो मेलियौ[7] सो नही लियौ। आप कहाई—मुझको आरणे देवौ तौ कोई वस्तु मत देवौ। मेरा जीव पास आये विना नही रहै।

---

[1]कीमती वस्तुएं रखने का कोठार [2]वडी मुश्किल से [3]शामिल [4]समझाया-बुझाया [5]दिखाई दिया [6]समाचार लगा [7]भेजा।



अेकण हलवाई री दुकान माही पदमसिहजी री छवी जड़ी थी सो निराठ दुरस्त थी। उण री दुकान आय छवी नूं देख, फूलांरी मूठी च्यार-पांच चढाय, सिर हलाय, आसू नाख[1] पछै जावती। सो बरस तीन जीवियौ जितरै आ दसा रही। इसी साची आसनाही[2] थी सो सांची निवाही।

पदमसिहजी री वात समाप्त

---

[1]डाल कर [2]प्रेम, मुलाकात।

सांई री पलक में खलक

उज्जीण नगरी रै माही देवसरमा नामे विरामण निवास करै। उवौ च्यार वेद रो वक्ता, षट सास्त्र रो जाणहार, वडौ पिण्डत थौ। घर मे स्त्री सुसीळ व गुणवती थी। पण घर मे घणौ कसालो[1] थौ तीसू आजीवका विनां काम हालै नही। सो देवसरमा हालियौ, चन्देरी मे जाय पहोचियौ[2]। उण समै चन्देरी मे जे राजा राज करै थौ सो भलो सुग्यानी थौ। ऊणरै चवदह महल था सो अेक सूं अेक आला था। अब देवसरमा नगरी मे निवास करै, भिक्सा-व्रति कर निरवाह करै।

अेक दिन चन्देरी रा महाराज उठै श्री सदाशिवजी रै सहस्र घट पूजा कराई। नगरी रा सगळा विरामण भेळा हुवा। उणमे देवसरमा भी आइयौ। सगळा विरामण राजा नू आसिरवाद जे दीन्हौ। तद देवसरमा ही पण आगो आय नैं राजा सू आसिरवाद करी।

राजा धरम प्रसंग से, सत्रू नास हजार।
देवसरमा यू कहै, आसिस वारम्वार॥

राजा देवसरमा रा मुख सू स्लोक सुण पूछी—हे ब्राह्मण देवता, थां कुण छौ, अर कठा सू आइया छौ सो कहौ। तौ देवसरमा आपरी सारी बात कही। राजा सुण'र वहोत प्रसन्न हुवौ छै। देवसरमा सारा पाछै सिवजी रो विसेस पूजन और

---

[1]कमी [2]पहुँचा।

कराइयौ। राजा खुस होय देवसरमा रा रोजगार अर पेटिया राज कर दीन्हा। राजा उण पंडित देवसरमा री रणवास[3] मे घणी खरी तारीफ कीवी। जे पंडित अेक ब्राह्मण घणौ भलो छै, था उण सू कथा सुणौ। जणां महळां खवासा सगळा अरज कराई—जे घणा दिना सू सबरी इच्छा थी पण संकतां अरज न कीवी थी। जद राजा फरमाई—म्हे थानू आप ही आग्या देवा छा।

परभात सखरो[2] महूरत देख महलां मे देवसरमा नू बुलाइयौ अर उणसूं श्री हरिवंसपुराण कथा आरम्भ कराई। पहले ही दिन वीस हजार री प्राप्ति हुई। कथा घणी आछी वाची। देवसरमा च्यार वरस तलक कथा सुणाई। उणनू अेक लाख-सवा लाख रिपियां री प्राप्ति हुई। जद उण राजा सू अरज कीवी छै—जे म्हारी आसा पूरण हुई, मोनू प्राप्ति घणी आछी हुई। देवसरमा कही—जे मोनू आज्ञा होवै तौ जनम भूमि मां जाय अवसर करू अर अपणां कुटम[3] परवार सू मिळूं। राजा कही—हे देवता, कुटम परवार नै उरो बुलाय ले। घरां जाय के करसे। देवसरमा अरज कीवी—

जगदीस्वर अर जान्हवी, जन्म भूमि अर माय।
जाति वीच भोजन करै, दुरलभ पांच बताय॥

हे महाराज, जन्म की भूमि देखस्यू, कबीले सू मिळस्यू[4] अर आपरो यस वधाय, लिछमी[5] रो लाभ उठायस्यूं। ताहरा राजा विदा की आज्ञा देय घणौ द्रव्य दीन्हौ अर खुसी सू कही—सताब आवजे। यूं कह महलां छै री सीख दीवी।

देवसरमा हुण्डी कराय, पल्ले वाध अर उठासू वहिर[6] हुवौ छै, सो देवसरमा हालतौ-हालतौ[7] उज्जीण सूं कोस च्यार आय लागियौ। उण ठांव देवसरमा देखी जे वन मे अग्नि लाग रही छै। उण रै वीच मे नागदेव अेक देखियौ। उणनै देख, दया कर देवसरमा वास री डांग[8] सू उणनै उठासू काढ परो अेक पीपळ री छाया मे लाय, वैठाय आप ऊभौ रह गयौ। सरप सीतळ छायां माय सरजीवत[9] जो हुवौ। जीव ठिकाणे आइयौ। इव फण उठाय देवसरमा सू कही—हूं तौनू खायस्यू। देवसरमा कही—हूं थारी चाकरी करी पण तू मोनू खायसे, आ भलाई रै वदळे बुराई करसे सो क्यो? सरप कहण लागियौ—रे देवता! हूं घिसटतौ-घिसटतौ ही दुखी थौ, तू मोनू क्यू

---

[1]रनिवास [2]अच्छा [3]कुटुम्ब [4]मिलूगा [5]लक्ष्मी [6]रवाना [7]चलता-चलता [8]लकडी [9]सजीव।

काढियौ ? हू तौ उण ठांव[1] राजी सू जळ अपणौ सरीर छोड़ देतौ । अब तू ही मोनू काढियौ, हू थारौ ही अहार करस्यू । इतरी सुण देवसरमा कही—

वरस च्यार परदेस मे, रह्यौ कवीलो छोड़ ।
उण से मिळ मैं आयस्यू, सात दिना की होड ॥

आ वात सुण सरप कही—

मरणे खातिर फेर द्विज, आवै यंह पै कौन ।
सपथ करो जो हेत सो, तौ चाहे कर गौन[2] ॥

देवसरमा कही—

सूरज साक्षी कर कही, मानहु साचो कौल ।
दिवस सातवें आय मैं, करस्यू पूरो वोल ॥

इतरी वात सुण सरप देवता विदा दी । देवसरमा विदा पाय उठा सूं हालनै आपरै घरनू आवियौ । आगे घणौ हरख हुवौ, वड़ो उत्साह कर भाई सगा परिवार कुटुम्ब का लोग सगळा मिलणे आइया । पण देवसरमा किही सू कुछ वात ही वोलै तक नही छै । औ तौ खरो उदास हुवौ बैठियौ छै । आपरी स्त्री तक सूं नही वोलियौ । तौ ब्राह्मणी कही—इसी कांई वात छै, भली तरह कमाई कर लाया छौ, फेर भाई वन्धु कुटम कवीला सूं बोल्या क्यू नही ? जद ब्राह्मण सारी बात ब्राह्मणी नू कह समझाई । इतरी वात जद ब्राह्मणी सुणी तौ कही—इण वात रो काई डर करो छौ, 'साई री पलक मे खलक[3] वदळै' छै । अब हाल थाहरा कौल मे सात दिन आडा छै । ब्राह्मण कही—साई री पलक मे खलक क्यूकर वदळै सो कह । ब्राह्मणी यू कहणे लागी—अेक वार अेक विलायत रो वादसाह कंधार रै वादसाह ऊपर चढाई करी । तद उणमे विलायत रो वादसाह तौ फतह पाई अर कंधार रो बादसाह हार पाई । सो कन्धार रै वादसाह नू पकड, कैद कर कधार रै थाणे मे बैसाणियौ[4] । कैदी कियौ । पाछै विलायत रो वादसाह सहर मे दाखिल हुवौ । फेर उण कधार रै वादसाह नू अेक सत पीढिया चाकर भिस्ती रै हवाले कियौ अर खाणे खुराक रै वास्ते उणरी १२ रिपिया नित री खरची कर दीन्ही । सो उवौ उणमे सू रिपिया ३५ या ३७ खाणे-पहरणे में खरच करै नै वाकी कनै[5] राखै ।

---

[1]जगह [2]गमन [3]ससार [4]वैठाया [5]पास ।

यूं करता बारह बरस व्यतीत हुवा। अेक फकीर आय रोजीना अवाज करै छै। जे सांई री पलक मे खलक बसै छै। सो अेक दिन कंधार रो बादसाह थौ सो इण फकीर री वात सुण मन मे विचारी अर भिस्ती नूं कही—जे थारै बादसाह नूं जाय अरज कर—हमको बरस बारह व्यतीत हुवे, अब क्या हुकम है? इण भांति भिस्ती नूं कई वार कही पण भिस्ती कहै—मोनर[1] नहीं। और अरज करणौ आप चाहै नहीं।

अेक दिन भिस्ती रै तौ कोई काम थौ, अर भिस्ती री लुगाई बादसाह वास्ते खाणो लेय आई। सो बादसाह खाणो नहीं खावै। ताहरां भिस्तिन कही—आज खाणो खावौ क्यों नहीं? तौ बादसाह सारी वात नहीं खाणे री थी सो समझाई। फेर भिस्तिन कौल सोंम[2] कर खाणो तौ खिलायौ। बादसाह कन्है सूं भिस्तिन घर गई और घर जाय भिस्ती सूं कही—आज बादसाह खाणा नहीं खावे था। पण हूं कौल सोंस घणी तरह सूं कर खिला आई हूं। वार-वार बादसाह तुम से अरज करणे कहता है सो तुम्हारा अरज करणे मे क्या बिगडता है? तौ भिस्ती कही—वात तो दुरस्त कही, पण बादसाह बादसाह की जांणै सो जांणे क्या फुरमावै। यांरो कांई बिगडै, बैठा खावै छै। खैर अब तुम्हारे कहणे से फजर[3] मे अरज करूंगा।

सो भिस्ती हजूर मे गयौ तद अरज कीवी—हजरत, कंधार के बादसाह ने अरज कराई है—मुझको बरस बारह हो गए, अब क्या हुकम है? तद बादसाह ने कोटवाळ कूं पास बुलाया सो आया। उसकूं बादसाह नै फरमाई—आज रात कूं घड़ी च्यार के झांझरके तुम कंधार के बादसाह कूं चोरंगा[4] कर देणा। इतरी बात सुण कर भिस्ती पछतातौ घर आयौ। भिस्तिन सूं कही—ले तूं अर कंधार रो बादसाह वार-वार कहता था। हूं आज जाय हजरत सूं अरज की तौ कोटवाळ कूं चोरंगा करणे रो हुकम दियौ। यूं कह भिस्ती कंधार के बादसाह नूं खाणो खुवाणे गयौ अर कही—लो, थे बैठा ठंडो पांणी पीता था, पण सबर नहीं की वार-वार म्हाने बादसाह सलामत से अरज करणे की ताकीदी करता था। कंधार रै बादसाह कही—क्या हुवा? भिस्ती कही—कल चार घडी झांझरके रात मे थानूं चोरंगा करणे रो कोटवाळ कूं हुकम कियौ है। इतरी सुण कंधार

---

[1] अवसर [2] सौगन्ध [3] प्रभात [4] हाथ-पैर काट देना।

रै वादसाह भिस्ती सू हस'र कही—कुछ चिन्ता नही, अभी तौ च्यार पहर आडी है। म्हे तौ सुणी है—

सांई केरा पलक मे, वसता खलक जहान।
फिकर करे जो काल का, वो है मुरख अजान॥

इण भांत और ही जे सुणी छै—

क्या करता क्या करै, हस्ती मार गरद[1] मे धरै।
सुख जाके सपने नही, ता अधना[2] सिर छत्र धरै॥

यू कह कधार रो वादसाह कही—तुम तौ खाणा ले आवौ। भिस्ती तुरत खाणी ले आयौ। वादसाह आराम से खा-पीकर सो रह्यौ। उठी विलायत रो वादसाह ही सो गयौ।

आकास सूं एक जानवर आयौ सो उण विलायत रै वादसाह नू लेय उड गयौ। हुरम[3] यह वात देख रही थी। उसने विचारी—परभात वादसाह रै विना, वादसाही में खलल पडसी। ताहरा नादर कू बुलाय कर कही—सताव जाय दीवाण अर वकसी कू लावौ। सो दीवाण अर वकसी आ हाजर हुवा। तौ उण सूं वेगम कही—अभी तुम्हारे वादसाह कू आकासी पक्षी लेय उड गया। इसका काई जतन[4] करणा चाहिये। वादसाह विना सरसी नही[5]। प्रभात हुवा लोगा मे खलल पडसी। तौ दीवाण वकसी अरज कीवी—म्हा सू तौ कारज सरे नही[6], वजीर नू बुलावौ। वजीर आया जद समाचार सुण कही—म्हा सू अेकला सू कारज नही वणै, उमराव लोगा नू बुलावौ। उमराव लोगा नू बुलवाइया। वजीर, दीवाण, वकसी अर सारा उमराव भेळा आय हुवा। जणा वेगम पूछी—तुम सगळा वतावौ, क्या जतन करणा चाहिये। सगळा ही जणा कुछ जतन कह नही किया। ताहरा वेगम कही—हू यत्न वताऊ। सगळा अरज कीवी—आप हुकम फरमावौ, हम उमी की तामील करस्या। वेगम कही—और तौ कोई दीखता ही नही, अेक कधार का वादसाह कैद माही है सो कुछ खोटा नही। सगळा अरज कीवी—जी हजूर कुछ खोटा नही, नेक है। समझदार अर वडा से वडा होसियार है। तौ वेगम साहिवा कही—उसकू लावौ।

---

[1]धूल [2]गरीव [3]वेगम [4]यत्न [5]काम नही चलेगा [6]कार्य नही होगा।



गेरजे[1] सो भसम होय जासे। इतरी सुण ब्राह्मणी मूठी दोय धूळ ली। फेर सरप सूं कही—मोनूं थाही बुरी नजर जोवो छौ सो भसम हो जावौ। यूं कह ग्रेक चुटकी धूळ सरप ऊपर नाखी[2] सो ऊ उण ठांव ही भसम होय गयौ।

श्री नरसिंह सहाय सू, दोनू आया गेह।
साई केरा पलक मे, खलक वसै कर नेह॥

पलक में खलक री वात समाप्त

---

[1]गिराना [2]डाली।

पलक दरियाव री बात

पाटण सहर, तठै अजैपाळ साह व्यापारी रहै। वड़ो धनेस्वरी[1]। तिणरै देवीदास नामौ अेका-अेक बेटो। सो वरसां पनरह माहे हुवौ, तिकौ वड़ो सपूत। नामे-लेखे विणज-व्यापार माहे वहोत खवरदार। साह रै धन घणौ। बिणज रो सुमार नही। जहाज हालै। सरव काम नामे-लेखे रो मुदार बेटे ऊपर ओर देवीदास रै ठाकुरां रै दरसण री प्रतिज्ञा सो सहर सू बाहिर अधकोस देहरो तठै श्री लिखमीनाथजी विराजै सो देवीदास नित दरसण करवानै जावै। पइसो अेक भेट रो चढावै। यू करतां घणा वरस वितीत[2] हुवा। सांची प्रीत सू दरसण करै। कदेई नागा[3] न घालै। पहल दरसण करि, भेट करि, पछै भोजन करै।

अेक दिन साह रै जहाज रो भार परदेस सू आयौ सो दरसण करण जाय सकियौ नही। भूल गयौ। जितरै घरा सू बोलावो[4] आयौ। ताहरै अजैपाळ साह काम गुमास्ता नै सौंपि बेटा देवीदास नै साथ लेय घरै जीमण नै गयौ। जीमण नै बैठ, थाळी मे अन्न पुरसियौ तदै देवीदास नै ठाकुरां-दरसण री याद आई। ताहरा अजैपाळ कह्यौ—बेटा वैगा हुवौ, आज आंपणै काम छै। ताहरा देवीदास कह्यौ—म्हारै तौ श्री ठाकुरजी रो दरसण करण रो नेम[5] थौ पण आज दरसण कीधा नही तीसू दरसण करि जीमसूं। तद अजैपाळ साह कह्यौ—बेटा सवारै टको चढावजे ओर दोय वेळा दरसण करज्यौ, आज आपणै काम छै। ताहरां

---

[1] बहुत धनी [2] व्यतीत [3] गैर हाजरी [4] बुलावा [5] नियम।

देवीदास कह्यौ—अन्न तौ दरसण कर नै जीमसू। साह कह्यौ—सवारै गुन्हगारी भेळी चाढज्यौ, पण आज तौ जरूरी काम छै। तद देवीदास ऊठ ऊभौ हुवौ। तद साह कह्यौ—थाहरो मन है तौ जा, पण दरसण करि सताब आइज्यौ। इतरै दिन पोहर डोढ़ चढ गयौ। आगै श्री ठाकुरजी रै भोग री आरती करि देवत नामै ब्राह्मण पण्डो आपरै घरे गयौ। कपाट जडिया छै। ताहरां किंवाड़ री सेरी मा हाथ घात कैवण लागौ—महाराज, पइसो लीजौ, म्हांमें तकसीर[1] पडी, मोड़ो आयौ। गुन्हौ माफ कीजै। हूं रावळो चाकर, यू चूक पडि, तकसीर माफ करणी। यू करतां घडी अेक हुई। रुदन करण लागौ। देही परसीज[2] गई। विवहल होय गयौ, ज्यो प्राण छूटै। ताहरा लक्ष्मीजी श्री भगवान सूं अरज करी—जे साहूकार वहोत दीन छै, विवहल हुयौ छै, इणरा प्राण छूटै छै इणरो पइसो लीजे। ताहरा श्री भगवान फुरमायौ—अै हाथ अयाची[3] छै। म्है किही कन्है हाथ माड्यौ नही, सारा ही नै देऊ छू, लेणनै हाथ आगो न करू। इतरी सुण लक्ष्मीजी अरज करी—हाथ न माडौ तौ मुहडे सू फुरमावौ। तद देहरे मे आवाज हुई—उरहौ[4] ला। ताहरा इये पइसो चीपटी मासू चलाय दियौ सो देहरै मांही जाय पडियौ। देवीदास नमस्कार करि प्रदक्षिणा देण लागौ। ताहरा श्री लक्ष्मीजी भगवान सू अरज कीवी—देवीदास थांहरो निज भगत है, इणनू कुहीक[5] दीजे। ताहरा श्री पूरणब्रह्म फुरमायौ—म्है तौ इये नै घणौ ही दियौ छै। ताहरा श्री लक्ष्मीजी फेर अरज कीवी—इये रै मन मे काईक कामना छै, तिका फेर देवौ। ताहरा देवीदास प्रदिक्षणा दे सन्मुख आयौ। नमस्कार कियौ। इतरै मे फेर देहरै मांही आवाज हुई—देवीदास माग। मांगसी सोई पाईस[6]। ताहरा देवीदास जाणियौ श्री भगवान प्रसन्न हुवा आवाज देवै छै, सो देवीदास हाथ जोडि अरज कीवी—जो आप महरवान हुवा सो मागू सो पाऊं। फेर हुकम हुवौ—जो तू मागीस[7] सोई हूं देईस। ताहरा देवीदास अरज कीवी—जो आप पलक दरियाव कहावौ छौ तौ मन्है पलक दरियाव रो तमासो दिखावौ। श्री भगवान फरमायौ—इये वात रो कासू देखसी? क्यू दूजो माग। राज मांगसी, पातसाही मागभी और कोई सखरी वसत देखै सो माग। तद देवीदास

---

[1]चूक [2]करुणा और सन्ताप से आकुल [3]जो मांगते नही [4]इधर [5]कुछ न कुछ [6]पायेगा [7]मांगेगा।

प्रणाम-दण्डोत कर अरज करी—जे इतरा थोक तौ आप रै प्रताप सू घणा ही है। जे आप कृपा कीवी छै तौ आप पलक दरियाव रो तमासो दिखावौ। तद फेर आवाज हुई—तौ देख। इतरो हुकम हुवौ, तिसे देवीदास डण्डोत करि नीचे नमियौ[1] अर जीव नीसर[2] गयौ। असी माया ईस्वर री हुई। जीव नीसर नै वन्धुगढ रै राजा कनकरथ री पटराणी रै गरभ रह्यौ। आगै राजा रै सन्तान न हुती, अपुत्र थौ सो आधान रह्यौ। वधाई हुई। सात मे महिने मे आघरणी हुई। नव महिना पूरा हुवा, कुंवर जायौ[3], वधाई वटी, गुळ बांटियौ, नारेळ बांटिया, वड़ा उत्सव हुवा, दसोटण हुवौ, ब्राह्मण वेद-पाठ करि कवर रो नांम विचित्र राखियौ।

कुंवर मोटो हुवौ ताहरां सेरपुर रै राजा वीरभद्र री वेटी रो नारेळ आयौ[4]। घोड़ा सौ, हाथी च्यार, कपडो लाख अेक रो, जवाहर, गहणौ अेक लाख रो, नाळेर सोने-रूपे रो लाया। पुरोहित आदमी च्यार सौ सू डेरो कियौ। राजा कनकरथ खवर मंगाई—औ डेरो कैरो छै, क्यो आया छै? कठै जासी, कुण छै? ताहरां पुरोहित रै डेरै छटीदार नै मेलियौ। उण जाय नै पूछियौ—कैरो डेरौ छै, कठै जासौ, कुण छौ? ताहरा पुरोहित छड़ीदार नै माहे बुलायौ। कह्यौ—महाराज नै आसीरवाद मालुम करजौ अर अरज करजौ—सेरपुर रो राजा वीरभद्र तिकै री वेटी इन्द्रकंवरी री सगाई, महाराज रो कुवर विचित्र नामै छै तिणसू कीवी चावै छै। साम्हा नै नाळेर देय था पासे मेलिया छै। इतरो कहि रिपिया पाच छडीदार नै इनाम रा देय विदा कियौ। छडीदार जाय महाराज सू सरव मालुम की—सेरपुरा रो राजा वीरभद्र रो पुरोहित विक्रमादित्य छै। पडित-ब्राह्मण तरक-चरचा करै छै। इतरै पुरोहित विक्रमादित्य आयौ। राजा ऊठ आदर दियौ। बाह पकड़ कर कन्है ले वैठा। राजा रै मुलक री वात पूछी। इतरै कुवर विचित्र नू बुलायौ सो कुंवर पोसाख भली भाति सू करि,

---

[1]झुका [2]निकल [3]जन्मा [4]सगाई करने की एक प्रथा जिसमे लडकी के घर वाले ब्राह्मण के हाथ उचित वर के पास सम्बन्ध की स्वीकृति प्राप्त करने के लिए नारियल आदि भेजते है। नारियल को स्वीकार करने का अर्थ सम्बन्ध को स्वीकार करना माना जाता है।

आपरा हजूरिया[1] नै साथै ले आयाँ । दरबार भारो ही करणो हुयो । पुरोहित सूं कुवर मिळियो । कुवर राजा रै मूहडै आगै बैठो छै । मुहूरत ठीक छै। तद राजा सनकरथ रो जोशी विस्वेसर बोलियो—पुरोहित कह्यो, महाराज कुवर रै तिलक करो, नाळेर चढावो । तद हाथी, घोड़ा, गाम नव नजर किया । पुरोहित डेरै गयो । दूसरे दिन पुरोहित नूं बुलाय पोतो-सिरोपाव, गहणा-गांठी दरसिया । सारो साथ जिसै लायक लायक हुता तिण नूं तिसो ही ज वस्तु दे बगसीस करी । सरब नै राजी करि विदा किया । साहे[2] री तारीखी मांडी । ताहरां पुरोहित अरज कीवी—मास अेक पछै सिहसत लागसी सो महिना तेरह रहसी ती पछै साहो करस्यां । यूं कहि पुरोहित बहिर हुवो । कुंवर रै तावै राजा सरब मुनद्दी दिया । कुवर पण राजा रो सरब काम संभाळियो । सारो सवाल-जवाब पूछै । वहोत सपूत दातार पिता री आज्ञा मे रहै । घटो सुख देवै । यूं करतां सिहसत उतरियो, तद जान[3] री तयारी करी । परणीजणि चढियो । घणी आडम्बर सूं जाय परणीज्यो । बडा रंगरळी हुया । घणो धन खरचियो । कुवरजी रै झरोखै नीचै ओळंगु रात रा घणा सवार उनगिया, बडी निवाजस व्ही, लाखपसाव कियो । ओळंगु हजूर राखिया। ताहरां ओळंगुवां अरज कीवी—म्हांनै वरस अेक हुमो महाराज वीरभद्र री नाकरी करता नै । जो हुकम हुवै तौ मुजरो करनै फेर राति आय आपरो मुजरो करां । ताहरां कुवर पूछियो—कठै रा छौ ? तद ओळगुवा बोलिया—भुजनगर रो राजा रावळ जालम, वडो पातसाह, तिण राणी रा चाकर छां । घरा ती कार्ड कमाण न छै, पण दातारा नै देखण नै मुलकगिरी[4] करता फिरा छा । सो वरस अेक हुवौ, महाराज बिलमाय राखिया । ताहरां कुवर विचित्र कह्यो—थे वरस अेक म्हारे कन्है रहो । ताहरां ओळगुवा कह्यो—राजा भीम सारू छै । राजाजो विदा देसी ताहरै महाराज कुवर कन्है आवसा । ताहरा विचित्र कुवर कह्यो—भली वात छै । थे मुजरै जावो । आछा गावजो । जितरै भगती जीमण[5] म्हे पण आवा छा । आ वात कहि सीख दीवी । कुवर डेरै आयो, घोड़ा दौडाया, हदफरी चौठ कीवी । पाछलो पहर हुवो ताहरां राजा वीरभद्र रो कुंवर सवार हजार अेक सू

---

[1]नौकर-चाकर [2]शादी का महूरत [3]बरात [4]भ्रमण [5]सम्मानार्थ दिया गया भोजन ।

भगती जीमण रै पगां वोलावो आयौ। साथ सारो तैयार हुवौ। सखरी ऊमदा पोसाक करी। विचित्रकुमार नै साथी राजा रै दरवार आया। मजलस हुई। साथ मे अमल-पाणी री मनवार हुवै छै। विचित्रकुमार री नजर ओळंगुवा मांही छै। ओळंगुवा पण हुल नै गावै छै। रवाब-सारगी, ढोल-मजरी वाजै छै। इसो ही कठ रो गावणों छै। इसो ही कन्है पुराणो गुण छै। सारी ही वात रो मेळ मिळियौ छै। इसे मे पातिया नांखिया। भुजाई आय सारो साथ बैठो छै। विचित्र-कुवर फुरमायौ—ओळगू पण ऊपरि आय भुजाई वेसै[1]। ताहरां वीरभद्र छडी-दारा नै फुरमायौ—सतावी गोगदान, हरदान, सिवदान, हमदान इया च्यार ही, नै ऊपरि वुलावौ। महाराज याद किया तद ओळगू ऊपर जाय महाराज सू, कुवर विचित्र सू मुजरो कियौ। विचित्र कुंवर रो नगारची, वाजदार वैठा ठावका उवारा गुण सुण लजाय वैठा। भली भाति भुजाई जीमिया। ऊपर पान रा वीड़ा दिया, अतर सु घेरी मनवार हुई। डेरै नू सीख दीवी। ताहरा राजा वीरभाण जंवाई नै खमा-खमा कह्यौ, हाथ झालिया[2], छाती सू लगाय कह्यौ—वावा, कासू कारज छै। जे वदळे अंतराज हुवा अने हाथ जोडिया, सो कह्यौ—ओ राज, हाथी, घोड़ा, सरव भंडार थाहरा छै, चाहै सो करौ। ताहरा विचित्र कुवर कह्यौ—हरदान अळगूम नै वगसजे। राजा वीरभद्र कह्यौ—भली वात छै। आपरै दीवाण नै वुलाय नै कह्यौ—लाख एक रो पसाव, घोडा च्यार, सिर-पाव मगावौ। आण हाजर किया। ताहरा हरदान ओळगू नै वुलाय वगसिया। आपरै पहरण री पोसाक और सरव गहणा था सो हरदान नै वगसिया। तीमे कंठी अेक मोतियां री हती—लाल और पनो निपट वेस थौ। सवा लाख कठी री कीमत हती, तिकी पण पोसाक साथे वगसी और फुरमायौ—कुवरजी री चाकरी आछी तरह करजौ। ओळगू मुजरो करनै विदा हुवौ नै छोटो सो डेरो मेडी[3] कन्है खड़ो कराय दियौ। वडी रीझ-मौज देनै भीतर पधारिया।

ताहरां झरोखे नीचै चार पहर गावै। नित निवाजस हुवै। दोपहरै रा कवरजी पौढै ताहरा रामदान जाजम रै छेडे बैठो कमायचो[4] वजावै। वडी रीझ-मौजा सिरपाव पावै। कुवर री वड़ो मेहरवानी, वडो कारण राखै। दिन २६ वीरभद्र जान राखी। वडा हीड़ा[5] किया। नवी-नवी भक्ती कीवी। सारी वात

---

[1]वैठें [2]पकड़े [3]महल [4]एक तार वाद्य [5]भाग-दौड, खातिर।

जान रै साथ वडो सदोलो राखियौ। कुवरजी विदा होवण री अरज कीवी। ताहरां राजा वीरभद्र कामदार परधान नै वुलायनै फुरमायौ—दायजो तैयार कियौ छै सो सब ले आव। वीस हाथी, पचीस घोडा, लाख दोय रो गहणो, जुहार लाख अेक रो, इतरो ही कपड़ो दियौ। वादी छोकरी वडारण अेकनौ दोवी। और भी अनेक वसता दीवी। सो राजा रै घर रा किता वखाण, घणी-घणी मनुहारां कीवी, विदा किया। राजा वीरभद्र रो कुवर हरिभद्र वहिन नै पहुचावा सारू साथ हुवौ। मजल दोय आया पूठै विचित्र कुंवर हरिभद्र नै पूठा[1] विदा कियौ। साथ कटारी अेक, घोडा पचास, माळा अेक मोतियारी, कलंगी अेक जडावरी इतरा थोक दिया। साथ सगळै नै सिरपाव दै, छोटा-मोटा महनै याद करि विदा किया। वडो रस रह्यौ।

कुवर विचित्र परणीज घरा आइयौ। गाजे-वाजे, सायदान वजावता वधाय[2] भीतर लियौ। घणौ हरख राजा रै पचास वरस सूं हुवौ। सो अेका-अेक वेटो, फेर कुवर सरव राजा रो भार सभाळ लियौ। तेथी[3] राजा नै घणौ वलम। लोक पण सगळा ही सराह करै। राजा रै मुलक रो काम सगळोई[4] राजा रै कुवर रै हाथ।

यूं करतां वरस च्यार व्यतीत हुवा। कुवर रै कुवर हुवौ। वडो हरख हुवौ। नानांणे सहर वधाई गई। तद राजा हरखवन्त[5] होय घोडो अेक, सिरपाव, कड़ा-मोती, रिपिया हजार दोय देनै विदा किया। दसोठण[6] रो कपड़ो-गहणो देय नै मुतसद्दी नू मेलियौ। सवध गढ आइयौ, डेरो कियौ। जावतो घणौ हुवौ। सहर में घर-घर वधाई वाजै छै। हरख होय रह्यौ छै। दसोठण हुवौ। मुलक सरव जीमियौ। वीरभद्र रो मुहतौ कपडो-गहणो लायो थौ सो राजा कनक रथ रै नजर गुदराइयौ। राजा मुहतै नै घोड़ो, सिरपाव, दुगदुगी वगसी। विदा कियौ। कुवर विचित्र रै मुजरो आइयौ, ताहरा कुंवर सिरपाव वगसियौ। वडी-वड़ी मनुहारा करि विदा कियौ।

राती महल पोढण गयौ। ओळगुवा नै हुकम हुवौ। चारि पहर रात झरोखे उलगिया। परभात लाख अेक रो इनाम हुवौ। वड़े लाजमे कारण अेक दिन

---

[1]वापिस [2]स्वागत की रस्म पूरी कर [3]जिससे [4]सम्पूर्ण [5]हर्षित
[6]पुत्र जन्म की खुशी मे किया जाने वाला उत्सव।

हरदान वोलियौ—भाई गोगदान, दूजी वसनां छै तिकै तौ भावै जु राखसा पण आ मोतियां री कंठी छै तिकी आपा सूं नही रहै। तैसूं आ कठी आपा कुवरजी नैं सौपा। अेक दिन हरदान कुवरजी सूं अरज कीवी—आ वसत राखौ। ताहरां विचित्र कुंवर कह्यौ—आ वसत म्हा लायक नही। हूं लेवाळ नही, देवाळ छूं। अर थे कंठी वेच सो तौ दाता रैं नाम री किसी खवर पडसी। ताहरां हरदान फेर अरज कीवी—तौ म्हांरी थकी कोठार मे राखजौ। म्हे डूंव छां, कहारेके[1] म्हे भाग पी नै सोय रहसां, गमाय देवा। तूठै तौ पण छाती रहै अर वुरी[2] राखां तौ गळी जावैं। तैसूं आप हस्तैं कोठार मे रखावौ। ताहरा कुंवर कह्यौ—किही साहूकार रैं राखौ। ताहरां फेर हरदान कह्यौ—साहूकार नैं सूपां, कोई मोती वढाय ले तौ झगडो करता भूंडा लागां। फेर म्हारी डूवी[3] वात वाजै, तैसूं कोठार मे रखावौ। ताहरा कुंवर कठी लीवी। लेनै भीतर महल पधारिया नै वसत रूपै री डवी घाल ढोलिये रैं पगातिये आळो थौ तैं माही कळ थी तिकै कळ मांही राखी। सो कुवर विचित्र जाण्यौ कै दूजा नै खवर नही है।

हिव सुख सूं राज करै। रैत[4] सगळी राजी रहै। राजा रो काम सगळो विचित्र कुवर करै। राजा कनकरथ महल मे वैठो जौखा[5] करै। पोतरै सूं वहोत प्यार सो पोतरै नै रातदिन हजूर मे राखै, खेलावै। नाम कुवर रो दैपाळ दे दियौ छै। सो दैपाळ वरस दोय रो हुवो। राजा कनकरथ री हजूर मे रहै।

यूं करतां विणजारो सवालखी आयौ। तैरै सवालख वाळद, हजार दोय वरकमदाज, वडो डेरो, असवार पाच सौ। नगारो वाजतौ, पांच रथ, दोय सुखपाळ, हाथी दोयसै लाजमे[6] सूं नायक सवालखी आयौ। विणजारे रैं अेक वेटो, तिणरो नाम सुजाण सो घणौ सपूत। सरव डेरै रो नायक सुजाण रैं हाथ। नायक रैं साथे हाथी अेक दरियायी चौमुखो, तैरी कुवर नै खवर हुई—जे वडो हाथी छै। अेरावत री औलाद रो छै। ताहरां विचित्र कुवर कह्यौ—जे विणजारो महाराज रैं आवसी ताहरा पूछसा। दूजे दिन सवालखी नायक, साथे सुजांण, पालखी वैठ नैं राजा कनकरथ रैं मुजरै आइयौ। किस्तूरी रा पुडा अेक,

---

[1]कभी न कभी [2]धूल मे छिपा कर [3]मुहावरा—विना सिर पैर की वात [4]प्रजा [5]आनन्द [6]लवाजमा।

अेक केसर रो गाठो, अेक बावने चन्दण रो झाड, अेक मूनियारो, तरवार, अेक अमल, इतरी वसता अनोखी अर दूजो मेवो, कपडो भात-भात रो नजर करनै बैठो। वतळावण करी, पान रो बीडो देनै विदा कियौ। कुंवर विचित्र सूं मुजरो करण गिया। कुवर बडो आदर दियौ। कुवर री नजर मेवो-कपडो कियौ। ताहरां कुवर रै मन मे हाथी री बात थी सो कुवरजी फुरमायौ—अे मेवा, कपडा-वसत म्हांरै पण घणा ही है। थे तौ परदे रा परखण्ड[1] फिरणवार[2] छौ। कोई अपूरब[3] वसत लावणी थी। ताहरै नायक सवालखी बेटो साम्है आयौ। सुजाण ऊठ डेरै जाय, हरडे अेक सवासेर री, समरणी १ अेकमुखी रुद्राछ री आण भेट कीवी। कुवर वहोत राजी हुवौ। पाना रा बीडा बगसिया, विदा दीवी। नायक सवालखी सुजाण डेरै आइयौ। कुवरजी वसतां महल रै आळै कळदार मे राखी। परभात सुवारै ही पूजा करनै थाळ आरोग्यौ। खास कर महाराज रै मुजरै गयौ। काम-काज री सारी अरज-विनती कीवी। फेर राजा फुरमायौ सु जीव मे धारियौ। कुवरजी ऊठ हाथ जोडि नै अरज कीवी—महाराज, नायक रै हाथी अेक चौमुखो दरियाई छै। वहोत आछौ छै। जा हुकम हुवै तौ मोल लीजौ। ताहरां राजा हुकम कियौ—कै भली वात छै। जे थाहरै खुसी छै तौ सतावी लीजौ। इतरो कहिनै कुवर मुजरो करनै डेरै आइयौ। छडीदार अेक चन्दण नामै मेहरवानगी छै, सो वहोत समझणो छै तैनूं फुरमायौ—जाय नै सुजाण नायक नूं बुलाय लाव। चन्दण छडीदार दौडतो ही गयौ। जाय सुजांण नायक नै कह्यौ—कुवर बुलावै छै। सुजाण सताव कुंवर री हजूर आयौ। वाता करी। कुवर फुरमायौ—हाथी अेक दरियाई छै सो म्हानै मोल देवौ। तद सुजाण नायक अरज कीवी—हाथी सवालखी नायक नै पातसाह फुरमायौ है तौ ल्यायौ छै, तैसूं कुवरजी रै चूप[4] छै तौ आप रखावौ। आप उठै पधारजौ। नायक नै देखाय नै लेवा। वात कुंवरजी मानी। मिठाई मगाई, अत्तर मगायौ, सुजांण री मनवार करी। पान बगसिया। खजर अेक वहोत वेस विचित्र कुवर सुजाण नायक नै बगसिया। डेरै नै सीख दीवी। दूसरे दिन सेवा-पूजा कर, थाळ आरोग, राजा रो मुजरो करि असवारी करि नायक सवालखी रै डेरै पधारिया। नायक नै बेटो दोनूं साम्हा आया, पावां लागा। डेरै भीतर

---

[1] अन्य पृथ्वी खण्ड [2] फिरने वाले [3] अपूर्व [4] चाह, पसन्द।

विराजिया[1] । मिजमानी रो नायक जावतो करायौ। कुवर विचित्र देस मुलका री वाता कीवी। इतरै मे नायक सुजाण कह्यौ—वापजी, महाराज कुवार हाथी दीसा फुरमावै छै। ताहरां हाथी मंगाय नजर कियौ। ताहरा कवरजी कह्यौ—हाथी रो मोल फुरमावौ। नायक कह्यौ—कोई लेवा नही। यू घणौ माढ[2] हुवौ। पछै रिपिया थंट ४० हजार लागा था जिकै लिया। कवरजी री कलिंग ग्रेक नजर कीवी। हमाऊजी नाव रै परा री ग्रावखान गरमयोसरो सख दक्षण वरतन परो भारक पासी री नळी रो जैसी ग्रध-ग्रध हाथ चौगिरद सवभाई पडै। इण भात री चारी वसत नजर करी। भाईपो हुवौ। मास चार रह्या। जगत री पोठ चूकी। नायक रै चालण री तयारी हुई। ताहरा सुजाण कुवरजी रै मजरै ग्राइयौ। वात करी। डवी ग्रेक जुहार लाख चवदा री सापी। कुवरजी वसत ग्रेक राखौ, सरोजीनो भार सवहणौ, तैसू ग्राप कन्है राखौ। ताहरा कुवर फुरमायौ—माही रो कही खरच पड जावै, तेथी कही साहूकार रै राखौ। जद सुजाण नायक ग्ररज कीवी—जे खरच पडसी तौ घर छै। पण साहूकार सूं मन परचै[3] नही। ताहरा कुवर कह्यौ—डवी कीमत कराय सूपौ। ताहरा डवी खोली। जुहार बुलाय कीमत कराई। रिपिया लाख चार री डवी हुई। तिका डवी कळदार उवे ग्राळे माही राखी।

दूजे दिन नायक विदा हुवण नै दरवार ग्रायौ। राजा कनकरथ रो मुजरो करायौ। कुवर महाराज सू ग्ररज कीवी—नायक ग्राछी जागात भरी, भलो भाति वसता नजर कीवी, हुकम हुवै तौ सिरपाव दीजै। राजा फुरमायौ—ग्राछी वात छै। ताहरा दोनां ही नायका नै सिरपाव, मोती, कडा वगसिया। वड़ी दिलासा कीवी। भार ले सताव ग्राव जाजो जी। बडी वाता कीवी। राजा रो मुजरो कराय कुवर ग्रापरै डेरै ले गयौ। सिरपाव दिया, सिरपेच सुजाण नायक नै दियौ। वडी प्रीत वधाई। ताहरा नायक हाथ जोड ग्ररज कीवी—कोई वसत फुरमावौ, परदेस सू ले ग्रावा। ताहरा कुवर फुरमायौ—घोडो ग्रेक ग्रेराकी[4] लेता ग्राजो। नायक सवालखी डेरै नू गयौ। सुजाण नायक कुवर विचित्र कुमार रै जनानी डोढी गयौ। वडारण[5] सू मुजरो मालम करायौ। ग्ररज

---

[1]बैठे [2]जिद्द [3]विश्वास नही होता [4]विशेष नश्ल का घोडा [5]दासी।

कराई—वसत दिसा थाहरै चूप हुवै सो फुरमानी। ताहरां भीतर सूं जवाव मेल्यिौ सु ले सुजाण डेरै आइयी। कूच करि वहिर हुवा।

उठा सू कुवर मुलकगिरी नै असवार हुवा। मुलक घूमिया, सारा रस्त किया। मुलक दोय-तीन दूजा नया वसाया। वरस दोय सूं कुवर फतह कर पाछा घरै पधारिया। दीवाण सुन्दरदास ऊपरि काम रो मुद्दो छै। साह सुन्दरदास रो वेटो साह वेणीदास, तिको कुवर रै हजूर रहै। वडो सांमवरमी, वडो वुद्ध[1] राखण-हार[2] छै। वड़ा मुतसद्दी छोटा-मोटा कामदारां सू सुख राखै छै। आपो-आपरै हवाल मे सव खवरदार रहै। राजा रो राज दिचित्र कुंवर भारी थानियौ, वडी दौलत वधारी। लोक वहोत सुख कियौ। नवा परगनां मुलक दाविया।

अेक दिन तळाव पधारिया, गोठ कराई। सारो साथ लारै छै। हजूरी सारा ही साथै छै। आप आपरा ही लालिया खडा छै। अमल-पाणी कीजै छै। मिठाई रो जावतो मरव वेणीदास करावै छै। मिठाई वाटीजै छै। कुंवर हजूरिया साथै तळाव में झीलै[3] छै। वडो तळाव रो पांणी छै। कुवर तळाव माहे चुंभो मारै[4] छै सो पूठो[5] नीसरियौ नही ताहरां हजूरी कहण लागा—

झाझे झूलर[6] झीलतां, पैठो कुवर विचित्र।
अजहु न आयो आपणौ, मन मानीतौ मित्र॥

ध्याय ध्याय ऊडा धसो, वार मांहि वडवीर।
कहिसां कासू राज नै, सोझो कुवर सरीर॥

ताहरां सरव हजूरी, पासवान, खवास तेरू[7] हता तिके सरव तळाव ढूंढियौ। घणौ ही जोयौ पण हाथ न आयौ। इतरै मे कुंवर री म्रतक देही ऊपर तिर आई। तरै सरव लोग देखण लागा। देखै तौ देही निरजीव देखी। तद हाहाकार सवद हुवौ। साथ सारो ही रोवण-कूकण लागौ। राजा नै जाय खवर हुई सो सुण नै मुरछागति हो गई, विवहल होय गयौ। कुंवर सुन्दरदास दीठौ कै कुंवर री आ गति हुई अर राजा री देह छूटै तौ राजा जाय छै। ताहरा कुंवर दैपाळदे नै उठाय छाती सू लगायौ। नांक भीच सावचेत कियौ। राजा

---

[1]वुद्धि [2]रखने वाला [3]स्नान करता [4]पानी के अन्दर वैठना [5]वापिस [6]झुण्ड [7]तैराक।

सावचेत हुवौ। फेर कूकण-पुकारण लागा। तद महतै अरज कीवी—जे कुवरजी री आ दसा हुई। दैपाळ निराठ दिलगीर हुवौ। कूकारोळ[1] सू कुळराइज गयौ, कह्यौ—महाराजा दिलासा करौ। इण ऊपर जीव टेकौ अर परमेस्वरजी आईज की तौ किण रो ही दोप नही। यू कहि दूहो कह्यौ—

सुख मे दुख सचारवो, दुखियां सुख दयाल।
देवज रूठौ दागवें, हरि रूठा वेहान॥

यू कहि राजा नू समझायौ। सावचेत[2] कियौ अर कह्यौ—महाराज, थाहरै सारी दौलत छै, कुटम्ब छै। इण तरह राजा नू धीरज-बंधाय, जनानी डोढी गयौ। जनाने सारे ही मे धीरज दीवो। कुवर री मां अर महळ[3] दोनू ही हठ झालियौ—कुवर रो मुहडौ देखा। ताहरां कुवर री मा नै तौ कह्यौ—ये तौ सुग्यानी छौ। इतरा सास्तर[4] सुणिया छै। कथा सुणी तैमे इतरौ ही हठ सुणियौ छै? यू कहि राणी रो हठ छुडायौ। फेर कुवर री राणी नै फुरमायौ—जे राज रो काम कुण चलावसी, राजा तौ विरध[5] हुवा। कुंवरजी री यू हुई। दैपाळदे बाळक छै। राज राखणो छै तौ आपने विराजणौ छै। परमेस्वरजी निमित्त धरम-पुन करौ। घणौ सोच करणो तौ असमझ रो काम छै। हठ छोड़ अर लारै रहि कर राज करौ। कुवर दैपाळदे नै पाळ मोटो करौ। राजा रो काम सुधारौ। इतरी वात कहि कुवर री राणी रो हठ छुडायौ। सारा लोक-अमराव भेळा होय जाय उण देह रो कारज कियौ। दाग दे, स्नान करि पाछा ठिकाणै आइया। तीजै दिन तडयो[6] करि, फूल चुगाई गगाजी मे वहिर किया। किरिया कराई। द्वादस रै दिन ब्राह्मण-भोजन करायां। कुवर दैपाळदे नै राजा गोद मे वैठाय राजा री पाघ बधाई। तिलक कर सगळा लोका रो जुहार करायौ। सारा भाई, मुहता, अमराव मुतसद्दिया कन्है निजराणै[7] करायौ। कुवर दैपाळदे री हजूरी पासे मुहतौ वेणीदास, चन्दन छडीदार सारां ही नै राजा कनकरथ ज्यू था त्यूही राख्या। खिजमत सारा ही नै दीवी। सिरपाव दे, कुंवर री सारा ही नै भळांवण दीवी। ओळगू दिन वारह ताई मसाण मे उलगिया। तेरवे दिन राजा तखत वैठौ। ताहरा हरदान, गोगदान, सिवदान सिर मे राख घाती। अतीत होय चालता रह्या। हरदान,

---

[1]रोना-पीटना [2]सचेत [3]स्त्री [4]शास्त्र [5]वृद्ध [6]मृत्यु के तीसरे दिन पर की जाने वाली कर्म-विधि [7]रुपया या मूल्यवान वस्तु भेंट करना।

गोगदान नै कूकता रोवना नै घीस नै नोठ हजूर लाया । फेर आग लोकराज मे नवो राज हुवौ । सुन्दरदास-मुहतै सारा ही नै धीरज बंधाई । नोबतखानो सरू करायौ ।

कुवर रो जीव नीमरियौ सो देईदास री खोळ[1] श्री ठाकुरा रै खोळ मे पडी थी ताम्हे जाय पडियौ । तद ऊठ ऊभौ रहियौ । देवीदास श्री ठाकुरां नै परणाम कियौ । तद भीतर सू अवाज हुई—पलक दरियाव तमासो दीठो ? कुंवर कहै—आपरी किरपा सू । फेर अवाज हुई—जे आ भगवान री वात किणी नै कही तौ विण-सायत[2] थाहरो देह छूटसी, तैसू खबरदार रहै । इतरो सुण देवीदास दोपहरा रा घरै आइयौ । आगै देवीदास री मा जीमण लिया वैठी थी, कह्यौ—जीमण ठंडौ होय गयौ । ताहरा देवीदास कह्यौ—ताळ[3] तौ कांही लागी नही । जावण-आवण हीज कियौ । तिडको[4] टाळि, पाणी पी, गगाजळी चाकर रै हाथ देनै हाट गयौ । आगै साह अजैपाळ कह्यौ—सावास-वेटा, भलो वेगो आइयौ । आज हाटे काम थौ । ताहरां देवीदास कह्यौ—बावजी, ताळ तौ कोई लागी कोयनी । जावण-आवण हीज कियौ । इतरौ कहि देवीदास काम लाग गयौ । नामो-ठामो मांड छै । वजार रो नामो-लेखो, लेण-देण देवीदास रै हाथ छै ।

ओळगू हरदान रामदान दोनू अतीत होय गया था । तीरथां नै रवाना होय गया था सो आगै केदारनाथजी परस, बदरीनाथ परस, विस्वधार परस, भूठति माही कर नैपाळ परस, मुक्त क्षेत्र परस, अयोध्या कासी परस पराग[5] जी आय, मकर रो नाहण करि, फेर पाछा जाय कुवर रा पिंड भराया पछै वैजनाथजी, जगन्नाथजी परस मारकण्डेय कुण्ड तरपण किया । फेर कुवर रा कुरापिंड भराया । रोहणी कुण्ड तरपण किया । महोदधि स्नान करि, दखिण रा तीरथ गया । विष्णु कान्ची, सिव कान्ची परस, सेतुबन्ध रामेस्वर परस, श्री लक्ष्मणजी रा दरसण करि, पच तीरथ परस, श्री द्वारकाजी परसी । तठै अतीतां दसा रो सागो हुवौ । ताहरा कह्यौ—आपा गिरनारजी रो तमासो देख पछै थट्टै जासां । आगै श्री हिंगळाजजी परससा ।

ताहरा गिरनार आय, गिरनार सू जावता विचै पाटण सहर आय डेरो कियौ । परभात री बजार री भीख नै आया । फिरतां-फिरता अजैपाळ री हाट

---

[1]शरीर [2]निर्विलम्ब [3]देर [4]धूप [5]प्रयाग ।

सांम्हौ दीठौ। ताहरा हरदान बोलियौ—रामदान, तमासो देखाऊ। देव सागै कुंवर जीता हरा। रामदान देखि कह्यौ, सागी छै। ताहरा हरदान बोलियौ—ऊभारो[1] सरीर तौ आपा हाथां फूकियौ पण अण हारो[2] तौ सागी[3] छै। घडी दोय रह्या, खूब जोयौ। आघा-पाछा होय रह्या। इतरै देवीदास बोलियौ—अतीता क्यो खडा छौ ? कासू देखा भीखी नै मारग लागौ। ताहरां हरदान कह्यौ—रामदान, अे तौ सागै कुवरजी छै। सागै वोली छै। फेर कन्है खिसक नजदीक आया। ताहरा देवीदास कह्यौ—अतीता कासू देखौ, क्या चाहिजे सो लहौ। ताहरां फेर रामदान कह्यौ—भाई, सागी कुवर छै। मुजरो करौ। ताहरा निराठ कन्है आय ऊभा रह्या। देखै तौ सागी छै। गुमास्ता आदमी सारा दूर हुवा। ताहरा रामदान कह्यौ—हू तौ वतळाइस[4]। विना बोलियौ कोई रहूं कोयनी। तिनरै देवीदास बही नीचै मेली नै आडो खोलण नै ऊठियौ। ताहरा कह्यौ—भाई दूहो कहसू। साम्हौ जाय पूछियौ तौ हरदान दूहो कह्यौ—

विचित्र कुवर वखाणिये, च्यारि वरन[5] दिसि च्यार।
सूरज दूजो कनक सुत[6], दीपै जग दातार॥

ओ दूहो हरदान कह्यौ। ताहरा देवीदास साभळ नै पूछियौ—स्वामीजी, ओ दूहो कहडो[7] कह्यौ। था कठा सू सीखिया। ताहरां हरदान कह्यौ—कुंवरजी महाराज, म्हारो कह्यौ छै। इनरो कहता तुरत दोनू भाई गदगद कंठ होय सिलाम करण लागा, फिस पडिया[8]। देवीदाम पण ऊभौ-ऊभौ देखी अर ऊळखिया[9]। देहरो विदेह होय गयौ पण नाक री टीसी सू ओळख लियौ। ताहरै देवीदास कह्यौ—आख्या आगळ[10] देह री विदेह होय गयौ। ओळखणी आये नही, ताहरां आख्या सू ही सलाम कीवी। अरज कीवी— महाराज कुवार, जिकारा धणी छोडि जावै तिकारा अे ही हवाल छै। ताहरा दूहो कह्यौ—

धणिया विन दया वणी, दीसै असी देह।
चाकर मगण मात पित, चित विलखै सारो गेह॥

आपरा विछोह सू ओ हीज हवाल सगळा रो छै। इतरो सुण रिपियो अेक खूंजे[11] माहि सू काढि हरदान रै हाथ दियौ। जीमण री पाछा आवजौ[12]। वाता

---

[1]ठहरो [2]शकल [3]वही [4]वात करूंगा [5]वर्ण [6]कनकरथ का पुत्र [7]कैसा [8]द्रवित हो गये [9]पहिचाना [10]आगे [11]जेव [12]आना।

करसां। छाना रहिजो, सुभराज मतां करजो। राग-राम करजो ज्यूं लखे कोई नही। इतरी कहि सीख दीवी। आप फेर हाट रो काज करण लागा। साम होई ताहरा वहिया नै सभाई। कोथळो गुमास्ता रै हाथ दियौ। हाट रै ताळा सचवाय नै घर रै वास्तै रवाना हुवा। इतरै वखत हरदान आय जै श्री राम कह्यौ। आप राम-राम कह साथ ले वहिर हुवा। अतीत घर रै वारणे वैठा। आप ही भीतर जाय जीमनै वाहिर आयो। सोंह अजैपाळ नै कह्यौ—म्हारे डील मे आळस छै। नोहरै जाय तेल मसळाऊ। इतरो कह नोहरै गयां। गाय, भैस, वैलियां रो जावतो करि. चाकरा नै कह्यौ—ढोलियो पटसाळ ऊपर ढाळौ। ताहरां ढोलियो पटसाळ ऊपर विछाय दियौ। ऊपर देवीदास वैठो, नीचे हरदान, रामदान मुजरो करि वैठा। सारी वातां पूछ ली, सारी वाता कही, सै हकीकत कही। देवीदास सुण कर राजी हुवौ। कह्यौ— रै म्हां विन सारा ही दिलगीर हुय गया छै ? हा कुवरजी सारा ही घणा दिलगीर हुय गया छै। फेर कुवरजी कह्यौ—थांहरी कंठी लेवो जाय। डवी जुहार री सुजाण नायक री छै सो थे उठै ले जाय लेवौ। नायक री डवी नायक नै देवौ। हरडे १। सेर, समरणां अेकमुखी रुद्राक्ष री छै सो हरडे तो कारखाने रखायजो, समरणा दैपाळ नै देजो। म्हारै महल मे ढोलिये रै पगाथिये[1] आळो छै, तिण माहे छै सो जाय लेवौ। म्हारो नांव मत लेवजो। ताहरां वै कही महाराज कुंवर रै नाम विगर वसत कांकर[2] मागीजे ? ताहरा देवीदास कह्यौ—थे यूं कहजो—अहदारिये गया हुता उठै मिळिया था। ताहरा अे वसतां वताई सो जागां सोभी ज्या वसता लाभै। ताहरा हरदान रामदान कहण लागा—इसी वात म्हांसू कही न जावै। म्हा तौ परतख्य[3] दरसण किया सो इसी वाता कांकर कहां। भली तौ आ छै आप उठै पधारौ। राज सारो दुखी छै। अठै वाणिये रै घरे कांसू करसौ। अठै तौ अेक घर मे उजाळ छै, उठै सारै देस मुलक मे उजाळौ हुवै। हजार कोस मे सारो लोक दुखी छै। म्हानै तौ छोडिया नै वरस छ हुवा छै पण चाळीस दिन आपणी सीम[4] मे हुवा, सारो लोक रोवे था। माथो टेकिया विसुरण करै था। अर वारह दिन सहर मे रहा था सो सगळै सहर मे लोगां रै वेळा वखत हाडी चढ़ी नही[5] सो उठै आपरो आधार थौ। आप पधारो तौ सूरज ऊगै। भोमिया आप दवा लिया था सो आप

[1]पैरों की तरफ [2]कैसे [3]प्रत्यक्ष [4]सीमा [5]खाना नही वना।

जांणी हीज छो। सो तौ राजा नै धरती नै दुख होमी। इसी घणी ही वातां कही, घणौ ही परचायौ पण देवीदास तौ आ हीज कही—थे जावौ पण म्हारो नाम मत लेवजौ अर आ वात यू हीज होणहार थी, सो हुई। तद हरदान कह्यौ—वात तौ म्है दीठी छै तिकी कहसा, दूजी म्हासू कही न जावै। यू कहि ऊठ मुजरो कियौ। वीस रिपिया खरची रा दिया। फेर देवीदास कह्यौ—आळे री कूची जवरदार मोहण कन्है छै सो माग लीजौ। मोहण इतवारी[1] छै। इण भाति कही।

देवीदास जाय सोय रह्यौ। इणा तौ उहीज वेळा वन्धुगढ रो मारग लियौ सो रात-दिन कासीद खेय हालै ज्यू चालिया सो दिन ३९ माहे वन्धुगढ जाय पूगा। परभात पोहर छै। राजा कनकरथ दरवार मे बैठा छै। कुवर दैपाळदे खोळै मे वैठो छै। उवै समै सवा लखी विणजारो सुजाण नायक पण उवै पांण[2] उठै आय बैठो छै। खवर तौ सहर मे वडते हीज हुई थी। डेरा कर तुरत सुजाण दरवार गयौ। सुजाण वहोत अदोह कियौ। डोढी जाय सुजाण मुजरो गुदराइयौ। भीतर कुवर री राणी सुजाण रो नाम सांभळ नै फिस पड़ी। अचेत होय पडी। नीठ-नीठ सचेत कीवी। इसी ही दसा सुजाण नायक री हुई सो सुजाण नायक नै पण चाकरा सावचेत कियौ। ऊठि डेरै गयौ। दूजे दिन पाघ १ घोड़ो १ कुवरजी मगायो थौ—जाति रो अेराकी, साथ लें दरवार गयौ। जाय पाघ दैपाळ नै बंधाई। घोडो टीकै रो दियौ। मोती नरमादि लायौ थौ सो राजा रै नजर किया। कपडो राणी मगायौ थौ सो राणी री नजर मेलियौ। ताहरां राणी कहै—

सूळ फूल सूळी सयन, खान पान सव खार।
पति विन नायक नारि को, यह सिंगार अगार॥

नायक सुजाण औ कपडो म्हांरै काही काम नाही। ताहरा नायक सुजाण अरज कीवी—कुवर दैपाळदे परणास्यौ, ताहरा काम आवसी। चूडो अेक छलेरो वहोत वेस[3] असील ल्यायो थौ सो नजर गुदराइयौ। सारी वसता रो लेखो करि सुजाण नायक नै नाणो[4] दिरायौ। मोती-नरमादि जिका रा रिपिया हजार ४० थेट लागा था तिकै लिया, वधता नायक पाछा दिया। यू चटपटी करि नायक

---

[1]विश्वास-पात्र [2]समय [3]स्त्री के पूरे कपडे [4]रुपया।

विदा मांगी। नायक तद वहिर हुवौ।

पछै दूसरे दिन हरदान दरवार आय मुजरो कियौ अर कह्यौ—महाराज वधाई दीजै, कुंवरजी लाधा छै। ताहरै राजाजी कह्यौ—अै कुण छै, पूछौ। तद दरवारी पूछियौ—अतीतां थे कुण छौ? ताहरा इणां कह्यौ—हरदान, रामदान कह्यौ ओळगू छा, कुंवरजी सूं मिळिया छा। ताहरा राजा गदगद कंठ होय कहै—

गयौ न जोवन वावडै[1], मुवा न जीवै कोय।
अणहूणी[2] हूणी नहीं, हुणी होय सो होय॥

राजा कह्यौ—सुन्दरदास, अै विचारा गहला[3] होय गया छै। उवे री मेहरवानगी रा चाकर था। पेटियौ दिरावौ, दिलासा करौ। ताहरा हरदान कह्यौ—महाराज, म्हे गहला कोय नहीं, वात चौकस[4] कहां छा। म्हे कुंवरजी सूं मिळ, वातां करि, ठावा समांचार लाया छा, सहनाण लाया छा। ताहरां सुन्दरदास अरज कीवी—महाराज अै वोलै तौ सावचेत छै। ऊंचा वोलाय[5] पूछीजे। दिलासा कीजे। ताहरा कह्यौ—थे जाणौ। तद ऊंचा वुलाय पूछियौ। ताहरा हरदान कह्यौ—पाटण सहर मांही अजैपाळ रै घरै छै। हाठ में वैठा नावो माडे था, तठै दीठा। पछै आप ही म्हानै वतळाया। रिपियो अेक म्हानै जीमण नै दीनौ अर कह्यौ—रात रा छानेसे[6] आवजो। ताहरा जीमण करि तुरत गया। घरै जाय अेकान्त वैठि, सारी वाता पूछी। फुरमायौ छै—डवी अेक सुजाण नायक री, हरड़ै अेक सवासेर री, समरणा अेकमुखी रुद्राक्ष री, कंठी अेक थांहरी, इतरी वसतां म्हारै महल में ढोलियै रै पगांतियै आळे में कळ छै, उण में सरव वसता छै। अर आळे री कूंची मोहण सेजवारदार कन्है छै। ताहरा मोहण पण हजूर खडो थौ तिण कह्यौ—महाराज, चौगस कूंची तौ म्हारै कन्है छै। ताहरा राजा कह्यौ—ओ तौ महल उवै दिन जड़ियौ थौ सो खोलियौ कोई नहीं सो साथै जावौ, महल खोलौ, आळो सभाळौ। ताहरा मोहण सेजवरदार कुंवर दैपाळदे नै साथ ले महल में गयौ। आळो खोलियौ[7], कळि किया। वसता च्यार नीसरी सो राजा रै हजूर ले आया। राजा वसता देखी, खूव खुस्याळ हुवौ। राजा हरदान नै वसतां रो पूछियौ—विणजारे री डवी तौ विणजारे नै दीजौ। थाहरी कंठी थें लीजौ,

---

[1]लौटे [2]होनी [3]पागल [4]होशियारी से [5]बुला कर
[6]चुपके से [7]खोला।

हरडै कारखाने राखज्यौ। मुमरणा दैपाळदे नै दीज्यौ। ताहरा कंठी हरदान नै दीवी। विणजारे नै डबी देणी। असवार दोय चढिया। कोस वीस सुजाण नायक नै जाय पहोच्या[1]। कह्यौ—सुजांण नायक, थानै राजाजी साहिब सताव पूठा बोलावै छै। जरूरी काम छै। ताहरां सुजांण चढि साथै हुवौ। तद राजा हरदान री खिदमत कराई। सिरपाव दियौ। डेरै नै सीख दीवी। तद डोढी बुलाय पूछियौ। हरदान सारी वात मालम कीवी। ताहरा राजलोक अरज कीवी—गुड़ बंटायजे, नौबतखांनो सरु कीजै। इणनै सिरपाव वधाई दिराजै। ताहरा सुन्दरदास हाथ जोड़ अरज कीवी—जे आ वात कासूं छै? कारज[2] तौ आपां आपणै हाथ सू कियौ छै। फेर अै नागी देखि आया, तिका पण वात चौकस। सहितांण[3] सब मिळिया पण डूबी वात छै। चार ही ठावा माणस मेल्ह साची खबर मंगावौ, चौकस करि आवै। राजा कह्यौ—अवल छै। ताहरा हरदान डेरै गयौ। दूसरे दिन फेर राजा दरवार मे आय बैठौ। साह सुन्दरदास, सारा अमराव मुत्सद्दी आय बैठा। हरदान, रामदान नै दरवार में बुलाया। भीतर राजलोक अर कुंवर विचित्र री माता ताकीदी करै छै। मसलत करि रह्या छै। आदमी मेलण वाळा री गिणती करि रह्या छै। इतरै नायक सुजांण पण आयौ। पागड़ा छाडि राजा नै मुजरो कियौ। राजा हरदान री कही वात सुजांण नायक आगै कही। डबी मगाय हाथ दीवी। ताहरा डबी देखि सुजाण कह्यौ—वात साची। डबी री गुम कुंवरजी बिना दूजै नै पण कोयनी। फेर सुजाण डोढी गयौ। ताहरां भीतर सू कहायौ—कुवर नै ले आवणो छै तौ आप पधारौ नही तौ कोई आवै नही। जै साहूकार नै आदमी आया री खबर हुई तौ कही परदेस मेल देसी। पछै क्योंही वटसी नही[4]। ताहरा वात सुणि नायक दरवार आयौ। ताहरा राजा साहब साह सुन्दरदास नै फुरमायौ—आदमी तैयार करौ। खरची दे विदा करौ। तद राजा सुजाण नायक नै कह्यौ—इसी तजवीज करा छां, पछै थाहरै कासू सलाह आवै? ताहरा सुजांण कहै—वात तो मैं ही हरदान नै भात-भांत[5] करि नै पूछी सो वात तौ सगळी ही सांची छै। भूठ तौ मतां जाणौ और डोढी मन्है बुलायौ थौ सो आ फुरमायी छै—भूठ तौ मतां जाणौ, पण दूजा रो कांम नही, यू अरज करै छै। ताहरा सुन्दरदास कह्यौ—ल्यावण नै तौ महाराज

---

[1]पहुँचे [2]क्रिया-कर्म [3]चिन्ह [4]कुछ भी हाथ नही लगेगा [5]तरह-तरह से।



पधारसी, पण माणस च्यार ठावा जाय साची खबर ले आवै। वात चौकस है, महाराज पधारसी। इवी वात छै, कदाचित झूठी होय जावै तो पाखतो रा सोरी तथा गोई इवी वात जाण कोई हससी। और कवरजी री देह तो आपणै हाथ सू फूकी छै। सारीखे अणुहारे सारो मुलक भरियो छै। ताहरां नायक कहै छै—

कहि मुहता पायो किणे, परमेसर रो पार।
जीवा मार जिवाडही, जिवत हंदा मार॥

साह सुन्दरदास, परमेस्वर री गति अपार छै। पण आपसू म्हारी अेक अरज छै— महाराज तैयारी करौ। श्री द्वारकाजी री यात्रा रो मजकूर करि, पाटण जाय उतरस्या। जे मन परचसी[1] तो कुवरजी नै ले आवसा, नही तो आपा जाय तीरथ परस आसां। वात कठाई[2] जाहिर मता करौ। ताहरां सुन्दरदास कह्यौ— आ वहोत आछी कही। तद महाराज सू पण अरज कर, तैयारी कराय, राजलोक पण अरज कराई। ताहरां महाराज पण कही—कुवर री मा अर कुवर रा महल दोना नै ही तैयार किया। सुन्दरदास नै मुलक रो सरब काम सौंपियौ। ताहरा साह अरज कीवी—कुवर दैपाळदे नै अठै राखौ ज्यू मुलक रो जापतो[3] हुवै। ताहरा राजा कह्यौ—दैपाळदे विना म्हारै घडी अेक सरै नही। वासली मरम सारी बात री थांहरै हाथ-हवालै छै।

राजा तैयार हुइयौ। असवार ५०० सू वहिर हुवौ। साथे कामदार काम रै वास्ते वेणीदास नै लियौ। चन्दन चौपदार, मोहण सेजवदार और भी कुवर रा सारा हजूरिया नै साथै लिया। ओळगू हरदान, गोगदान, रामदान, सिवदान च्यारा नै साथै लिया। राजा सुजाण नायक नै कह्यौ—थे पण साथै हालो[4]। सुजांण कही—बहोत भली वात छै। सुजाण रै साथै आदमी था तिकां नै कह्यौ— थे सारा ही जाय वाळद भेळा हुवौ। सवालाख नायक सू मुजरो कहिजौ—म्हनै महाराज अेक काम मेलियौ छै सो मास अेक लागसी। थे चिन्ता मता करजौ। वसत दाणो सावधानी सू वेचज्यौ। इतरो कहि आदमिया नै सीख दीवी।

आदमी दस कन्है राखिया। खरच खजानो साथ ले, राजा कनकरथ कूच कियौ सो महिने डेढ सू पाटण पूगौ। सहर रै नैकाळ[5] वडो तळाव हतौ।

---

[1]मानेगा [2]कही पर भी [3]प्रबंध [4]चलो [5]निकलने के रास्ते पर



ऊपरि व्रडो वाग थौ, तै वाग मे डेरो करि हरदान रामदान नै बोलायौ । जावौ खवर ले आवौ । तद हरदान राजा सू अरज कीवी और वोल्यौ—आदमी दोय कोई मानवर[1] दूजा साथे देवौ । ताहरा राजा चन्दण चौपदार और वेणीदान नै वुलाय साथे दियौ और फुरमायौ—कमरा खोल नै साथे जावौ। कुवर नै देख, चौकस वात कर आश्रो। ताहरां वेणीदास, चन्दण चौपदार, हरदान, रामदान ओळखवानै साथे ले वजार गयौ । जाय हाट रै वारणे आया थका खडा रहि देखा किया । देखत-पांण[2] वेणीदास कह्यौ—अरे, छै तौ सागे ही । जितरै औ हाट नजीक जाय उभा रह्या । तद देवीदास इणारे साम्हौ दीठौ । देखता ही सारा ही मुजरो कियौ । ताहरा साह अजैपाळ वोलियौ—थे कुण छौ ? देवीदास कह्यौ—कासू लेस्यौ ? वेणीदास कह्यौ—क्या कपडो, क्या दांत लेस्यां। ताहरा वेणीदास कह्यौ—वापजी, पेहली हाट मे दात कपड़ो छ तिकौ देखाळू[3] । ताहरा अजैपाळ साह कह्यौ—जावौ, वसत देखाळौ । साह रै हरदत्त रै हुण्डी रा रिपिया रहै छै, तिकै पण लेता आजौ । यू कहि देवीदास ऊठियौ । औ पण चारों साथि हुवा । दूसरी हाट मे जाय ऊभा । देवीदास सामने जोय मुळकियौ[4], कह्यौ—वेणीदास नू क्यो आयौ ? ताहरां वेणीदास जमी मे हाथ लगाय, सलाम करतौ पगा मे सिर दियौ । आप ऊचो उठाय छाती सू भीडे मिळियौ । चन्दण चौपदार तसलीम करतै-करतै जाय पगा मे मायो दियौ । आप पूठली थाप ऊचो लियौ । ओळगुवा मुजरो कियौ । ताहरा कुवर कह्यौ—हरदान थनै इतरो वरजियौ थौ, पण कह्यौ न लागौ । तद अरज कीवी—महाराज, इसी वात दीठा पछै क्यो कर रह्यौ जावै । अर फेर ही म्हे तौ थारा ही चाकर छा । था विना म्हारी आ दसा हुई सो आप दीठी हीज हुती । सु म्हारी कासू, राज सारै ही इसी दसा थी । जद म्हा जाय कह्यौ तद काई'क दसा सुधरी छै । हमे सारा वरसण करसी ताहरां सगळा रो रग फिरसी[5] । इतरी वतळावण करी । पछै वेणीदास नै वतळायौ—थे वेणीदास आया, रह्यौ न गयौ । वेणीदास हाथ जोड अरज कीवी—जे महाराज, इसी खुस्याळी सुणिया पछै क्यो कर रह्यौ जावै । आप मोटा छौ, विचार करि देखौ । इतरी सुण फेर पूछियौ छै—तौ सारा साथ

---

[1]मान और गभीरता वाले [2]देखते ही [3]दिखाऊँ [4]मुस्कराया

[5]सब मे परिवर्तन आयेगा ।

नै कुसळखेम[1] छै, राजा नै ? ताहरां [illegible] कीवी—आपरा आप दरसण हुवां सारा कुसळखेम, राजा। फेर फुरमायौ—महाराज, राजलोक, [illegible] और ही सारा चाकर खुस्याळ होसी। ताहरां वेणीदास कह्यौ—आज आपसे मिळण सूं सारा ही चाकर खुस्याळ होसी। कुंवर फुरमायो—आज [illegible] मिळीजसी[2]। महाराज नी कनुगाट विराजिया, अर हूं अठै बैठो। ताहरां चनण चोपदार अरज कीवी—इसी वात सुण महाराज [illegible] बैठा[3] रहै। महाराज, गाजी साहिब, देवाळदे, बहूजी साहिब, हजूरी, [illegible], [illegible] सगळा ही आया छै। और आपरा नोकर अठै कुण [illegible] छै, सो सेवा [illegible] करता रहै। ताहरां कुंवर कह्यौ—महाराज भी पधारिया ? वेणीदास कह्यौ—[illegible] छै। आप कह्यौ—आछी नही विचारी, बेविचार कियो। अठै डारिया छै ? ताहरां अरज कीवी—शहर रै कन्है तळाव छै, तिण पर बाग छै, तेथी आय [illegible] था। डेरा री तजवीज करै था। म्हानै नी फुरमायी—जे हरदान भाग जाय देखि चौकस करि आवौ। ताहरा कुंवर हसियौ—थानै हरदान रौ भरम्मो पडियो। वो हूम छै, जिण जाय कुठै बात नही हुवी, सो हरदान कुण बोलै। नही हरदान रै सरीखो साच रो बोलण वाळो मैं दूजो कठैई[4] नही देखू छू। पण थे हमें सताब आवजो, महाराज सूं मुजरो अरज करिजो, अर ठेरै बैठा विराजज्यो। हमे कोई नै उठे पासे[5] मता आवण देज्यो। घडी दोय रात गया हू हाते ही आऊ छू। थे काहलाई मता करज्यो। इतरो कहि सीख दीवी। आप पाछो हाटे[6] आयो। अजैपाळ साह पूछियो—कपडा दांत रो गोदो वणियो ? इण कह्यौ—कनूहेकनी काम वण गयो छै। इतरी कहि घरा नै ऊठियो।

वेणीदास, चनण चोपदार, हरदान, रामदान, च्यारो ही महाराज कन्है गया। मुजरो करि वधाई दीवी। राजा बहोत हरखवन्त हुवो। राणी अर कुंवर री राणी दोनू कनांत[7] रै कन्है आय बैठी। सुजाण नायक आयो। राजा सगळरव सारो हकीकत पूछी। वेणीदास, चन्दण, हरदान सारो गचक्कर हुयो सो मालम कियो अर अरज कीवी—हमार कोई आदमी कन्है आवण मता दीजो। घडी दोय गया

---

[1]कुशल-क्षेम [2]मिला जायगा [3]बैठे [4]कहीं पर [5]इधर-उधर [6]हाट पर [7]पर्दा।

हूं अेकलो आऊ छू । बात सुण राज अर राजलोक सारा ही राजी हुवा । हमे घड़ी च्यार दिन वासलो[1] थौ सो च्यार वरस बराबर हुवौ । खाणे-दाणे रो सगळौ जावतो साथे वेणीदास कियौ । लोक सारो खुस्याळ हुवौ फिरै छै । साह अजैपाळ देवीदास पण घरै जाय जीमण जीमिया । देवीदास सूने नौहरे जाय मन मे चिन्ता करै छै । श्री परमेस्वर रो ध्यान सुमरण करण लागौ । वहोत दीनता करि नै श्री भगवान नै अरज करण लागौ ।

कहि अब हू कैसे करू, दीनानाथ दयाळ[2] ।
लाज हमारी राखि प्रभु, बहुत दुखी है वाळ ।।

श्री नारायणजी प्रतिज्ञा राखौ । हमे कासू होसी ? आपकी राखी प्रतिज्ञा रहसी । वहोत अजीज करुणा कीवी । इण तरह साम हुई ।

ताहरा नोहरै मे सू ऊठि घरै आयौ । महल मे जाय स्त्री नै कह्यौ—परभात तौ हाट रो काम रह्यौ अर लोकां सू लेखो छै । वेळा नही सो दिन पाच अथवा सात रात री किसत करणी, लेखो पूरो करणौ छै । ताहरा बहू कही—भली बात । देवीदास कह्यौ—ऊपरले आळे मे लाल गत्ते री वही पडी छै सो उतार देवौ । बहू उतार दीवी । बही ले बहू जे कह्यौ—जावतौ राखजौ । इतरो कहि आप खिडकी रै मारग हुयौ वजार माही करि नै नैकाळ सहर सू होई, तळाव रो मारग लियौ । आगै राजा रो साथ पण मारग साम्ही जोय रह्यौ थौ, जितरै आवतौ[3] नजर पडियौ । महाराज सू चन्दण मालम कीवी—पधारै छै । सारो लोक दरवाजे कन्है आय ऊभौ रह्यौ । वेणीदास, चन्दण दोनू साम्हा आय मुजरो कियौ । खमा-खमा होय रही छै । जितरै सुजाण नायक दैपाळदे नै ल्याय पगा लगायौ । सुजाण सू बाथां घालि मिळियौ । बडी वतळावण[4] कीवी । भीतर पधारिया जठै सू महाराज नजर पडिया । तठै सू कुवर तसलीम करतौ-करतौ जाजम रै छेहडे गयौ । ताहरा राजा साम्है आयौ । कुवर जाय पावा मे मिर दियौ । राजा हाथ सू उठाय छाती सू लगाय लियौ, पण कुवर गदगद कठ होय गयौ । बोल तौ दोनां मे किही नै आयौ नही, पण छाती भरीज गई[5] । राजा हाथ खेच गादी कन्है वैसाणियौ । मुहडै ऊपर रूमाल फेरियौ । रूमाल सूं

---

[1] पिछला [2] दयालु [3] आता हुआ [4] वातचीत [5] छाती मे करुणा उमड पडी ।



आस्यां पूछी, साथ हेठै बैसाणियौ। पछै वेणीदास नै कह्यौ—मुहरां ल्यावौ। तद वेणीदास सताव सू मुहरां हाजर कीवी। राजा रूमाल ले कुवर ऊपर निछरावळ कीवी। सुजांण नायक सिरपेच कुवरजी रै सिर पर वाधियौ। मुहरा अेक सौ निछरावळ[1] कीवी। पछै सारो लोक निछरावळ कीवी। निछरावळ रो वडो ढिग मुहरा रिपियां रो हुवौ। ताहरां कुवरजी कह्यौ—वेणीदास औ ऊंची रखावौ। ताहरां फेर फुरमायौ—निछरावळ छै सो हरदान रामदान नै दिरावौ। ताहरा हरदान मुजरो करि कहै—

दाता पत दातार सूं, वाखाणो[2] कवियात।
कीरत ताहरी कनक सुत, इळ[3] माहे अखियात[4]॥

इसो कहि झोळो मांडि, सरब भेळी करि गाठ बांधी। यू वात करता नाजर हरिराम आयौ। कुवरजी सू मुजरो कियौ। कदीमी नाजर बूढो थौ सो कुवरजी ऊठि मिळिया, वडो अदब कियौ तद हरिराम कह्यौ—लोक सरब उवा ऊठौ। तद लोक सरब ऊठि ऊभा हुवा। मसालची पीळ चौसा नै गया। इतरै कुंवर री मा आई। कुवर ऊठि सलाम करतौ-करतौ मा रै पगा लागौ। मा ऊंचो उठायौ, कुवर रो माथो छाती सूं भीडियौ, मुहडे ऊपर हाथ फेरियौ। मां-वेटो गदगद कंठ हुवा। इसा नजर आवै जाणै काठ री पुतळी पड़ी छै खडा हीज रह्या। ताहरा राजा ऊठि, हाथ झालि, उरो खेंचि गादी कन्है आण वैसाणियौ[5]। कुवर री आखी राणी लुही मुंहडे ऊपरि हाथ फेरै छै। वडारण सांम्हौ जोयौ। ताहरा वडारण मोहरां री थैली हाथ मे दीवी। कुवर रै ऊपरि निछरावळ करि नाजर हरिराम रै हाथ मे दीवो। वात करि राणी जी धाय साम्हौ दीठौ। सगळां रा सरीर हरख री विरखा सू भीज गया।

घणै जतन सू कुवर नै घर लाय, भांत-भात रा भोजन कराया। चळू कियौ, पान अरोगियौ, अतर लगायौ। जितरै नाजर हरिराम आयौ। मुजरो कियौ, कह्यौ—कुवरजी, भीतर माजी वुलावै छै। कुवर ऊठि मां कन्है गयौ। मां उवारणा[6] लिया। धाय, वडारण, सहेली उवारणा लिया। मा कह्यौ—बेटा महाराज उतावळ करै छै। सतावी करि घरै हालौ। ताहरा कुवर कह्यौ—माजी वेगा ही हालस्या। आडी ऊभी वाता करि ऊठियौ। आपरै जनाने गयौ।

---

[1]वार-फेर [2]वखानो [3]दुनियां [4]प्रसिद्ध [5]वैठाया [6]वलैय्या ली।

उठै थारै अेक पिंड ऊपर हू' तौ रिसाणी होय अठै आय वैठी । लारै कूड साच करी । हमे तयारी करौ । लोक सरव उतावळ[1] करै छै । नायक री बाळद पण पड़ी छै । खरच लागै छै, नेट तौ व्यापारी छै । माल खराब होवै छै । बाळद रो काम तो वेटा थेही जाणौ छौ । अेक सुजाण रै पिंड ऊपर छते सू नायक रो जीव छै सो तौ म्हे साथ ले आया छा, तयारो करावौ । परभात जीमण जीमनै चढा । ताहरा कुवर कह्यौ—हा महाराज हालसूं[2] । इतरै थाळ आयौ, अरोगियौ, चळू कियौ[3], खसवू लगाई । कुवर नै मा रो बुलावौ आयौ, उठै गयौ। ताहरा मा पण आ हीज कही—हालण रै वासते सारो लोक आतुर छै। महाराज निपट काहल करै छै। थारो मुलाहिजो करि दबाय नै कहै न छै। तैसू सवारै[4] तौ हालिया सरसी । उठै कुवर आ हीज कही कै हालसां । इतरी कहि ऊठियौ, आपरी डोढी गयौ । सदामद आवता साम्हा सहल-महेली त्यू हीज मुजरो कियौ। भीतर ले गया । उठै पण इणहीज भाति मचकूर हुवौ सो साह अजैपाळ आपरै कन्है सुणियौ । सो साह आ मन मे विचारै छै—जे आज परभात वेटो कुसळे आवै तौ फेर निकळण कोयनी देऊ । फेर मन मे आ विचारै छै—कै हमारू[5] वड सू नीचै उतर नै हाथ पकड घरै ले जाऊ। फेर साह विचारी—जै कदाचित हू हाथ पकडियौ तौ हू' तौ अेकलो छू अर अै घणा छै । मनै मारि इयेनै परहौ ले जासी । तौ बाणिया बुद्धि करनै हिणा[6] तौ चुप रह जावणौ । परभात कुसळे घर आवै । यू विचार आपरा देव-दुरग सरब मनाया । इच्छा कीवी—परमेस्वरजी वेटे नै कुसळ ले आवौ । यू कहि वड़ सू उतर घरा नै वहिर हुवौ । पण साह रा पग घरा नै वहै नही । साह रा सत खोळा[7] होय गया । घरै आय सूतौ पण नीद नही आवै । चटपटी लागी ।

ओछै जळ मे माछळी, तडफड जेम हुवत ।
निसा गमाई नीठ सो, करणा दुख करन्त ॥

यू करता दुख सू दिन ऊगौ । ताहरा देवीदास ही लोटी झलाई[8] । तद साह पण कह्यौ—हू पण साथै चालू छू । बात करणी छै । दोनू दिसा गया । पाछा घरै आया । दातण कर, सापाडो कर, साह ठाकुरद्वारे जाय साथे दरसण किया,

---

[1]जल्दी [2]चलूंगा [3]मुह धोया [4]कल [5]अभी [6]इस समय
[7]हताश और भयभीत होना [8]पकड़ाई ।



भेंट कीवी, परदक्षणा दीवी । देवीदास सहस्रनाम रो पाठ कियौ । वहोत करुणा कीधी । गरीव प्रमाण दडवत करि, घर नै वहिर हुवा । घरा रोटी जीम वजार ग्रायौ । देवीदास नै भीनर वैसाणियौ । साह हाट रै वारणै[1] वैठो नामौ माडै छै ।

उठै वाग मे वैठे राजा कह्यौ—नेट कुवर ग्रापा कन्है ग्रावै छै । ग्रापा कहा, सु इण वात सू हालै नही । ग्रापा हालो[2] ज्यां जाय नै ले ग्रावां । ताहरा राजा कनकरथ घोडै ग्रसवार हुवौ । ग्रादमी वीस साथे ले, वेणीदास, चन्दण चौपदार साथे ले ग्राया । साह रै हाटे ग्राण खडा रह्या । राजा कुवर साम्हौ दीठौ । मुजरो कियौ । तद राजा कुवर नै कह्यौ—वेटा घरै हालौ । साथ सारो तैयार हुवौ छै । कूच री तयारी कराय ग्राया छा । जितरै साह ग्रजैपाळ वोलियौ—रै, तू वाप कैरो[3] ? कुणनै वेटो कहै छै ? इसो चोजो करै छै । तद राजा कह्यौ—साहजी, पारका वेटा थांरै कन्है रह सकै ज नही । च्यार दिन रिसाय[4] नै म्हांसू थाहरै ग्राय वैठौ तौ कोई गुनहो करियौ नही । थे भला माणस छौ तौ च्यारि दिन थाहरै घरे ग्राय रहियौ । थे राखियौ तौ मश्वरी[5] कीवी । हमे सागेई माईत पहोता क्योकर छोडसी । थे घणी करसो तौ थाहरी खाध[6] लेसौ, पण वेटो तौ ग्रावै नही । ताहरा साह कह्यौ—घरै जायोडौ[7] छै । इण री दाई मौजूद छै । धाय छै । म्हारै कवीले रा सारा जाणै छै । सगाई कर परणाया छै, नो ससार जाणै छै । छोटे सूं मोटो कियौ छै, सो सारो लोक जाणै छै । ताहरा राजा पण कह्यौ—इतरा थोक म्हारै पण हुवा छै, तिका सरव लोक पण जाणै छै । म्हारै पण इणरी धाय, वडारण, रमावणवाळी छोकरी, चाकर सरव मौजूद छै । साहजी थे जोर मत करौ । पारको[8] वेटो वेटो क्यूकर रहसी । ताहरा साह ऊकूकियौ, उतावळो वोलियौ—रै लोका देखौ, लाठी थकौ खोसै[9] छै । देखो रै राज राज छै, म्हारै वेटे रो घणी हुवौ छै । ताहरा वजार रा लोक सरव भेळा हुवा । कोतवाळ ग्राय ऊभो रह्यौ । ग्रौर पण राज रा माणस वजार मे फिरै था सो सरव ग्राय भेळा हुवा । वातां साभळी[10] । सु साह रो वेटो तौ सारा ही दीठौ । नानै[11] सू मोटो हुवौ । राजा नै कह्यौ—ठाकुरा, इये नै तौ म्हे भली

---

[1]दरवाजे पर [2]चलो [3]किसका [4]नाराज होकर [5]ग्रच्छी [6]खाने-पीने का खर्चा [7]जन्मा हुग्रा [8]पराया [9]छीनता है [10]सुनी [11]छोटे ।

भात जाणा छा। म्हारै हाथा मे मोटो हुवौ छै। ताहरा राजा कह्यौ—थे क्या न जाणौ, थाहरो सहर छै पण म्हारै सहर हालौ, छतीसो ओळखे[1] कै नही। म्हारै पण हाथा मे नानै सू मोटो हुवौ छै। फेर इण कुवर नै हीज पूछौ, आपै ठीक पडसी[2]। ताहरा कोटवाळ पूछियौ—क्योकर मोटियार, कासू कहै छै ? ताहरा कुवर कह्यौ—वेटो तौ इयां रो ही छू। तितरै साह कह्यौ—रै कपूत, कासू कहै छै, कैरो वेटो छै ? ताहरा फेर कह्यौ—थांहरो वेटो छू। ताहरा कोटवाळ कह्यौ—रै मोटियार, यू विचळियौ क्यू बोलै छै। भांग पीवी छै, किना वावळौ[3] हुवौ छै ? ताहरा देवीदास कह्यौ—न तौ मै बावळौ हुवौ छू अर न भाग पीवी छै। ताहरा कह्यौ—तू साची कह। तद देवीदास कह्यौ—गत त्यौ छै त्यौं छै। थाहनै इण वात री माहित नही। म्हारा दोनू ही बाप छै। तद कोटवाळ, पच हसिया—औ वड़ो तमासो। कह्यौ—जी औ तपावस म्हांसू नही होवै, राजाजी करसी। ताहरा कह्यौ—थे सगळा जांणौ छौ फेर झगड़ो नाथो च्यौ[4]। ताहरा कह्यौ—वेटो थांहरो छै। ताहरा राजा कह्यौ—वेटो साह रो छै, थे इयान कहौ छौ। हे पचो, थे पच कहावौ छौ, लोकायक मे पण पच परमेस्वर कहिजै छै। तैसू थे इसी वात क्यू कहौ छौ। वेटो म्हारो छै। वाणियो असखेल करै छै। ताहरा साह अजैपाळ कह्यौ—तौ चाल राजाजी पास। ताहरा राजा कह्यौ—हालौ, प्रथ्वी रो राजा छै, परमेस्वर रो अस छै। देख-तपावस[5] करसी। ताहरा दोनू ही कुवर नै ले राजा जी रै हालिया। सहर रो लोग घणौ साथै हुवौ छै। तमासगिरी कोटवाळ तौ इतरी कही—राजा रै पहिला ही हजूर जाय राजा सू मालम कियौ। इये तरह रो वजार मे कजियो छै। ताहरां राजा कह्यौ—कुण कूडौ, कुण साचो छै। तद कोटवाळ कह्यौ—बेटो साह रो छै। म्हा सारी ही वेटे नै पूछियौ, ताहरै उवौ कह्यौ—दोनू ही म्हारा बाप छै। तिकै सू गम नही कैरो वेटो छै। हू तौ इतरी छोडि हजूर आयौ। नेट हजूर ही आवसी। जितरै आवता नजरे पडिया। राजा नै चिन्ता ऊपजी। तितरै राजा कोटवाळ नै पूछियौ—रजपूत कुण छै, कठै रो छै, कुण जात रो छै, कासू नाम छै ? ताहरा कोटवाळ कह्यौ—जू तौ मैं पूछियौ कोयनी पण छै तौ असराफ।

---

[1]पहिचाने [2]अपनेआप सच्चाई का पता लग जायगा [3]बावला
[4]झगडा मोल लेते हो [5]पक्का निश्चय।

तरै तौ राजा रासो दीखै छै। पछै फेर महाराज देखिस्यी हीज। तितरै डोढी आया हीज। दरवारी भीतर मालम कीवी—साह अजैपाळ अर रजपूत अेक झगडता डोढी ऊपर आया छै। राजा कह्यौ—भीतर आवण द्यौ। पण रजपूत नै पूछौ—कुण छै, कठै रहै छै, कासू जात छै? तद राजा कनकरथ नै दरवारी कह्यौ—ठाकुर, थे कठै रहौ छौ, कासू नाम छै? ताहरा कनकरथ कह्यौ—कासू पूछ करौ? रजपूत छू, परदेसो छू। ताहरा दरवारी कह्यौ—थे झगडू छौ तौ तपावस[1] तौ होसी हीज पण हू हवालदार छू, थांहरै गाम, नाम, जातो रो कहि मालम करू? ताहरां राजा कह्यौ—जाती रो रजपूत छू, नाम म्हारो कनकरथ छै, वन्धुगढ रहू छू। ताहरां, वन्धुगढ रहै छै, चौपदार कह्यौ, किनां कही दूजै गाम रहौ छौ। तद दरवारी कह्यौ—कनकरथ तौ वन्धुगढ रो राजा छ। थाहरै मुलक मे राजा रो नाम उमराव रो ही नाम हुवै छै। ताहरां राजा कहै—रै दरवारी, राजा तौ राजा री जायगा छै। हू तौ झगडू छू। इतरै चन्दण चौपदार कह्यौ—दरवारजी, तुम तौ दरवार रै चाकर छौ, वडा राजसेवक हो इतरी ही गम नही राखौ? औ राजा कनकरथ वन्धुगढ रो धणो छै। दरवारी तसलीम करि डोढी गयौ। महाराज, वन्धुगढ रो राजा कनकरथ छै। इतरी सुणि पाटण रो राजा ब्रहदभाण सोलकी ऊठि साम्हौ आयौ। राजा कनकरथ पण घोडे सू उतर मिळियौ। भीतर पधारिया। गादी ऊपर वाह झाल वैसाणवा[2] लागा। ताहरा राजा कनकरथ कह्यौ—आप तखत विराजौ, हू तौ झगडू छू। म्हारो झगडो चूकसी[3] तठा पछै वैसस्या[4]। राजा ब्रहदभाण वडी मनवार कीवी पण राजा कनकरथ तौ साह रै कन्है ऊभो रहियौ। राजा दोना री हकीकत पूछी सो आगै झगडिया तिको हीज झगडो। ठीक काई पडै नही। तद राजा ब्रहदभाण कनकरथ नै कह्यौ—राजकुवर वाणियो न हुवै, इतरी तौ म्हे ही जाणा छा। पण आ वात क्योंकर हुवै? कनकरथ कह्यौ—कुवर नै पूछौ। ताहरा ब्रहदभांण कवर नै पूछियौ—तू किण रो वेटो छै। ताहरां कुवर कहै—

> औ दोनू छै माहरै[5], विळता दीसै वाप।
> कहौ राज क्यो करि हुवै, इणारो थाप उथाप॥

देवीदास कहै—अै दोनू ही म्हारा वाप छै। इण मे झूठ नही। ताहरा राजा

---

[1]पूछताछ [2]वैठाने को [3]झगडा निपटेगा [4]वैठेंगे [5]मेरे।

व्रहदभांण सुरा कर विचार मे लागौ । जे कासू कीजे । साह रो तौ बेटो चौकस पण राजा भी झूठो नही । वाणिये रै बेटे नै बेटो कहै नही । चोचो करै तौ चाकर कहै, का कोई वीजो ठहरावै । पण कोईक तौ कारण छै । इमो-विचार राजा कनकरथ नै अेकान्त मे ले पूछियौ—महाराज साच कहौ, नेठ तौ साच कह्या तपावस होसी । लारली सरब वात कही । राजा कनकरथ कहै—महाराज, म्हारै घरै जायौ[1], मोटो कियौ, राज-काज सरब सभाळियौ । राजा वीरभद्र सहरपुर रो-तठै परणायौ, सो उण मुलक रा सरब जाणै छै । कुवर रै बेटो जायौ, ताह पाछै म्हारै अभाग लार करणे गोठ तळाव गयौ थौ । तळाव माहे डूब गयौ थौ । वाहर निसरियौ कोई नही । पछै म्हारा ओळंगुवा सू छतो हुयौ[2] । लारला सरब सहिलांण[3] राजा आगे कह्या । तैसूं महाराज छै तौ सागे ही । इसो सुणि राजा इचरजवन्त[4] हुवौ । काई परमेस्वर री गति छै । राजा फेर साह नै कह्यौ—थारै किसी तरहा-साच कही । ताहरां साह कह्यौ—महाराज, हू कासू कहूं । इये नै तौ सारो सहर जाणै छै । दाई, धाय, भणावण वाळा[5] गुरु वीजा साराई अठै हीज छै । पूछ देखौ, कदेई कोस वाहर पण निकाळियौ कोयनी । कदै इणे पण म्हारो कथन न लोपियौ । अेक पलक म्हासू आघौ न रह्यौ । अेक दिन घडी दोय म्हारो कथन लोप ठाकुरद्वारै गयौ । घडी दोय उठै लागी, इतरै आघौ रह्यौ थौ । दूजो कदेई पण आघौ रह्यौ कोयनी । न कदेई अकह्यो[6] कियौ । तद राजा कह्यौ—रै मोटियार, अै कासू छै ? ताहरा देवीदास कह्यौ—महाराज, अै दोनूं पण साचा छै । वात त्यो छै त्यो छै । राजा व्रहदभाण ऊंचा-नीचा सारा ही नै ले रह्यौ पण वात अेक हीज कहै—

ताहरा राजा व्रहदभाण कह्यौ—देवीदास, आ तपावस म्हासू ना होवै । आ तौसू हीज होसी । तौनै इण वात री माहिन छै । ज्यो तू जाणै छै, त्यो सरब कह । तौनै थारे कुळ री आण[7] छै । श्री लक्ष्मीनारायणजी री आंण छै । ताहरा देवीदास कह्यौ—महाराज, मनै ठाकुरा री दुहाई मता देवौ । हू कांई कहू नही । राजा कह्यौ—तू क्यो नहीं कहै । ताहरा देवीदास कह्यौ—महाराज, आ वात मैं कही तौ इण घडी म्हारी देह छूट जामी । राजा अर साह दोनू दुखी होसी ।

---

[1]जन्मा [2]प्रकट हुआ [3]चिन्ह [4]आश्चर्यचकित [5]पढाने वाले [6]विना कहा [7]सौगन्ध ।

ताहरा राजा कह्यौ—थाहरी देह छूटसी तौ थाहरै वागे हू देह छोडीस। इनरो कहि ब्रहदभाण भारो लेनै संकळप घालियौ[1]। यू करता राजा दिम्नला[2], साहूकार दिमला आदमिया पाच सौ रो मरण रो सकळप हुवौ। नेम वातियौ। ताहरा देवीदास कह्यौ—तौ महाराज, गगासौरम माता नै ऊठ बहिर हुवौ।

राजा लारली जावता करि नै बहिर हुवौ। जाय पहुता। सगळा मिनान-सपाडो करै छै। इतरै श्री भगवन्तजी श्री लिछमीजी नै फुरमायौ—लिछमीजी, देखौ पलक दरियाव रो तमासो नीवडै[3] छै। ताहरा श्री लिछमीजी अरज कोवी—ओ सरब तमासो थाहरो हीज छै। पण अेक वडो इचरज छै—ये तौ अेक कौडो रा हुव दांन लेवौ छौ। अै तौ पाच सौ आदमी था निमित्त तय्यार हुवा छै। सकळप भरता यू कहै छै—आ देही श्री ठाकुरजी निमित्त छै। और इणा लारै आदमी सौ च्यार बीजा ही मरसी। ब्राह्मण गऊवा रो संकळप भरियौ सो पण कोई देवै नही। तैंरो पण प्रायचित[4] थांनै ही लागसी। आगै तौ इसो परिग्रह कदेई लगायौ न थौ। अवकै तौ टळनी दीसै न छै। अर तैरी साह नही करसां तौ भगतविछळ[5] विरुद्ध छै सो लजावसी। अर थे यू फुरमावौ छौ—जे म्हानै साच प्यारो छै तौ अै दोनू ही साचा झगडै छै। सांच ऊपर दोनू ही मरसी। ताहरा साच प्यारो कठामू रहसी। इसी तरह लिछमीजी भाति-भाति करि अरज श्री भगवान नै कोवी—अठै राजा ब्रहदभाण हजार बीस ब्राह्मण नै भोजन, गाया हजार दोय, हाथी, घोडा रो सकळप भरियौ। राजा कनकरथ पण ब्राह्मण हजार बीस, गाय हजार च्यार, धरती, खेडा, हाथी अर आपरी देह रो सकळप भरियौ।

इतरै मे देवीदास आपरै देह रो सकळप भरण लागौ। ताहरा राजा ब्रहद-भांण कह्यौ—तू ही काईक[6] पुण्य कर। तद देवीदास कह्यौ—के घर री पुण्य करूं? राजा रै घर रो पुण्य करू तौ साह वेराजी[7] हुवै। झूठो हुवौ तैंसू कैरै पुण्य कुण करावै। भगवान निमित्त पुण्य भगवान ही करावै। उणारी हमार तौ आईज इच्छा छै। इतरो विग्रह करावसी। इसा करुणा रा वचन कहि घणी दीनता करी। श्री ठाकुरजी रै उतारू चन्दण लगायौ। तुळछीदळ माथै मेलियौ। चरणाम्रत लियौ अर हमे वात पलक दरियाव री कही। ज्यू वांसे हुई तिका

---

[1]सकल्प लिया [2]पक्ष वाले [3]निपटता [4]प्रायश्चित्त [5]भक्तवत्सल
[6]कुछ न कुछ [7]नाराज

सरव कही। अर कह्यौ—हमे श्री भगवान करै सो होई। इतरो कह अबोलो[1] रह्यौ। जितरै ऊपरा सू श्री ठाकुरजी री अवाज हुई अर देवीदास ऊपर सुदरसण चक्र पडियौ सो दोय पिंड होय गया। दोनू अेक सरीखा दीसै छै। नाहरा ब्रहदभांण इसो तमासो देखि नै श्री भगवान निमित्त नमस्कार करि नै कहै—

दोहा

तूं भगवन्त अनन्त गति, निसतारण[2] नित भेव।
सम्पति गति गुभ सुख सुमति, दायक लायक देव ॥

सोरठा

भगवत तारी भीड, करुणा करि कीधी कृपा।
तक आया जो तीर, तिरिया तिकै ससार तट ॥

राजा इसी असतूती करी छै। अेक रा दोय सरीर हुवा था तिका मे अेक राजा कनकरथ रै हाथ सौंपियौ, अेक साह अजैपाळ रै हाथ सौंपियौ। बड़ो हरख, वडी खुस्याळी हुई।

राजा कनकरथ नै राजा ब्रहदभाण कह्यौ—कुवर नै म्हारी कुवरी म्हा दीवी। विवाह करनै पछै थानै सीख देवा। मुत्सद्दिया नै कहि डेरै रो जावतो करायौ। साह अजैपाळ घरै आय घणी खैरियत कीवी। वधाई वाटी। दान, पुण्य, भोजन ब्राह्मणा नै कराया। राजा कनकरथ पण सारा सहर रा ब्राह्मण जीमाया। गौ-दान री दक्षणा दीवी। राजा ब्रहदभाण पण सुभ लगन जोवाय, वडे हरख सू आपरी कुवरी परणाई। भगतां पाच तथा सात भली तरह सू करी। घणा चारण, भाट, मगत जणा नै राजी किया। घणी रग-रळियायत[3] हुई। राजा ब्रहदभाण घणे आडवर सू सीख दीवी। राजा कनकरथ कूच करि, पहले डेरै सूं वधाईदार बन्धुगढ नै मेलिया। फेर ही डेरा-डेरा सू कासीद मेलाया। यू करता पण राजा कनकरथ जाय पहुता[4]। वधुगढ वधाई वागी। नगर सारो हरखवन्त[5] हुवौ। राजा वन्धुगढ़ सौ कोस च्यार वाग माहे उतारिया। तै वाग सारा साहूकार अमराव साम्हा आया। निछरावळ हुई। वड़ो हरख हुवौ। सैदानी[6] वाजता राजा सहर भीतर आया। आगे सहर रा घर-

---

[1]चुप [2]निस्तार करने वाला [3]हसी-खुशी [4]पहुँचे [5]हर्षित [6]वाद्य।

वाट, वजार-हाट भली प्रकार सिणगारिया[1]। गुवाड-गुवाड़, घर-घर ऊपर लुगाया वधाई रा वधावा मागळीक गावै छै। हाथिया ऊपर रिपिया-मुहरा री थैली सू मूठी भरि-भरि उछाळै छै। घणै हरख सू महला दाखिल हुवा। परभात सू साह सुन्दरदास नै फुरमायौ—जितरा ब्राह्मण सहर देस मे तिका नै भोजन-दिखणा[2] देवौ। ताहरा सुन्दरदास सरव ब्राह्मण लाय जिमावै। ब्राह्मण जीमै छै। गळवा दे सरव ब्राह्मण संतोखिया। हिवै राजा कनकरथ, विचित्र कुंवर सुख सू रहै। वन्धुगढ रो राज करै। इसी तरह सू राजा कनकरथ रै, साह अजैपाळ रै, कुवर विचित्र अनै देवीदास रै श्री भगवांन सहाय हुवा, सुख-कल्याण हुवा, नौ सरव भक्तजन रै, सरव लोक-ससार मे कल्याण करै।

श्री भगवांन आसा पलक दरियाव छै।

पलक दरियाव री वात समाप्त।

---

[1]सजाये [2]दक्षिणा।

सूरे खींवे कान्धलोत री वात

राठोड सूरो खीवो, कांधळजी रा वेटा, मोहिला रा दोहिता। सो वडा सूर, धीर-वीर राजपूत, चोसठ-आखडी-निवाहणहार[1], खाग त्याग पूरा काछ-वाच निस्कळंक[2], सरणाई-साधार[3], पर-भोम-पचायण[4], पार की छटी जागै[5], इण भात रा दातार जूंझार। सो इतरै गावा री ओपत—परसनेड, कोटडी, छतासर, लाछडसर, कीतासर, भूमासर, लालासर, आलसर, वीनासर—इतरा गांवां रो हासल खायजे। वाकी पैली वरती रो कीप धाडो आवै। खडेलो, मनोहरपुर, कामली, रेवासो, दांतो, झाडोद री पट्टी री दाळ आवै। पूनिये रै परगने मे हळ-गणत-आवै[6]। डीडवाणे रा साहूकारा री वरसोत आवै। परवतसर चौरासी मारोठ री दाळ आवै और च्यारूं पासा रो माल खायजे। वडा झोकाई[7]। दिल्ली सूं उरै-उरै मुलक रो धाडो हमेसा करै। मुलतान रै मारग रो धाडो आवै सो रात-दिन असवार ओठी[8] दौडवो करै। रैवारियां रा दो सौ ऊठ इणहीज काम ऊपर लागिया रहै छै। मीणा रा सौ ऊठ, पचास घोडा तिका इणहीज काम ऊपर रहै।

---

[1]चौसठ प्रतिज्ञाएं निवाहने वाले (विस्तार के लिए देखिये—राजस्थानी साहित्य सग्रह, पृष्ठ १६) [2]चरित्र (जितेन्द्रिय) और वचन से शुद्ध [3]शरणागत की रक्षा करने वाला [4]शत्रुओ की भूमि मे सिंह सदृश्य [5]दूसरो की विपत्ति मे सहायक [6]मुफ्त मे हल आते है [7]आतकवान [8]सुतर-सवार।

च्यारू तरफां रो माल आवै सो खावै, चूपटा कीजे, ओचूळा[1] व्है। साहा तीन सौ राजपूत तिका खाप-खाप रा सास्ता कन्है रहै। दोय सौ घोडा पायगा मांही रहै अर आडो ही दारगीर दोय सौ से कम नही। सौ ऊठ वड़ा जमायत का तबेले मे रहै। सो इण वार तौ ठाकुराई वधारी, गहराई पकडी। सखरो राजपूत, सखरो घोडो, सो हर भाति कर लीजे। सखरो हथियार लीजे, वकसीसा राजपूतां नू कीजे, पोसाखा दीजे। वरस दिन मे दोय सावा सारे ही लोग नू दरबार सू कीजे। अेक तौ दसराहे ऊपर आसोज में अर दूजो होळी री परभात फागण मे। सो पोसाक इसी हुवै जिकी मे सरदार रजपूत री अजाण नै गम नही पडै। सो इण भात सू साहिवो करै—

सूरो खींवो वीर अति, सोभाळो[2] दातार।
हीमत धारी मनगरा, हुवा न होणहार॥

पूठौ भारी रावजी श्री वीकोजी रो। ननिहाळ मोहिला रै सो भारी, तिण सू आसंग पण किही री नही पड़ै। पाधर रा वादसाह वड़ा भोकाई सो अेक वरस इहा गावा मे खड दो खड सो हुवौ।

अर राजूखा खोखर ढीगसर रहै, सोही पण मोहिलां रो दोहितौ। सगो ही मौसीहाई[3] भाई लागै। उण री पण वडी ही साहिवी[4]। ऊ पण वड़ो राजपूत, घणां भाइयां रो भाई, वडो सिरदार सो उण सू मिळणे री इच्छा करी। उठै घाण पण घणौ, तिण सू उठै री सूरत कर हालिया सो उठै जाय पहुंचिया। कोटड़ी आगै जाय पायडा छोडिया। भीतर नू खवर हुई। राजूखा दरबार मांही बैठो थौ सो सुणता ही वहोत राजी हुवौ। इतरा मे औ सरदार भीतर नू गया। राजूखां ऊठ साम्हो आय नै मिल्यौ। हाथ भाल विछायत ऊपर जाय वैठौ। सूरे नू हाथ भाल गादी ऊपर बैठायौ। खीवे सू घणी मनुहार कीवी पण उवौ गादी ऊपर नही वैठियौ। गादी सू ही लगतौ म्होडा आगे वैठियौ। राजूखां मनुहारा घणी करणे लागियौ। भाया वडी वात कीवी, मिळिया, मन मे मिळणे री घणी चाह थी। दिन पाच सात रहौ, वाता करस्या। आदमियां नू कहणे लागियौ—घोडा वाहरली कोटडी लेय जावौ। घास-पाणी, मांचा-मेखा रो जापतो करौ। सो आदमी घोडा नू लेय कर दरवाजा सू बाहर नीसरिया।

[1]मस्त [2]कीर्तिवान [3]मौसी का बेटा [4]हुकूमत।

राजूखा इहा सरदारा सू बाता करै छै। खीवे री कमर मांही सखरा चवदै तीर सो केसरिया कमरबध सू बधा छै। तिकारी भालोड[1] आगले पासे सू बाहर दीसै छै भळभळाट करती। इया नू खीवो सातवें दिन रै सातवें दिन ओपणी सू ओपणावै छै तीसू भळका मारै छै। राजूखा रै एक भतीजो आठ या दस वरसा रो छै। मुहडे लाड[2] लगायोडौ, वडो लाड कुमायौ। उणरो बाप कजिये मे काम आयौ थौ। तीसू उवौ टावर रात-दिन राजूखा कन्है रहै, भेळै जीम्है, दरवार मे खोळै माही सूतौ रहै। किही रै काधे चढै, किही रा हाथ खैचे, चपळता आसगगिरी करवो करै। सो लोग राजूखा री खुसामद रा पगा सहवो करै। टावर नै किही कहै-सुणै नही। सगळा हाथा ऊपर विनोद करावो करै। टावर लाडसू बडो अनीतौ[3]। उवौ राजूखा रै खोळै मे सूतो थौ। ज्यू ही खीवे रा भालका री चमक दीठी त्यू ही तुरत ऊठ उठै आय अजाणजखरो[4] होळै सी अेक तीर पकड़ खैच्यौ। सो तीर खैचता भाले सू कमरबन्धो बढ गयौ सो सारा तीर खळक नै पाखती पड़िया। इतरै मे खीवे रै हाथ मे कामडी[5] थी सो अपूठे हाथ सू वाही सो टावर कूकियौ। सो लोग दरवारी सारा हा-हा करि ऊठिया। टावर नू संभाळ लियौ। खीवो तीर सभाळ ऊभौ हुवौ। ताहरा सारा ऊठ ऊभा हुइया। राजूखा सूरे रो हाथ झाल कहणे लागियौ—टावर भोळो थौ, भला ही और पाच-सात लगावौ पण रीस मता करौ। पण खीवो तौ ऊठते ही जे वहिर हुवौ सो जाणे काळै सैनक पूछ दविया फुफकारा मारै त्यू ऊभौ-ऊभौ सूसाडा मारै छै, होठ भसै[6] छै। सूरो घणौ सयाणो[7] ठाकुर थौ सो राजूखा नै कहणे लागियौ छै—

खीवो रिसगारो[8] घणौ, हू समझाऊ जाय।
फिकर करो ना ठाकुरा, मन मंह धीरज लाय॥

सो सूरो खोवे कन्है आय कहणे लागियौ—

ना रिख करणौ है भलो, धीर धारिये चित्त।
भोळो टावर वेसमझ, ग्यान न वीरै चित्त॥

तीसू हमे डेरै हालौ। खीवो कही—

---

[1]तीर के आगे का हिस्सा [2]प्यार [3]बदमाश [4]अचानक ही [5]बेत [6]काटता है [7]सयाना [8]गुस्से वाला।

भाला रे दरबार मे, रहणो वाजिब नांहि ।
पांणी नर ई ठाव पर, मैं पीऊं इण नांहि ॥

अठै रह कासू वफादारी लेवस्यां । हालो गग हालां । सो सूरो इनडो इण सीदि रो दीनो, जे नगा सू विकार पैदा हो विगाड़ करै । जद सूरो हाट भाल सेव वहिर हुवो सो दरवाजे जाता राजूखा रा आदमी, गुलाडी-परवाण आय पहूंचिया । रावळ श्री कायळजी री सोगन[1] दिरा मना गहिया । पूठै न राजूखा आइयौ, हाथ भाल कही—अेक दोय दिन रहू पछै नटि जाज्यो, नहीं तो आज रात रह परभात रा चट जाज्यो । मिजमानी जीम जावजे । इण तरह मता जावां । तद सूरो तो घणी ही जाणी जे राजूखा भतीजां सरदार इतरी आजोजी-नोहरा करै छै तो टिकणो वाजिब छै पण सीवो अडायत[2] सूरो सो रहै नही । तद राजूखा कही—इब नाराज होय म्हारी विगो घोड़ियां काडस्यौ[3] । सूरो आडी वातां घात आफत टाळी । पण दरवाजे माहे कच करतां अेक घडी लागी । सो दरवाजे रै अेक गहभे राजूखा री नवारी री घोड़ी खड़ी, सो चंवर ढाल ऊभी छै । पगा माही सवा मण लोह री गटी[4] छै । चाकर रा मांचा दोनू पासे छै । सो घोडी नू सीवो रयांत कर दीठी—इसी दूसरी घोडी मुलक मे नही । जैसो ही डील, जैसो ही रूप, जैसो ही पोत, मही जैसो ही वळ, जैसो ही कुम्मैत रग, वाळी गाठा सो पिरथवी रूप कच्छ री नीपनी, दीणोद रै मठरा जोगी रै घर री । सो ककडियाळा रै जाग जोगी नू घोडी दीवी थी । तेरै पेट री उठै घोडी सूवर[5] आई थी सो जोगिया कन्है राजूखा रा आदमी मोल लाया था । रिपिया हजार ठेट देय लाया था । घोडी इसी नीवडी सो मांणस कासू तारीफ करे, घोडी री तारीफ सूरज करै । इसी घोडी सो तीनू सीवो रयांत कर दीठी । सीवे री नजर घोडी माही गड गई ।

अै सरदार राम-राम कर घरै आया । राजूखां दरबार जाय कर वैठियो । भतीजे रै तावे लोग था तिकां ऊपर रीस करणे लागियो, जे इसा बेवकूफ टावर नू दरबार मांही ल्यायौ जे तौ नीमडी[6] पण इब फेर दरबार मे मना लावज्यो ।

सूरो सीवो घर आय पहुंचिया जद सीवो कही—भाभाजी, एक घोडी म्हिये रे

---

[1]सौगन्ध [2]अड़ने वाला [3]निकालोगे, चुराओगे [4]स्याही लिये लाल रग [5]गर्भ सहित [6]निवटी ।

दरवाजे माही खडी थी सो आप दीठी कै नही ? सूरे कही—दीठी तौ सही पण विसेस ख्यांत नही कीवी। खीवो कही—घोडो मैं नीका दोठी। थे तौ वाता रै घमझोळे मांही था, पण हू दीठी थी। घोडी पिरथी रो रूप छै। इसी घोडी माझ माही नही। सो आ घोडी तो हर भात कर ही मगवाणी। इसो ही कोई आंपणी परघे रै मांही छै जे इण घोडी नै लेय आवै। तद भूवर नांम अेक मीणो थौ सो उण कही—ठाकुरां, जे घोडी लेय आऊ तौ कासू इनाम पाऊ ? तौ सूरो कही—तू कहसी सो देस्या। भूवर कही—खरची दिरावौ। ताहरा साठ रिपिया दिराया सो पल्ले वांध, अतीत रो भेग[1] धर वहिर हुवौ सो ढीगसर जाय पहुचियौ। तळाव ऊपर जाय वैठियौ, पगा रै पट्टा वाधिया, मोकळी[2] हळद लगाय नीम रा पत्ता लेय वैठौ। दोनू पग वांधिया दिन अेक तौ वैठो रहियौ। वीजे दिन राजूखां री पायगा रा घोडा पाणी पीवणे नू आया। चाकर चढिया छै सो घोड़ां नू पाणी पाय सपडाय[3] इण कन्है आय'र वैठिया, हुक्को पीयौ। कहणे लागिया—स्यामी, थारे पगां रे कासूं हुवौ ? तद उण कही—वावाजी वाळिया छै, महिना दोय मरता नूं हुवा। जद इहां चाकरां कही—तू गांव मांही हाल, तौनू उठै राखस्या, खाणे नू देस्या, पाटा वांधस्या, थारो जापतो जे करस्या। सुण कर भूवर कही—गाव माहीं तौ हू कोई आऊ नही। म्हारे झाडे री मुसकिल, वीजो तळाव पर पाणी रो निवास छै, कोई नीम उतार दे, कोई हळद तेल आण देवै, पाळ रै नीचै हूं झाडे फिर आऊं। सो अठे ही अेक झोपडी वांध देवौ तौ पड़ियौ रहू, थानू असीस देऊं। तद वीजे दिन चाकरां घोडा रा चारा रा पूळा केही खूटा लगाय दिया। झूपडो वांध दियौ। रोटी टुकडो आण के देवै सो ऊचो राखे, मेल्है। रात रा आपरो नाणो भाज, आटो, घी, सकर आण चूरमो कर खावै अर वाकी रो परसात रै पगा ऊचो मेल्ह कर राखै। तम्वाखू मोकळी डावी भरी रहै। चाकर घोडा नू पाणो पाय, न्हवाय आय वैठा-वैठा तम्वाखूडा पीवै, गल्हा करवो करै, अमल-तम्वाखू खाणे नू मोकळो आण देवै सो महिना अढाई उठै इण तरै रहियौ। अेक दिन पाछला पहर रा चाकर चंवर ढाल री गट्टी खोल, कायजे कर, च्यार जामा कर, असवार होय, तळाव सपडावण नू ल्यायौ। सो घोडी उछळती, लाहा भरती आवै छै सो जाणै आकास नू ही ठोकरा मारती आवै छै। सो चाकर आय इणरी झोपडी कन्है होकारौ[4] कियौ। च्यारू पग

---

[1]भेष [2]काफी [3]स्नान करा कर [4]आवाज।

घोडी इसा रोपिया जाणजे मेखा[1] गाड़ी। चाकर उतर घोडी नू ठंडी घाली, घडी एक बैठो वातां करी। तद इण स्यामी पूछियौ—जे बावाजी आज तौ दूजो घोडो लाया छौ। ओ घोड़ो तौ आगे कदे लाया नहीं था। तद चाकर कही—घोडो नही आ घोडी चवर ढाल छै। खान रै सवारी करणे री खास घोड़ी छै। तौ स्यामी कहो—बावा हम क्या जाणे, हमारे तौ घोड़ा घोडी सगळा[2] इकसार[3] छै। दीने तौ आछी छै। चाकर घोडी नू ठंडी घाल तळाव माही लेय वडियौ, पांणी पायौ, पाछै हाथ लगाय अव्वल तरह सू संपडाई। संपडाय बाहर आण खडी कीवी। वाग[4] स्यामी नू झळावणे[5] लागियौ—जे थे वाग झाले रहौ तौ हू सापड़ू। स्यामी कही—ना बावा, हू लूलो-लंगड़ो, मोनूं मार नाखै। तू थारो नू जाय वाथ आ, पछै सांपड जे, चाहे सुवारे सापडजे, म्हारी तौ आसग नही। चाकर कहो—देख तौ सही, घोड़ी निपट सूधी छै। तोनूं धक्को ही जे नही देवै। तद स्यामी कही—बावा आ घोडी मोनूं घीस ले जाय। आगै तौ मरियौ मो पडियौ ही छूं, इब और क्यू मारै छै? तद चाकर घोडी च्यार जामे कर स्यामी नू वाथ भर उठाय घोडी पर बैठायौ नो स्यामी हाय-हाय कूकणे लाग्यौ। कहणे लाग्यौ—जे मोनू मारै ही तौ हाथ सू मार, तरवार सू मार, पण कुमोत क्यूकर मारै छै। पण चाकर अेक नही सुणी। चट वाग झलाय जाय तळाव में पडियौ और सनान करणे लागियौ। इतरे दिन पाछलो घडी अेक आ रहियौ।

उण पाणी में डुवको मारी। इण घोडी नू लात लगाई॥

ऊ नीसर जावै तौ घोडी नही दीसी। जद नीसर दौड पाळ चढियौ सो देखै तौ घोड़ी अजमेर सांम्ही जावै छै सो खेह रो कुळियौ[6] दीसणे-लागियौ। तद चाकर घबराय दौड कर दरबार माही आयौ, खान नू अरज करी—हजूर, घोड़ी नूं स्यामी लेय गयौ। सगळो दरबार रो लोग हा-हां करणे लागियौ। घोडा नू जीण कराणे लाग्या। खान कहो—क्यू घोड़ा मारो छौ, उणनू कोई पहुंचे ही नही। हमे खबर मगाबो सो जिणरी जायगा गई हुवै, उणसू ही कजियो करस्या। चाकर नू पूछी—किसी तरफ वो घोडी लेय गयौ छै। तद चाकर कही—अजमेर साम्हो गयौ।

उठी भूधर कोस दोय जाय दिखणाधू पाछी वाळी सो रात-रात कढ, घडी

---

[1]कीलें [2]सभी [3]अेकसी [4]लगाम [5]पकडाने [6]धूल का गोटा।

च्यार दिन चढता परसनेउ श्रायौ। खीवे सू श्राय मुजरो कियौ। बहोत राजी होय खीवो ऊठ वाथा भर कर मिळियौ। सूरे कन्है लेय गया सो सूरो पण घणौ राजी हुवौ। इनाम माही गाव दियौ, भाई कहणे लागिया। खीवा श्रापरा पोसाक, कडा, मोती उतार कर राजी होय इनाम मे दिया। खीबो श्राप घोडी ऊपर चढ कर फेरी सो जांणै इब[1] हाल ठाण पर खोली छै। लाहा च्यार पाच भर हाथ पचास रै परै जाय ऊभी रही। सूरेजी श्रेक सौ रिपिया घोडी ऊपर निछरावळ कर गरीब फकीरा नू बाटिया। घोडी नू पायगा मे वधाई। सवा सेर घिरत, दोय सेर चीणी खाड, च्यार सेर गेहू रो श्राटो परभात रा, श्रायण री दस सेर चावळा री खीचड़ी, श्रेक सेर घिरत इतरी मोताद नित की करदी। मसालो वत्तीसो कराय थैलो भर राखियौ सो परभात दिन ऊगियां पहला ही दीजै। इण भात घोडी रो जावतौ कर दियौ। राजूखा रातो-रात दोय-दोय माणस दिसा दिसी मेलिया। अजमेर कान्ही गया तिका तौ चौरासी सू लेय मेवाड़, खारी रो ढाहो, वून्दी, माळवो सारो जोयौ। श्रेक जोडी ढूढाड, मथराजी, श्रागरो पूरब दिसली गगा पार ताई जोइयौ। श्रेकण जोडी मारवाड़ सू लगाय गुजरात कच्छ तक श्राखा मडळ तांई फिरिया। जोडी श्रेक पस्चिम दिसा जयसलमेर थटो मुलतान सू लाहोर माही कर श्राया पण घोडी री कठै ही सुध नही हुई। महिना सात श्राठ मे सारै फिर श्राया। रिपिया सात श्राठ सौ खरच रा खाय, पाछा श्राय खान नू कह्यौ—जे घोडी कठै पाई नही। सोध पण नही हुई। खान इसी खबर सुण बहोत बेदिलगीर हुवौ। श्राज तक तौ पिंड[2] मे जोस थौ। जठै कठै खरी होसी उठै लड़णे वाळी जायगा तौ लडस्या-भिडस्या। बीजी ही जायगा छै तौ चोर लगायस्या सो श्राज सारो गरब गळियौ[3]। श्राकास मे तौ कोई चढ ही नही गई। छै तौ जमी रै ही ऊपर पण अजळ-दाणोपांणी। साई री इसी ही रजा छै। इत्र कहि वेंटो वरस बीस रो कन्है वैठो थौ तिणरा सिर ऊपर श्रापरा सिर ऊपर सू पाघ उतार मेल्ह दीवी। कन्है दुपट्टो थौ तीनू फाड गळे मे घाल फकीरी लोवी। सगळा नौकर, कामदार अरज करी—फेर परगने ठावा माणस मेल कर पतो लगास्या। हर भात खबर लेय श्रावसी। खान साहिब खमा करौ, इसी क्यूकर विचारौ। श्रौर जे घोडो मर गई छै तौ ठावी

---

[1]श्रभी [2]शरीर [3]गर्व समाप्त हुश्रा।

ठौड कर उणसू खेटो[1] करस्यां और घोडी फेर मोल मंगायस्या। तद खान कही—जे था वात तौ दुरस्त कही, पण इसी घोडी फेर होणी न मिळणी। इणरी मा दरियाव कन्है चरै थी सो दरियायी घोडा री औळाद थी। आ घोडी बीजा घोड़ा री औळाद नही थी। इयेरौ[2] वळ पराक्रम माटीपणी जमी रै घोडा रो नही थौ। फेर लोगा मे नामोसी दिखाई। आज पहला मेरी कठै ही नामोसी न हुई। इब भाई पडोसी हस सी, कहसी—जे सवारी री घोड़ी ही नही रह सकी। घोडी री तौ समझा पण म्हारी या तपस्या क्यू क्षीण हुई। तीसू कै तौ किही सू कजियो हो तौ राड कर काम आऊ, नही तौ फकीरी लेय ऊठ जायस्यू। रग इसो नजर आयौ जे मैं रहू छू तौ बैठिया म्हारो विगाड़ हुवै छै। तपस्या कम पडी तीसू मोनू मत बरजौ। हू देस रो, लोक रो बुरो म्हारो ही आख सू कासू देखू, कान सू कासू सुणू मोनू आ दरस आई छै। तीसू थे सगळा भला मांणस छौ, पखा[3] पूरा छौ, कुरसीवध छौ, सामधरमी छौ, लडके रै मुह आगै चाकरी अव्वल तरह करज्यौ। घरतीघर रो जापतो राखज्यौ। पाखती रा भोमिया, ग्रासिया सू देखौ जिसो ही रग वरतज्यौ। अर वेटा नू कही—आ माणसा रो जसो हू मान करतौ तीसू सवायौ काण-कुरव राखज्यौ। जी कन्है आछा मांणस, आछौ सो घोडो छै सो ही ठाकुर छै—

कर घोडा रजपूत कर, देय अदोसा दोस।
भावै जे नू रेत कर, भावै जे नू खोस॥

इण भात सारा नू सीख सलाह दे वहिर हुवौ सो पहलां तौ अजमेर गयौ सो पहला तौ खाजेजी री जारत[4] कीवी, देग कबूल कीवी। फेर बीटली चढ मीराजी री जारत कीवी। उठै कबूल सीरणी कर तळहटी गयौ। दिन पांच सात उठै रह बूदी गयौ। उठै छैलमन छैलतन पीरां री जारत कीवी। उहा छैला री कबूलायत कर पाछौ हासी रा पीरा रो जारत करणे नू आयौ। उठै जारत कीवी, कबूलायत कीवी। सो बरस तीन ताई इण भाति फिर पछै नरढहा जव दीवाण री जारत कीवी। फेर मुलतांन रा पीरा री जारत ऊपर मनसा[5] कीवी सो मारग चलियौ आवै सो परसनेउ आयौ। पाछलो पहर छै, पाधरो कोटडी आयौ। आगै सरदार दरवार बैठा छै, सारा ठाकुर दरबार बैठा छै, ढाला रा

[1]झगडा [2]इसका [3]मदद मे [4]यात्रा [5]मन्शा।

कडा जुडिया छै, गल्हा वातां होय रही छै। इतरा मे फकीर आण दुवा करी। सारा ऊठ राम-राम करी। ओळखियौ[1] तौ केही नही पण फकीर जाजळमांन[2] सो तपस्या वाळो-माणस छानो न रहै। तीसू मारां वडो अदव कियौ सो फकीर वैठ गयौ। सरदार आपरी परगह[3] सू वातां करै छै। इतरै फकीर पाखती घोडा वधिया छै जिकारै साम्हो जोवणै लागियौ। सो पायगां माही वन्धी चवरढाल नजर चढी। अेक सूरेजी री सवारी रो घोड़ो भवर आरवी वडी सी कीमत रो। चवरढालनी घोड़े सू व्याही छै सो अेक तौ वछेरो वरस अढाई रो हुवौ। अेक वछेरी महिना नौ री हुई सो दोनू पाखती वधिया खड़ा छै। बीच मे घोडी खडो छै। सो खान घोडी नू देख कहणै लागियौ—जे हू तौ सारी जमीन गहतो[4] फिरियौ अर घोडी म्हारी तळहटी मे रही।

इतरा मे खवास आण अरज कीवी—जे कसूभो[5] तैयार छै। तद सरदार लोगां कही—ने आवी। सो कळस च्यार भरिया जाजम रै पाखती धरिया। लोटा भला भर कचोळा हाथां में लाया। तद सूरेजी कह्यौ—पहला फकीर साहिव नू देवणौ। तौ खवास पाछौ घिर आ कही—जे फकीर साहिव लेवौ। दूधाळो कसूभो छै, आरोगौ। सो फकीर कही—ल्यावौ वावा। उवै कसूवो पीता सुगन गाठ वाधियौ—जे घोडी तौ हू लेय जायस्यू। इतरै मे सारा कसूवो पीयौ। कुरळा कर वैठिया गल्हा करै छै। फकीर री नजर तौ घोडी माही और ले जावणै रा तरह-तरह रा मनसूवा करै छै। तरह-तरह री वात मन मे उठावै छै, भाजै छै। इतरै दिन घडी दोय पाछलो आय ठहर रह्यौ। इतरा मे खवास आण अरज कीवी—भुजाई तयार छै, पाटोता विछाया छै। तद सरदार सारा ऊठिया। ऊठता कही—फकीर साहिव पधारौ। तौ फकीर कही—वावा हमारे तौ इहां ही भेज देवौ। हम तौ अन्दर नही आवे। तद कही—भली वात, विराजिये। आप भीतर गया, जाय पातिया वैठिया। तद सूरेजी कही—अेक वार तौ दुकडियौ जाय फकीर साहिव नू देय आवौ। खवास जाय फकीर नू दियौ। फकीर रै मन मे तौ वात तीसू जीमण नै वैठ गयौ सो सतावौ[6] सू जीम लियौ। और भीतर तौ परूसगारी हुवै। होळै-होळै चोख सू जीमै। चाकर लोगा रा

---

[1]पहिचाना [2]ज्वाजल्यमान [3]राज-मडल [4]खूदता [5]अफीम [6]शीघ्र।

कटोरा भरणे नू हुकम हुवो। सो चाकर लोग सारा ही कटोरा लेय भीतर नू गया। उठै जायगा सारी खाली रही।

ताहरा खान जाय घोडी संभाळी। घोडी रा पगां मांही सवा मण लोह री गट्टी सो दीठी। ताहरा खान मन मे कहणे लागियौ—जे श्रेम दोय वार व्याही छै पण गट्टी नू तौ तोड़ नाखसी। यू जाण घोडो नू कायजो देय, गट्टी सुद्दां वाहर काढी। खाच श्रर धूळ कोट रो वुरज थौ, हाथ दसे'क ऊंचो, उण ऊपर चाढी। फराकी[1] मार ऊपर चढियौ। चढनै हाकळ कीवी—जे सरदारा, हूं राजूखा खोखर छू, घोडी म्हारो लिया जाऊ छू। भली करो तौ बछेरा-बछेरी मेल दीज्यौ, नही तौ थे ही भाई छौ, राखिया[2]। पण घोडी रो पाछो मता करज्यौ। इतरो सुणी श्रौर माहीलो लोग हा-हा करि दौड़ियौ। कहणे लागिया—जाणै न पावै। इतरा मे राजूखा घोड़ी ऊपरा सू दावी सो जमी श्राय खडी हुई। गट्टी रा टुकडा होय गया श्रर घोडी नू श्राघी काढ़ी सो चालती हुई। पूठै सू श्रै दोनू भाई चढ छूटिया सो रात च्यार पहर पूठै कढिया[3]। श्रौर राजूखा दिन ऊगतै श्रापरै गाव श्रा वडियौ।

श्रै दिन पहर श्रेक चढता ढीगसर रै गोखै मे साढिया रा गला साम्हा श्राया सो घेर ले घेरिया। सो रैवारिया कूक जाय गांव मे घाली, जो सिरकार रा वरग लिया। सुणतां ही सारो साथ चढियौ। जां दिना रा खोखर सो कहणी मे नही श्रावै। इण भाति नीसरिया[4] जिणा नू सूरज रथ झाल देखण लागौ। सो बहिंता-वहिता दिन घडी च्यार रहिते पाछला, सूरो, खीवो गाव लाडणू री वरावर श्राया। ताहरा खीवो कही—भाभाजी, थे वरगले हालौ, हू पाघ वाघ श्राऊ छू। श्राज मैं पाघ वाधी नही। तद सूरेजी कही—श्राज न वाधी तौ सुवार दोय फेरा[5] वाधजे। श्राज रहणे रो समय नही छै। खोखर इसा नही छै सो वैठ रहसी। तीसू रहणौ श्राछौ नही। तद खीवो कही—श्राप पधारौ, हू तुरत श्राय पहोचस्यूं। तद सूरेजी कही—वरग तौ लेय हालौ, श्रसवार पचासे'क खड़ा रहौ। म्हे चलाय श्राय पेहोचस्या। पण सूरोजी खडा रहिया, कहियौ—सतावी करौ, पाघ वेगी वाधौ। थारी श्राज री पाघ घणा दिन याद करसी। श्रेक वाही जसी'क पायस्यौ सो वाद रो सवाद पड़से तद खवर पडसी। तद खीवो

---

[1]छलांग [2]रखना [3]निकले [4]निकले [5]वार।

पाघ हाथ लेय पेच दिया। इतरै खोखर आय पहुचिया। सूरोजी बोलियो—खींवा खोखर आया छै, कहियो नही मानियो। खोखर आय पहुचिया। तद खींवो ऊठ घोड़े सवार हुवौ। सूरेजी नू कहियौ—थें काढो, साथ माफक छै, हूं इहा नू विलमायस्यू। तद सूरेजी कही—हमे काढिया किसी गत[1] छै। हालणे री वेळा तौ तू हालियौ नही। हमे श्री परमेस्वरजी रो नाम लेवौ।

तरै उठाय घोडा साम्हा नाखिया सो परलै पार हुवा। सीधा मुहडा आय वागिया। मो इसा ही जे वागिया सो देखी ही चाहिजे। तरवारिया रो रीठ वागियौ। माथे चौकड़ी पड रही छै। हाक ऊपर हाक हुय रही छै। वीर नाच रहिया छै। जोगण ढाक वजावै छै, खप्पर भरै छै। अप्सरा वरण काज मंगळ गाय रही छै। इसो समयो वण रहियौ छै। इणगी[2] अे पचास, उणगी[3] पाच सौ सो इसा हीज वागिया सो दीठा ही वण आवै। रात घड़ी च्यार गया दोनूं भाई सूरो, खींवो काम आइया[4]। आदमी पचास था तिकां माही अेक ही नही नीसरियौ। पुरजो-पुरजो होय गया। घोडा सारा रा ढढ गया। सावतो अेक नही रहियौ। सरदारा री सवारी रा घोडा वटको-वटको होय गया। सरदार दोनूं ही पुरजो-पुरजो होय पडिया। आदमी पचासा काम आय गया। आदमी डेढ सौ खोखर काम आया। वाकी सगळा ही थोडा-घणां घायल हुवा। निलोही[5] तौ कोई'क नही रहियौ। इहां नू मार, लोथा सभाळ, घायल लेय खोखर बिदा हुवा, पाछा घर आया। आय राजूखां नू मालम कोवी। कही—म्हा आज पहलां इसो कजियो कियौ न सुणियौ। सारा अेक तरह मनगरा था। सो जितरो साथ हुतौ तितरो जे हुवै और उणसू कजियो करां जणा तौ खबर पड जाय। इसी वलाय था। पण भाग[6] सावळ[7] था तीसू पचास सवार रहिया। बाकी रा अगल-वगल आगे गया। खींवो पाघ बाधणे रुकियौ थौ तीसू खान री फतह हुई छै। प्रवाड़ो[8] हाथ आयौ। खान सुण राजी हुवौ, घायलां नू पाटा बधवाया। माथा सारू नै लोहिया सारू[9] इनाम दिराई। काम आया तिणा रै खरच सारू चाळीसा[10] सारूं दिराया। उणा रै बेटा नू सिरोपाव,

---

[1]गति [2]इस ओर [3]उस ओर [4]मारे गये [5]घाव रहित [6]भाग्य [7]ठीक [8]युद्ध [9]लिए [10]मुसलमानो की प्रथा के अनुसार चालीस दिनों के पश्चात मृतक के पीछे की जाने वाली रस्म।

घोडा-तरवारियां खान दीवी। खान रै माणसां रो वडो ज्यान आयो। कामूं माणस था त्यारो तळो टूटो। खान नू इसा हाथ लगाया सो फेर कई दिन सभळणो मुसकिल हुवो अर इहा रो साथ लेय घर आयो।

सो रात आधी तांई तो हरख खुसहाळी रही। पछै ज्यू सरदार आया नही त्यू ही फिकर करणै लागिया। ताहरा ओठी दोय साम्हा चाढिया सो उणपुर कनै भाभरके आइया। अेकण प्रसंगी थी उणरै घर गया, उठै उतर पाणी पीयो। इतरै भागफाटते री गांव में खबर आई—जे इण तरह कजियो हुवो, सूरोजी खीवोजी दोनूं काम आया, पोहकर पोहचो। तद लोग गाव रा पड-काळा माचा लेय सिरदार माणस पाच सौ हालिया। जाय खेत में खडा रहिया। सो सारा रा जुदा-जुदा वटका, तंडुल पड़िया छै। तद सारा ठौड भेळा जे करिया। कपड़ो काढणै लागिया। तद अेक बड़ेरो गढ रो ठाकुर थो तिण कही—इसा सूरवीर होय काम आवै तिणनू सागो कपड़े सू दाग दीजै, नवो वस्त्र नही देणो। ताहरा सारां कही—दुरस्त छै। तद पाथां दोनूं सरदारा री लीन्ही। सो वटका-वटका न्यारा सा चुग, भेळा कर, ओठिया लिया, बीजा सारा नै दाग कर पाछा आया। खानपुरै तळाव स्नान कर गाव आया। ओठी वहता ही पाछले पहर परसनेऊ आया, खबर दीवी। सारा सुण उदास हुवा। पांणी दियो। बारवें दिन सारो मेळ भेळो हुवो। खरच कर पाय वंधाई।

सो सूरेजी रो वेटो वेरसी वरस आठ रो, खीवै रो वेटो जागर वरस दस रो सो सयाणो अर वेरसी रो सुभाव वादी, रीसट सो सारा जांणै। मेळ मे भाई-प्रसगी सारा आया तिकै कहणै लागिया—आपां सारा भेळा छा, परभात साथ संघात मगावा, कजियो खोखरां सू करस्या। खोखर आपा रो वक्को भालै सो कुण। तद इहा रा मुत्मद्दी परधान सारा आदमी कही—थानू आ हीज चाहिजै। पण म्हारै सरदार वाळक छै तीसू थाहरै मोहडै आगै हुवै तद सारा ही सरदार पीठ-राखस्यो[1]। थाहरो दिरायो म्हारै हाथ वदळो आवसी। खोखर आदमी भारी छै, राडगारा[2] छै तीसू अवार हाल माफ करो। यूं कहि सारा लोगां नूं सीख दीवी।

मांणस अेक खोखर रै गांव मेल्ह खबर मगाई—जे उहारै कितरो'क लोक,

---

[1]मदद करना [2]युद्धप्रिय।

कुण-कुण काम आयौ। कासू रग-विचार छै सो सारी खबर लेय आवौ। सो माणस उठै जाय खबर रग देख पाछो आयौ। तिण कही—राजूखा रा बेटा दोय काम आया। अेक तौ बडो तिणनू पाघ आप बन्धाई थी अर बीजो छोटो उणांरी पूठ रो। सगा भाई दोय आपसू छोटा अर नजीक रा। कबीले रा आदमी चाळीस काम आया। बीजा भला-भला रजपूत घडा[1] रा धणी। केई खोखर जागीरदार आदमी डेढ सौ सू ऊपर काम आया अर आदमी च्यार सौ घायल छै, सो खान खरो उदास छै, जाजम खाली हुइ गई। लोग प्रसगी सारा हाथ खोळावण नू आवै छै। चाळीसा ऊपर सारा नू चिट्ठो फाटी छै सो आयसी। और केई हिन्दू रजपूत काम आया था त्यारा प्रसगी भाई आदमी हजारे'क वाहरला आया था त्यानू नौ पण खान उठै ही जे टिकाया था। दरबार सू खाणे नू पावै। चाळीसे री सरवरा होय रही छै। इसा समाचार सुण अैही पित्त सान्त हुवा। खान रा भाई बेटा काम आया सुण अैही ठडा पडिया।

बरस दोय-तीन वितीत[2] हुवा और जाग, वेरसी लोठा हुवा। आपरै मते घोड़ा चढणै लागिया। सागण वार मे सिकार खेलै। रीझ बकसीस करै। राजपूत ठाकुर लोगा नू आप आपरी जायगा राजी राखै। सारा ही रो अेक जीव राखै। यू करता मेडते ऊदैजी रै कही, सो खेड मंडो सू समाचार पण इहा नू थौ। तीसू असवार दोय सौ, ऊठ सवा सौ, पाळा आदमी दोय सौ सू मेडते गया। उठै ऊदैजी सू मिळिया। वड़ी दिलासा दीवी। रिपिया दोय सौ, मिठाई मण च्यार डेरै मेल्ही। पछै रिपिया डेढ सौ रोज खरच रो रुक्को मेलियौ, सो नाकारो मेल्हियौ, कही—म्हे तौ रोजीनदार[3] नही, म्हे तौ कजिये रा धणी छा, बाबेजी रा दरसण करणै नू ही आया छा। तद ऊदैजी घणा राजी हुवा, कही—छै तौ बाळक महरदार। रहणहारी ज्यारो कासू मुवौ, पाछै पण इरा बेटा घणी दाद दीवी।

अेक दिन ऊदोजी तळाव ऊदासर ऊपर पधारिया छै। भवर वछेरो, चवर ढाल वछेरी और वेरसी जंग चढणै नू। सो जिसा ही अै दोनू सरदार वैसा ही सवारी रा घोडा-घोडी। सो सारो लोक देखै, तारीफ घणी करै। इतरै मे इहा घोडा-घोडी दौडाया सो सारा लोग देखणै नू पाळ ऊपर ऊभा हुवा, तारीफ

---

[1]कुटम्बो [2]व्यतीत [3]मजदूर, नौकर।

करणे लागिया । तद ऊदैजी पूछणे लागिया—कुण छै ? जद कही—वेरसी जंग घोडा दौडावै छै । सो जैसा दोनू सवार छै, वैसा ही घोडा-घोडी छै । इतरै ऊदैजी कही—राजपूत व घोडा घणा ही आछा छै पण वाप रो वैर खोखर में रहियौ, तीरी सुध नही कीवी तद किसा वखाण । इतरै इहां आण मुजरो कियौ । घडी दोय बैठ ऊदैजी घरा पधारिया । अै डेरै आया सो वात छानी नही रही । कई मांणसा आय कही सो सुण वेरसी जग पावां उतार माथे सेन्हा वांधिया छै । तीन दिन टिक पाछी विदा मागी । जद ऊदैजी खासा घोडा च्यार और पाच हजार रिपिया डेरै मेल्ह[1] दीन्हा । सो कामदार परधाना संभाळ लिया । चढ वहिर हुवा सो गांव आया । आय मारा सू वात कीवी—जे ओ काम करणौ । ढोलिया कोटड़ी मगाय घालिया । तद परधान अरज कीवी—जे उतावळ न करौ । राजूखां सू कजियो[2] छै । उली-पैली वात न छै । म्हांरो कियौ देखौ श्री ठाकुरजी आछी करसी ।

उण दिन सू आदमी दोय छिपाय ढीगमर मेल्हिया सो वखत-वखत री खवर आंण देवै । इव करतां राजूखा रो वेटो परणीजणे नू चढियौ सो काळेडेरै गयौ । आदमी ठावा-ठावा अेकठा[3] कर वड़ी जांन[4] वणाय गयौ । तद इणरा आदमो आय खवर कीवी । सो सुण आदमी अेक हजार समचे सूं अेकठा किया । राजै काघळोत कन्है आदमी मेल्हियौ सो आदमी तीन सौ उणरा आय सामिल हुवा । वाघा कान्धळोत कन्है आदमी गयौ थौ सो उणरो वेटो दोय सौ माणस साथे लेय आण मिळियौ । हमलो कर आदमी हजार डेढ सू अचांणचक[5] गया सो गांव सू अेक कोस उरै जाय नौवत वजाई । तीनू सुण राजूखा घवराय कही—रै जाय खवर करौ, नगारो किणरो हुवौ । तद असवार दोय हलकारा चढ़ साम्हां आय वात कीवी—कीरो[6] साथ छै हो ठाकुरा ? तद इहा कही—जिणरी थे उडीक[7] राखै था, उणरो ही जे साथ छै, वेरसी और जग छै । असवार पाछा आण खवर करी—जे फलाणे रो साथ आयो छै, सो इव सावधान हुवौ, ढील मत राखौ । सो इणारै नगारो वाजियौ सो गांव रो आदमी सगळो थौ सो वाहर हुवौ । कैरा[8] री भीटा गाव दोळी घणी थी तिकांरो

---

[1]भेजे [2]युद्ध [3]शामिल [4]वरात [5]अचानक [6]किसका [7]इन्तजार [8]एक कटीली झाडी ।

मोरचो लियौ। राजूखा कमर वाध कमाण लियौ। कोटडी मे चोक ऊपर वैठौ साथ सारो जापतो करै छै। पीठ राखै छै। इतरै मे दिन ऊगणै नू आयौ सो मुकावलो हुवौ, तीर गोळी चाली। इतरै इहा री वाग ऊठी सो आण तरवार भेळी सो इसो ही जे रीठ वाजियौ सो देखियौ चाहिजे। घणी तरवारिया रा वाढ ऊछळै छै। घणी वरछी आवोसले नीसरी छै। सिलै अग साथे कटै छै। वडाका, फीफरा वोल रहिया छै। मार-मार जे होय रही छै। वीर नाचै छै। सो इण तरह पोहर दिन चढता कजियो फारिग कियौ।

साढे तीन सौ खोखरा री साथ मे सू आदमी काम आयौ। सौ आदमी इहा रा काम आया छै। पण पडियोडा साम्हा जोयौ[1] नही। लोग हालियो तिणरी पीठ लागिया ही जे आइया। सो लोग गढी माही वडता आडा दिया जद देखियौ। दरवाजे ऊपर महल थौ सो वारी मांक'र[2] ऊपर चढ तीर लगाया। जिण आदमी रै लागै सो ही कवूतर ज्यू लौट जावै। आदमी दसे'क दरवाजे रै माही रो काम आयौ। दरवाजे लग सकै नही। इतरा मे वेरसी आय लोगा नू लडखडाया सो माणस काप रहिया छै। और खान करम सू हाथ आइयौ। सो खान नू कमर सू भालिया पाछो खाच लियौ अर खान फेर मचको कर वारी रै मोहडे तीर मारै सो आगे घुस आवै, फेर पाछै खीच ले जावै। इव करता वेरसी अेक ठौर ओले में खड़ो थौ सो खान वारी रै मोहडे नजर आयौ सो तीर लगाइयौ। तीर भवारा वीच भ्रकुटी मांहां कर पार नीसरियौ सो सास री साथ ही प्राण निकस गया। खान ढळक पडियौ। इतरै मे सारे कूको पडियौ[3]। सारा रा हाणा कूक ऊभा रहिया। तद लोग कई तौ भाग नीसर गया। आदमी तीसे'क पोळ खोल दरवाजे वाहर काम आया।

घोडी चढिया इहा रो साथ भीतर जाय वडियौ[4]। उठै घोडा ऊंठ था सो सारा खोल लिया। वीजी वस्तु खजाना सिल्हैखाना सभाळ लीन्हा। अै दोनू सरदार जनाना रै वाहर जाय ऊभा रहिया। इहा नू माही वडणे नही दिया। राजूखा री वीवी वाहर आय कही—वावा थारो वैर था लेय ही लियौ। सावास छै, वडी रजपूती राखी। जसा पुरसां रा थे लडका था विसी[5] ही कीवी। जनानी मरजाद मता भांजौ। तद वेरसी सलाम कर कही—जे इसी ही होणहार

---

[1]देखा [2]मे होकर [3]रोने-पीटने लगे [4]घुसा [5]वैसी।



थी सो हुई। थे म्हारै मायत छो। म्हांनू तौ थाहरी वडी सहायता थी। हेकण काम कजिये थाहरो वळ राखै थी सो साईं रो खेल इसो हुवौ सो थासू ही जे वण गई। तद वीवी कही—होणहार होय सो मिटै नही, होकर ही रहै छै। मिटै भी क्यूकर। तद साथ रा सगळा लोगां कही—थां दूर ऊभा रहौ। इण घर लाखां रो माल छै सो दुस्मण रै घर रो पतो लेस्या। तद वेरसी लोगा नू ललकारिया अर मना किया। आपरो सगळो साथ लेय बाहर नीसरियौ। बाहर आय घायला नू सभाळिया। काम आयोडा नू दाग दियौ।

पाछै सारो साथ अेकठो कर खुसी होय हालिया तद चारणां कही—

मोटा वाकर खावता, नितका[1] करता वैर।
खोखर घणो चितारसे[2], डीगसरी रा कैर॥

सो अै घरां कुसळ सू आया। भाईपा रा लोग आया त्यानू घोड़ा दिया। मनुहारा सू घणी घणी मिजमानी कर सीख दीन्ही। घायल था त्यानू पट्टा बन्धाया। खरचो दीन्ही। घणौ रस राख विदा किया। घणी गोठा करणे लागिया। जागड़िया गाणे लागिया। वड़ा धीर वीर हुवा। तिणरो नांम मुलका चावौ[3] हुवौ।

सूरे खींवे कान्धलोत री बात समाप्त।

[1]हर रोज [2]याद करेंगे [3]प्रसिद्ध।

परिशिष्ट

—क विवरण सकेत-सूची

—ख टिप्पणियाँ

—ग वात-सूची

—घ विवेचन

विवरण संकेत-सूची



ढोला-मारू

ऊमर सूमरे से ढोला-मारू की भेंट	८६, ८७
ऊमा-देवडी—रूप वर्णन	२८
करहा वर्णन	७५, ७६
ढोला का पत्र पढना	५६
ढोला-मारु मिलन	८२
ढोला-माळवणि प्रेम वर्णन	४२
ढोला-माळवणि सवाद	६७, ६८, ६९, ७०, ७१
नळ-दमंती वर्णन	३४
पुगळ	२६
पोहकर वर्णन	३४, ७५
मारवणि का ढाढियो के हाथ सदेश	५३
मारवणि का सदेश	५०, ५१
मारवणि का स्वप्न	४७
मारवणि रूप वर्णन	४४, ७७, ७८
मारवणि विरह वर्णन	४६
मारवाड अकाल वर्णन	३४
मारू देश वर्णन	८९
मारू वचन, पुरोहित को	६३
माळवणि रूप वर्णन	४१
माळवणि विरह वर्णन	७२
माळव देश वर्णन	९०
रूप वर्णन	२७

जलाल - बूबना

गिरवरगढ पर जलाल की विजय ११५
जलमहल मे बूबना से जलाल का मिलन ११७, ११८, ११९
जलाल का गिरवरगढ प्रस्थान ११०
जलाल की प्रेमातुरता १०१
जलाल की बरात वर्णन ९६
जलाल को मारने का षड्यन्त्र १२२
जलाल बूबना पुनर्जीवन १२५
जलाल बूबना मिलन ९८
जलाल मूमना वार्तालाप १०८
जलाल वर्णन ९३, ९५
बादशाह भँवर ९५
बूबना का जलाल से अलगाव १२२
बूबना प्रेम निवेदन ११२
बूबना-मूमना वार्तालाप १०३
बूबना रूप वर्णन ९८
बूबना विरह वर्णन ११३

▪

डाढ़ाळो सूर

अरवद वर्णन १२७, १२८
चील्हरो का फौज से युद्ध १४७
डाढाळा का सेना से युद्ध १३२, १३३
डाढाळा-भूडण मिलन १२८, १२९
डाढाळे की मुक्ति १४९
वीसळदे का डाढ़ाळे से युद्ध १०४, १४१, १४२, १४४
वीसळदे का भूडण से युद्ध १३६
वीसळदे की ढाढाळा से युद्ध की तैयारी १३४, १३५
सिरोही वर्णन १३०

▪

राठौड़ अमरसिंह गजसिंहोत री बात

अमरसिंह का युद्ध और अर्जुन गौड के हाथ से मृत्यु	१६०
अमरसिंह की छुट्टी के लिए सलावत खा की अर्ज	१५७
अमरसिंह के हाथ से सलावत खा का मारा जाना	१५६
अमरसिंह बीकानेर के युद्ध से क्रोधित	१५६
केसरीसिंह	१५३, १५४, १५५
जसवंतसिंह	१५५
बलू	१५२
बलू की प्रशसा का गीत	१६५
भायसिंह	१५२
महाराजा गजसिंहजी	१५१
युद्ध में काम आने वालो की नामावलि	१६४
सलावत खा की बीबी का विलाप	१६१
सैयद के साथ व्यासजी तथा अन्य सरदारो का युद्ध	१६३
स्वय अमरसिंह का छुट्टी के लिए बादशाह से कहना	१५६

❀

महाराजा पदमसिंहजी री बात

आणन्द नगारची पर कहा गया गीत	१८६
करणसिंहजी के चार पुत्र	१६७, १६८
कुभे चारण पर की गई दातारगी का वर्णन	१७४, १७५
कुसलसिंह पर कहा गया गीत	१८७
केसरीसिंह का औरंगजेब की सहायता करना	१७२
गोयन्द मुळाणी पर गीत	१८८
गोरधन गाडण का गीत	१८६
चारण गोरधनदास का गीत	१७८, १७९
दलेल खा से पदमसिहजी का झगडा	१८३
नवाब से पदमसिंहजी की मुलाकात	१९०, १९१
नवाब का फकीरी लेना	१९१
पदमसिंहजी का गनीम से युद्ध	१८०, १८१
पदमसिंहजी की मृत्यु और नवाब का फकीरी लेना	१८९, १९०



पदमसिंहजी द्वारा नवाव का खजाना गाजदी खां पहुंचाना १८३, १८४
महाराज पदमसिंहजी की प्रशसा १६६, १७०
महाराजा करणसिंहजी १६७
मोहनसिंहजी और हरिण का प्रसग १७५
सांवतराय से पदमसिंह का युद्ध १८४, १८५



सांई री पलक में खलक

चन्देरी के महाराजा के यहाँ पहुँचना १९५
देवसरमा और ब्राह्मणी का सर्प के पास पहुँचना २०१
देवसरमा का अपने घर पहुँचना १९७
देवसरमा द्वारा जलते हुए सर्प को वचाना १९६
देवसरमा का घर को प्रस्थान १९६
देवसरमा द्वारा हरिवश पुराण का पाठ और घन-प्राप्ति १९६
देवसरमा निवास-स्थान आदि १९५
ब्राह्मणी द्वारा देवसरमा को कन्धार के वादशाह का किस्सा सुनाना १९७, १९८, १९९, २००
सर्प का भस्म होना २०२
सर्प द्वारा देवसरमा को डसने की इच्छा प्रकट करना ९६, ९७



पलक दरियाव री बात

अजैपाळ साह और कनकरथ मे विचित्रकुंवर के लिए झगडा २२८
कनकरथ और रानी का विचित्रकुंवर को ढूंढने के लिए प्रस्थान २२०
कनकरथ को विचित्रकुंवर के जीवित होने का पता लगना २१८
कनकरथ से विचित्रकुंवर का मिलना २२४
कुंवर विचित्र के पुत्र-जन्म २०८
देवीदास का दर्शनार्थ ठाकुरजी के मन्दिर जाना २०५
देवीदास की देह मे दो व्यक्तियो का सृजन २३३



देवीदास द्वारा ठाकुरजी से पलक दरियाव का तमाशा दिखाने की प्रार्थना २०४
देवीदास द्वारा देह का संकल्प लेना २३३
पाटण सहर तथा अजैपाळ साह वर्णन २०३
वन्वुगढ के राजा कनकरथ की पटराणी के यहाँ देवीदास का जन्म २०५
वन्वुगढ़ मे उत्सव २३४
ब्रहदभाण की कुँवरि का विचित्रकुंवर से विवाह २३३
ब्रहदभाण के दरवार मे अजैपाळ और कनकरथ का न्याय के लिए जाना २३१
विचित्रकुंवर का तालाव मे डूवना २१२
विचित्रकुंवर का देवीदास के रूप मे मन्दिर मे प्रकट होना २१४
विचित्रकुंवर की माता और पत्नि का विलाप २१३
सवालखी वनजारे का आगमन २०६
सेरपुर के राजा वीरभद्र की पुत्री से विचित्र का विवाह २०५
हरदान, रामदान का तीर्थाटन के लिए निकलना २१४
हरदान रामदान का विचित्रकुंवर को पहिचानना २१५



सूरे खीवे कान्धलोत री वात

ऊदेजी द्वारा वेरसी तथा जागर को वैर लेने पर ताना २४८
खीवे का राजूखां के दरवार मे नाराज होना और घोडी निकालने का निश्चय २३७
घोडी के चुराये जाने का राजूखां को पता लगना—विक्षोभ प्रकट करना २४१
भूवर को घोडी चुराने के लिए तानाव पर भेजना २३६
भूवर द्वारा घोडी का चुराया जाना २४०
राजूखां का भेष वदल कर घोडी की खोज में निकलना २४२
राजूखां का सूरे खीवे के घर पहुँचना और घोडी चुराना २४३, २४४
राजूखां के दरवार मे सूरे खीवे का जाना २३७
वेरसी का खोखो से वदले के लिए युद्ध २४६
सूरे खीवे का चरित्र वर्णन २३५, २३७
सूरे खीवे से खोखरो का युद्ध २४५



टिप्पणियां



ढोला-मारू

हस्तलिखित प्रति—लिपिकाल सं १८७२

पन्नो का आकार १०½" × ७½" जिसमे १ इन्च का हासिया छोडा गया है।

पृष्ठ संख्या—७२

विशेष—ढोला-मारू की वात का प्रारम्भ जिस पद्याश से हुआ है उसका साम्य ढोला-मारू रा दूहा के परिशिष्ट मे दिये गये पद्याश से भी है। आगे कथा का निर्वाह भी कुछ दूर तक उसी के अनुरूप चला है। ढोला-मारू के प्रचलित दोहो के अतिरिक्त भी कितने ही दोहे स्थान-स्थान पर वात के वीच-वीच मे आए हैं। ढोला-मारू के प्राचीन दोहो से इन दोहो मे भाषागत सरलता भी दृष्टिगोचर होती है। श्री उदयराज उज्जवल का कहना है कि इस वात का रचयिता चारण कवि महादान महड़ू है। कई वातो की प्रतियो मे महादान महड़ू स्वय पात्र के रूप मे भी उपस्थित होता है (ढोला जव पुंगळ पहुंचता है तब महादान से रास्ते मे भेंट होती है)। उनके मतानुसार जैनियो द्वारा लिखी गई ढोला-मारू की प्रतियो मे तथा अन्य प्रतियों में घटनाओ आदि के सम्बन्ध में कुछ भिन्नता भी है।

ढोला-मारू का समय अनिश्चित होने से इस सम्बन्ध मे प्रामाणिक रूप से कुछ कहना कठिन है।



जलाल-बूवना

हस्तलिखित प्रति—लगभग १०० वर्ष प्राचीन।

पन्नों का आकार—१३" × ८½" जिसमे १ इन्च दोनो ओर हासिया छोडा गया है।

पृष्ठ सख्या— ६०

विशेष—यह वात काफी प्रसिद्ध है और कई हस्तलिखित प्रतियां इसकी उपलब्ध होती हैं। अधिकाश प्रतियो मे 'जलाल गांहणी री वात' शीर्षक है।

डाढ़ाळौ सूर

हस्तलिखित प्रति—लगभग १०० वर्ष प्राचीन।

पन्नो का आकार—१३"×८½" जिसमे १ इन्च का दोनो ओर हासिया छोडा गया है।

पृष्ठ सख्या— ५०



राठौड़ अमरसिंह गजसिहोत री वात

हस्तलिखित प्रति—लगभग १०० वर्ष प्राचीन।

पन्नो का आकार—१३"×८½" जिसमे १ इन्च का दोनो ओर हासिया छोडा गया है। अक्षर वडे और साफ लिखे हुए हैं।

पृष्ठ सख्या— ३४

विशेष—अमरसिंह प्रसिद्ध ऐतिहासिक पात्र हैं। इनके पिता गजसिंह (जोधपुर के राजा) की मृत्यु के पश्चात् इनके छोटे भाई जसवन्तसिंह से जोधपुर की गद्दी के लिए झगडा हुआ पर जोधपुर प्राप्त न कर सके और नागौर को अपनी राजधानी वनाया। शाहजहाँ ने इन्हे मनसव दिया और सामन्तों में रखा। इनके वारे मे यह किवदती है कि शाहजहाँ के दरवार मे सलावत खाँ द्वारा अपशव्द कहने पर इन्होंने उसे मार डाला और आगरे के किले की दीवार घोड़े सहित फाँद कर निकल भागे। तत्पश्चात् अर्जुन गौड़ ने इन्हें धोखे से पकड कर मरवा डाला। पर इस वात में राज्य-दरवार मे ही युद्ध करते-करते काम आना वतलाया गया है।



महाराजा श्री पदमसिंह री वात

हस्तलिखित प्रति—लगभग १०० वर्ष प्राचीन।

पन्नो का आकार—१३"×८½" जिसमे १ इन्च का दोनो ओर हासिया छोड़ा गया है।

पृष्ठ संख्या— ५४

विशेष—पदमसिहजी (वीकानेर) और इनके भाइयो के कई वीरतापूर्ण किस्से प्रचलित है। पदमसिहजी की वात काफी प्रचलित है। इस वात मे सम्पूर्ण किस्से नही हैं। केवल कुछ चुने हुए किस्सो का ही सकलन है। यही वात 'करणसिहजी रै वेटा री वात' के नाम से भी प्रचलित है।

साई री पलक मे खलक

हस्तलिखित प्रति—लगभग १०० वर्ष प्राचीन।

पन्नो का आकार—१३"×८½" जिसमें १ इन्च का दोनो ओर हासिया छोड़ा गया है।

पृष्ठ संख्या— ८



पलक दरियाव री वात

हस्तलिखित प्रति—इसकी नकल श्री सीतारामजी लाळस के सौजन्य से प्राप्त हुई है। नकल प्राचीन प्रति से की गई है। नकल किए हुए पन्नो की सख्या २३ है। अन्य वातो की तरह इसकी भी भाषा पुरानी है पर अधिक प्राचीन नही।



सूरे खींवे कांधळोत री वात

हस्तलिखित प्रति—लगभग १०० वर्ष प्राचीन।

पन्नो का आकार—१३"×८½" जिसमे १ इन्च का हासिया छोडा गया है।

पृष्ठ संख्या— ४०

विशेष—प्रस्तुत वात में लोकमान्य पात्र हैं पर इनका विवरण इतिहास मे उपलब्ध नहीं होता।



वात सूची



वात अगस्त री
,, अचलदास खीची री
,, अडाऊ बेटी री
,, अणतराय सांखळे री
,, अणहिलवाडा पाटण री
,, अमरसिंघजी री
,, अरडकमल री
,, अरजन हमीर री
,, अलावदी री उतपत री
,, अल्हणसी भाटी री
,, आय ठहकी भाहिमै तैंरी
,, आसा डाभी री
,, उजीण रा राजा अर जती री
,, ऊदै उगणावती री
,, ऊमादे भटियाणी री
,, ऊहड हरदास मोकळौत री
,, एकांतरे री
,, ऐकादसी व्रत री
,, ओखाणां री
,, कछवाहा री
,, कपोलकुवर राठौड री
,, करण लाखाउत देसल राठौड चारण जालूणसिंघ री
,, कवर फूलवन्त री
,, काजळी तीज री
,, कान्हडदे री
,, कांघळजी काम आया तैं समै री
,, कांघळजी री
,, कांघळोत खेतसी री
,, कापलिया चहुवाणा री
,, किमनगढ री
,, कुतुबदी साहिजादै री
,, कुतुबसतक री
,, कुवर रिणमल अखै सांखळे रो वैर लियो तैंरी
,, कुवर री अर साहूकार री
,, कुवरसी सांखळै री
,, कुवरियै जैपाळ री
,, कूगरै बलोच री
,, कूमै सूरावत राठौड ईडरियै री
,, केसै उपाधियै री
,, कैवाट री
,, कोडीधज री
,, खडगल पंवार री
,, कामखान्या री
,, खीचिया री
,, खीवै वींझै घाडवी री
,, खुदाय वावळी री
,, खेतसी रतनसिंहोत री
,, खेतसी सिसोदियै री
,, गढ वांघव रै धणिया री
,, गढ मडिया तैंरी
,, गणेस चतुरथी व्रत री
,, गणेसजी री
,, गन्धरव सैण
गुलाबभवर री

वात गोगादेजी री
, गोगादे वीरमदेश्रोत री
, गोगैंजी री
, गोरावादळ री
, गोहिल श्ररजन हमीर री
, गोहिला खेड रा धणिया री
, गौड गोपाळदास री
, चहवाण सातलसोम री
, चहवाणा सोनगरा री
, चन्दकुवर री
, चन्दन मलियागिर री
, चन्द्रावतां री
, चरपट राजा री
, च्यार परधाना री
, च्यार भायला री
, च्यार सूरखा री
, चतुराई री
, चांपै वाळै री
, चौवोली री
, छत्तीस राजकुळी इतरै गढ राज करै तै री
, छाहड पवार री
, जगदे पवार री
, जगमाल मालावत री
जन्माष्टमी री
, जळन्धरनाथ री
, जसमा श्रोडणी री
, जसवन्त राठोड ताल्हणोत री
, जसहडदे तिलोकसी री
, जाडेचां री
, जेसलमेर री
, जेहै सरवहियै री
, जेहै जाम री
, जेहै जेठावत री
, जैतमाल सळखावत कोळिया री

वात जैते हमीरोत राणगदे लखणसियोत री
, जैमल वीरमदेश्रोत री
, जोगराज चारण री
, जोधै री
, तमाइची पातिसाह री
, तुवरा री
, दत्तात्रेय चौवीस गुरु किया तैरी
, दरजी मायाराम री
, दहिया री
, दिनमान रै फळ री
, दीवाळी श्री महालिछमी री
, दूदै जोधावत री
, दूदै भोज री
, दूलची जोइये री
, देपाळ री
, देवजी वगडावतां री
, देव रै श्रहीर री
, देव रै नायकेद री
, दौलतावाद रा उमरावा री
, न क्यू हरै न क्यू सेवै तैरी
, नरवदजी राणै कूभै नू श्राख दीवी तैरी
, नरवद सतावत री
, नरै सूजावत श्रर खीमै पोकरणै री
, नागजी नागमती री
, नागार रै मामले री
, नानिग छावडा री
, नापै साखळे री
, नाराइणदास मीढाखा री
, नाराइणदास हाडै री
, नासिकेत री
, नृसिह चतुर्दशी री
, पताई रावळ री
, पताई रावळ साको कियो तै समै री
, पदमकळा री

वात पन्ना री
, पन्ना वीरमदे री
, पराक्रमसेन री
, पचख्यात वारता री
, पचदड री
, पचसहेली री
, पावूजी री
, पाहुवारी
, पिंगळा री
, पीठवै चारण री
, फीरोजसाह पातिसाह री
, पीचैजी री
, प्रतापमल देवडै री
, प्रिथीराज चहुवाण री नै हमीर हाहालै री
, प्रिथीसिंह पवार री अर खूवा री
, पोपाबाई री
, फमै घोरन्धार री
, फळ द्विितीगा री
, फिरोजसाह पातिसाह री
, फूलजी भाटी री
, फूलजी फूलमती री
, फोगसी अेवाळ री
, फोफणद री
, बगलै हसणी री
, बालिमा री
, बुवास्टमी री
, बुधिबळ री
, बुंदेला री
, बून्दी री
, बोड़ा चहुवाणा री
, ब्रह्मकूच री
, ब्रह्मचरित्र री
, भटनेर री
, भंडाण रै गाव री

वात भागवत दसम स्कध कथासार
, भागवत दसम स्कध व्रत री
, भाटिया री नखा जुदी-जुदी हुई तैरी
, भाटी लजै विजैराव रा
, सुन्दरदास बीकपुरी री
, भायला राजपूता री
, भोज री
, मधुमालती री
, मलकम्वर नै श्राकूत खा री
, महाराजा सुजाणसिंहजी री
, महिन्दर वीसळौत री
, माणक तोलरी री
, माम गडूकै री
, मामै भाणेजै री
, मारवाड रा अमरावा री
, मालदे पवार री
, माल्हाळी री
, मूळराज देवराज री
, मेहदरै राठौड री
, मोमल री
, मोहिला री
, रतनसिंघ सूरजमन्न री
, रतना हमीर री
, रयणसी तुवरी री
, राठौड ठाकुरसी जैतस्योत री
, राठौड राजसिंघजी री
, राजसिंघ खियावत री
, राजा चन्द री
, राजा करण री
, राजा धार सोलकी री
, राजा नरसिंघ री
, राजा नराउत री
, राजा प्रिथीराज चौहाण री
, राजा प्रिथीराज सुहवदेव परणिया तैरी

,, राजा भीम री
,, राजाभोज खापरै चोर री
,, राजाभोज री चार वाता
,, राजाभोज री पनरमी विद्या री
,, राजा मानधाता री
,, राजा मोहमरद री
,, राजाराणी अर कुवर री
,, राजा रिसाळू री
,, राजा रै कुवरा री
,, राजा वीर विक्रमादित्य री अर नक्षत्र जातीफ री
,, राजा सिघराव जैसिंघदे सोलकी री
,, राठौड ठाकुर सी जैतसिंहोत री
,, राठौड नरै सूजावत खीवै पोहकरणै री
,, राठौड सीहैजी नै आसथानजी री
,, राणगदे भाटी री
,, राणी चौबोली री
,, राणै खेतै री
,, राणै रतनसी राव सूरजमल री
,, राम री
,, रामचरित री
,, रामनवमी री
,, रामसिंह खीवावत री
,, रायधण भाटी री
,, रायसिंघ खीवावत री
,, राव अमरसिंघजी री
,, राव कान्हडदे री
,, राव गागै वीरमदे री
राव चूंडै री
,, राव जोधै री
,, रावत लखणसेन री
,, रावत सूरिजमल कुवर प्रिथीराज री
,, राव तीडै मावतसी वेढ हुई तैं समै री
,, राव प्रतापमल देवडै री
,, राव मंडलीक री
वात राव मानै देवडै री
,, राव राघवदेव सोलंकी री
,, राव रिणमल सावंडियै री
,, राव रिणमल महमद मारियौ तैं री
,, राव रिणमल री
,, रावत प्रतापसिंह मोहकमसिंह देवगढ रै धणी री
,, राव जगमाल री
,, रावळदे सांखळै री
,, रावळ मलीनाथ पंथ मे आयौ तैं री
,, रावळ लखणसेन वीरमदे सोनगरै री
,, रावळ लखणसेन री
,, रावळ हमीर लखै जाम री
,, राव लूणकरण री
,, राव वीकैजी वीकानेर वसायौ तैं समै री
,, राव वीकैजी री
,, राव वीरमदे री
,, राव सलखै री
,, राव सीहैजी री
,, राव सुरताण देवडै री
,, राव सेखै नै भातौ आयौ तैं री
,, राव हमीर लाखै जाम री
,, राहव साहव री
,, रिणधवळ राजै री
,, रिणधीर चुंडावत री
,, रिणमल री
,, रिष पंचमी री
,, रुद्रमालो प्रासाद सिद्धराव करायौ तिण री
,, रूपमंजरी मनरंजन री
,, लाखै फूलाणी री
,, लाखै जाम री
,, लला मेवाडी री
,, लालजी अर हीरजी री

वात वगडावता री
, वडा वडीदे वडै डहरू वांनरं री
, वडै राव री
, वजीर रै वैर री
, वहलिमा री
, वाडी वारै री
, वाणवेध री (प्रिथीराज रासो)
, सोणा री
, वालै चापै री
, विणजारै विणजारी री
, विसनी वे खरच री
, वीजण विजोगण री
, वीरवळ री
, वीरमजी री
, वीरमदे सोनगरै रै अगलै जनम री
, वीसा वोली री
, वींझरै अहीर री
, वींझै सोरठ री
, वूठी ठग राजा री
, वैताल पच्चीसी री
, वैरसल भीमौत वीसल महेवचै री
, सगुणा सत्रुसाळ री
, सदैवच्छ सावलिगा री
, सनीसरजी री
, यणी चारणी री
, सरवहियै वीरमदै रै वेटै धनपाळ री
, ससीपन्ना री
, सागण वाढेल री
, साचोर रै चहुवाणा री
, सात वेटियां वाळै राजा री
, सातळ सोम री
, सादै गोहिलौत नाडोळाई रै धणी री
, साह ठाकुरै री
, साह ताल्हणसी हेमराज री
, साह रामदत्त री

वात साहणी अर मेहीवाळै री
, साहिजादै कुतुवदी री
, साहूकार रा वेटा अर नाई री
, साई कर रहियौ तैरी
, सांखळा दहिया सूं जांगळू लियौ तैरी
, साखळा री
, सागण वाढेल री
, सागण हामू मूजै री
, सागमराव राठौड री
, सागै पवार री
, सावतसी झोकाई री
, सिखरौ वहेलवै गयौ रहै तैरी
, सिरोही रा धणिया री
, सिवरात री
, सिहासण वत्तीसी री
, सीहै माडण री
, सीहै सीधळ री
, सुक वहत्तरी री
, सुदवुद सालिगा री
, सुपियारदे री
, सूजै आहाडै अर जसै पवार री
, सूरजमल हाडै री
, सूर सावळै री
, सूरा अर सतवादिया री
, सूरिजमल री
, सेखावता री
, सेतराम वरदोई सेनौत री
, सेआवा रा धणी राव लूणा री
, सोणा री
, सोनगिरा री
, सोनारी रै तपावस री
, सोनिगरै मालदे री
, सोमवती री
, सोरठ री
, सोळह सहेलडिया री



,, सोलकिया खैराडा री
,, सोलकिया री
,, सोलकी राजा वीज री
,, सोहणी री
,, हरदास ऊहड़ री
,, हरदास मोकळोत वीरमदे दूदावत री
,, हरराज रै नैणा री
,, हाडां री
,, हाहुल हमीर भोळै राजा भीम सू
जुध करियौ तैरी

मूल्यांकन

राजस्थानी लोक-कथाओं सम्बन्धी साहित्य के निर्माण और संरक्षण में जैनों का योग

[अगरचंद नाहटा]



कोई भी ऐतिहासिक, पौराणिक, काल्पनिक कथा जब लोक-मुख पर छा जाती है तो वह लोक-कथा के नाम से प्रसिद्ध हो जाती है, क्योंकि उसमे लोक-रुचि के अनुसार परिवर्तन हो जाता है, लोक-प्रचलित विश्वास उसमे सम्मिलित हो जाते हैं। इस प्रकार कई एक तत्वो का समावेश ही किसी भी ऐतिहासिक व पौराणिक कथा को भी लोक कथा का रूप दे देता है। इन कथाओ का प्रचार मौखिक परम्परा से दीर्घ काल में होते रहने के कारण उनके कई रूपान्तर हो जाते हैं। किसी अेक कथा का कोई प्रसंग एव चमत्कारिक व अलौकिक वातें अनेको कथाओ मे पाई जाने लगती हैं, अर्थात् लोक-कथा से एक दूसरे को प्रभावित करती रहती हैं।

कथाओ के प्रचार और तत्सवधी साहित्य - निर्माण के मुख्यत तीन प्रयोजन होते हैं— १—मनोरजन, २—बुद्धिवृद्धि और शिक्षा ३—धार्मिक प्रेरणा। साधारणतया तो मनोरजन की ही प्रधानता रहती है पर पंचाख्यान आदि की कथायें बुद्धिवृद्धि और शिक्षाप्रद भी है। इसी प्रकार व्रत - नियमो के महात्म्य संवधी कथाओ मे धार्मिक प्रेरणा की ही प्रधानता रहती है। किसी भी धर्म के किसी भी प्रकार को पालन करने से किस-किस व्यक्ति ने किस तरह सासारिक एवं पारलौकिक सुख प्राप्त किया, तथा अधर्म के आचरण से किस-किस व्यक्ति को क्या दुख उठाना पडा, इसी वात की छाप हृदय मे जमाने के लिए दृष्टात के रूप मे इन कथाओ का प्रयोग होता रहा है। जैन विद्वानो ने प्रधानतया धर्म-प्रचार के लिए ही इन कथाओ को अपनाया, क्योंकि दृष्टांत के द्वारा धर्म-तत्व का ग्रहण साधारण जनता सुगमता से कर सकती है। केवल विधिनिषेध के वाक्यो से वह असर नही होता, जो उन वातों को स्पष्ट करने वाली दृष्टात कथाओ द्वारा होता है। जैन धर्म लोक-धर्म रहा है। तीर्थंकरो का उपदेश केवल राजा-महाराजा और वडे आदमियो के लिए ही नही था, पर विना किसी भेदभाव के समस्त जनता के लिए था। मनुष्य ही नही, देव और पशु-पक्षी भी तीर्थंकरो के उपदेश से समान रूप

से लाभ उठाते थे। इसीलिए जैन धर्म के प्रवर्तकों और प्रचारकों ने तत्कालीन लोकभाषा में ही अपना उपदेश जारी रखा, और बिना पढ़ा-लिखा साधारण व्यक्ति भी सरलता से उसे समझ व ग्रहण कर सके, इसलिए लोक-प्रसिद्ध दृष्टांतों और कथानकों को उन्होंने अपने धर्म-प्रचार में विशेष रूप से अपनाया। भगवान महावीर के उपदेशित ११ अंग सूत्रों में ज्ञाताधर्म कथा नामक छठा सूत्र ऐसी कथाओं का वृहद् भंडार था। परम्परा के अनुसार इस सूत्र में साढ़े तीन करोड़ कथायें थीं, पर स्मृति की कमी होती गई और जैनागम सूत्र लगभग १००० वर्ष तक मौखिक रूप से ही प्रचारित रहे। इसलिए वर्तमान में प्राप्त अंश मूल परिभाषा की अपेक्षा बहुत ही थोड़ा है। ज्ञाताधर्म कथा सूत्र में अब तो बहुत थोड़ी सी कथाएँ रह गई हैं पर उनमें कई कथा ऐसी हैं जिन्हें हम लोक-कथायें कह सकते हैं। इनका प्रचार जैन धर्म में ही सीमित नहीं पर बौद्ध व वैदिक धर्म के साथ साथ विदेशों में भी पाया जाता है। इसके सम्बन्ध में डा० जगदीशचन्द्र जैन की लिखी हुई "अढ़ाई हजार वर्ष पुरानी कहानियाँ" नामक पुस्तक देखनी चाहिए। मूल आगम ग्रंथों के बाद उनकी विविध टीकाओं में अनेकों ऐसे दृष्टांत व कथाऐं प्राप्त होती हैं, और ५वीं शताब्दी से तो स्वतंत्र रूप से प्राकृत भाषा में कई कथा-ग्रंथ लिखे जाते रहे हैं जिनमें कई पौराणिक व लोक-कथायें भी सम्मिलित हैं। वसुदेवहिन्डी नामक ऐसा ही महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। पमचरियम् में प्रसिद्ध रामायण की कथा मिलती है पर वाल्मीकि रामायण से उसमें वर्णित कथा कई बातों में भिन्न पड़ जाती है। १२वीं शताब्दी तक जैन विद्वानों के रचित अनेक स्वतंत्र कथा-ग्रंथ और कई कथा-संग्रह ग्रन्थ प्राकृत भाषा में रचे हुए मिलते हैं। वैसे संस्कृत और अपभ्रंश में ही कथा-ग्रंथों की रचे जाने की परम्परा चलती रही है। १३वीं शताब्दी से सम्भवतः लोक-रुचि में एक बड़ा परिवर्तन आया। इस समय के लिखे हुए छोटे-छोटे प्रबंधों के कई संग्रह ग्रंथ मिलने लगते हैं, जिनमें कई प्रबन्ध ऐतिहासिक हैं। कुछ लोक-कथाओं पर आधारित हैं। प्रबंधसंग्रह की यह परम्परा १५वीं शताब्दी तक विशेष रूप से चालू रही। १३वीं शताब्दी से ही विक्रमादित्य संबंधी लोक प्रचलित कथायें लिपिबद्ध की गई। यद्यपि सम्राट विक्रम एक ऐतिहासिक पुरुष थे, पर उनके सम्बंध में जनता में अनेक प्रकार की ऐसी कथायें प्रसिद्ध हो गई जिन्हें ऐतिहासिक नहीं कहा जा सकता, उन्हें लोक-कथा ही कहा जा सकता है। जैन विद्वानों ने विक्रमादित्य संबंधी कथाओं को लेकर संस्कृत, प्राचीन राजस्थानी, गुजराती भाषाओं में ६० से अधिक ग्रंथ लिखे हैं, जिनका कुछ परिचय मैं अपने "विक्रमादित्य संबंधी जैन साहित्य" नामक निबंध में दे चुका हूँ, जो विक्रम स्मृतिग्रंथ और जैन सत्यप्रकाश में प्रकाशित हो चुका है। विक्रम के संबंध में इतनी अधिक रचनायें जैनेतर विद्वानों की भी प्राप्त नहीं होती। इससे जैन विद्वानों ने लोक-कथाओं को कितने विस्तृत रूप में अपनाया इसका सहज ही पता चल जाता है। राजस्थानी भाषा में रचे गए जैन कवियों के विक्रम संबंधी कई ग्रंथ तो विक्रमादित्य के पूरे चरित्र पर आश्रित हैं और कई उसके जीवन से संबंधित किसी एक प्रसंग को लेकर रचे गये हैं—जैसे सिंहासनबत्तीसी, वैतालपच्चीसी, पंचदण्ड कथा, विक्रमचरित्र व विक्रमसेन, खापरा चोर, चौबोली, लीलावती, कनकावती, शनी कथा आदि। इसी प्रकार विद्याविलासी महाराजा भोज और नन्द आदि ऐतिहासिक पुरुषों से सम्बन्धित जैन विद्वानों की राजस्थानी लोक-कथाऐं प्राप्त हैं।

१३वी शताब्दी से १५वी शताब्दी तक संस्कृत मे बने हुए अनेक प्रबन्ध-संग्रह और कथा-ग्रथो मे लोक-कथायें मिलती हैं। १५वी शताब्दी से तो राजस्थानी-भाषा मे भी जैन विद्वानो ने लोक-कथायें सबंधी स्वतत्र ग्रथ लिखने प्रारम्भ किये। वैसे राजस्थानी मे रचे गये रास चौपाई आदि कथा-ग्रथो का प्रारभ तो १३वी शताब्दी से ही बराबर होता रहा है, पर १५वी शताब्दी से पहले का कोई राजस्थानी काव्य लोक-कथा को लेकर नही बनाया गया। जैन महापुरुषो व पौराणिक कथायें और ऐतिहासिक चरित्र ही १३-१४वी शताब्दी मे राजस्थानी काव्यो मे पाये जाते हैं। फिर पूर्ववर्ती प्राकृत व सस्कृत ग्रथों की अनेक कथायें राजस्थानी भाषा मे अवतरित होती रहीं और बहुतसी नई लोक-कथा, जो जनता मे खूब प्रचलित थी उन्हे भी जैन विद्वानों ने धार्मिक रूप देकर प्रचारित किया। ऐसी रचनाओ की सख्या सैंकडो पर है, जिनका प्रारभ व अत का धार्मिक प्रेरणा वाले कुछ हिस्से को अलग कर देने पर उनमे विशुद्ध लोक-कथा का दर्शन होना है। अभी तक ऐसे समस्त राजस्थानी काव्यों का सूक्ष्म निरीक्षण नही हो सका है, इसीलिये जैन कवियो की रास चौपाई आदि सज्ञक राजस्थानी काव्यो मे लोक-कथायें कितनी हैं, इसका ठीक अनुमान नहीं किया जा सकता। श्री मजुलाल मजूमदार का विस्तृत निबध "गुजराती मे लोक-वार्ताओं" के नाम से 'गुजराती साहित्य' खड ५ (मध्यकालनो साहित्य प्रवाह) नामक ग्रथ मे सवत् १९८५ में प्रकाशित हुआ था। उसमे विक्रमचरित्र, सिंहासनबत्तीसी, पचदंड, वैताल-पच्चीसी, चदन मलयागिरी, खापराचोर, शनिश्चर विक्रम, अबड, पचाख्यान, कपूरमजरी, सुकबहोतरी, माधवानल कामकदला, ढोला-मारू, बिल्हणपंचासिका, विद्याविलास, नन्द-बत्तीसी, सगालशाह, हसावली या हस-वच्छ, शीलवती, सदयवच्छ सावलिगा, आदि लोक-कथाओ सबधी जैन रचनाओ का परिचय दिया गया था। तदनन्तर श्री भोगीलाल साडेसरा के "आपणी लोकवार्ता विषयक प्राचीन साहित्य" नामक निबध मे कुछ नई जानकारी के साथ उपर्युक्त लोक-कथाओ सबधी जैन रचनाओ का परिचय दिया गया है। इसमे लीलावती, आरामशोभा, नामक लोक-कथाओ का परिचय और जोड दिया गया है। नागरी प्रचारिणी पत्रिका मे "लोक-कथाओ संबधी जैन साहित्य" नामक मेरा भी एक लेख प्रकाशित हो चुका है और कई लोक-कथाओ के सबध में स्वतंत्र रूप से मेरे और मेरे भतीजे भॅवरलाल के लेख राजस्थान भारती, कल्पना, मरुभारती, वरदा, आदि पत्रो मे प्रकाशित हो चुके हैं, जिनमे से कतिपय लेखो की सूची नीचे दी जा रही है—

१ सदयवत्स सावलिगा की प्रेम-कथा, राजस्थान भारती, वर्ष ३, अंक १

२ जैन साहित्य मे चद्रराजा की प्रेम कथा, व्रजभारती, वर्ष ४, अक १०-१२ शोध पत्रिका, मरुभारती, वर्ष ६, अक ३

३ विद्याविलासी महाराजा भोज सबधी जैन साहित्य, विक्रम, वर्ष ५, अक २—गागा तेली व भोज की कथा (गद्य मे)

४ प्रियमेलक तीर्थ, मरुभारती, वर्ष ३, अक ४

५ पुरन्दर कुमार, मरुभारती, वर्ष ५, अक २

६ मानतुग मानवती, मरुभारती, वर्ष ५, अक ३
७. सती लीलावती, मरुभारती, वर्ष ५, अंक ४
८ रत्नचूड व्यवहारी, मरुभारती, वर्ष ६, अक २
६. पद्मावती व पद्मसी, वरदा, वर्ष १, अक ४
१०. विद्याविलास, कल्पना
११ चंदनमलयागिरी कथा व तत्सबंधी साहित्य, कल्पना, वर्ष ८, अंक १२
१२. चित्रसेन पद्मावती, नागरी पचारिणी पत्रिका, वर्ष ४६, अक १
१३ कान्हड कठिहारा, जैन भारती, जैन सन्देश, चरित्र निर्माण, धनदत्त कथा (जैन भारती १९३६)
१४ टीकमचंद रचित चदहस कथा, अहिंसा वाणी, वर्ष ७, अंक ६
१५ वंकचूल कथा, जैन सिद्धान्त भाष्कर, जैन भारती
१६. गोपीचंद कथा, साहित्य संदेश, वर्ष १८, अंक ६, विजयानद
१७. वाग्विलास कथा सग्रह, वरदा, वर्ष १, अक १
१८ बुद्धिवल (कथा), चरित्र निर्माण, वर्ष ६, अंक ६
१६ माधवानल कामकंदला सबंधी साहित्य, हिन्दी अनुशीलन
२० महाकवि विल्हण की प्रेम कथा, त्रिपथगा मे प्रेषित
२१. मगाक पद्मावती कथा, आजकल मे प्रेषित
२२. मत्स्योदर कथा
२३. मदनशतक
२४ शुल्लक कुमार कथा
२५. रत्नपाल
२६. उत्तमकुमार
२७ ऊमासेन जयसेन कथा

और भी कई लोक-कथायें, राजस्थानी जैन काव्यो के सार के रूप में लिखी जा चुकी हैं। लोक-कथाओ सम्बन्धी जैनेतर गद्य-पद्यात्मक राजस्थानी रचनाओ की अनेक प्रतियाँ जैन ज्ञान-भडारो मे सुरक्षित हैं। इनमें से कई कथाऐं ऐसी हैं जिनकी प्रतियाँ अन्यत्र कही नही मिलती। अत. रास्थानी लोक-कथाओ सबंधी साहित्य-निर्माण व सरक्षण मे जैन विद्वानो की देन महान् है। कई लोक-कथायें तो जैन समाज मे इतनी अधिक लोक-प्रिय हुई कि १-१ कथा सम्बन्धी ५-१० रचनाऐं मिलती हैं। जैन राजस्थानी गद्य में भी १५वीं शताब्दी से कथाऐं लिखी जाती रही हैं पर उन में लोक-कथाऐं कम ही हैं, जैन पौराणिक कथाऐं ही अधिक हैं।

▪

लोक-कथाओ की एक प्ररूढ़ि—जादू की डोरी

[कन्हैयालाल सहल]



लोक-कथाओ के वैज्ञानिक अध्येताओ ने जादू की डोरी को भी एक मूल अभिप्राय (Motif) के रूप मे स्वीकार किया है। डोरी जैसी छोटी-सी वस्तु भी एक स्वतत्र मूल अभिप्राय का रूप धारण कर सकी है, यह पढ-सुन कर चौंकने की आवश्यकता नही है। वास्तव मे किसी वस्तु का महत्त्व उसकी अल्पता अथवा दीर्घता पर निर्भर नही करता। महत्त्व का मुख्य कारण है उसकी प्रभविष्णुता। वैसे देखा जाय तो यज्ञोपवीत भी तो एक सूत्र ही है किन्तु फिर भी उसको कितना महत्त्व दिया गया है। उसी प्रकार दक्षिण भारत में सम्पन्न होने वाले विवाहों के अवसर पर गले में जो 'मगल-सूत्र' बाँधा जाता है, वह भी आखिर है तो सूत्र मात्र ही, किन्तु दक्षिण भारत के निवासी फिर भी उसे कितना महत्त्व देते आये हैं। दूर जाने की आवश्यकता नही, रक्षा-बन्धन को ही लीजिये—वह भी एक प्रकार का रक्षा-सूत्र ही तो है किन्तु फिर भी उसके महत्त्व को कौन नही जानता ? यही कारण है कि डोरी भी यदि जादू के गुणो से समन्वित हो जाय तो फिर उसकी करामात देखने ही योग्य है। केवल भारतवर्ष मे ही नही, विश्व के बहुत से देशो मे अनेक कार्यो की सिद्धि के लिए जादू की डोरी का प्रयोग हुआ है। स्त्रियो के वन्ध्यात्व को दूर करने तथा बहुविध रोगोपचारो मे जादू की डोरी अथवा डोरे का प्रयोग होता रहा है। इतना ही नही, आज के वैज्ञानिक युग में भी उसका प्रयोग बराबर देखने मे आता है।

लोक-कथाओ के मूल अभिप्राय के रूप मे प्रयुक्त 'जादू की डोरी' का जो रूप है, उसका कुछ स्पष्टीकरण कथासरित-सागर की निम्नलिखित कथा से हो सकेगा—

"वाराणसी मे सोमदा नाम की एक युवती थी जो बडी सुन्दरी थी। वह पुश्चली थी और गुपचुप जादूगरनी का भी काम करती थी। एक दिन उसने भवशर्मा के गले मे एक डोरी बाँध कर जादू कर दिया जिसके परिणाम स्वरूप भवशर्मा एक बैल के रूप मे परिवर्तित हो गया। सोमदा ने इस बैल को एक ऊँटवाल के यहाँ बेच दिया। ऊँटवाल ने बैल पर जब सामान लादना शुरू किया तो एक बधनमोचिनी नामक जादूगरनी को उस बैल पर बडी दया



आई। उसने अपनी अलौकिक शक्ति से जान लिया कि सोमदा ने भवशर्मा नामक एक निरपराध व्यक्ति को बैल बना दिया है। बन्धनमोचिनी ने दयार्द्र होकर उस समय बैल के गले मे से डोरी निकाल ली, जब कि बैल का स्वामी उसे देख नही रहा था। गले मे से डोरी निकलते ही वह बैल फिर भवशर्मा बन गया। मालिक ने बैल की तलाश करना शुरू किया किन्तु मालिक के लिए अब उस बैल की छाया तक भी पहुँचना सम्भव नही था। उधर बधनमोचिनी और भवशर्मा दोनो साथ-साथ चलने लगे। सयोग से सोमदा भी उसी रास्ते से आ निकली। भवशर्मा को फिर से मनुष्य रूप मे देख कर उसके क्रोध का ठिकाना न रहा। 'खग जाने खग की ही भाषा' के अनुसार सोमदा सब रहस्य समझ गई। उसने बधनमोचिनी को आडे हाथो लेते हुए कहा—"दुष्टे! तूने इस भवशर्मा को क्यो बन्धन-विमुक्त कर दिया? अवश्य ही तुझे इसका फल चखाऊँगी। कल अगर तुम दोनो को मौत के घाट न उतार दूँ तो मेरा नाम सोमदा नही।" यह कह कर बिना किसी उत्तर की प्रतिक्षा किये ही सोमदा वहाँ से चली गयी। उसके चले जाने के बाद बधनमोचिनी ने भवशर्मा से कहा—"कल सोमदा हम दोनो का प्राणान्त करने के लिए एक काली घोडी का रूप धर कर आयेगी। उस समय मैं रंगबिरंगी घोडी का रूप धारण करूँगी। जब हम दोनो आपस मे लडने लगें, तब तुम काली घोडी को तलवार से मार डालना।

"प्रातःकाल होते ही भवशर्मा तलवार लेकर बंधनमोचिनी के घर गया। कुछ समय बाद सोमदा काली घोडी का रूप बना कर वहाँ आ पहुँची। बधनमोचिनी ने लाल-भूरी घोडी का रूप बना लिया और दोनो मे गुत्थमगुत्थी होने लगी। मौका देख कर भवशर्मा ने काली घोडी पर तलवार का वार किया जिससे सोमदा नामक जादूगरनी का सदा के लिए काम तमाम हो गया और भवशर्मा ने भी सन्तोष की सांस ली।"※

उक्त कथा से स्पष्ट है कि जब तक जादू की रस्सी बन्धी रहती है, तब तक जादूगर या जादूगरनी द्वारा परिवर्तित रूप से मुक्ति नही मिलती। जादू की रस्सी ज्योंही टूटी, मनुष्य अपने पूर्व रूप को प्राप्त कर लेता है। ऊपर दी हुई कथा मे यदि बधनमोचिनी बैल के गले से डोरी न निकालती तो भवशर्मा को बैल ही बने रहना पड़ता।

कथा सरितसागर के अतिरिक्त अन्य अनेक कृतियो मे 'जादू की डोरी' नामक मूल अभिप्राय के बहुत से उदाहरण मिलते है। जैन-धर्म की एक अप्रकाशित कृति 'उत्तम चरितकथानक' है जिसमे अनगसेना नामक नायिका राजकुमार उत्तमचरित के प्रेम मे पागल हो उठती है। जब वह राजकुमार को प्राप्त नहीं कर पाती तो उसकी टाँग मे जादू का डोरा बाँध देती है जिसके परिणामस्वरूप तत्काल ही उत्तमचरित शुक का रूप धारण कर लेता है। दिन मे वह उसे शुक बनाए रखती और रात्रि मे उसके गले मे से जादू का सूत्र निकाल लेती जिससे फिर

※ द्रष्टव्य The Ocean of Story (pp 193-94-95)

वह मनुष्य बन जाता । इस प्रकार रात्रि मे वह राजकुमार को अपनी विलासिता का साधन बनाती ।"

'उत्तमचरित कथानक' से मिलता-जुलता प्रसग ही 'चौवोली' नामक राजस्थानी लोक-कथा मे भी उपलब्ध है जिसका आवश्यक अश यहाँ उद्धृत किया जा रहा है—

"ताहरा मूरिखँ रो नाम रतन पारखू दियो । रतन परखावण लोक आवै । खोटै-खरै री खवरि करिदै । ताहरा कुवरी कही—सिद्ध आगा इसी राखडी कराई जे बाधीजै तो सूवटौ हुवै, खोलीजै तो आदमी हुवै । एक समै सूवटौ करि वैसारियौ हुतौ सु ख्याल करता उडियौ । जाई सहर कै राजा री कुवरी पचकळी नै मिल्यौ । पचकळी चपे री कळी सूं तुलती तैसू नाम पचकळी कहावती । तैरै मौहल जाइ वैठौ । पचकळी पकडि लियौ अर ख्याल करता देखै तौ राखडी छै । राखडी छोडै तौ मनिख हुवौ । राति मानिख करै । दिन सूवटौ करै । इम करता उवैसू चूकी । "अर्थात् तव मूर्ख का नाम रत्न-पारखी रखा गया । रत्न-परीक्षा करवाने के लिये लोग आने लगे । मूर्ख खोटे-खरे की जाच कर देता । तव राजकुमारी ने किसी सिद्ध से ऐसा रक्षा-सूत्र बनवाया कि जिसे यदि किसी के बाँध दिया जाय तो वह व्यक्ति शुक हो जाय और यदि रक्षा-सूत्र खोल दिया जाय तो शुक पूर्ववत् मनुष्य का रूप धारण कर ले । एक समय राजकुमारी ने मूर्ख को सुआ करके विठला रखा । सुआ खेल ही खेल मे उडा और जाकर शहर के राजा की लडकी पचकली से मिला जो चम्पे की कलियो से तुलती थी और इसलिए जिसका नाम भी पचकली था । सुआ उसके महल पर जाकर वैठ गया । पचकळी ने उसे पकड लिया और ख्याल करते हुए देखा तो उसे राखी (रक्षा-सूत्र) दिखाई दी । राखी ज्योही छुडाई गई, शुक मनुष्य हो गया । इस प्रकार राजकुमारी रात को उसे मनुष्य बना देती और दिन में सुआ बना देती । इस प्रकार करते हुए वह पथ-भ्रष्ट हो गई ।"

जैसा ऊपर कहा गया है 'उत्तमचरित कथानक और चौवोली की इस उपकथा में बहुत साम्य है किन्तु फिर भी उपकथा अपनी विशेपता लिए हुए है जिसकी ओर हमारा ध्यान आकृष्ट हुए विना नही रहता । लोक-कथाओ मे सामान्यत यह देखा जाता है कि राजकुमारी गले मे जादू का डोरा डाल कर जिसे सुआ बना देती है, वह सुआ साधारणत उड कर अन्य राजकुमारी के पास नही जाता । किन्तु चौवोली का शुक उड कर एक दूसरी राजकुमारी पचकळी के पास पहुँच जाता है ।

नावल्स (Knowles) द्वारा सपादित काश्मीरी लोक-कथाओ मे एक ऐसे जादूगर की लडकी का प्रसग आता है जो एक राजकुमार से प्रेम करने लगती है । वह राजकुमार को राजकुमारी से विमुक्त कर देना चाहती है । इसलिए राजकुमार के गले में एक जादू की डोरी अथवा सूत्र वाँध देती है जिसके परिणाम-स्वरूप राजकुमार तत्काल ही एक मेढे का रूप धारण कर लेता है ।

उक्त काश्मीरी लोक-कथा को पढ कर हमे एक ऐसी ही प्रसिद्ध राजस्थानी लोक-कथा का स्मरण हो आता है जो तुलनात्मक अध्ययन की दृष्टि से यहाँ सक्षिप्त रूप मे उद्धृत की जा रही है :—



"एक समय की वात है कि मारवाड के एक पहाडी इलाके मे एक विधवा राजपूत स्त्री रहती थी। सयोग से एक रात के समय जब कि मूसलाधार वर्षा हो रही थी, उसका एक लडका वाहर निकला। घोर अन्धकार मे पानी की बौछारो से वह वालक अपनी सुधवुध खो वैठा। दुर्भाग्यवश उसका पाँव पानी की तेज धार मे चला गया और वह वह निकला।

"उस समय दिल्ली मे एक वादशाह राज्य करता था। उसके वजीर के कोई पुत्र न था। वजीर की आयु ढल चुकी थी तथा वह और उसकी पत्नी पुत्रहीन होने के कारण वहुत दुःखी रहते थे। वजीर नियम से नित्य प्रातःकाल यमुना-स्नान करने जाता था। एक दिन वह ज्योही घाट पर गया, उसने देखा कि एक वालक नदी मे वहता हुआ जा रहा है। वह तुरन्त नदी मे से उस वालक को निकाल लाया और उसे घर ले जाकर अपनी पत्नी से कहा—"भगवान ने हमारे लिए पुत्र भेजा है, इसका पालन-पोषण कर।" वजीर की स्त्री ने वालक का रूप-रंग देखा तो वह मुग्ध हो गई।

"दिन, मास और वर्ष व्यतीत होने लगे। लडके की आयु अव पन्द्रह वर्ष की हो चली। एक दिन तीज का मेला देखता हुआ लडका ऐसे स्थान पर जाकर रुका जहाँ से वादशाह का महल वहुत नजदीक था। वादशाह की वेटी झरोखे मे खडी हुई मेले की शोभा देख रही थी। वजीर के वेटे को देख कर वह उस पर मुग्ध हो गई। उसने तुरन्त एक दासी को भेज कर लडके से कहलवाया कि आज अर्ध रात्रि के समय घोडा लेकर तुम मेरे महल के नीचे आकर खडे हो जाना। मैं वही तुमसे मिलूगी।

"वजीर का वेटा निश्चित समय पर वहाँ पहुँचा। वादशाह की लडकी पहले ही वहाँ घोडा लिए खडी थी। दोनो रातो-रात नगर से वाहर निकल गये। मजिल-दर-मजिल चलते वे कामरूप देश मे पहुँचे। एक सराय मे उन्होंने डेरा किया। वादशाह की वेटी भोजन के प्रवन्ध मे लग गई और वजीर का वेटा घोड़े के लिए दाना-चारा लाने वाजार गया। कामरूप देश की स्त्रियाँ जादू-टोने के लिए विख्यात हैं। वहाँ की एक स्त्री वजीर के लडके को देख कर उस पर मोहित हो गई। उसने वजीर के लडके के गले मे एक जादू की डोरी वाँध दी जिससे वह मेंढा वन गया।

"वहुत समय तक वाट देखने पर भी जव वजीर का लडका न लौटा तो राजकुमारी ने मर्दाना वेश वनाया और उसकी खोज मे निकल पडी। कई दिनो तक घूम कर उसने नगर की गली-गली छान डाली किन्तु वजीर के वेटे का कुछ पता न चला। नगर में घूमने से उसे एक वात का निश्चय अवश्य हो गया कि किसी ने जादू के वल से उसके प्रेमी को पकड लिया है। एक दिन कामरूप के राजा ने पुरुष वेशधारी राजकुमारी को देखा। राजा ने जव परिचय पूछा तो वादशाह की लडकी ने कहा कि मैं दिल्ली का राजकुमार हूँ। राजा ने अपनी राजकुमारी का विवाह उसके साथ कर दिया। वादशाह के वेटे ने कहा—"हमारे यहाँ ऐसा रिवाज है कि विवाह के पश्चात् सात दिन तक रात जगायी जाती है। आप नगर के सातो मुहल्लो को आदेश दे दीजिए कि हर मुहल्ले की स्त्रियाँ एक-एक रात जगावें।

'राजा के हुक्म से सभी स्त्रियाँ वारी-वारी से रात जगाने आती। वादशाह की वेटी वडी

सावधानी से उन्हें देखती। इस प्रकार रात जगाते-जगाते छ रातें गुजर गयी। सातवी रात उस मुहल्ले की स्त्रियों की वारी ग्रायी जिनमे वह मेंढा वना देने वाली स्त्री भी थी। वह स्त्री मेंढे को भी अपने साथ लाई थी। वादशाह की वेटी ने मेंढा अपने पास रख लिया और राजा से उसका मूल्य चुका देने को कह दिया। वह यद्यपि मेंढा देना नही चाहती थी, तथापि उसकी एक न चली और उसे मजबूर होकर मेंढे के वदले मूल्य ले लेना पडा।

"वादशाह की वेटी ने दूसरे दिन दिल्ली के लिए प्रस्थान कर दिया। राजा ने उसे वहुत धन देकर विदा किया। मार्ग मे वादशाह की लड़की ने मेंढे के गले मे वँधा हुआ मन्त्र का धागा तोड डाला। ऐसा करते ही मेंढा वही सुन्दर वजीर का वेटा वन गया।

"वादशाह की वेटी ने राजकुमारी तथा वजीर के वेटे को सव वृत्तान्त कह सुनाया और उससे प्रार्थना की कि वह उन दोनो को पत्नी रूप मे स्वीकार करके सुखपूर्वक जीवन विताये। वजीर के वेटे ने इस प्रार्थना को सहर्ष स्वीकार कर लिया।"

इसीसे मिलती-जुलती एक कहानी लालजी हीरजी की है जिसका आवश्यक अथवा सवद्ध अश यहाँ उद्धृत किया जा रहा है :—

"अव लालजी वजार मे जार दाणा हाळा नै तो दांणा की साई दीयाया अर फेर तमोळी कै बीडा लेवानै गया। सो तमोळण तो वाने मीडो कर'र वैठाण लीना। हीरजी रसोई छोड'र लालजी नै हेरवा आया जिद देखै काई तो लालजी तो मीडो हुया तमोळण कै मंद्‌चा छै। देख'र उलटाई चल्या गया। ऊ सैर को राजा नार की सिकार खेलवानै रोजीना जाय अर हीरजी भी रोजीना देखवानै जाय। एक दिन नळा में अस्यो भारयो नार आ गयो सो कोई सू ई को मरयो नै, जिद हीरजी आपका घोडा माळा सूं तीर की देर ऊ नार नै मार नाख्यो। जिद राजा हीरजी नै बुला'र खैचै—रै भाई जुवान, आ, तू म्हाकी साथ रैवो कर। हीरजी साथ रैवा लागगा। राजा राजी हु'र हीरजी नै खैचै—भाई जुवान, तूनै चायजे सोई माग। जिद हीरजी खैचै—और तो काई वी मागू नै, सोना का सौ टका रोजीना चायजे छै। सो राजा सौ टका तो सोना का रोजीना कर दीना अर ऊनै आपकी वेटी परणा दीनी। अख हीरजी को नाम लखटकियो जुवान पड गयो अर राज कोवी सव काम वोई करवा लाग गयो। फेर वो सव जिनावरा की लडाई कराई। कदे हाती की, कदे घोडा की, कदे काई की, कदे काई की अर पार्छैईपाछै मीडा की। जिद सव सैर का मीडा आया अर तमोळण को मीडो भी आयो। हीरजी ऊ मीडा को डोरो तोड'र लालजी कर लीना। फेर आपकै देस जावानै राजा सू सीक मागी। राजा वानै नरो धन-दौलत देर, सीक देर विदा कर दीना। हीरजी अर लालजी अर वा राजा की वाई तीन्यू चाल्या। आगै चाल'र लालजी, हीरजी अर राजा की वाई सू व्याव कर लियो अर तीन्यू सुख सू रैवा लाग्या। †

---

† देखिये Specimens of the Dialects, spoken in the State of Jeypore by Rev G Macalister, M A, (pp 53-54)

कथा की बात

[कोमल कोठारी]



प्रकृति एव जीवन के सत्य को उद्घाटित करने के दो मुख्य साधन है। एक—मनुष्य के वैज्ञानिक मानस मे सम्बन्धित है एव दूसरा—मनुष्य के कलात्मक चिन्तन में निहित है।

विज्ञान मनुष्य के भौतिक जीवन की आवश्यकताओ का विश्लेषण करता है, उसे सुखी एव समृद्ध बनाने के लिए अन्वेषक का रूप धारण करता है, प्रकृति की अपरिमित शक्ति को पहिचानने की कोशिश करता है, और प्रकृति को जीवन के अनुरूप ढालने के लिए सतत् प्रयत्नशील रहता है। विज्ञान का सत्य मनुष्य के हित के लिए तो अवश्य है किन्तु यह सत्य मनुष्य से निरपेक्ष रहता है। विज्ञान का लाभदायक उपयोग और विनाशकारी उपयोग मनुष्य की मानसिक गतिविधि पर निर्भर करता है। विज्ञान निर्माण भी है और विनाश भी है।

जीवन के सत्य को उद्घाटित करने वाली अन्य सत्ता का नाम है—कलात्मक चिन्तन। कला का श्रेय एव प्रेय है—मनुष्य का दैनिन्दिन जीवन, उसका सद्व्यवहार, उसकी नैतिकता, सौन्दर्य भावना, समाज के प्रति मगल-कामना एव उसके सुसस्कार। कला मनुष्य-सापेक्ष है, समाज-सापेक्ष है। विज्ञान, क्षण भर के लिए ही सही, मनुष्य के हित का आँचल छोड सकता है, कला को मनुष्य की शुभ-कामना के साथ छाया की भाँति लगा रहना पडता है।

विज्ञान, अपने अन्वेषण की दुनिया मे अनेक-अनेक हिस्सो मे बँट जाता है। कला भी अपने अनुभूतिपूर्ण संसार मे अनेक भागों मे बँट जाती है। चित्र भी कला है, सगीत भी कला है, भवन-निर्माण भी कला है और साहित्य भी कला है। सब कलाओ का प्रयोजन एक है और सभी कलाओ का उद्भव मनुष्य के सवेदनशील एव अनुभूतिपूर्ण सौंदर्य भावना की अभिव्यक्ति मे सन्निहित है।

सामाजिक जीवन की प्रारभिक अथवा आदिम अवस्था मे विज्ञान एव कला मे भेद नही था। जो विज्ञान था—वही कला थी। आदिम-समाज मे टोने और टोटके, 'टेबूज़ और



"लालजी और हीरजी मे प्रेमी-प्रेमिका का सम्बन्ध था। जब हीरजी का विवाह-सम्बन्ध किसी दूसरे से स्थिर हो गया तो एक दिन लालजी और हीरजी दोनो पुरुष वेश मे अपने-अपने घोडो पर सवार होकर एक साथ निकल पडे। चलते-चलते वे एक शहर मे पहुँचे। अब लालजी तो बाजार मे दाने वालों के यहाँ जाकर दानों की 'साई' दे आए और फिर तमोळी के यहाँ बीडा लेने गए। तमोळिन ने उन्हें मेढा बना कर बिठा लिया। हीरजी रसोई का काम छोड कर लालजी को तलाश करने गई तो क्या देखती है कि लालजी तो मेढा बने तमोळिन के यहाँ बंधे हैं। देख कर हीरजी लौट गयी। उस शहर का राजा सिंह की शिकार के लिए प्रतिदिन जाता और हीरजी भी रोज शिकार का दृश्य देखने जाती। एक दिन एक नाले मे एक ऐसा भारी शेर आ गया जो किसी से भी नही मारा गया। तब हीरजी ने अपने घोडे पर से तीर चला कर उस सिंह को मार डाला। तब राजा ने (पुरुष-वेश धारण किए हुए) हीरजी को कहा—"हे भाई नौजवान! आ, तू मेरे साथ रहा कर।

'हीरजी ने साथ रहना स्वीकार कर लिया। एक दिन राजा ने प्रसन्न होकर कहा—"नौजवान, तुझे जो चाहिए माँग।" हीरजी ने कहा—"मुझे और तो कुछ नही चाहिए, प्रति-दिन सोने के सौ टके चाहिएँ।" राजा ने हीरजी को सौ टके प्रति दिन देना स्वीकार कर लिया और अपनी पुत्री का विवाह उससे कर दिया। अब हीरजी का नाम लखटकिया जवान पड गया और राजा का भी सब काम वही करने लग गया। फिर उसने सब पशुओं की लडाई करवाई—कभी हाथियो की, कभी घोडो की, कभी किसी की और कभी किसी की और अंत ही अंत मे मेढो की। जब सब शहर के मेंढे आये तो तमोळिन का मेढा भी आया। हीरजी ने उस मेढे का 'डोरा' तोड कर उसे लालजी बना लिया। फिर अपने जाने के लिये राजा से छुट्टी माँगी। राजा ने उन्हे बहुत सा धन-द्रव्य देकर विदा किया। हीरजी, लालजी तथा उस राजा की लडकी, ये तीनो चले। आगे चल कर लालजी ने हीरजी तथा उस राजा की लडकी, दोनो से विवाह कर लिया और तीनो सुखपूर्वक रहने लगे।"

'जादू की डोरी' नामक मूल अभिप्राय के सम्बन्ध में जो दो राजस्थानी लोक-कथाएँ उद्धृत की गई हैं, उनमे विवरणों का कुछ अंतर होते हुए भी दोनो की आत्मा एक है। एक कथा मे मेढे को प्राप्त करने के लिए 'रात्रि-जागरण' का आश्रय लिया जाता है, जब कि दूसरी कथा मे पशुओं की लडाई का आयोजन किया जाता है।

किसी भी मूल अभिप्राय के सम्बन्ध मे दो बातें द्रष्टव्य हैं—एक तो यह कि मूल अभिप्राय एक कथानक-रूढि के रूप मे प्रयुक्त होता है जिसका तात्पर्य यह है कि किसी एक देश-विशेष की लोक-कथाओ मे ही नही बल्कि अन्य देशों की लोक-कथाओ मे भी सामान्यत उसकी बार-बार आवृत्ति देखी जाती है। दूसरी बात यह है कि इस प्रकार का मूल अभिप्राय कथानक को आगे बढने मे भी सहायक होता है। 'जादू की डोरी' नामक मूल अभिप्राय के स्पष्टीकरण के लिए जिन लोक-कथाओ के उदाहरण ऊपर दिए गए हैं, उनमें यह बात स्पष्ट है कि 'जादू की डोरी' कथा को गति देने मे सहायक होती है। गति ही क्यो, कथा की परिणति मे



भी अनेक वार मूल-अभिप्राय का हाथ रहता है। अंग्रेजी के (Motif) शव्द के लिए कथानक—रूढि, मूल-अभिप्राय आदि शव्दो का प्रयोग होने लगा है किन्तु (Motif) के लिए 'प्ररूढि' शव्द अधिक उपयुक्त है, और यही शव्द प्रकृष्ट-रूढि तथा कथाङ्कुर दोनो के अर्थ मे व्यवहृत होना चाहिए।



टोटेम', जादू और धर्म की जो धारणायें थीं—वही शनै शनै समाज की विकसित अवस्था मे विज्ञान एव कला का रूप ग्रहण करती गई । किन्तु एक महत्वपूर्ण बात है—मनुष्य की चाहे वैज्ञानिक-क्षुधा हो अथवा कलात्मक-क्षुधा हो—दोनो ही के लिए मनुष्य ने अपने सामाजिक इतिहास मे बार-बार कथाओ का, उदाहरणो का, दृष्टातो का सहारा लिया। मनुष्य अपनी बात कहने के लिए, अपने मन के रहस्यभरे और अस्फुट विचार को व्यक्त करने के लिए कहानी और दृष्टातो की शरण मे गया है।

मनुष्य के आदिम-मानस पर कथा-कहानी का अद्भुत प्रभाव पडता था। उसके सभी प्रकार के विश्वासो के पीछे एक सुसम्बद्ध कथा का आधार हुआ करता था। वह शिकार के लिए जाता तो पशुओ के व्यवहारो और उनको चतुरता से बचने के तरीको की कितनी ही कहानियाँ सुनी हुई होती थीं। वही कहानियाँ उसकी शिकार-शिक्षा थी। इसी प्रकार हवाओ के रुख पर कथा-कहानियाँ होती थीं। सूरज का उगना, चाँद का अस्त होना, पेड का पैदा होना, वर्षा की बूँदो का आना, नदियो मे पानी का बहना, पानी के किनारे-किनारे पशुओ का चरना—अर्थात आदिम जीवन की सभी आवश्यकताओ के अनुकूल एव अनुरूप कथा-कहानियाँ बनी हुई हैं। प्रकृति के इन उपकरणो के अलावा मनुष्य के सामाजिक जीवन को सुसगठित बनाने की दृष्टि से भी अनेक कथानक अस्तित्व मे आये। व्यक्ति और उसकी वैयक्तिक समस्याओ ने भी कथा का स्वरूप ग्रहण किया। कहने का तात्पर्य यह कि आदिम समाज का संपूर्ण कलात्मक एव वैज्ञानिक जीवन 'कथाओ' के माध्यम से व्यक्त होता था।

कथाओं के मुख्यत दो रूप हो सकते है। एक—वे कथायें जो सहज, स्वाभाविक और यथातथ्य घटनाओ का ज्यो का त्यो वर्णन करें; अर्थात कथा के पात्र, घटनायें, चरित्र सभी कुछ जीवन के यथार्थ पर निर्भर करें।

कथा का दूसरा स्वरूप—वे कथायें जो कल्पना के सानुपातिक उपयोग द्वारा अनुभूतियो एव घटनाओ के यथार्थ को विरूप (Deform) करके जीवन के सत्य को उद्घाटित करें। आदिम-जीवन की सभी कथा-कहानियाँ 'विरूपात्मक' है और 'विरूप' के माध्यम से वे सकेतात्मक अर्थ प्रदान करती हैं। परियो, जादू-टोनो, असभाव्य घटनाओ एव पशु-पक्षियो की कथाओं के पीछे जीवन की सकेतात्मक अनुभूति छिपी हुई रहती है।

कथाओ के यही दो मुख्य बीज हैं। इन्ही बीजो को सामाजिक भूमि पर मनुष्य के अनुभवो का जीवन-दायी पानी मिला और कथाओ की लता जीवन के नानारूपात्मक सकेतो मे पल्लवित एवं पुष्पित होने लगी।

कथाओ का क्रम, मनुष्य के सामाजिक जीवन की ही भाँति, अविच्छिन्न एव सतत् प्रवाहशील रहा है। इन कथाओ ने अपने मुख्य विभाजनों के आधार पर इतिहास, समाज, दर्शन, शिक्षा, धर्म, राजनीति, आचार-विचार एवं नीतिशास्त्र सबधी अनेक जीवन-प्रसंगो मे यथार्थ का सहारा लेकर कथा-शैली एव विषयो को विकसित बनाया। इसी प्रकार 'विरूपात्मक' शैली मे मनुष्य के सूक्ष्म एव अमूर्त विचारों को अभिव्यक्ति मिली।

यह दोनो प्रकार की कथा-शैलियाँ, समाज की विकसित अवस्था पर पहुँच कर, बहुत कुछ अन्योन्याश्रित होने लगी। ऐतिहासिक आख्यानो मे असभाव्य घटनाओ एव रचनात्मक सूक्ष्मताओ का प्रभाव पडने लगा और दूसरी ओर कल्पना-जन्य विरूपात्मक कथाओ मे यथार्थ का प्रभावशाली अश आने लगा।

प्रारभिक अवस्था मे, जब मनुष्य के पास अपने भावो एव विचारो को व्यक्त करने के लिए केवल वाणी का सहारा था, तब वह कथा कहता था और सुनता था। बाद मे, जब उसने भावो एव विचारो को वाणी के सकेतो (अर्थात् लिपि) मे लिखना सीख लिया तो वह कथाओ को लिपि-बद्ध करने लगा। किन्तु उस समय की लिपि-बद्ध भाषा मे आज जितनी सहजता एव यथार्थ को निश्चित स्वरूप मे व्यक्त करने की शक्ति नही थी। अत उन कथा-कहानियो को ऐसा स्वरूप ग्रहण करना पडा जो साकेतिक शब्दो के माध्यम से गहरे एव सुन्दर भावो को व्यंजित कर सके और इसीलिए उस समय के कथाकारो को 'पद्य' का सहारा लेना पडा। पद्य-बद्ध कथा लिखने के पीछे कुछ और कारण भी थे। उस समय के कलाकार के सामने अपनी 'बात' को व्यक्त करने के लिए एक ओर भाषा की सीमा थी और दूसरी तरफ प्रारम्भतम प्रयत्न होने के कारण भाषा स्वय ही छन्द का सहारा लेने लगती थी। साथ ही 'बात' को स्थायित्व प्रदान करने के लिए कथा को ऐसा स्वरूप देने की कोशिश की जाती थी जिससे वह सहजता से मनुष्य के कठ मे जीवित रह सके। उस समय लिपि का जन्म तो हो चुका था किन्तु उस लिपि का सम्पूर्ण समाज मे प्रचार होना सभव नही था। अत लिपि के जन्म के साथ ही साथ कथाओ के सुनने एव सुनाने का क्रम निरन्तर चलता रहा। सच बात तो यह है कि लिपि का सही-सही उपयोग तो छापेखाने के बाद ही हो सका है। उसके पूर्व का जितना भी साहित्य है वह सब तो कथात्मक अथवा कथनात्मक साहित्य ही है।

भारतीय कथा-साहित्य को एक विहगम दृष्टि से देखें तो पता चलेगा कि चाहे वे कथायें वेदो की हो, चाहे पुराणो-उपनिषदो की कहानियाँ हो, चाहे जातक की आख्यायिकायें हो, चाहे वृहत्कथा सरित्सागर, हितोपदेश, सिंहासन बत्तीसी, बैताल पच्चीसी के किस्से हों—सभी कथाओ की लिखने की शैली मे 'कहने के प्रकार' का प्राधान्य है। इन सभी कथाओ मे 'सुनने एव सुनाने' का भाव निहित है।

इस बात को समझने के लिए आप किसी भी प्राचीन कथा को ले लीजिये और उसकी तुलना आधुनिक कहानी से कीजिये। आज की कहानी का अपना टेकनीक है—उसकी अपनी शैली है। कहानी केवल कथा ही नही है। वह अपनी शैलीगत विशेषता के कारण विशिष्ट भी है। प्रेमचदजी अथवा शरतबाबू की कहानी को पढ कर आनन्द तभी प्राप्त हो सकता है जब हम उन्ही के द्वारा लिखे गये रूप को पढते हैं। उनकी लिखी हुई कहानी को हम बयान करके वह आनन्द प्राप्त नहीं कर सकते। किन्तु प्राचीन कथाओ मे लेखक की इस 'वैयक्तिकता' का नितान्त अभाव है। कथा को लिखने वाला अथवा कहने वाला कथा मे सौ-फी-सदी निरपेक्ष है। जो कुछ है—वह कथा ही है। उस कथा को जो

कुछ कहना वह लेखक की शैली अथवा वैयक्तिकता के विना ही कह सकती है। उन कथाओं का यह सर्वश्रेष्ठ गुण भी है और समवतया उनकी सबसे महत्वपूर्ण दुर्बलता भी है।

कथाओं की विकासमान यात्रा की एक अद्‌भुत कहानी है। जब केवल वाणी थी—उसका स्वरूप एक था। जब लिपि का जन्म हो गया तो उसके स्वरूप ने पलटा खाया। समाज की आवश्यकताये एव नैतिक मान्यतायें वदली तो उसे अपना पथ वदलना पडा। ज्यो-ज्यो मनुष्य के ज्ञान की परिधि विस्तृत होती चली गई—त्यो ही त्यो कथाएँ जीवन की गहराई मे उतरती चली गई। कथाओं ने कभी समाज के आदर्शों को व्यक्त करने की कोशिश की, तो कभी आदर्शों की रूढिवादिता और कठोरता को भग करने की कोशिश की। कभी कथा ने इतिहास को अपने मे समाहित करने का प्रयत्न किया, तो कभी उसने दर्शन की गुत्थियो को सुलझाया। कभी कथा ने रीति-नीति की वात की, तो कभी उसने रीति-नीति की व्यर्थता को सावित किया। कभी कथा ने समाज को वलवान वताया तो कभी उसने एक व्यक्ति के चरित्र को ही समाज की मर्यादा वना दिया। सूर्य की रोशनी समाज और व्यक्ति के मन के गहरे अधेरे मे पहुँची या नहीं पहुँची नहीं कह सकते, किन्तु कथा की उज्ज्वल किरणो ने अवश्य समाज और व्यक्ति के अन्तर को प्रकाशवान वनाया है।

कथाओं के सामने एक ही भाषा कभी वंधन वन कर नही आई। विश्व भर के सभी मनुष्यों की सभी भाषाओं मे उसने अपना रूप वदला। वह एक देश से दूसरे देश की सीमा मे ठीक हवा की भाँति जा मिली। और दूसरे देश मे जाकर वह पहिचानने जैसी भी नही रही। उसका देशीय अथवा राष्ट्रीय स्वरूप न मालूम क्यो और कैसे वदल जाता है?

किन्तु, साथ ही यह वात भी स्पष्ट है कि कथाओं का अपना राष्ट्रीय स्वरूप होता है। भारत की कथाओं मे भारतीय आत्मा का निवास है। यदि कोई भारतीय कथा, अन्य किसी देश मे चली गई है तो उस कथा ने उस राष्ट्र की आत्मा को ग्रहण कर लिया है और अब वह उस राष्ट्र की सम्पत्ति वन चुकी है। इसी प्रकार कथाओं मे हमारे अतीत के अनुभवों एव इतिहास के घटनाओं की छाप भी होती है।

इसी जगह हम विश्वजनीन कथा साहित्य को अपने देश और काल की सीमा मे वाँध सकते हैं।

भारत एक वहुत वडा देश है। यह देश अनेक सस्कृतियो का पवित्र सगम है। इसके इतिहास में अनेक 'देश अथवा राष्ट्र' वने और विगडे। इस भू-भाग पर अनेक भाषायें वोली गईं—लिखी गई, कितनी ही भाषाये अतीत मे अपना भाग अदा करके विलीन हो गई। कितनी ही भाषायें निरन्तर रूप से वदलती रहीं और उनका सतत् विकास होता रहा। भारत के भूगोल, इतिहास एव सस्कृति की अपनी अपनी कहानियाँ हैं। इन कहानियो ने भारत को निश्चित भागो मे वाँटा और सभी भागो को निश्चित 'अनुभवो' और 'आवश्यकताओं' के अनुरूप ढालने का प्रयत्न किया। इसीलिए हम भारत को विभिन्न सस्कृतियो का एक महान देश कहते है

भारत के पच्छिमी छोर पर एक प्रदेश है जो राजस्थान के नाम से जाना जाता है। इतिहास के ऊहापोह और विभिन्न कवीलो के निकट सपर्क के कारण धीरे-धीरे यह प्रदेश अपनी सास्कृतिक विशिप्टता के तत्वो को एकत्रित करने लगा। प्रारभ मे राजस्थान की सास्कृतिक सीमायें एकदम स्पष्ट नहीं थी, जैसी आज हैं। इतिहास के दौर मे अनेक वार राजस्थान की सास्कृतिक मीमायें पजाव, सिंध, मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश एव गुजरात की मीमाओ मे प्रवेश कर जाती और कभी-कभी इन पडौसी प्रदेशो का गहरा प्रभाव राजस्थान की मीमा पर पडने लगता। मध्यकाल मे अनेक राज्य वनते और विगडते थे—उनके सीमा-परिवर्तनो के साथ-साथ प्रदेशो का स्वरूप भी वनता और विगडता था। किन्तु इसी दौर मे धीरे-धीरे, भारत की वर्तमान राज्यो की निश्चित सीमायें वनना प्रारम्भ हो गई थी—इन सीमाओ के निर्माण के पीछे आर्थिक ढांचे की सम्पन्नता, राजनीति अथवा राज्यो की स्थिति, रहन-सहन, खान-पान, भाषा एव सस्कृति की एकता तथा इतिहास एव भूगोल के अनुभवो का पुप्ट आधार था।

इन्ही मुख्य आधारो पर राजस्थान की सास्कृतिक इकाई का जन्म हुआ। इस प्रदेश की भाषा—राजस्थानी ने अपना विशिप्ट भाषागत स्वरूप ग्रहण करना प्रारभ किया। वह अपभ्र श से जन्मी, किन्तु उसने अपने निकट के प्रदेश गुजराती एव पजावी से पृथक ही स्वरूप ग्रहण किया। अपभ्र श के ठीक पश्चात राजस्थानी भाषा के निर्माण का काल सातवीं शताब्दी के वाद से प्रारभ हो जाना चाहिये। इसी काल से विभिन्न अपभ्र शो का स्वरूप विभिन्न प्रान्तीय भाषाओ मे समाहित होकर निश्चित स्वरूप लेने लगा था।

जव राजस्थान प्रदेश की सास्कृतिक सीमायें वनने लगी और उसकी भाषा का स्वरूप स्थिर होने लगा तो सास्कृतिक एव ऐतिहासिक अनुभवो के आधार पर राजस्थानी भाषा मे साहित्य-सृजन होना प्रारभ हुआ। १३ वी शताब्दी तक आते-आते तो राजस्थानी भाषा मे महत्वपूर्ण और सुन्दर ग्रथो की रचना होने लगी। साथ ही यह भी निश्चित है कि राजस्थानी की रचनायें भारतीय सस्कृति की ही एक पवित्र धारा वनी रही। उसका मुख्य प्रेरणा-स्रोत सस्कृत, प्राकृत एव अपभ्र श का वाङ्मय ही था।

राजस्थानी भाषा के निर्माण मे राजस्थानी वातो अथवा कथाओ का महत्वपूर्ण स्थान है। यह कथायें पद्यवद्ध भी लिखी गई एव गद्य मे भी लिखी गई। साथ ही साथ कथाओ की दो अन्य समानान्तर धारायें राजस्थान मे प्रवाहित होती रही। एक धारा तो उन कथाओ की थी जिनको लिपिवद्ध स्वरूप मिला और दूसरी धारा वह थी जो राजस्थान के निवासियो के कठो मे ही जीवित रही—अर्थात यह कथायें केवल कही व सुनी जाती रही—उन्हें किसी ने लिखने का प्रयत्न नही किया।

प्रस्तुत राजस्थानी वात-सग्रह मे राजस्थान की लिपिवद्ध गद्य कथाओ का सपादन किया गया है। यह सभी कथायें प्राचीन हस्तलिखित ग्रथो से प्राप्त हुई हैं। इन कथाओ का, कथा-स्वरूप के अतिरिक्त भी, वहुतकुछ महत्व है। राजस्थानी भाषा के स्वरूप, गद्य

की सशक्त परंपरा, भाषा-विज्ञान एवं व्याकरण की दृष्टि से इनका अध्ययन अत्यन्त आवश्यक है।

इन कथाओं की कथा-शैली के रूप में समीक्षा करते समय एक बात समझ लेना बहुत आवश्यक है। यह सही है कि यह कथायें गद्य में लिखी गई है। इनमें कथानक, पात्र एवं चरित्र-चित्रण आदि—सभी कथा के गुण मौजूद है। किन्तु साथ ही इन कथाओं का मुख्य प्रयोजन कथा लिखना नहीं था—अपितु कथा को भली प्रकार कह सकने के लिए, उसके मुख्य स्वरूप को स्मृति के रूप में लिपिबद्ध कर लेना मात्र था। राजस्थान की संस्कृति से परिचित लोग भलि भांति जानते हैं कि मध्यकाल में सभी मुख्य राजघरानो एवं ठिकानेदारों के यहाँ लोकगायकों की ही तरह कथाकार भी रखे जाते थे। उनका काम ही कहानी कहना था। वे कितनी ही रातो एक ही कहानी कहा करते थे। वह कहानी क्या—एक अलिखित वृहदाकाय कथ्य उपन्यास ही होता था। इन कथाओं का आन्तरिक रूप-विधान 'कहने की प्रणाली' पर निर्भर करता था। बात कहने मे, कहने वाले के स्वरों का उतार-चढाव, उसके हाथों-आँखो के अर्थवान इशारे और सुनने वाले के साथ उसका एकदम निकट सम्पर्क रहता था। इन कारण सारी कथा मे सुनाने वाला एवं सुनने वाले एकाकार हो जाते थे। कही-कहीं तो श्रोता ही, कहने वाले के वाक्य को पूरा करते थे। कथा कहने की इस कलात्मक प्रणाली मे बोलचाल-की-भाषा, नाटकीयता और सुन्दर पद्य-बद्ध पदों का प्रयोग होता था। कथा का सम्पूर्ण सौन्दर्य उसके सुनने मे था। यही सुनाई जाने वाली कथायें धीरे-धीरे कागज की सुविधा के कारण लिपिबद्ध की जाने लगी। लेकिन कथा का अभिव्यक्त स्वरूप वही 'कहने के तत्त्व' पर निर्भर बना रहा। लिखते समय वह विस्तार एवं स्वतंत्रता नहीं मिल सकती थी—जो बोलते समय होती है। इसलिए लिपिबद्ध कथा को केवल कही जाने वाली कथा के कलात्मक सौन्दर्य की ओर संकेत मात्र समझना चाहिए।

राजघरानो मे पलने वाली इन कथाओं के अलावा धार्मिक आख्यानो का रूप भी मुख्य रूप से सुनाने का ही था। जैन मुनि अथवा नाथ-सम्प्रदाय के लोगो ने राजस्थानी बात साहित्य को बहुत समृद्ध बनाया और ये धर्मगुरु अपने जीवन-दृष्टिकोण को व्यक्त करने के लिए कथा का सहारा लेते थे। इन लोगो द्वारा लिखी गई कथाओ मे भी 'कहने का तत्व' ही महत्वपूर्ण रहा।

तीसरे प्रकार की लोक-कथाओ का अस्तित्व राजस्थान के जन-साधारण में था। वह कहते थे, सुनते थे, हँसते थे, सीखते थे और उन्हें भूल जाते थे। कहावत, मुहावरे और पहेलियों मे वे अपना आत्मानुरंजन करते थे। इन लोक-कथाओ को बहुत कम लिखा गया और आज भी असख्य कथायें लोगो के कंठो में जीवित हैं।

राजस्थानी बात संग्रह मे कुल आठ कथायें हैं। इन कथाओ का विषयानुकूल विभाजन हम इस प्रकार कर सकते हैं—

१. प्रेम संबंधी	-	ढोला-मारू री बात
		जलाल-बूबना री बात

२	इतिहास सबंधी	.	अमरसिंह गजसिंहोत री वात पदमसिंह री वात सूरे-खीवे काघळोत री वात
३.	प्रतीकात्मक	:	डाढाळा सूर री वात
४.	पौराणिक	.	पलक दरियाव री वात
५	हितोपदेश	.	पलक मे खलक

राजस्थानी भाषा मे प्रेम-सबधी कथाओ का विपुल भडार है। उनमे से कुछ ही कथाओ के नामो का उल्लेख करना चाहता हूँ—नागजी-नागवन्ती, खीवजी-आभलदे, जसमादे-ओढण,, लाखा-फूलाणी, राणो काछवो, रतना-हमीर, मूमल-महेन्दरो, निहालदे-सुल्तान, बीझा सोरठ, एव जेठवा-ऊजळी। इन सभी कथाओ मे प्रेम की प्रशस्ति गाई गई है। समाज की नानारूपात्मक परिस्थितियो एव घटनाओ के बीच में अजर, अमर और शाश्वत प्रेम के पुष्प को प्रस्फुटित किया गया है। इन प्रेम-कथाओ मे प्रेमियो का अशक्त, सहज और मानवीयता का प्रबलतम पक्ष अभिव्यक्त हुआ है। इन प्रेम-कथाओ मे जातीय, राष्ट्रीय, सामाजिक, धार्मिक एव पारिवारिक बधनो का इद्रजाल नही है। यहाँ सभी सहज मानव है और प्रेम ही उनका जीवन-लक्ष्य है। और लक्ष्य तक पहुँचने मे कोई भी कृत्रिम बाधा उनके लिए बधन नही है।

इन प्रेम-कथाओ के ससार मे से वात-सग्रह मे ढोला-मारू एव जलाल-बूबना की वार्ते ली गई हैं। राजस्थान की प्रेम-कथाओ मे इन दोनो कथाओ का अन्यतम स्थान है।

ढोला—राजस्थान का सहज, सहृदय, वीर, बलवान और एक औसत नवयुवक है। उसका पालन-पोषण सामन्ती व्यवस्था मे हुआ। वह राजकुमार है। उसके हृदय मे प्रेम की औसत मात्रा है। वह परिवार मे सीधे-सीधे जीवन बिता लेता यदि बचपन मे ही उसके माता-पिता उसका विवाह मारवणि से न कर देते तो। ढोले का मोह सुन्दरता से था। उसने जब मारवणि का विरह-दीप्त सदेश और उसके सौन्दर्य का वर्णन सुना तो उसके औसत मन की प्रेम-भावना जागृत हो उठी। इस सदेश से पूर्व ढोला को अपने शैशवकालीन विवाह का ज्ञान नही था। उसे अपने वैवाहिक कर्त्तव्य का ध्यान भी आया। किन्तु इसी बीच मे उसके पिता ने उसका विवाह मालवा की एक राजकुमारी माळवणि से कर दिया था। उसके मन मे एक क्षण के लिए भी सघर्ष उत्पन्न नही हुआ कि वह मारवणि के प्रेम-सदेश को ठुकरा दे। वह चलने को उद्यत हो जाता है।

ढोला-मारू की कथा का नायक-प्रेम कथा का एक साधन मात्र है और साधन होने के नाते वह वे सब कार्य सम्पन्न करता है जो परिस्थितियाँ उसे करने के लिए बाध्य करती है। ढोला के व्यक्तित्व की बागडोर परिस्थितियो के हाथ होती है। इसके विपरीत इस कथा मे मारवणि एव माळवणि का चरित्र कही अधिक सकारात्मक है। मारवणि को ज्योंही ज्ञात होता है कि उसका विवाह ढोला के साथ हो चुका है वह नवयौवना अपने जीवन की सपूर्ण एकाग्रता से ढोला को प्राप्त करने की कोशिश करने लगती है। वह ढोला तक सदेश पहुँचाने

की कोशिश करती है। उसके पिता ब्राह्मण को भेजना चाहते हैं किन्तु मारवणि तो ब्राह्मण को 'शीतल जात' कह कर भेजना नहीं चाहती। अंत में ढाढियों को भेजा जाता है। मारवणि इनसे भी सतुष्ट नही है। वह स्वय प्रेम-सदेश को रूप देती है। टाटी उसी के सदेश के कारण ढोला के मन पर काबू पा सके।

ढोला जब पूगळ आ पहुँचता है और मारवणि के साथ वह वापस लौटता है तो ऊमर-सूमरा के चगुल से निकालने के लिए मारवणि की ही चतुराई काम में आती है। ढोला तो निपट मारू के प्रेम का 'साधन मात्र' है जिसका मानो निर्माण ही मारू के प्रेम की अभिव्यजना के लिए किया गया हो। ढोला तो एक रसिक प्रेमी है जो मारवणि का सौन्दर्य-वर्णन सुन कर उसकी ओर लालायित हो उठता है और जब उसे मारू की वृद्ध अवस्था या असुन्दरता की खबर मिलती हैं तो निराश हो जाता है। किन्तु मारू के सामने ढोला के रूप या सौन्दर्य का कोई अर्थ नहीं है।

मारवणि के समान ही मालवणि का चरित्र भी सकारात्मक है। वह चतुर, क्रूर, गर्वीली और अपने पति पर एकाधिकार चाहने वाली निरकुश स्त्री है। अपने लक्ष्य तक पहुचने के लिए वह अमानवीय कृत्य करते हुए भी नहीं झिझकती। अपने स्वार्थ के सामने वह साधारण शिष्टता को कुछ भी नही गिनती। मालवणि की इस उद्दण्डता एवं क्रूरता की वजह से ही मारू के प्रेम के प्रति अद्‌भूत सहानुभूति जागृत होने लगती है। ढोला और मारू के मिलन में सबसे बडी बाधा मालवणि की ही थी।

ढोला-मारू की प्रेम-कथा एक साधारण यथार्थ शैली की कथा ही होती यदि इस कथा मे इतने सुन्दर एवं हृदयग्राही काव्य-प्रसग और सजीव एव सशक्त काव्य-अभिव्यंजना नही होती। इस यथार्थ कथा में दो प्रसग ऐसे हैं जहाँ 'तथ्य' को कथा-सौन्दर्य के लिए 'विरूप' किया गया है। यह प्रसग है ऊट से मालवणि एव ढोला की बातचीत तथा इन्हीं दोनो पात्रो के बीच मे तोते की बातचीत। पशुओ के बोलने अथवा उनके मानवीय व्यवहार का यह आरोप लोक कथा का प्रभावशाली गुण है।

प्रेम की दूसरी कथा है—जलाल-बूबना। ढोला-मारू से यह कथा एकदम भिन्न है। ढोला एक औसत नवयुवक था। जलाल औसत नहीं, असाधारण है। वह वीर है, गर्वीला है, चतुर है, कल्पनाशील है, अपने निश्चय का पक्का है। ढोला परिस्थितियो के वश रहता था, जलाल परिस्थितियों को वश मे रखना जानता था। इसी प्रकार इस कथा में बूबना भी चतुर, चालाक, सुन्दर और अपने निश्चय की दृढ नायिका चित्रित की गई है। दोनों की चतुरता के कारण ही उनका प्रिय सबध निभ सका।

इस कथा का एक अद्भुत पक्ष यह है कि जलाल अपने मामा की विवाहिता बूबना से प्रेम करता था। जलाल का विवाह बूबना की बडी बहन सूमना से हुआ था। बादशाह अगतमायची के हरम मे जाकर अपनी प्रियतमा से मिल कर आजाना जलाल के ही साहस का काम था। बादशाह को जलाल के इन अनैतिक कार्य के बारे मे उसकी अन्य पत्नियाँ बार-बार कहती थीं। किन्तु जलाल या बूबना कोई न कोई ऐसा हल निकाल लेते थे जिससे

बादशाह का संदेह मिट जाता था। बादशाह को अपने भानजे जलाल की बहादुरी का गर्व भी था, इसलिए वह उसे कहना भी नहीं चाहता था। कठिन से कठिन परीक्षाओं मे भी जलाल बूबना के पास जाने मे नही हिचका। उसने सापो, शेरों और पानी के पहरों को पार किया, फूलो के ढेर मे छिपा रहा, चौकीदार को जान से मार डालना पडा, किन्तु जलाल अपने प्रेम की बाजी में शह खाने को तैयार नही था। इस कथा में सुन्दर चरित्र-चित्रण हुआ हैं। कथा की घटनाओ के मुडाव भी बहुत कलात्मक है। जलाल की बुद्धिमानी की पृष्ठभूमि मे बादशाह अगतमायची की विश्वासभरी बेवकूफी के कारण पाठको के होठो पर निरन्तर मुस्कान रहती है। अजीब बात तो यह है कि अपनी मामी को प्रियतमा बना कर स्नेह करने वाले प्रेमी पर पाठक का क्रोध नही, सहानुभूति उमड़ती है। प्रेम का ऐसा सहानुभूतिपूर्ण चित्रण उपस्थित करना निश्चय ही कला की उच्चता का उदाहरण है या प्रेम के क्षणो का जादू है।

ऐतिहासिक कथानको के सभी पात्र इतिहास-सम्मत है। सही बात तो यह है कि इन कथानकों के सामने एक स्पष्ट लक्ष्य महसूस नहीं होता। इन बातो का ध्येय न कथा कहना है और न पूरे अर्थो मे इतिहास को सुरक्षित रखना है। इन कथाओ का जब इस कथानक की दृष्टि से विश्लेषण करते हैं तो इतिहास की गुत्थियो में उलझ जाते है और जब इनमें इतिहास की तलाश करते हैं तो कथानक की रचना हावी होने लगती है। ये कथाएँ, इसलिए, इतिहास और साहित्य के बीच की एक अत्यत दुर्बल कडी है। किन्तु इनका एक महत्व है। इन कथाओ में इतिहास की केवल इतिवृत्तात्मक प्रवृत्ति नही है, इतिवृत्त में मनुष्य की सजीवता का अश है। इसलिए अमरसिंह या पद्मसिंह इतिहास की कठपुतली की भाँति महसूस नही होते बल्कि वे सजीव प्राणियो अथवा पात्रो की भाँति जीवित-से महसूस होते हैं।

यहाँ यह कहना आवश्यक नहीं है कि अमरसिंह और पद्मसिंह वीर पुरुष थे, अभिमानी थे और अपनी वीरता की वजह से वे दिल्ली के बादशाहो के यहाँ आदर एव भय की नजर से देखे जाते थे।

इन ऐतिहासिक कथाओ के विश्लेषण का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है—उस समय के समाज का यथातथ्य चित्रण। इन दोनो कथाओ का सम्बन्ध भारत की एक मुस्लिम सत्ता से है। दोनों ही कथाओं में राजस्थान के रजवाडों एव दिल्ली की सत्ता के आन्तरिक सम्बन्धो का पता चलता है। मध्यकाल मे सामन्ती राज्यो के षडयन्त्रो का ताना-बाना कितना उलझ चुका था यह इन कथाओ मे स्पष्टतया समझा जा सकता है। चारो ओर युद्ध, चारो ओर विग्रह, मार-काट, जीतना, हारना। और इन्हीं के बीच में वीरता के मापदडो का अतिशयोक्ति-पूर्ण वर्णन। मध्यकालीन भारत की सर्वत्र खलित सामाजिक स्थिति का दिग्दर्शन।

सूरे एव खींवे की कथा—अन्य दो ऐतिहासिक कहानियो से भिन्न है। इस कथा मे इतिहास के साथ ही साथ कथा के गुण भी हैं। सूरे एव खींवे का अपने मौसेरे भाई राजूखा के यहा जाना और बालक के स्वभाव की उद्दडता के कारण एकदम झगडा हो जाना कथा

को शुरू से ही आकर्षक बना देता है। पाठक की उत्सुकता बढ़ने लगती है। राजूखाँ का व्यंग सूरे एवं खींवे के चुभ जाता है कि क्या वे उसकी घोड़ी ले जायेंगे ? बात ही बात वीरोचित दंभ के कारण इस छोटी सी बात पर झगड़ा हो जाता है। दो मौसेरे भाई लड़ पड़ते हैं। भूवर मीरों की चालाकी से घोड़ी को उड़वा लेते है। राजूखाँ, घोड़ी के विरह में फकीर होकर निकल जाता है। घूमते-घूमते फिर एक दिन अपने मौसेरे भाइयों के यहाँ पहुँचता है। वहाँ उसकी घोड़ी बधी हुई होती है। उसे ले भागता है। युद्ध होता है। सूरा खींवा भी युद्धस्थली मे काम आ जाते हैं।

सामन्ती-व्यवस्था का शासक वर्ग दंभी और बात की टेक पर मर मिटने वाला होता है बात चाहे कितनी ही छोटी क्यों न हो। इतिहास मे इसके अनेकानेक उदाहरण मिल जाते है। राणा प्रताप और शक्तिसिंह की लडाई इसी बात पर हो गई—सूअर को किसने पहले मारा ? बडा भाई छोटे भाई की पहल स्वीकार नही कर रहा था और छोटा भाई बडे भाई की सतर्कता पर सन्देह कर रहा था। वही बात सूरे एवं खींवे की कथा मे भी है। उसके तरकश के बालक का हाथ लगाना ही चिन्ता की बात हो गई। यहीं से कथा का बीज बढते-बढते युद्ध भूमि की विकराल स्थिति में बदल जाता है। निरपेक्ष वीरता काच के समान नाजुक इज्जत और प्रतिशोध की अग्नि इन्ही तीन बातो मे सामन्ती-व्यवस्था के सामन्त का मानसिक चित्रण उपस्थित किया जा सकता है।

सूरे एवं खींवे की बात का एक और महत्वपूर्ण सामाजिक महत्व है। सूरा एवं खींवा दोनो भाई राजपूत थे किन्तु उनका मौसेरा भाई राजूखाँ मुसलमान था। उनमे परस्पर स्नेह भी था। एक दूसरे के प्रति भाईचारे का निश्चित भाव था। यदि आपस में झगडा नही होता तो उनके स्नेह मे कमी नही आती। हिन्दू एव मुसलमानो के इस पारिवारिक संबंध को कथा ने अत्यन्त स्वाभाविक भाव से निभाया है।

इन कथाओ के पश्चात 'डाढाळो सूर' एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कथा है। यह प्रतीक शैली मे लिखी गई एक वीरता की कहानी है। यहाँ वीरोचित कार्यो का आरोपण एक सूअर परिवार पर किया गया है। यहाँ यह कह देना भी आवश्यक है कि अन्य मानवीय मूल्यों की भाँति 'वीरता' का मूल्य भी समाज-सापेक्ष है। कल जिस कार्य मे वीरता का भाव था वह संभवतया आज उस रूप मे ग्रहण नही किया जा सकता। मुगल दरबार मे खडे होकर पद्मसिंह जिस वीर-भाव से किसी का गला गाजर-मूली की तरह उतार सकते थे वैसे ही आज की जनतंत्रीय पद्धति से चुनी विधान सभा का कोई सदस्य यही व्यवहार नही कर सकता। अतः 'डाढाळो सूर' की वीरता का प्रतीक अपने युग की वीर-भावना के अनुकूल एव अनुरूप है किन्तु महज ऐतिहासिक कथा और इस प्रतीक कथा मे एक बहुत बडा अन्तर है। सूअर का प्रतीकात्मक चित्रण होने के कारण उसमे साधारणीकरण का भाव आ गया है। इसलिए 'वीरता' स्वयं पात्र एव घटना मे निहित न होकर एक अमूर्त तत्व के रूप मे व्यक्त हो सकी है। इसलिए हमे कथा के माध्यम से काल की परिधि मे और परिधि से परे वीरता का अमूर्त भाव ग्रहण करना पडता है।



'प्रतीक' के ही कारण इस कथा में भी एक प्रकार से सत्य का विरूपात्मक प्रयोग हुआ है। वीरता के तथ्य का सूअर के परिवार पर आरोपण किया गया है। और उसके बाद सूअर की व्यवहारगत और स्वभावजन्य परिस्थितियों के आधार पर मानवोचित वीर-भाव की अभिव्यजना की गई है। सूअर के जीवन से उन्ही घटनाओ अथवा व्यवहारो को लिया गया है जो मनुष्य के कार्यो के सम-तुल्य रखे जा सकते हैं। यहाँ यह कहना भी असगत नही होगा कि प्रत्येक विरूपात्मक कथा मे एक वार तथ्य को एक विशिष्ट प्रकार से मोड देने के बाद कथाकार को उस 'मोड' के अनुसार ही सपूर्ण सम-तुल्यता का अनुपात विठाना पडता है। 'डाढाळा सूर' की कथा मे यह 'विरूप' एक वीर-सूअर परिवार के प्रतीक रूप में स्थापित किया गया और सफलतापूर्वक निभाया भी गया।

इस कथा में एक वीर परिवार का प्रतीक सूअर-परिवार को वताया गया। आवू की गिरि-कन्दराओ मे रहने वाले—वहाँ के निर्द्वन्द वीर सूअर को किस वात की कमी थी ? सूअर के परिवार के लिए आवू का प्राकृतिक सौन्दर्य, फली-फूली और झूमती हुई वनस्पति, कलकल करते वहने वाले झरने और आकाश को चूमने वाले विकट पहाड। ऐसी ही सुन्दरता और भयानकता के वीच में सूअर का परिवार रहता था। उनके पाँच पुत्र हुये। पाँचों की जन्म-पत्रियाँ बनीं और इन जन्म-पत्रियो के वहाने से कथाकार ने भविष्य की ओर पहिले ही सकेत कर दिया।

इस कथा मे सूअरनी और सूअर का युद्ध-वर्णन, उनकी सहज वीरता की पारस्परिक वातचीत, भय का अश मात्र भी नही, साहस, अपने वालको को युद्ध की शिक्षा, अन्य किसी के राज्य की सीमा पर अनधिकार किन्तु निश्चित अधिकार, सेना को तितर-वितर कर देने की अतुलनीय शक्ति और आक्रमण को सहने में असीम धीरता का परिचय मिलता है। इस कथा के पीछे एक और अनुभव की वात भी है। राजस्थान मे सूअर का शिकार स्वय राजाओ का एक मनपसन्द खेल रहा है। सारी कथा मे सूअर के कार्य-कलापो एवं युद्ध के तरीको का सूक्ष्म वर्णन हुआ है।

'डाढाळा सूर' की वात मे कुछ ऐसे धार्मिक सकेत भी आये हैं जिससे 'प्रतीक' का भाव स्पष्टतर हो गया है। यह सूअर एव सूअरनी वस्तुत पशु नहीं थे। ये कुवेर के यक्ष थे और कुवेर के श्राप के कारण ही इनको वारह वर्ष की तपस्या करने के वाद जीवन-ससर्ग में आने का अवसर मिला। सूअर, अन्त मे, मरते समय कहता है कि मैं वीर के हाथ से मर कर वीर गति को प्राप्त हो रहा हूँ। कथा मे नाथो की महत्ता, शिव की आराधना और श्राप व तपस्या का वर्णन भी आया है। यह सव वाते, कथाकार इसीलिए कहना चाहता है कि कही पाठक यह न समझलें कि यह केवल सूअर की स्थूल वीरता का चित्रण है। सूअर को मनुष्य वनाने के लिए 'श्राप' की कल्पना सहज ही करली गई है।

इस कथा को 'व्यंग' कथा नहीं कहना चाहिए। क्योकि कथा का मुख्य प्रयोजन हास्य नही है— अपितु एक गंभीर भाव 'उत्साह' और 'वीरत्व' है। इस कथा मे कही भी यह भाव नहीं आया है कि वीर पुरुष का प्रतीक—सूअर एक पशु मात्र है। सूअर के परिवार की

वीरता का सकेत हमे 'व्यग' मे नही, प्रतीक मे ही खोजना चाहिए।

राजस्थानी वात सग्रह मे एक मनुष्य के हित के उपदेश की वात भी है। हितोपदेश की इस कहानी मे घटना ही प्रवल है। पात्रो का प्रयोग तो केवल एक उपदेश की वात को व्यक्त करने के लिए किया गया है। सर्प और उससे वचाने वाली ऐसी कथायें विभिन्न देशो, विभिन्न भाषाओ और एक ही भाषा मे विभिन्न रूपो मे प्रचलित हैं। किन्तु 'पलक में खलक' कथा के वीच मे एक विलायत के वादशाह की सुन्दर प्रासगिक कथा है। प्रासंगिक कथाओ का प्राचीन वातो मे खूब ही प्रयोग होता था। हर आदमी अपनी वात कहने के लिए एक नई कथा का आधार लेता था। वृहत्कथा सरित्सागर में इसी प्रासंगि-कथा-पद्धति का आधार लिया गया है।

विवेचन की अन्तिम कहानी है—पलक दरियाव री वात। मैंने इस कथा को 'पुराण सवधी' कहा है। वेद, ब्राह्मण, उपनिषद एवं पुराणो मे अनेकानेक प्रसगानुकूल कथायें हैं। किंतु सभी कथाओ का जीवन के प्रति भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण है और साथ ही उनका पृथक-पृथक ऐतिहासिक, धार्मिक, दार्शनिक एव सामाजिक आधार है। पुराणो की कथाओ मे वेद, ब्राह्मण और उपनिषदो की कथाओ की स्पष्टता नही है। भारतीय सस्कृति के विकास मे पुराणो का उद्भव वहुत वाद मे हुआ है, इसलिए पुराणो की कथाओ मे हर प्रकार की चमत्कारिता और देवी-देवताओ के अलौकिक कार्यों के अतिरजनापूर्ण वर्णन आने लगे। उनमे अनेकानेक कथाओ का एक साथ ही समावेश होने लगा।

अवतारों के मगलकारी कार्यो का वर्णन, मनुष्यो की कठिन परीक्षाएँ, ईश्वरीय सत्ता से सपूर्ण होने वाले अद्‌भुत कार्य और ऋषियो-मुनियो के अलौकिक अनुभवो से पुराणो की कथाएँ परिपूर्ण हैं।

पलक दरियाव री वात सीधे पुराणो की कथा नही है, किंतु उसका कथात्मक कलेवर पौराणिक कथाओ के समान है। यों पुराणो का वहुत कुछ आधार वैष्णव व विष्णु के स्वरूप पर भी निर्भर है। यह कथा भी विष्णु के अलौकिक कार्यों की प्रशस्ति के रूप मे लिखी गई है।

इस कथा में से, यदि हम अलौकिक तत्व को निकाल देते हैं, तो कथानक वहुत सहज और मनोरम वन जाता है। इस कथा मे भगवान विष्णु की लीला का तत्व कथानक की प्रभविष्णुता को तीव्रतम वनाता है। इस अलौकिक तत्व के कारण ही देवीदास और कुवर विचित्र—एक ही 'व्यक्ति' वने रह सके। कुवर विचित्र के जन्म से युवक होने तक के कुल वर्ष—कुछ ही क्षणो के रूप मे वयान किये गये हैं। अपने पिता के पास से उसका पुत्र देवीदास विष्णु भगवान की पूजा के लिए गया और वहीं लक्ष्मी की अनुकम्पा से वह भगवान से 'पलक दरियाव' का तमाशा देखने का आग्रह करता है। उधर उसके पिता भोजन की थाली पर पुत्र की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

इन्हीं कुछ क्षणो मे देवीदास राजा कनकरथ के यहाँ जन्म भी लेता है, विवाह भी करता है और उसके पुत्र भी उत्पन्न हो जाता है। अन्त मे राजा के यहाँ से मृत होकर वह वापस देवीदास वन जाता है, और जव वह वापस अपने घर लौटता है तो उसके पिता



उसी थाली पर बैठे हुए हैं। देवीदास—कुवर विचित्र की सारी जिन्दगी जीकर, कुछ ही क्षण में वह अपने पिता के पास आ जाता है। यहाँ काल की यथार्थ सीमाओ के अतिक्रमण के पीछे एक अलौकिक अथवा दिव्य चमत्कारी सत्ता के विश्वास की गहरी नीव डाली गई है। इसलिए काल के अतिक्रमण की ओर हमारा यथार्थवादी मन जाने का प्रयत्न नही करता।

कथा के तत्वों की दृष्टि से यह इस सग्रह की सर्वश्रेष्ठ रचना है। घटनाओ का उठाव, पात्रों का निश्चित व आवश्यक स्थल पर उद्भव, आगे 'आने वाले महत्वपूर्ण' परिणामो का पूर्व-सकेत, पाठक के मन को साग्रह आकर्पित करने की शक्ति एव कथा की सब सघर्षमयी घटनाओ का समग्र और चरम तक विकास—यह सभी गुण इस कथा मे हैं। यो तो इस कथा का पौराणिक प्रयोजन भगवान विष्णु की अपरम्पार माया, उनकी कृपालुता, उनकी अलौकिक शक्ति और अपने भक्तजनो पर स्नेह है, किंतु यदि हम पौराणिकता के इस तात्विक पर्दे को हटा कर देखें तो हमे सांसारिक मनुष्यो के मन की अद्भुत स्थितियो के दर्शन होते हैं। पिता का अपने पुत्र के प्रति प्रेम, देवीदास की अपने कार्य के प्रति लगन, कुवर विचित्र का मित्र भाव, रामदान आदि की स्वामिभक्ति सभी सामाजिक जीवन को सभव वनाने वाले तत्व हैं। इन्ही भावो के पोषण पर कथा के घटनाओ का क्रम निर्मित हुआ है।

राजस्थानी वात सग्रह की कथाओ मे राजस्थान के निवासियो के उत्तर-मध्यकालीन विश्वासो एव परिस्थितियो का चित्रण हुआ है। यदि हम इन कथाओ के द्वारा उस समय के समाज को परखना चाहे तो पर्याप्त सामग्री मिल सकती है। उनका रहन-सहन, खान-पान, खेल-कूद, वेपभूषा, मकान-महल, यात्रा के तरीके व रास्ते, युद्ध की सामग्री, राजाओ के पारस्परिक एव वादशाहो से सबध, आम आदमी का साधारण जीवन, सुकाल और दुष्काल की समस्याये, देश-वर्णन, पुरुष का स्वामित्व और स्त्री का समर्पण, सामाजिक सवध, पति-पत्नी, सास-वहू, पिता-पुत्र के सवध, मुगल-राज्य की हकीकत, राजपूतो का मुसलमानो से सवध, राजनैतिक चक्रव्यूह आदि आदि जीवन के अनेक प्रसगो का विवरण इन कथाओ मे मिलता है। किन्तु यह सभी प्रसग तो मनुष्य के वाह्य-जीवन से सम्बन्धित है। उसका अन्तरतम 'मन' तो उसकी अनुभूतियों, विचारो, आकांक्षाओ और कार्य-कलापों से ही जाना जा सकता है। राजस्थान का उत्तर-मध्यकालीन औसत मनुष्य सहज ही वीरत्व और गौरव की उद्दीप्त भावना पर मर मिटने वाला सहज व्यक्ति था। उसके मन मे भी अपने यौवन के सुकोमल क्षणो मे प्रेम का सौरभ महक उठता था। वह अपने देश पर, अपनी मातृभूमि पर न्योछावर होना जानता था, अपने मित्रो के लिए सभी कुछ करने को तत्पर था, अवस्था के अनुभव को मन ही मन पूजता था, अपनी वात का पक्का था, दृढ-निश्चयी था, अपने लक्ष्य को प्राप्त करने मे जीवन की वाजी लगाना उसके बाएँ हाथ का काम था, धर्म-भीरु था, अध-विश्वासों का भार उसके कन्धे पर था, ईश्वर और समाज के विधान को ज्यो का त्यो स्वीकार करता था, स्वामिभक्त रहना जानता था, नीतिवान था, समय पडने पर अपनी शक्ति और बुद्धि का निश्चित ही प्रयोग करता था, जीवन को

जीना जानता था, कोई न कोई लक्ष्य उसके सामने था, निष्प्रयोजन जीवन उसके लिए मौत थी, उसके जीवन मे एक सुनिश्चित दर्शन चाहे न हो—किन्तु जीवन के कार्यक्रम की मोटी रूपरेखा उसके सामने स्पष्ट थी। अपने व्रत, उत्सव, त्यौंहारों मे वह मस्त रहता था, और अन्त में वह मनुष्य के अविरल विकास का सहायक बनना चाहता था। वह ऐसे जीवन-मूल्यो की स्थापना करना चाहता था जिनसे मनुष्य का भविष्य उज्जवल हो सके। यह सभी तथ्य इन्ही कथाओ से उद्घाटित होते है। यह सही है कि इन कथाओ मे अनेक ऐसी वातें हैं जो समाज एव काव्यसापेक्ष होने के कारण आज के जीवन-यथार्थ और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से खोटी दिखाई देने लगी है किन्तु उनके पीछे जो तथ्य और सकेत है उन्ही को ऐतिहासिक मूल्यांकन के रूप मे ग्रहण किया जाना चाहिए। हम उस समय से वहुत आगे निकल चुके हैं। इसलिए उस सामाजिक मनुष्य से हम कहीं अधिक उमर वाले हो चुके हैं, अत वहुत हद तक उनकी कलापूर्ण क्रीडाओं को 'वात्सल्य भाव' से देखना भी आवश्यक है।

कथा, काव्य-कला का एक अग है। काव्य के सभी प्रयोजन कथा के भी प्रयोजन हैं। इसलिए अनुभवो की विविधता और अनुभूतियो की अमूर्त-छायाओं के ससार मे मनुष्य कथाओ से सतुष्टि और अपने जीवन-दर्शन का तथ्य ग्रहण करता है। कथाओ के माध्यम से पाठक या श्रोता घटनाओ के सघर्षशील विवेक और मनुष्य के व्यवहारो की गहराई में उतरने की क्षमता प्राप्त करता है। कथायें—लोकजीवन की सघर्षपूर्ण यात्रा की हरावल मे चलती हैं। और इन कथाओ मे कुछ तत्व ही ऐसा है कि साधारण मनुष्य निश्चित होकर इनके सहारे अपने दैनिन्दिन जीवन के कर्तव्य और अकर्तव्य का निर्णय ले सकता है। इन कथाओ का गुण अथवा अवगुण केवल मनोरजकता और धर्म की सुनाने वाली शक्ति ही नही है। यह जीवन को क्रियाशील, कर्त्तव्यवान और कर्मप्रधान बनाने मे विश्वास रखती हैं। इन कथाओ को समाज की किसी वलवान सत्ता ने वचाने का प्रयत्न नही किया। जन-साधारण के वीच से ही रसिक पाठको ने अपने लिए हस्तलिखित प्रतियाँ तैयार करवाई हैं। और सौभाग्य से वह कथाये हमारे लिए सुरक्षित रह गयीं। कथा के साथ ही साथ उस समय के जीवन का सही प्रतिविंव हमे सुरक्षित मिल गया।

कथाओ की सुरक्षा सहज नही थी। इन कथाओ को जीवित रखने के लिए राजस्थान के अनेक अनाम साहित्य-सेवियो ने अपना परिश्रम, कल्पना और समय दिया है और वह भी विना किसी आशा और आकाक्षा से, मानो कथा-साहित्य को सुरक्षित रखना एक निरपेक्ष तपस्या थी।

मानव-जीवन के पल-पल पर कथाओ के सकेतो का पहरा रहता है। जब मनुष्य अवोध शिशु होता है तो कथा तुतलाती भाषा मे चिडियो के पखो पर और नानी की बूढी गोद में बैठी हुई—शिशु के साथ जागती है और उसी के साथ सोती है। वही मनुष्य जव वालक हो जाता है तो कथा की भाषा मे कुछ स्थिरता आ जाती है। तव वह अपना रूप बढा लेती है। वालक के सहज औत्सुक्य को वनाए रखती है और उसका निदान कर उसे सतुष्ट



करती है। जब वही मनुष्य छात्र बन जाता है तो कथा शिक्षक बन कर उसे रीति-नीति, ज्ञान-विज्ञान और जीने के तरीको को समझाती है। मनुष्य जब नवयुवक होने लगता है, उसकी मसें भीगने लगती है तो कथा—प्रेम, उदारता त्याग और मनुष्यता की गरिमा लेकर उपस्थित हो जाती है। लेकिन मनुष्य की यह अवस्था बहुत विकट होती है। उसका मन कसे हुए बलवान और मनचले घोड़े की तरह चचल और अस्थिर रहता है। कथा इस नव-जवान युवक पर लगाम का बंधन रखती है। मनुष्य के जीवन का यह अग्नि-परीक्षा-काल होता है। कथाएँ मनुष्य को जसनाथी साधुओ की तरह इस आग मे सुरक्षित निकाल लाती है। आदमी के बुढापे के साथ कहानी भी बूढी हो जाती है। वह लोक-परलोक की चिन्ता मे ही अपने जीवन के साथी के साथ घुलने लगती है और अन्त में सच्चे मित्र की तरह मनुष्य की मृत्यु के साथ उसकी चिता की चिनगारियो मे विलीन हो जाती है। और इन्ही चिनगारियो के रूप मे बिखर कर वह वापस मनुष्य के शिशुत्व के अबोध भोलेपन में पुनर्जन्म ले लेती है।

यही कथा का चिर क्रम है। यही कथा की बात है।

❖